

धरती माता

धरती माता
(*Good Earth*)

१

खेसद :
पल्लवक



प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक
प्रभात प्रकाशन,
मथुरा



अनुवादक :
ज्योत्सुप्रकाश शर्मा एम ए



सूत्रक :
सुभाष चिन्टिंग प्रत,
मथुरा



सर्वाधिकार सुरक्षित



१९५७ ई०



मूल्य :
तीन रुपये

धरती माता

घात्र बौगुलु ग क बिबाह का दिन था । सारे हाँस हँस जमने लगे बिस्तर की मसहरी से ओंहा ला उसे पधारण ला समूह दिया । घरे घर में दानिब को कैसक उसके बुढ़ ब व की काँचो घौर बसक हँकले की घाघात्र बधारण था रहो को । उस बूरे घार का कमाटा दोक बसके कमरे के सामने ही तो था घौर बिबमति उस बुढ़ की घौंला का घाघात्र बौगुलु ग को सक्ते पहले सुनार्हूँ रहो को । बौगुलु ग जने सुनवा रहता केकिन उदरा लगी था अब बह घाघात्र बिबमल हो जता घौर उसके पिता के कमरे से क्रियाँ क सुनने की घाघात्र रघरघरा सुनार्हूँ है काँचो ।

किन्तु घात्र सुनह जलये ऐसा कोहरे इन्तजार नहीं किया । धरदे बिस्तर को मसहरी को एक घोर पिसका कर वह पड़ान डठ गया । जिस समय कुछ घौंला काँचो का केकिन बिब को सामने घाघात्र की काब्रिमा होमाबुलु को । इसके घाबिरिक बह जलये बिबको पर बले बागत्र में क पैरु के म्येका हो बागत्र को बनक घौर को घाबिक होमाबमात्र खरी जकने जिबुकी के बाल जाकर कागक टपका देता ।

“हठमा सुनलमा समय है हम कागत्र को बले रहने को कोहरे धारलपकना नहीं,” बह सुनलमा ।

आज वह इस घर की स्वच्छ क्षेत्रों जागता है किन्तु वह इसका स्वस्थता प्रकट करने में उसे कुछ सिद्ध नहीं कर सकेगी। बिस्को से उसने हाथ बाहर कर बाहर की हवा का स्पष्ट किया और उसे खगा कि हवा के मन्द धीरे पूर्व से आ रहे हैं और हवा में पानी का अणु भी है। वह तो एक अष्टा अष्टक था। लोगों के फलने के लिए वर्षा की आवश्यकता थी। पानी शायद आज न पड़ता किन्तु यदि ऐसा ही हवा बजती रही तो अगले कुछ दिनों में अवरण ही पानी पड़ जाएगा। वह ही तो उसने अपने पिता से कहा था कि यदि ऐसा ही बमकती रूप पड़ती रही तो गेहूँ में खाना भी पड़ सकेगा। किन्तु अब ऐसा आज पड़ा कि देशवासियों ने उसके प्रति शुभ कामनाएँ प्रकट की हैं और ऐत अवरण बहकड़ाने लगेंगे।

वह घटपट अपनी नीची पतलून पहनाते हुए व कमरे की छंटे पर खटकते हुए बीच के कमरे की ओर बढ़ा और तब तक प्रायः नीचे बदन ही रहा जब तक कि उसने महाने के लिये पानी गर्म न कर दिया। घर के साथ ही खरी जूँपर में वह सीपा बजा गया—वही रसोईघर था। वहाँ उसे पाकट बैक का सिर मुझ कर पूछ दिखाते हुए अभिवादन किया। अपने छेत में मिट्टी जोड़-जोड़ कर ईंटों की दीवार खूब कर वह रसोई घर बनाया गया था और ऐसे ही गेहूँ की बांधों का जूँपर था किया गया था। अपनी ही मिट्टी से इसी प्रकार उसके पितामह ने रसोईघर की भट्टी भी बनाई थी जो इतने वर्षों से काम में आते २ अब बजो पड़ गई थी। इसी भट्टी पर खाई की एक बड़ी कड़ाई रखी थी।

पानी वहाँ आसानी से नहीं मिलता था इसलिए उसने दरत २ मिट्टी के टूटे से भर कर पानी बड़ाहो में ढाका-कड़ाही भी पूरी नहीं मरी। आज वह अपने नारेबदन को खाल कराया। उसके समूचे बदन को उसकी माँ के चरित्रिक और डिम्बी ने नहीं देखा था—वह भी जब कि वह बचपन में ही अपनी माँ के पैरों पर बिहकाया गया होगा।

आज काई उसका बहुत को देखने बाबा आगुता अठवृत्त वह इसकी सजाई मरजी तरह करेगा ।

महा के इधर उधर से व रसोई के कोनों में बसत रूप के दुकने इकट्ठा करके उसने किसी प्रकार आग जलाई । आज आखिरी दिन उसे स्वर्ग मंडी सिखगायी है । ६ वर्ष बहिषे अब उसकी माँ का वैवाहिक हुआ था । तब से वह बराबर इसी समय उठकर मंडी सिखगाता रहा है और इसी प्रकार पानी गर्म करके अपने गूठे पिता का नाकर देता भी रहा है । इन छः वर्षों से ही बराबर बस बूढ़ के भी अपने पैरों की व गर्म पानी की बात देती है क्योंकि गर्म पानी से उसकी रींसी कुछ भीनी पड़ जाती थी । किन्तु अब पिता पुत्र दोनों को साथ-साथ आराम मिल सकेगा क्योंकि बस घर में एक की का प्रवेश होने बाबा है । मर्दाने हो अबका गर्मी अब बांगलुरु का सुबह जल्दी उठकर आग सिखगाये की आवश्यकता नहीं पड़ेगी । अब तो वह अपने विस्तर पर आराम से पड़ा हुआ स्वर्ग गर्म पानी का इंतजार करेगा और यदि देवी बारी अच्छी हो गई तो वह चाप की पत्ती का भी आनन्द ले सकेगा । कई वर्षों में एक वर्ष तो बस भी क्रिमाओं के लिए लुगडाही का का हो जाता है ।

और अब अब वह स्त्री बड़ जाना करेगी तो उसके बच्चे आत सिखगा दिया करेंगे, अपने पति की लुगो के लिए वह आधिक से अधिक बच्चे तो देना कर ही सकेगी । इन्हीं विचारों में कि अनेक बच्चे इन लोगों कमरों में जमा बीकरी मचाले रहेंगे बांगलुरु पचाएक बड़ गया । तोय कमरे तो अब तक उसे बड़ा मातुम देते रहे हैं । अब से उसकी माँ मरी है तो आधा मजान तो बराबर दाखी सा ही बिकाल देता रहा है । किन्तु फिर भी जगह कम होने के कारण उसने अपने सर्वपिण्डों का अपने पार्श्व आने से बराबर रोका है तास और पर अपने बाबा को जिसके कितने ही बच्चे थे ।

एक घाब बार पाबा ने कहा भी था, ' बस बेटे का इसने कमरों

की क्या आबरवकला है ? क्या वे दोनों एक साथ नहीं सो सकते । बेटे के शरीर की गर्मी से बाप की छाँसी को आराम मिलेगा ।'

छिन्दु बाप ने सदैव यही उत्तर दिया "मेरा बिस्तर तो मेरे पौत्र के लिए है । तुझसे मैं बड़ी मेरी हड्डियों का गरमी पहुँचावेगा ।"

"अब पौत्र पर पौत्र होते जाएंगे तो बीबाबों के सहारे ही उनके पछड़ बिस्तरों पड़ेंगे नहीं तो वे सब लुढ़क २ कर नीचे ही गिरते रहेंगे । अगह कम पड़ी ता बीच के कमरे में भी बिरतर अगाने पड़ेंगे तब ता साता बर ही बिस्तरों से भर जायगा । इन्हीं बिचारों में बाँगलुह पड़ा हुआ था उधर मही की आग कुछ गई और कड़ाही का पानी भी डंढा हो गया । बरबाते पर बड़े पिठा को छापा उसे दिखाई पड़ी भी हाथ से धपके कपड़े बकड़े हुए या क्पोंकि उनमें बदल नहीं थे । छाँसते छाँसते चूक भी रहा था और हँसता भी जाता था ।

धमी तक मेरी छाँसी का आराम देने के लिए पानी गरम नहीं हुआ ।'

बाँगलुह ने पहरक दया उसे कुछ कपास आधा और कम माहूम हो । मही के पीछे से आकर उसने गुनगुनाया ईपक मीठा हुआ ता ई और हवा भी उठो सो बज रही ई—'

बूढ़ महाशय बराबर छाँसते हो रहे अब तक कि पानी गरम नहीं हो गया । बाँगलुह ने थोड़ा पानी निकाल कर कुछ सूखी पत्तियाँ उसमें डाली । यह देखा उस बूढ़ की छाँसें लखपा गई लेकिन फिर भी वह शिकायत करने लगा ।

'तुम इतने जिद्दूख क्यों क्यों हो ? पाब की पत्ती तो चोड़ी की तरह टेक है ।

'यही तो दिल है' कुछ मुस्कराते हुए बाँगलुह बोला 'बीबिये और आराम कीबिये ।'

बकबदाते हुए उस बूढ़ ने अपनी सिङ्कड़ी हुई उँगलियों से दावा

हाथ में पकड़ा और चाय की पत्तियों को पानी की सतह में बैठते हुए देखने लगा। हम कीमती पदार्थ को पीने से इसे हिचकिचाहट सी हो रहा थी।

“क्याही हो जानगी।” बांग्लु ग ने कहा।

“ठीक है थोका है”, सकपकते हुए उस बूढ़े ने गर्म चाय के बचे २ बूढ़े पीने शुरू कर दिये। एक प्रकार का संतोष उसे हुआ। किंतु साथ ही साथ वह वह भी देखता गया कि बांग्लु ग क्याही के घरम पानी को नहाने के टब में डालवा जा रहा है। इस पर सिर बड़ाकर पुनः की ओर एकटक बिग्याह से देखा।

“इतने पानी से ता जेत फसने की गुभाहस है” वह एकदम थोका पड़ा।

बांग्लु ग ने कोई उत्तर न दिया। वह तो बरतकर पानी को नहाने के बिये ही बसेबसा रहा।

‘मुनते नहीं हो’ बूढ़े ने बिठाकर कहा।

“करीब एक बप से मैंने अपने शरीर को नहीं सोया है।”

बांग्लु ग ने भीमी आवाज में कहा।

बांग्लु ग को अपने पिता से कहते हुए रमं मालूम हुई कि वह अपने बदन को बूढ़े की के बिये स्वच्छ बनाने को बेठा में है। किसी प्रकार जल्दी से वह नहाने का टब उखाकर अपने कमरे में ले गया। उसके कमरे के बिग्याह सरकर बन्द नहीं होते थे उनकी समी में से झोंकते हुए वह बूढ़े बिठाया—

“बदि ओ के जाने का आत्मम हम तरह होगा, तब तो हो बिया—इस प्रकार पानी का खर्चा और चाय का पीना।”

बांग्लु ग ने भी बिठाकर कहा—“एक ही दिव की तो यह बात है। इस पानी को मैं बेकार टर्प नहीं करूंगा। नहाने के बाद जनीव पर ही डाल दूंगा।”

के बाद वैसा बचने पर हो मुमकिन था। यदि वह इजाजत बनवाती तो शाबू एक ही तरह का गोरत खरीद सकता था। लेकिन फिर भी उसने तब किया कि इजाजत बनवाती आवश्यक है।

अपने पिता को चुपचाप वहीं छोड़ कर वह सुबह ही बाजार चला पड़ा। कुछ २ घंटे होम पर भी जेतों में उगे हुए गैहूँची और बाजरे की कमल पर सूर्य की किरणों की सुनहली आभा पड़नी आरम्भ हो गई थी। बांग्ला ग के अन्दर किसान का हृदय इस सुन्दर आभा का देखकर बोझ उठा और वह रुक कर बगते हुए दानों की गौर से देखने लगा। सभी कमल में दाने भर नहीं पाते थे। शाबू ने बर्पा का हस्त धार कर रहे थे। हवा में गर्मी का अनुभव कर उसने ऊपर आकाश की ओर देखा। काले बादलों से और भारी हवा से बाहिर था कि पानी पड़ेगा। वह अपनी 'बरती माता' के मन्दिर में जाकर अवरण चूष बत्ती से आराधना करेगा, कम से कम आज जैसे दिन में तो अवरण।

जेतों में से होला हुआ वह संकरे रास्ते से शहर की ओर चला पड़ा। शीघ्र ही शहर की बहारबिहारी भी दिखाई देने लगी। उसी बीमार के एक बड़े फाटक के अन्दर ही तो वह आलीशान मकान है जहाँ उसकी होने वाली की बचपन से मौकरी करती है। वहीं तो 'महांग' परिवार का आनन्दार मकान है। कुछ लोगों का विचार था कि बड़े घर में काम करने वाली कपड़ी से विवाह करने को अपेक्षा तो विवाह न करवा ही अर्हता है। किन्तु अब उसने अपने पिता से कहा था—“क्या मेरा विवाह कभी न होगा?” तो इसके बिना वे उत्तर दिया था—“मरने की वही चाहती है कि ऐसी कपड़े और सांभे के आभूषणों से वह आज हमजिसे वह ऐसा प्रदप ही हुईं तो है वो इतना प्यारा बच्चा सके। ऐसी सूरत में गरीबों से विवाह करने के लिये तो बीछरानियाँ हो रह जाती हैं।”

बर्गलुह को यह बालक बुझ बुझा कि उसका पिता उसके लिये सुन्दर को को ज़रूरी नहीं कर रहा था। सुन्दर स्त्री के होने से कई बात थी जो जिससे कि सब जाने वाले बाते उस पर बधाइयों की बौझ कर दें। रोती सी लकड़ बगल कर जब उसने पिता से यह बात कही तो उसे बकरी फटकार ही मिली।

“सुन्दर को का हम छाग क्या करेंगे ? हमको तो ऐसी ही बेनी चाहिये जो घर का काम काज कर सके जिसके भरण में संतान सुख हो तथा खेत का भी काम काज कर सके। क्या कोई सुन्दर को यह सब काम कर सकेगी ? वह तो अपने रूप रंग की ओर ही देखती रहेगी और अपना समय साय ग़ज़ार में ही बिछाव दिया करेगी। नहीं। ऐसी की से हमारे घर का काम काज नहीं चलेगा। हम लोग तो किसान ब्राह्मण हैं। और फिर क्या बड़े सम्पन्न घराने में सुन्दर औरतों को बिचकुल कुमारी होते हुए भी किसी के कभी सुना है। ऐसे घराने के रईस तो अपनी प्यास इन्हीं कर्षकों से ही बुझा लेते हैं। ऐसी सुन्दरी का कुमारी न रह सकती हो उससे तो बरसूरत कुमारी को लेना अच्छा है। क्या तुम सोचते हो कि सुन्दरी नवयौवना किसी रईस के हाथों का लपट करके सुखी होगी कि एक किसान के सुन्दर हाथों को लेना चाहेगी और फिर अपनी सूरत भी तो देखी।”

बर्गलुह को यह बात समझ में आ गई। उसके शरीर के ऊपर हाथ फैलते हुए वह और से बोझ पड़ा—“कम से कम ऐसी को नहीं लूँगा जिसके चेहरे पर दाग हों या मोड़ मोटे हों।”

“ऐलेंगे ऐसी को मिल सकती है।” उसके पिता ने उत्तर दिया।

जामिर को भी इसी तरह उसका न तो छोड़ ही मोटा या और न उसके चेहरे पर लकड़ के दाग हों। इतना तो उसको पता लग ही गया था यद्यपि इससे अधिक उसका और कुछ मायूम नहीं हो सका था। बिनाह संबंध पड़ा होने के उपरान्त ही उसने अपने पिता के साथ

सीने के मुहम्मदी की दो च गूठिबों और दा. धन के हवर रिंग' करीब छिये थे । इसके अतिरिक्त बांगमूझ को और कुछ नहीं मासूम था केवल इतना ही वह जानता था कि आज उसे जानकर अपनी ली को जाना है ।

इन्हीं बिचारों में घूमता हुआ वह शहर के फाटक के अन्दर घुसा । वहाँ उसे कुछ रडक मासूम पड़ी । इधर ऊपर पानी बिड़कते हुए, गाड़ी में भरे हुए पानी के बर्तनों को छिबे हुए आदमों घूम रहे थे । फाटक की मोटी २ दीवारों पर इस प्रकार पानी बिड़कने से रडक हो गई थी । गर्मी के दिनों में हमो प्रकार रडक को आती थी और वहीं रडि मीठे मीठ के शब्द की बिक्री होती थी । यद्यपि बीस तो अभी बाजार में नहीं आये थे किन्तु 'रडि मीठे शकतासू' कहिकते हुए उसे अचरम दिखाइ दिये ।

"रडि मीठे शकतासू—मौसमी शकतासू । आइये पारीदिये रडि मीठे शकतासू" बेचने वाले पुकार रहे थे ।

बांगमूझ ने अपने आप कहा "बापनो में यह फल पसंद थाप ली उसके छिपू में करीब लूंगा ।"

फाटक के सीधे हाथ को मुड़कर वह माइपों की गली में चला वहाँ उसने कुछ जागों को इजामत बनवाते हुए देखा । ये व क्रियात थे जो शायद शाम को ही बेचने की सामिग्री थे थाप ये क्रियामें सुबह के बाजार में बेचकर शीघ्र ही अपने ऐतों में जाकर दिन भर वहाँ अपना काम कर सकें । अपनी बखियों का सहारा लेकर ये लोग रत भर सबक पर ही ली छिबे थे । बांगमूझ इन जागों से बच रहा था क्रियामें कि कोई उस पहिचान न ले और उसके साथ कोई मजाक न हो जाय । माइपों की बूझनों की जाइन में सबसे आन्वरी बूझन पर जाकर अपने इशारे से एक माई को बुलाया । माई ने आकर गर्म पानी में अपना कुश बांध कर काम शुरू कर दिया ।

अपने व्यवसायिक डर से उसने पूछा— समयो बाझ कहा लू ।

शरादाम की तरह का एक फल

घरली माता

बांगलुह ने उत्तर दिया— 'किस सिर और मुँह के' "

नार्वे ने पूछा— 'क्या और नाक तो साफ है ?'

बांगलुह ने बरसुक्ता से पूछा— 'इसका और क्या खोजेगा ?'

'भार पेस' नार्वे ने कहा और अपने धुएँ की पानी में दिखाते

जगा ।

'मैं हो पैस बूगा' बांगलुह ने कहा ।

"तब तो एक काल और एक ताप की नाक हो साफ हो सकेगी "

नार्वे ने तुरन्त ही उत्तर दिया और पूछा— "किपर के नाक और काल की सफाई कराना चाहते हो?" पैसा कहकर उसने बराबर में बड़े हुए दूसरे नार्वे की ओर हँसी का चेहरा बनाते हुए देखा । दूसरा नार्वे इस पर बड़े जोर से हँस पड़ा । बांगलुह ने समझा कि वह एक मज्जाकिये के हाथ पड़ गया है । इसलिए हमने जवाबों से कहा— 'जैसी दुन्दारी हुआ ।'

इसके बाद वह नार्वे के सामने मुँह पड़ा और ऊपर से भी मातुल व मृग के हाथ कबरी २ बहने लगे । नार्वे ने भी अपनी हाथगो दिखाते हुए हमके बंधों को ज़रुराई से मचकते हुए हमके पड़ों को कुच डोखा कर दिया । बांगलुह के सिर के पाक साफ करते हुए नार्वे ने कहा 'यदि सिर के पाक बिबकुल ही साफ कराये तो वह किसान बुरा तो नहीं दिखेगा । घाबकक के क्षेत्र में तो चोरी ही साफ करव ज़रूरी है ताकि तुम्हें खटकती रहे ।'

नार्वे का उत्तर बांगलुह की चोरी के किनारे से इतनी सफ़्त से बूम पड़ा कि वह बिता उठा ।

बिना घरने विना से पूरे हुए वह चोरी में नहीं करा सकता "

इस पर वह नार्वे हँस पड़ा और उसकी चोरी को इसकी सी धपकी हो । हजामत बन जाने के बाद जब पैसा नार्वे के मातुल लगे हाथों पर रखा गया तो बांगलुह पक्ष से रह गया । इतना पैसा ! किन्तु वहने २ जब दरहो इस के धोंको से उसके मुँह हुए फिर पर बरबक जती

ता बौंगलुङ्ग ने अपने आप ही कहा "यह खर्चा एक ही बार का तो है।"

अब वह बाजार को चला और तेर भर गोरेल खरीदा उस गोरेल को किस प्रकार हरे पत्तों में लपेटा गया वह भी उसमें ध्यान से देखा, फिर कुछ दिखलियाते हुए उसने दूसरे प्रकार का गोरेल भी बोझा सा खरीदा। अब सब कुछ खरीद चुका तो मोमबत्तियों की दुकान पर जाकर कुछ भगर बत्तियों खरीदीं। इसके बाद कुछ शरमाते हुए बांग के मकान की ओर उसने कदम बढ़ाए।

उस मकान के द्वार पर पहुँचकर उसे आश्चर्य हुआ कि यहाँ तक वह कैसे पहुँच गया। क्या वह अकेला ही यहाँ तक पहुँचा है। कम से कम उसे अपने पिता से चाचा से और पड़ोसी बिंग आदि किसी स ती साथ चाचे के बिपू कहना चाहिये था। बड़े बरों में वह पहिले तो कभी नहीं आया। हाथ में लाने पीने का सामान लिये हुए वह कैसे कह सकता था। 'मैं उस ली के बिपू आया हूँ।'

दरवाजे पर दबड़की से देखा तो हुआ वह बहुत देर तक मड़ा रहा। दो बड़े बड़े खकड़ी के दरवाजों का बना फाटक बंद था उस दरवाजी पर काका राज का और बड़े के कुँदे उनमें खटक रहे थे। दरवाजे के दोनों ओर परपर के बने हुए दो दोर शायद फाटक की रच। कर रहे थे। एक बार वह घूम पड़ा। इस फाटक के अन्दर सुपना तो सुमझिन नहीं था।

यकालक उसे मूर्ख भाँने लगी। उसने कुछ खाना भी नहीं खाया था—पत्ता तो वह भूख हो गया था। बराबर घसो के एक 'रेस्तराँ' में जाकर मेज पर दो पैस रख वह बैठ गया। एक गंधा सा छद्मका अपना कबाब खोला पहिले हुए वहाँ आया, उसके पूछने पर बौंगलुङ्ग ने दो प्याखो गोरेल की खाने को कहा। प्याखियों के आने पर वह खकथा २ कर सब उड़ा गया। इतनी देर तक होरेल का खकथा नहीं पड़ा रहा।

क्या और छोले 'उम खदके ने पूरा।

बांग लुङ्ग ने सिर ढिंका कर मना कर दिया। देखा २ वह हथर उभर खाने लगा। रेस्तराँ के एक छोटे कमरे में वहाँ मेज कुर्सियाँ घरी हुई थीं, कोई उसकी जान पहिचान का नहीं बैठा था। कुछ बोले से व्यक्ति वहाँ बैठे २ चाप पानो बढ़ा रहे थे। यह गरीबों के बैठने का स्थान था। जिसने समुप्य वहाँ बैठे से उन सब में यही साफ सुधरा था। हमे साफ सुधरा देखकर एक मियारी भी उसकी ओर आकर कइसे आया—

“यह आदमी कुछ दवा करो कुछ कैसे हो मैं मूला हूँ।”

बांग लुङ्ग से कभी किसी मिथारी के समा पाचना वहाँ की थी और न किसी ने उसे धका आदमी बढ़ कर संबोधि २ ही किया था। वह प्रसन्न हो गया और मिथारी के बर्तन में उससे दो छोटे २ सिक्के बाह्य दिए। मिथारी ने ऊबरी ही उस मकदो का अपने कटे ओपकों के एक कीड़े में कड़ी बांध दिया।

बांग लुङ्ग वहाँ बैठा रहा और उभर भूप भी बढ़ आयी। होरक के कड़के से निश्चया कर बदतमीजी से कहा, “यदि और कुछ नहीं लेना है तो वहाँ बैठने का किया जाना पड़ेगा।”

इस बदतमीजी पर बांग लुङ्ग सन्नत रहा। वह एक दम उठ पकता खिन्न जब हमे दूंग के सन्धान का प्थान आया कि वहाँ बाहर उठे की की मोंग करना है ता उसके शरीर में बसीना इतनी तेजी से बूट आया मानो वह कहीं दीत पर काम करके आया हो।

“बाबू बाबू” उसने धीरे से कड़के से कहा। इतना कहते ही बाबू आसई और कड़के से तेजी से कहा “पैसा कहीं है ?”

बांग लुङ्ग की चेह से पैसे निकालने ही रहे। कुछ बैठती से वह बड़बड़ाता “वह तो मूट है।” तभी उसकी बजरा अपने बूट पड़ती पर वही जिसने अपने शर्म को अपने पर भी बुझाया था मेज पर

रकते हुए बड़े २ चाप के बूँद लेकर बराबर के दरवाजे से वह बाहर विसर्क गया।

बाहर घाबर कुछ बिरासा से वह अपने चाप ही कहने लगा
“वह तो करना ही है” और घीरे २ वह फिर उन बड़े फायरों की ओर
चक पड़ा।

इस समय दोपहर हो आया था इसलिये कारक लुके हुए
मिछे। वहीं चौकीदार भी बैठा दिखाई दिया। लाने के बाद वह सीक
से हॉल तुरंत रहा था। वह अपने चौके डीक डीक का आदमी था।
बाहे गाक पर उसके एक बहुत बड़ा तिल था जहाँ तीन बार बाक
करक रह थे। शायद इस बाकों को कभी साफ नहीं किया गया था। अब
बांगलुङ उसके सामने पड़ा तो वह जोर से चिक्का पड़ा—

“क्या है?”

बहुत मुरिच्छ से बांगलुङ ने जवाब दिया—

“मेरा नाम बांगलुङ है और मैं किसान हूँ।”

“अच्छा बांगलुङ-किमान-किर क्या? चौकीदार ने तुरी तरह
कहा। चौकीदार भी अपने मरिच्छक माककिन के समीर मिछने बाकों
से ही भरती से पेश आता था।

“मैं आया हूँ—मैं आया हूँ—” बड़बड़ार्थ आवाज से बांगलुङ
ने बोझता आरम्भ किया।

अपने तिल के बाकों को उगली स मरोपते हुए चौकीदार ने
कहा “वह तो मैं भी देखता हूँ।

बांगलुङ की आवाज धीमी पड़ती गई धूँ से बेहरा कीका
पड़ता गया। इसी दशा में वह मरुचाते हुए बोला “कभी है यहाँ।”

चौकीदार बहुत आर स होता।

“तो तुम हा वह” वह जोर से गरजा। “तुम्हें आज कुछ दूध
का इस्तफार करने को कहा गया था लेकिन तुम्हारे हाथों में बखिया
देख कर मैं डीक के पहिचाल नहीं पाया।”

'यह कुछ मीन मछली है' बांगलुङ ने कहा याचना करते हुए कहा और इश्वरवार करने लगा कि जब चौकीदार उसे अन्दर ले जायगा किंतु चौकीदार तो दिखा एक नहीं। बिना उसे शर्तों में आदिशकार बांगलुङ ने कहा।

'जब मैं स्वयं ही जाता हूँ'।

चौकीदार ने धीरे-धीरे निकलते हुए कहा मासिक तुम्हें ज्ञान से नारा डालेगा।' फिर बांगलुङ को सोचा सादा समझकर बोला, कुछ भेंट चढ़ाओ तो काम चल सकेगा।'।

बांगलुङ समझा कि वह चौकीदार बिना कुछ दिये नहीं जायेगा।

'मैं तो गरीब आदमी हूँ।' बड़े अनुशोच से उसने कहा।

'देख तुम्हारी पैरी में क्या है' चौकीदार ने कहा।

इस पर बांगलुङ ने चुपचाप पैरी खोलकर एक दो और पैके में से बहुत-सा निकाल कर एक दिया। चौकीदार ने दौट निकल कर सब सामान को देखे। बहुतों में एक चांदी का सिक्का व चौकीदार लाने के सिक्के थे।

'मैं तो चांदी लूँगा चौकीदार ने कुछ शर्ति से कहा और इससे पहले कि बांगलुङ कुछ कह सके उसने वह चांदी अपनी जेब में डाल ली और फाटक में अन्दर घुस कर ओर से आवाज दी—

"बूढ़ा आया है, बूढ़ा आया है।"

बांगलुङ को क्रोध था रहा था लेकिन जब उसने चौकीदार को अन्दर आवाज देते हुए सुना तो चुपचाप अपनी डकिया बट्टा की ओर उसके पक्षे व चला दिया। इधर उधर नहीं देखा भी नहीं।

इसके बाद बांगलुङ को किसी बात का होश नहीं रहा। एक बड़े संवत्स परिवार के घर में आने का वह बहुत-सा आनंद था। मकान के आँगनों में से वह फिर मुकाम हुए आनंद रहा। उसका इस प्रकार से

जबते देखकर सभी लोग कीचूरख करते हुए हैं। रहे न। कई लोग नव पल हो चुके वा चौकीदार से उसे एकपक्ष एक छोटे कमरे में डकेल दिया। वहाँ वह भरेखा खड़ा रहा। बोले दोर बाद चौकीदार ने कीचूर कर कहा।

‘माधविन कहती है कि तुम्हें उसके सामने हथियार होना है।’

बाँग लुह भागे बहने जगा किन्तु चौकीदार ने उसे रोक लिया।

“बही माधविन के भाये तुम इस प्रकार हाथ में उठिना किन हुए नहीं जा सकते—हाथ में यह मौस मरी पिठारी होने से तुम उनके सामने कैसे निर मुझघोने ?”

“ठीक है, ठीक है—” बाँगलुह ने उठिना होकर कहा। किन्तु पिठारी की मोठे रखने की हिम्मत उसे नहीं हो रही थी कि कहीं कोई उसमें से कुछ निकास न हो। बाँग लुह को यह समझ नहीं आई कि तुमियों की शाब्द इसकी मौस मझकी की कोई आवश्यकता नहीं। चौकीदार उसके दर को समझ गया और गुस्से से चिक्का कर बोला।

‘इस बराने में ऐसा मौस मझकी तो कुत्तों को पिला दिया जाता है।’ और उसकी पिठारी खोब कर बराने के पोछे फटक कर बाँग लुह को भागे डकेल दिया।

बाँगलुह धामे बरामहों में छे होकर एक बड़े कमरे में पहुँचा। ये ये सुबह बरामदे किमके कामों में जाँठि २ की मोबादारी हो रही थी उसने पहले कमी नहीं देखे थे। इतने बड़े घर में उसके जैसे बिलने ही घर समा सकते थे। इनने बीने राखे इतनी कँची २ पक्षे देख कर वह हग रह गया। दोषाओं में सुन्दर कामगारी देखा हुआ वह इतना अविश हो गया कि भागे गिरने बाझा ही ना लेकिन चौकीदार ने उसे पकड़ लिया और बाझा—

‘माधविन के भाये इस प्रकार मुझा जाता है।’ ऐसा कह कर उसे मुझा दिया गया।

काम करता रहा है किन्तु उसके हृदय को आलसित करने के लिये और बहुत सी बर्तियों को हथ पर धरते रहते हैं। कपड़ों हैं। इसे के बापपा और अम्मी काह रणो। यदि इस दुनिया में कुछ पुराने कपड़ों को मेरी हथपा न वाली तो मैं इसे आने वहाँ से कभी न हटाती क्योंकि रसोई के काम काम में यह बहुत सुन्दर है। मैं अपनी बर्तियों के बिना हसी प्रकार करती रहती हूँ।”

और भी की और मुँह कर हुआ ने कहा—

“इसकी चाचा मामला और बच्चों से बर मर देता। अपनी पहला बच्चा मुझे दिखाते के लिये जाता।”

“जी चप्पा माबज़िब।” मुँह के हुए भी ने कहा।

दोनों सड़पाप से फरे रहे। बाँगलुन पुन उलझन सी में पड़ा रहा कि क्या कहे और क्या न कहे।

“अच्छा बाबो!” हुआ ने मुँह के हुए कहा। बाँगलुन कपड़ों से शीत सुख कर पूमा और बाहर बह दिया पीछे १ अम्मी स्त्री भी बह पड़ी और इसके पीछे बस लिये हुए चौकीदार। जिस कमरे में बाँगलुन की पैरों को वहाँ जाकर चौकीदार ने उस बस को बल दिया और वह कहते हुए, कि इससे घाटी वह नहीं ले जाय, वह वहाँ से चम्पत हो गया।

तब बाँगलुन की की बार मुँह और वहको बार बाँये घर कर उसे देखा। उसका चौखटा छोटा सा चेहरा कपड़ों ईमालदार लगा। चेहरे पर बोरी सी नीची नाक थी, बाँये बाकी और मरी हुई थी। कुछ कुछ बड़प्पों की मजक उसमें बसक रही थी। अम्मा चेहरा या शक्ति मय। बाँगलुन अब तक उस देखता रहा वह सुबपाप पड़ी रही। उसने देखा कि यह बात तो सच ही थी कि उसमें कोई सुन्दरता नहीं थी किन्तु चेचक के रोग भी नहीं थे और न मारे होठ हो। कानों में अपने दिष्ट हुए ‘हायर गिड’ उसके अटकते हुए होते और बड़बड़ों में अपनी ही हुई

धौगूठियाँ। एक प्रकार का परमार्थ प्रामुख्य करते हुए वह एकान्त एक गया। धाकिर इसे स्त्री मित्र ही गई।

“वह बरस है और वह पिढारी” उसने ऊँची सी आवाज में कहा।

बिना कुछ कहे हुए वह मुझी और बरस का एक सिरा उठते हुए अपने कंधे पर रखा और उस बोझ से मुझी हुई ऊपर उठने की कोशिश करने लगी। बौगलु ग देखता रहा और फिर बोला—

“मैं बरस उठा लूँगा, वह छो पिढारी”

और बिना इस बात की परवाह करते हुए कि वह नये कपड़े पहिने हुए है उसने धरमा उठा कर अपने कंधों पर छाड़ दिया और जो मे सुनचाप पिढारी का सिरा एकदम दिया। इतना बोझ उठाकर कई धौगनों को पार करना है, इस विचार से वह कुछ विचित्र सा होगया।

“यदि कोई इतर हो छोटा सा इतर होला तो”

‘वह धीरे से बोला और जो कुछ सोचकर झिंक गई। शायद उसकी बात को दृष्टी तरह से समझ नहीं पाई। तब वह एक छोटे पास के रास्ते से उसे बाहर निकाल बाढ़।

एक या दो बार बौगलु ग ने उसकी ओर मुड़कर देखा। वह सुनचाप नये तुझे कदम उठ कर चल रही थी मानो रास्ता उसका जाना हुआ हो। बाहारदीवारी के फाटक पर आकर वह बकावत एक गया और बरस को कंधे पर ठीक से जमाकर जेब से नये हुए पैसे निकाल १ शकताम् जारीदे।

“इन्हें जो और का जो” उसने बसी दवाज़ से कहा।

जो ने एक बरस की तरह कदम अपने हाथ में छे दिया। जब धौगों केर में बौगलु ग ने मुड़कर देखा तो वह एक कदम को पता रही की पति को अपनी धार देखते हुए उसने शरमा कर मुँह को रोक दिया।

इसी प्रकार वे दोनों परिचय की ओर पेटों में से चले रहे।

वहीं आगे जाकर 'धरती माता' का मन्दिर था। वह छोटा सा मन्दिर, मनुष्य के कंधों के बराबर भी ऊँचा नहीं था—कपची ईंटों से बना हुआ था और खपरूँ की छत पड़ी हुई थी। बाँगलुङ्ग के पितामह ने यह मन्दिर बनाया था। उसी पितामह के समय के खेतों में बाँगलुङ्ग अब भी काम करता था। बाहर की ओर से इस मन्दिर की दीवारें मजबूत थीं व मन्दिर एक कच्चाकर से नहीं बिजकरी की हुई थी। किन्तु अब वहाँ के पानी लुकाव से बूँटा बर्बरित हो रही थी, अब तो यह एक बँसों का ढोंचा ही दिखाई दे रहा था।

मन्दिर में दो छींटी १ मिट्टी की मूर्तियाँ विराजमान थीं। यही देवी देवता थे—काक कागडों के कपड़े पहने हुए वे और देवता के पैरों पर असली बाजों की मूँछें छापी हुई थीं। प्रति बड़े वर्ष पर बाँगलुङ्ग का पिता अग्रा और बड़े कागडों के बख उन्हे पहिना जाता था और प्रति वर्ष की बर्पा बकको प्रसाद कर जाती थी।

इस समय मूर्तियों के कपड़े बड़े छग रहे थे और बाँगलुङ्ग की पत्नी बूँटा में वहाँ उर्जन करते हुए एक प्रकार का गर्ब ही रहा था। उसने स्त्री के कंधों से पिटारी बतारी मौँज मसुकी की घँटो बीन्ने रखी और भूपवत्तियों को देखा। उसे डर था कहीं वह वत्तियों हट न गई हों किन्तु वे संतुष्ट थीं—हट जाने से घट्यम बचक हो जाते। मन्दिर में भूपवत्तियाँ बकाएर उसने अपनी देवी देवताओं को आराधना की।

पति पत्नी दोनों मन्दिर की मुगल मूर्ति के सामने खड़े रहे। भूपवत्तियों की सुसंवित रास को बाँगलुङ्ग की शरीरने रँगबियों से बीन्ने बक दिना मित्रसे वत्तियों कुछ न बॉय। किन्तु उसे फिर संशय हुआ कि कहीं उसका पति इस पर नाराज तो नहीं हुआ। जबभीत होकर डकड़-बाई घोंबोले बकने पति की ओर देखा। पतिको बककी यह क्रिया अच्छी लगी। यही तो विवाह की शुभ बड़ी थी। सुनचार के दोनों बराबर पड़े रहे और अब आपसे आप वत्तियों कुछ गई तो फिर अपना सामान उठाकर बक बने। इधर पूर भी बक गई थी और सौँक हो आई थी।

बर घाबर देता कि बांगलुङ का पिता सूर्य की घाबिरी किरणों के दशन कर रहा था। बांगलुङ को खी के साथ घाटा हुआ देनकर भी वह चुपचाप खड़ा रहा। ऊपर बादलों की ओर देख कर उसने एक डबड़ी घाह भरी—

“बड़ बादल का टुकड़ा जो बरत की ओर दिखता है रहा है, वर्षा का घातक है। अब कुछ रात से पहिले ही वर्षा हो जायगी।” इतने में उस बूढ़े ने बांगलुङ को अपनी खी के कमरों से पिटारी उठाते हुए देखा और कहा, “बना साता पैसा खर्च कर दिया।”

बांगलुङ ने पिटारी उठा कर मेज पर रख दी। “आज रात को मेहमान आएंगे।” उसने कहा और बक्स को अपने लोहे के कमरे में ले जाकर रखा। इतने में ही बूढ़े बड़ा धा गया और बोला—

“इस घर में पैसा खर्च होता ही जाता है।”

सब ही मन तो वह प्रसन्न था कि उसके लड़के ने आज मेहमानों का मुकाफा है। लेकिन फिर उसने सोचा कि उसका इसी प्रकार बराबर झिंकता रहना बर्धित हो होगा, वहीं तो घर में बहू को आरम्भ से ही किस्म-कर्म की आदत पड़ जायगी। बांगलुङ ने कुछ नहीं कहा और पिटारी को रसोई की ओर ले चला। पीछे-पीछे बहू भी रसोई घर में चली गई। अब लोहे के पास माँव के एक एक टुकड़े को रखते हुए वह बोला—

“बहू माँस मछली का है। सत्त घातमी पाने पायेंगे। क्या तुम जाना बना सकोगी।” खी ने धीमी आवाज से कहा—“अब से मैं हॉग के मकान में गई हूँ मैंने रसोईघर में ही काम किया है। वहाँ तो दोनो बच्चे हर प्रकार के माँस बन्दे हैं।”

बांगलुङ मुन कर बाहर चला गया आता और फिर शाम तक बन्दे रसोईघर की कीर्त खबर नहीं खी मेहमानों में उसके जाया से जो अपनी प्रसन्न मुद्रा में सब को ईछा रहे थे, १२ वर्ष का बचक

अबका बा जो कुछ वैभव संसाया, चीर उसके पकोसी किसान थे।
 दो किसान तो उस गाँव के थे बाहों से बाँगलुङ्ग बीज लाया था और एक
 उसका बही का पकोसी बिगा बा जो लोच प्रकृति का मधुप्य बा और
 बेवक धानरपकवा पकवे पर ही बोझता था। उन मेहमानों को मैत्र पर
 सिहावर से बिदाकर बाँगलुङ्ग रसोई घर में गया और अपनी स्त्री को
 खाना परीसने को कहा। उसे बड़ी प्रसन्नता हुई जब उसकी स्त्री ने
 कहा—

“मैं तुम्हें पेटों लगाकर देती आऊँगी जोर तुम मैत्र पर रखते
 जाना। मुझे धानमिर्ची के सामने जाना अच्छा नहीं लगता।”

बांगलुङ्ग को इस बात का गव हुआ कि यह स्त्री बंसी की है
 और धन्य पुरुषों के सामने बाँबा उसे प्रसन्न नहीं है। उसने पेटों से
 लेकर मैत्र पर एक दो और कहने लगा—

“आहूये, आबाजी व धन्य आहूयो—आहूये” और जब उसके
 बिनोड़ी प्रकृति के आवा ने कहा “तो क्या इस बहू को नहीं देखेंगे ?”
 बांगलुङ्ग ने उत्तर दिया, “बंसी को हमारा विवाह सम्पूर्ण नहीं हुआ और
 जब तक सुहमारत न हो जाय बहू धन्य किसी स्त्री के सामने कैसे आ
 सकती है ?”

और उसने उन मेहमानों को लाने के लिये अनुरोध किया।
 मेहमान लाने लगे। कोई मधुखी की प्रशंसा कर रहा था, तो कोई मीस
 की। सभी सप्रभां स्वादिष्ट कहा था। मेहमानों की प्रशंसा के उत्तर में
 बांगलुङ्ग बहता रहा, “यह तो मामूली जाना है—स्वादिष्ट भी नहीं
 होगा।”

किन्तु मन ही मन वह बड़ा समुह और प्रसन्न था कि इतने कम
 कामान में उस स्त्री ने किस अनुदाई से इतना स्वादिष्ट भोजन बना
 दिया। बांगलुङ्ग ने स्वयं कभी देखा स्वादिष्ट भोजन किसी के नहीं नहीं
 किया था।

उस रात जब तक मेहमान गपराप करते हुए चाय पीते रहे, तक तक घर की खी अपनी काम में ही खगी रही। मेहमानों के बिदा होते ही पैरों के पास पड़े हुए चारे में वह चुनक कर छोट गई। बांग्लु ग ने जब उस जगत्वा तो उसकी आँखें मोझापन छिन्ने हुए लुझीं। पति वैसे अपने हाथों से उठकर अपने कमरे में छे गया और मोमबत्ती जला कर जैसे ही उसने पैर पर रखी कि उस रोगनी से अपने को खी के सामने अकेला पाकर कुछ लर्मा-सा गया।

और वह कमरे उतारकर बिस्तरे में छोटने को तैयारी करने लगा। अब पुरे के पीछे उसकी खी भी सोने को तैयारी में खयो। बांग्लु ग ने कहा— 'बिस्तरे में छोटने से पहिले पत्नी बुझा देना।'

हलना कह कर वह बिस्तर पर छोट गया और रजार्ड थोड़ कर सोने का बहाना करने लगा। लेकिन बीदू कहीं थी। उसकी रगता तो ज गूत अवस्था में ही थी और जोड़ी ही रैर में अन्धेरा हो गया तो उसे अपने पास खी की करबद माझूस पड़ी और वह एक विशेष प्रकार की भावना से उत्तेजित हो उठ, वह भावना उसके शरीर को लोन्ने के बिप कात्री थी। अँधेरे में प्रसन्न बिठ हो उमने अपनी खी को बाहुप्राण में जकड़ लिया।



सुबह हो गई थीर बौगुड बाहर अपनी बी बी थीर छटकी बीच कर बैकठा रहा । इतने में ही बी जाग उठी थीर झटपट उमने अपने पहिने छुट कर दिये । मातमम का तु बका प्रकाश अब बेहरे पर पड़ा तो बौगुड को उसके बेहरे में कोई अन्तर दिखाई नहीं दिया । वह उसके बिये आरुचर्य की बात बी । उसे तो ऐसा जान पड़ता था कि रात मर में कुछ भी बदल चुकी होगी, लेकिन वह छो बिना बिमो हिचकिचाहट के अपने उद पड़ी हुई कि मानो कुछ हुआ बी नहीं । उधर दूर पिठा को बीसी अब सुनाई दी तो उसने कहा—

“पिताजी के बिये एक प्यासा गर्म वाली है आसो ताकि उनकी बीसी की कुछ आराम मिले ।”

अपनी ही आवाज में छो ने पूछा— ‘क्या हममें बात की बतियों बी पड़े भी ?’

हम सीधे प्रश्न से बांग्लुङ विचलित हो उठे । अपनी हार्दिक इच्छा से तो वह यही कहना चाहता था कि "बाप की पत्नियाँ तो पड़े गो हो । क्या तुम समझती हो कि हम कोई गरीब मिचाली हैं ?" किंतु उसकी स्त्री को सोच खेना चाहिये था कि इस घर में बाप को पत्नियाँ नहीं डाँकी जाती । शायद परिवार की बात दूसरी थी, यहाँ तो हर प्याले में बाप का रस होता होता । यहाँ लापरवाही और लापरवाही की भाँति नहीं पीते । साथ ही साथ उसे यह भी प्यार था कि यदि पड़ोस की दूध उबाले पानी में बाप डाली गई तो वह नाराज हो उठेगा । क्योंकि ऐसे घमेली तो वे नहीं । विचारों की इस उलझन में अपने कहा—

"बाप ! नहीं" नहीं—बाप से तो काँची बड़ बापगी ।"

इतना कह कर वह अपने बिस्तरे की गर्मी में लेटा रहा और ऊपर उसकी स्त्री ने आग जलाकर जमी गर्म कर दिया । वह चाहता था कि सोता हो रहे लेकिन क्यों को जल्दा उठने का आग्रह से बोला न रह सका, फिर भी कुछ संतुष्टिपूर्ण आनंद से बसा ही रहा ।

अभी तो हम को की अपनी समझने हुए बांग्लुङ का हिचक का मात्तम होती थी क्योंकि उसे तो अपने रीत का प्यार रहता कि पत्नी पड़ेगा और अमीन कहलहायेगी तब अपने पड़ोसी बिगा से अलग सा भीतर घरीद कर डालेगा । विचारों को हम गल्लुकाओं में ही अचानक उसे प्यार था कि अब तो बिंदुगी के एक बड़ा रूप से बिना है । किंतु स्त्री को वह पसन्द भी आता कि नहीं । जीवन के इस नये खोले में भी उसे एक आनंद था बसा । उसका प्रश्न तो अब तक यही रहा

था कि ठीके की वसम्द आगुगी था नहीं अपना वह अपनी को को सुखी रख सकेगा था नहीं । वसम्द नेहुरा तो मोखा माखा था किन्तु काम करने वाले हाथ अवरण सम्यक थे । फिर भी सारा शरीर तो शुद्धगुहा और सुखा-वस बोखता था । ऐसा लगता था कि उस की के शरीर का स्पर्श अभी तक किसी ने नहीं किया था । शाँग परिवार के छुँसजाहों ने केवल उसका नेहुरा ही देख पाया होगा । उसके सुन्दर सुगन्धित शरीर को वे लोग कहां देख पाये होंगे । ऐसा सोचते १ उसे आनास हुआ कि अवरण ही उसको की वे उसे वसम्द किया होगा । किन्तु वह फिर शर्मा गया ।

हठने में ही कमरे का दरवाजा फिर खुला और सुआप अपने दोनों हाथों में प्लाष्टे छिपे हुए वह आई । बाँगलुङ ने उठकर प्लाष्टा नाम दिया । प्लाष्टो में आप की पत्तियों ठहर रही थीं । तब वसने की की और देखा और वह किंचित डर से सहम कर बोख बठी—

“पिताजी के प्लाष्टे में मैंने आप नहीं डाली, जैसा कि आपने कहा था—किन्तु अपने और तुम्हारे लिए ।”

बाँगलुङ ने देखा कि वह कुछ डरी हुई है और यह देखकर मन ही मन लुग हुआ किन्तु उसकी बात लय होने से पहले ही बोख पड़ा—
‘ठीक है, ठीक है मुझे आप वसम्द है और लुटी के साथ आप के बूँद खेने लगा ।

मन ही मन बाँगलुङ सोच रहा था— ‘वह मेरी छो मुझे बहुत वसम्द करती है ।’

X

X

X

X

पुँये ही दिन बीतते गये और बाँगलुङ को ऐसा लगा कि वह कोई काम नहीं कर रहा, केवल अपनी को के रह में ही मस्ती से जीवन बिता रहा है । किन्तु वास्तविकता यह थी कि पहले की तरह अब भी वह वैसी ही कड़ी मेहनत करता । पहिले की तरह ही वह पास के गदुरी की कम्पों पर जादू कर लेख में के जाता, उसी प्रकार लेख में सिंचाई

करता हूँ बछाता बैलों को चारा बाँधता । किन्तु अब इसमें मैतवत नहीं मान्दूम पड़ती । सूर्य डूबने पर अब वह घर जाता तो घर साफ़ मिछता और साफ़ मैत पर जाना भी कसा जगाता तैयार मिछता ।

वह चाराम से मैत कुर्सी पर बैठ कर खा दिया करता था । इसके अतिरिक्त वह देखता था कि कमरा भी दिया दियाया है और ईश्वर भी बछाते के लिए इच्छा कर से रखा हुआ है । उल्लूक जेत पर जाने के बाद जो इधर उधर के जंगलों में से बछाते की सामग्री दोहरा दोहे दोहे बीच बंदी कर ले जाती । बाँगहुँग इसी बात से काफी लुप्त रहता कि ईश्वर परीक्षने की अब कोई आवश्यकता नहीं रह गई थी ।

इसी प्रकार दोपहर के बाद उल्लूक उठाकर वह जो सबक को और बछ देखी और पशुओं का गिरा हुआ गोबर उठाकर ले जाती । इस गोबर से वह कड़े उपले की चार खेती और एक और घर के बाहर गोबर इकट्ठा कर खाद भी जेत के लिए दबैष्ट मात्रा में तैयार कर लेती । इतना काम तो उसने बिना किसी के बलबुद्दी करना आरम्भ कर दिया था । दिन हुए जाने पर भी वह चाराम नहीं करती बैलों के आने पर बछका चारा तैयार करती और पीने के लिए उनके बर्तनों में पानी भी भर कर रख लेती ।

इतना ही नहीं बल्कि ऐलों को डड से बचान के लिए उधने कड़े बीच के कपड़ों को और घर के डुकड़ों को इकट्ठा करके रात में बैलों को भी उन कपड़ों से डकना शुरू कर दिया । ऐसे ही दिन प्रति दिन वह कोई न कोई काम बराबर करती रहती जिसका मतीका वह हुआ कि घर भी साफ़ और मरा दूरा देखने लगा । ऊपर चास पास की सच्चाई से घर के बृद्ध महोदय की कौत्सी भी डीक होने लगी और अब वह चाराम से डबर डबर बछने छिने लगे जैन से कुछ मोद भी आने लगी और कुछ २ संताप भी होन लगा ।

जगा । उसने अपनी भी की कुदाकी जीन की ओर भरी हुई आवाज से कहा "बस अब रहने दो । अब दिन भी बच चुका, पर जाकर पिताजी को बतायेंगे ।"

वे दोनों घर की ओर चले पड़े—की नियमांनुसार पुरुष के पीछे पीछे ही । कुछ महोदय दरवाजे पर खड़े हुए थे, उन्हें भूख जगी थी और वह बैसजी से बोले पड़े—

"पाने का इतना इन्तजार इस मुकामे में नहीं होता ।" किन्तु बांगलुङ कमरे में जाते २ कहता गया "उसके पैर में बन्धा है ।" बांगलुङ जाहता था कि वह समाचार भी वह उस इन्धीमात्र से वे जैसे वह कहता था कि "आज रात में परिचय की ओर मैंने भीज डाले हैं" किन्तु हम आत्माही से नहीं कह सका । इतने ज़ोर से भी वे शब्द कहते हुए बांगलुङ को देखा जगा मानो कितने ओर से उसने इस समाचार की पीचखा की हो ।

कुछ वे पहिले तो लुरी से जाँचे कमकाई और फिर ओर से ईस पका और वह को चार देखते हुए बोला—"असल तैबार दिक्कत है रही है ।" तु जले मकाम में कुछ महोदय वह का चेहरा नहीं देख सके किन्तु वह बांकी "अब मैं जाता तैबार करती हूँ ।"

"हाँ-हाँ गाना" कुछ महोदय बड़े जात्र से बोले और बरधे की तरह उसके पीछे २ रसोईघर की ओर चले गये । जैसे बरधे की लुरी से वह जाने को जाग पीछे दर के बिन्दु भूख गये वे जेवे ही रसोईघर में जाते ही वह बरधे का उबाल जाने के सामने भूख गए । बांगलुङ अपने कमरे में जाकर बैठ गया ।

अपने शरीर से एक दूसरे शरीर की उपज, अपने ही जून से एक और जीवन ।

जब बांगसुइ की स्त्री के दिव होरे हुए और समय समीप आने लगा तो उसने अपनी स्त्री से कहा,

‘इस समय हमें किसी की सहायता का प्रयत्न करना चाहिये—
कोई स्त्री हो तो अच्छा होगा।’

किन्तु स्त्री ने सिर दिखाकर मना कर दिया। उस समय शाम के जाये के बाद वह बतन साफ कर रही थी। कुछ महोदय अपने बिस्तर पर शयन करने चले गये थे। रात का समय था और वे दोनों थके-थके ही थे, केवल दिव की दली की मिळमिळानी उफोति उनके ऊपर चमक रही थी।

“किसी स्त्री का प्रयत्न नहीं।” अपने विस्मित होकर कहा। बांगसुइ की अपनी स्त्री को इस तरह की बातें सुनने की आदत तो वह नहीं थी क्योंकि अधिकतर तो वह इसी प्रकार सिर दिखा कर या हाथों के इशारे से बात कर लेती थी और चौकती थी तो बहुत कम। अतएव इन बातों को समझने में बांगसुइ को कठिनाई नहीं होती थी। “लेकिन केवल दो घादमियों से घर में उस समय कैसे काम चलेगा।” उसने कहा। “मेरी माँ तो ऐसे समय में गाँव में ही कोई औरत बुला लेती थी। मुझे तो स्वयं इन बातों की कोई जानकारी भी नहीं। क्या तुम्हारे साथ की पुरानी बहिनों में से कोई ऐसी नहीं को या सके।”

यह कहकर जबसर या जब बांगसुइ की स्त्री ने अपने घर वाली—

के बते में कुछ सुना। उसने पति की ओर इस प्रकार झोंलें पोंछकर कुछ गुस्स स देखा, जैसा पहले कभी नहीं देखा था।

“उस घर से कोई नहीं आएगी।” वह चिन्ता उठी।

यह सुनते ही बांगलुङ्ग के मुँह से पाह्य गिर पड़ा और वह दूर-दूर देखने लगा। किन्तु उधर की का बेहरा पर्यापूर्ण फिर शान्ति मग हो गया और वह मेघ पर पड़ी चम्मचें हकट्टी करने लगी, जैसे उसने कुछ कहा ही न हो।

“यह भी कोई बात है।” बांगलुङ्ग ने आश्चर्य से कहा। उसकी स्त्री ने कई उधर नहीं दिया। फिर भी वह प्रतिवादी की भाँति बराबर कहता रहा, “हम दोनों की कोई अनुमति नहीं और बच्चे की पैदाइश की कोई जानकारी नहीं रहते। पिछा की तो तुम्हारे कमरे में कम समय था ही कैम पकते हैं—धीरे धीरे, मेरे आवाही हाथों से कहीं बरबाद पैर में ही न छूट जाए। छूट परिसर के बड़े घर से ही बहुत बहिरों के बच्चे हाते ही रहते हैं, कोई आ सके तो..”

जब तक वह मैत्र पर चम्मचों की रज चुकी थी, उसने पति की ओर देखा और कुछ रुक कर कहा,—

“जब मैं कम घर में गोदी में बसा खेद जाऊँगी तो बच्चे को चप्पड़ें २ कपड़े पहिना कर और चित्रकारी किये हुए जियमें कुछ भगवान भी रखें होंगे ऐसे कपड़ों से सजाकर के जाऊँगी, सुन्दर नूँचे पहिनाऊँगी। मैं भी चप्पड़े २ सादर के कपड़े पहिन कर कम रमाई घर में जाऊँगी जहाँ मैंने इतने दिन काम किया है। और इस तरह कम बड़े कमरे में जहाँ वह दुर्लभा चम्पीस के फटे में सदा की भाँति बैठी होगी जाकर अपने को और अपने बच्चे को सबको दिखवाऊँगी।”

बांगलुङ्ग ने इससे पहिले इतनी बम्बी चौड़ी बात धरती की के मुँह में नहीं सुनी थी। जब इतने बड़-बड़ इतनी सच्चाई के साथ मुँह से निकले सलो पहिले से ही गये हुए हैं और उसकी स्त्री ने सदा

प्रोमम पहिले से ही बना लिया हो। वह भी कितनी बतुर को है, सेतो में काम करते २ ही उसने सारी कार्यवाही सोख की मासूम देवी है। इतने दिन वह बराबर देखा काम कर और बाहर करती रही माली उसके पैर में बच्चे का कोई झिझ ही न हो और अब तो उसने अपने और बच्चे के पहिले के कपड़ों के बारे में भी झिझ कर दिया। बौंगलुङ के पास बास्वत में ऐसे कोई शब्द नहीं रहे जिससे वह अपनी को की सराहना कर सकता। चाकिर अपने पार्श्व की तन्हाइ डीक से घरे हुए वह बोला।

“मैं समझता हूँ तुम्हें कुछ रुपयों की आवश्यकता पड़ेगी।

“बढ़ि आप मुझे तीन बीसी के सिक्के दे सकें तो ” की ने डरते हुए कहा “हैं तो अधिक ही लेकिन मैं एक ऐसी भी व्यवस्था नहीं करूँगा। यह सारा हिस्सा नया चुका ही है।”

बौंगलुङ ने चेन में हाथ डाला। कहा ही तो उसने अपने छेव के ताकत के सरकड़ों का बाजार में बेचा था और उसके पास मांगे हुए सिक्कों से अधिक ही थे। उसने चुपचाप तीन सिक्के निकाल कर मेज पर रख दिये। इसके बाद उसने कुछ हिचकिचाते हुए बीसा सिक्का भी निकाल कर मेज पर रख दिया जिसमें वह आप के रेस्तराँ पर जाकर कुछ दान पर खगला चाहता था, किन्तु इस दर के बारे में कहीं हार ही न था वह बचना भी चाहता था। हमीक्षिप तो वह रुप के गड्ढों से दूर एक ऐसी जगह जाकर अपना खाकी समक बितावा करता था जहाँ एक ऐसी में ही अच्छी २ कहानियाँ सुनने को मिलती थीं।

“तुम वह एक और सिक्का अपने पास रखना” उसने पार्श्व का एक कम भींचते हुए कहा “बच्चे का एक और रेशमी कोट बनवा देना। चाकिर पहिला नया तो है।”

की ने एकदम से वह सिक्का नहीं उठाया किन्तु उसकी आर देखती हुई कुछ सोचकर बीसी जागात्र स बोली।

"यह बहिष्का अवसर है मेरे जीवन में जब जौंदी का सिक्का मेरे हाथ में आया है।" इतना कहते हुए उसने वह सिक्का पृच्छन उठा लिया और बरती से अपने कमरे की ओर चली गई।

बांगलूरु हुआ उड़ाया रहा मैड पर पड़े हुए सिक्कों की ओर देखते हुए सोचने लगा। वह जौंदी तो उसी जमीन से निकलती है जिस पर उसने मीहनत की है इस बच्चापू है और जिस बरती पर उसने अपने को मिटा दिया है। उसे स्वर्ण इसी धरती से जीवन मिला, पत्थरों की एक एक बूट से उसने इस बरती को सींचा और सींच कर इसमें जब उपजाया जिससे यह जौंदी मिली। पहिले जब कभी अपनी मीहनत का पैसा उसने किसी को दिया तो उसे पैसा खगता या माफो अपनी गलती कमाई को वह फेंके दे रहा है। तब भी स्वर्ण पैसा देने में होता था वह वह जब पहिले बार अपनी जी को पैसा देने में नहीं हुआ। वह पैसा बाजार के किसी पृच्छनद्वार बेईमान के हाथ में नहीं पड़ा। अब तो उस पैसे से वह खगा कि कपड़े बनेंगे जो उसी के बच्चे को पहिनाए जावेंगे और उसे एक प्रकार का स्वर्ण व संतोष हुआ।

समय आने पर उपकी जी किसी की सहायता नहीं चाहती थी। एक रात जब शुरुआत हुआ तो बुका था कि वह समय आ गया। वह दिन भर बंधी के साथ एजिडान में काम कर रही थी। गेहूं काट लिया गया था और उस जमीन में बाथलों के जिए पानी भरा जा चुका था। दिन भर की सहायता में जी प्रति बटा सुस्त होती जा रही थी और जब उनके हाथ से हिनिया छूट गया तो बांगलूरु ने एक दम उसकी ओर देखा। एक बने प्रकार का पसीना, एक बने बूट का दर्द उसके चेहरे से चमक रहा था।

"समय आ गया है" वह बोली "अब मैं घर में जाती हूँ जब तक मैं न बुकाऊँ तुम कमरे के अन्दर न आना। सिर्फ सरकाने की एक

बंदी को महीन काट कर मुझे दे जावा ताकि मैं बरखे का भाग काट सकूँ ।”

इतना कहते हुए वह लो वर की ओर इस सुमनता से खल पड़ी जैसे कोई बात ही न हो । बौंगसुह्र बसे देखता ही रह गया और बाहर तापान से एक दरबन्दा बिजान उस महीन काट कर घर की ओर खल गया ।

घर पहुँचने पर पहले देखा कि गरम गरम खाना पैत्र पर लगा हुआ है और कुछ महीनय अपनी मुल को शान्त करने में लगे हुए हैं । बर्द उठते २ ही लो वे भोजन भी तैयार कर दिया था । बौंगसुह्र ने सोचा कि ऐसी ली भी हर बगव और आसानी से नहीं मिलती । घर जब वह कमरे के दरवाजे पर गया और बोला “वह बंदी तैयार है ।”

बौंगसुह्र हताशत करने लगा, इस आशा में कि उसकी ली चन्दर का काम को करेगी । किन्तु उसने कोई उत्तर नहीं दिया । वह दरवाजे तक भाई और दरवाजे की संद में से उसने सरबन्हे की बंदी को ले लिया । वह कुछ थोकी नहीं, किन्तु बौंगसुह्र बर्द के मारे अपनी ली का हाँकना माफ सुन रहा था ।

कुछ महीनय लते हुए बोले “वह ली नहीं लो बंदा हुआ जा रहा है ।” और कहा, “अली से बरखे की कोई तकलीफ न हो अपनी बहुत बख है । मुझे अच्छी तरह बाद है कि जब पछिया गया हुआ था रात भर गुजरने के बाद सुबह कहीं बाहर गया पैदा हुआ । इतने बरखे तुम्हारी माँ ने एक के बाद एक पैदा किये थापद एक नर्जन रहे होते—दोक से खान नहीं—किन्तु एक तुम हो किन्तु रह लके । इसीलिए ली जीरत को बरखे निरन्तर पैदा करते रहने चर्हिये ।” और फिर कुछ रुक कर जैसे बकानक ध्यान हो आया हो वह फिर बोले, “कल इस समय तक मैं एक बरखे का बाबा हो जाऊँगा ।” ऐसा कहते हुए वह लुली के मारे बीडे २ और स हिये लगे ।

किन्तु बाँगलुङ्ग बरतार कमरे के दरवाजे की ओर देखता रहा और रुक नहीं आता। सुनता रहा। इधने में हो गर्म ठांडे पानी की मन्त्र उसे धाँस उस धुँगाँव से वह बहरा उठा। उधर की के कन्दरी ९ बराहने की आवाज भी आने लगी। धन बाँगलुङ्ग का अधिक बर्दास्त नहीं हुआ और अन्दर जाने की दौड़ा कि उसे रोने की आवाज सुनाई दे गई और वह सब कुछ भूल गया।

“क्या कहका है ?” वह वहीं बैठकी से बिस्बाता, इस समय अपनी ओर का उसे कोई पता नहीं रहा। अपने के रोने की आवाज फिर सुनाई दी और उसने फिर बिस्बा कर पूछा, “क्या कहका है ? कम से कम वह तो बता दो, क्या कहका है ?”

और एक आत्मन्त ही सुरमाई हुई बीमी आवाज में उसे सुनाई दिया “कहका है।”

बाँगलुङ्ग वहीं से चला और मैज पर जाकर बैठ गया। किसी शीघ्रता से वह सब काम हो गया। लम्बा मैज पर पड़ा २ कद का ठंडा हो चुका था और वह महोदय वहीं बैच पर सोए पड़े थे। उसने अपनी बिठा की धँकोर कर उठाया।

“कहका पैदा हुआ है” वह एक प्रकार की बीह की सुली में जोर से बोला “तुम जाना क्या गए ? और मैं क्या ?”

वह महोदय एकदम उठ बैठे और उसी प्रकार जोर से बहका मान कर हँसे जैसे सोने से पहिछे हँसे थे।

“हाँ—हाँ—अबश्य ही” वह बोले, जाना—जाना—” कहते हुए वह बड़े और फिर अपने बिस्बे पर हँसते हुए चले गए।

बाँगलुङ्ग वही जागृत ही लेकर आने लगा। उसे बहुत जोर की ध्यान लगी हुई थी और दिखत वह थी कि सुह की उसका कन्दरी नहीं चलता था। लेकिन कमरे में से वह अपनी ओर की रुई मरी आवाज और अपने का नाम सुनता रहा।

एक प्रकार के गर्व से वह बोला, "अब घर में शांति नहीं रहेगी, बरदम और गुन ही रहा होगा।"

जब वह सब कुछ का कुछ का कमरे के दरवाजे की ओर फिर गया। उसकी की वे वही भन्दर बुला दिया। निकले हुए वह की दुगन्ध अब भी कमरे में थी किन्तु सारा सब एक बच्ची के कुंठे में सर दिया था और उसमें उसकी की वे बहुत सारा पानी भी डाल कर कुंठे की बिस्तरे के नीचे सरका दिया था ताकि बांगलुह कुछ न देख सके। बाबू बत्ती बत्ती हुई जो और वह साफ बिस्तो पर खेरी हुई थी और उसके पास पिछा के पुराने पत्रों में छिपता हुआ जैसा कि वहाँ का रिवाज था, बत्ती बत्ती हुआ था।

बांगलुह ने जाकर देखा लेकिन मुँह से कोई शब्द नहीं निकले। वह उसकी हुई भावनाओं से सुझकर बच्चे की देखने लगा। मोख मोख छोटा पैहरा था और फिर पर जाने कबले मुकामम बाक थे। रोना धीरे कर आँटें बन्द किये हुए वह सुपचाव पड़ा था।

उसने की की ओर देखा और की वे उसकी ओर। की की आँटें अब जो दर के मारे मुकी हुई थी और बाक पत्तों से भीगे हुए थे। इसके अतिरिक्त वह जैसा की पैसो को। किन्तु बांगलुह का हृदय उसे देखकर उमड़ आया और पेसी जगा सभी हृदय हृदय दोनों जीवात्माओं के लिए बाहर बिछका था रहा हो।

‘कब मैं गहर बाक था और कुछ भीनी बाक था। तुम मर्त पाकी में बाबूकर वही दिया करता।’

और फिर बच्चे की ओर देखते हुए उसके मुँह से निकल पड़ा “एक प्यारी घर कर बच्चे हमें प्यारीदने होते उनकी काक रह में रह कर गाँव घर में आँटें और बच्चे मालूम हो जायेगा कि हमारे बच्चा हुआ है।

बच्चा पैदा होने के दूसरे ही दिन स्त्री अपने काम पर ब्यापक लग गई घर का काम बजाया। केवल सोठ पर वह बांगलुङ के साथ नहीं गई। बांगलुङ चकेला ही नहीं होपहर तक काम करता रहा। रांप हर बार कपड़े पहिन कर वह लहर गया। वहाँ से एक दो पैनी मांसे पचास रुपये करीबे और उनको खाज रज देने के लिये साथ उवाधने को बचका खाज काम भी करेगा। एक डीकरो में अपने खेजर फिर वह मिठई की दुकान पर गया और खाज चीनी करीबे, उसी के साथ-साथ दूधानदार में एक खाज पैकेट और अपनी और से एक दिना और मुस्कराकर कहने लगा।

“यावद हाज हो के पैदा हुए बच्चे की माँ के लिये ---”

“बहिजा लड़का” बांगलुङ ने बड़े गव से कहा।

“भागवान हो,” दूधानदार ने कुछ उत्तरवादी से कहा और फिर दूसरे जैमिजमेंग ग्राइड की ओर ग्यान देने लगा। पैसा तो किये ही व्यक्तिपों से कितनी ही बार वह कद चुका बा, पायः नित्य ही कियो न कियो घर में बच्चा पैदा होता और वह सब वस्तुमें परोही जाती। किंतु दूधानदार के इन शब्दों ने बांगलुङ की व्योषतःभावित दिवा और वह इतना प्रसन्न हुआ कि वही बगला से बार बार दूधानदार के सामने झुककर ठव वहाँ से बिदा ली। बांगलुङ को पैसा प्रचीठ हो रहा था मानो उसके समान सुनी और भागवान व्यक्ति और कोई नहीं।

पहिछे तो प्रसन्नता हुई किन्तु धीरे धीरे एक प्रकार की बेहशा के बौंगलुङ्ग के बिचारों को घेर लिया। इस जीवन में अधिक भ्रमपथान होना भी ठीक नहीं। इस वायु और पृथ्वी पर ऐसे भी जीव व प्रेत हैं जो मनुष्य के सुख का, विशेषतया गरीब के सुख को नहीं देख सकते। बकाबक वह मामूली को दुःख में डुब गया, वहाँ पूरा बलिदान भी बिकती थी। घर के चारों प्रायियों के नाम से उसने एक-एक मीठी मोखली और भरती माता के मन्दिर में जाकर सिखवाई। इसी मन्दिर में वह अपनी बी के साथ पहिछे भी जा चुका था। आज फिर बकाबक सिद्ध के द्विजे शुभप्राणीय होने को उसने भरती माता का अभिमन्त्रण किया। इस के उपरांत शांति और संतोष के साथ वह घर की ओर रवाना हुआ।

+ + +

कुछ ही दिनों में आत्मा के विपरीत बौंगलुङ्ग की स्त्री भी उसके साथ क्षेत्र पर जाने लगी। कम-कम कुछ दिनों, बहिष्कारों में से गौरी साफ़ किया जा रहा था, वह सब काम पति-पत्नी मिल कर करने लगी। गौरी को इस प्रकार साफ़ करके रखने के बाद फिर उन दोनों ने जमीन काट कर तैयार की और नई कसब की बोने के लिए तैयार किया।

इसी प्रकार बौंगलुङ्ग की स्त्री दिव ९ घर क्षेत्र में काम करती रहती। और बकाबक पुपुपण एक तरह पढ़ा ९ सोता रहता। जब बकाबक रोता तो वह अपना काम छोड़ कर अपने बकाबक कोलकर स्तनों को चूसने के मुँह में रख देती। इस प्रकार जमीन पर सीधा बैठ बोली और गौरी के सूर्य की बिजली भी करने की चेष्टा करती। दोनों का ही रह मिटो के रह के समान भूरा था और दूर से देखने पर पड़ी मासूम हाता था मानो मिट्टी के दो पुच्छ बना दिये गये हों। क्षेत्रों की उड़ी हुई पूर के कण साफ ९ उनके शरीर में छलकते दिखाई देते।

बाढ़ी हो घर में स्त्री के बड़े बड़े सरमैले रंग के स्तनों से बर्फ के समान सफेद दूध को पार वह निकलती जब एक स्तन चूसने के मुँह

में होता तो दूसरे से बराबर दूध डमका पड़ता और वह उसे बहने देती। इस विचार से कि बच्चे के बिसे पयेह से अधिक दूध का बाँप उसके पास है, उसे कोई परबाह नहीं थी। और स्तनों से निकले दूध को बहने देने में भी एक प्रकार की शक्ति अनुभव करती। दिन पर दिन स्तनों में दूध बढ़ता जाता। अभी २ तो वह स्वयं स्तनों को ऊपर उठाकर दूध जमीन पर ही गिरा देती इस बार से कि कपड़े बरतव न हों। बच्चा अपनी माँ के इस बीचन पाव से निरन्तर मोटा ताजा होता गया।

घरि २ सर्दी का मौसम आ गया। इस मौसम के बिसे भी बाँगलुङ्ग परिवार में तैयारी कर रखी थी। इस बार इतनी जल्द हुई थी कि मात्र तीनों कमरों में नहीं समा रहा था। छत के ऊपरी कोनों से नीचे तक प्रत्येक कमरे में चरार्ह के बने बच्चे बड़े गोहूँ और बालकों से भरे पड़े थे। बाँगलुङ्ग और गाँव वालों की भाँति लच्छीझा भी नहीं था और न छत में ही पैसा बढ़ता बाहर बाहर जाने पीने में भी पथ करने की ज़रूरत पड़ती थी, इसीलिए उसे स्नान का कि सस्ते दामों में मात्र न लेव कर कुछ समय के बिसे एक जाने की भी गुनाहवा उसमें थी। अतएव वह मात्र हमने सर्दी के दिनों के बिसे रक बिपाया था। वह धक्की तरह से जाबता था कि नये वर्ष के उपलक्ष में जाग जगता के बिसे मुँह मोंगा दाम देने को तैयार हो जायँगे।

उसके चाचा की प्राण पक्षी से पहिले ही सारा मात्र लेव देना पड़ता था। अभी २ तो मात्र कामने व साध करवे की मुसीबत से बचने के लिए वह बोवे दो दामों में लेव को लेव बाँधता था। इसका कारण एक वह भी था कि उसको स्त्री मूर्ख थी मुख और मोटी और सदैव ही मिझई जाने की शौकीन। शहर से जो अभी वह मंगा अभी वह मंगा की रत बराबर खताये रहती थी। इतर बाँगलुङ्ग की स्त्री उसके बिसे दूध पिता के बिप अपने बिसे और बच्चे के बिसे मूँत तक अपने आप ही बाँधती थी।

बौगलुग के बाबा के हूँ फूँ पर में इस प्रकार बरत्यों के मरकों में काम कभी रखा नहीं दिखाई दिया, किन्तु अपने घर तो कई दिनों की कटीपरी हुई सुधर की रोंग भी सुरक्षित रखी हुई थी, उसको रत्नी ने बगल और ठेक में इन मांस को भकी प्रकार सुरक्षित करके बगल और रोंग रखा था इसके अतिरिक्त दोनों मुर्गियों भी इसी प्रकार सर्पों के बिपु सुरक्षित की हुई रखी थीं। इस प्रकार याने पीने की सभी वस्तुएँ पहले मात्रा में इकट्ठी की हुई थीं।

अठपूष धन और भी अधिक सर्पों बढ़ने पर वे लोग घर में आसाम से बैठ कर पा-बी सकते थे। उस समय एक बच्चा भी बँडने लगा था। बच्चे के जन्म दिवस पर प्रतिमास वह आपस में धाना बीबा करते। बौगलुग ने धामी एक दावत ही थी जो जिसमें प्रायः वे सभी शक्तिशाली हुए भी उसके विरुद्ध की दावत में भी आए थे। जब सभी को बौगलुग ने इस ९ पड़े बोटे इसके अतिरिक्त गोंध के जो लोग उसे बघाई देने आए उन सभी को उसने ही ही पड़े बोटे। हर एक धाकर बच्चे के सुन्दर सुनील व सुगन्धित शरीर को देख कर स्पर्श करता। जब वह बँडने लगा था अठपूष उसे पेट में ले जाकर खिरा देने की आदत बनाया व रह गई थी। दरवाजे पर बैठा बैठा वह सर्पों की वृत्त में लेकता रहता।

सर्पों की मुरक हवा में ऐकों ३ बच्चे शीघ्र बढ़ने लगे जीत पारती में छोटे हुए बीबा भी बैठ गये। जब बौगलुग बरसात का इन्तजार करने लगा। उस दिन जब अचानक वर्षा हुई तो सब लोग घर में बैठे ९ मुर्गियों मनाये लगे और अपनी ककचर्त रॉट से तर कमीन की ओर देखते रहे। बच्चे का हृदय देखते ही बनता था। वह मोह की शृंखला को अपने हाथ में पकड़ने का चेक करता और जब कभी वृद्ध हाथ में आ पड़ती या ईस पड़ता, उसकी ईसी के साथ और लप भी ईनके लगते। एक महोदय को मुर्गी का भी काई दिखाना नहीं था बच्चे की

सुखी में अपने को झुकोठा हुआ वह बोला "पैसा पचना तो कितने ही गाँवों में नहीं होगा और चरने तो अब तक अच्छे न चरें किसी चीज को गौर से देखते ही नहीं ।"

इन दिनों में खेतों में कोई काम न था अतएव सभी किसान इधर उधर घूमते व एक दूसरे के घर जाकर बातचीत चाय पानी में अपना समय बिताते । खेती का काम तो भगवान् वर्षा के रूप में कर ही रहा था । स्त्रियाँ बाबा घर में ही रहतीं, कोई कपड़े खालों को मरम्मत में व्यस्त रहतीं तो कोई घर का और काम संभालतीं, कोई कहीं-कहीं मित्रात्र स्त्रियों नववर्ष की दावों और खाने पीने का सामान खुदाले में खगी रहती ।

किंतु बांगलुङ्ग और उसकी स्त्री को इधर उधर घूमने अपना मिशन करने की प्राप्त न थी । गाँव के और गरीब दूटे फूटे घरों की अपेक्षा इनका घर सपका और भरा पूरा था, किसी से मेहनत खोजने में उन्हें यही घर लगा रहता कि कहीं उनसे लोग उधार न माँगने लग जायें । बचा साख खाने ही बाबा या और किसीके पास इतना पैसा था जो उसके खर्च को पूरा कर सके । अतएव बांगलुङ्ग भी घर में ही रह कर अपने हल फावड़े आदि की देखभाल व मरम्मत में खपा रहता और स्त्री घर के काम काज संभालती रहती । यदि कोई मिट्टी का बर्तन बड़ा इनतजान हुआ फूटा दिगार्ह देता तो वह अन्य स्त्रियों की भाँति उका कर फेंकती नहीं बल्कि गीली मिट्टी गर्म कर बर्तनों में खपा देती । इस तरह उनके बर्तन डीक भी हो जाते व नये दिगार्ह देने लगते ।

इस प्रकार वे दावों एक दूसरे के काम की सराहना करते हुए दिन बिता रहे थे काम काज की बातों के अतिशय चिन्मय हो गये तो वे समय नष्ट नहीं करते थे । कभी २ बात करते तो ऐसी ही "बपा बर्ह कमल के खिले खोज बचा कर रख दिया है ?" या "गेहूँ के दानों

को निकाल कर चारा बेच देंगे" 'इस रोहू का आटा अच्छा होगा' इत्यादि ।

इस बार की फसल में अच्छे पैके निक गये व अहरत की बीमों ज़रीफ़ बीने के बाद भी अच्छी ज़ासी रह्य बच रही । कितने रुपये उसके पास बच रहे वह बांगलुङ्ग केवल अपनी को को ही बताता, अपनी को ही में सारे रुपये खपेटे रखने में उसे उसे डर ही लगा रहता अठण्य लोगों के भावस की सलाह से वे रुपये साबुनानो से रखने का उपाय सोच निकाला और बांगलुङ्ग की को के अपने सोने के कमरे में एक ओर दीवार कोटकर एक गड्ढा बनाया और बांगलुङ्ग ने वह रकम वहीं गड़ कर रख दी व ऊपर से चिनाई करके उस ढक दिया ताकि किसी को कोई शक न रह जाय । हाँ, उनको यह सन्तोष रहा कि उनके पास कुछ रुपया है ।

प्रपु वर्ष के आसमन के साव-साव मौस के प्रत्येक घर में तैयारियाँ हो रही थी। बांगलुह भी शहर बाहर राह-बिरगी कागज कावा और कागज कामन पर कथमीदेवों के आराधना मुक्त बास्य ब्रिक्कनर घपने डक इत्यादि पर बिपकाप, ये कागज सेठ के कावकों पर, बैलों की बीड़ी पर और उन बासियों पर भी, जिसमें वह पावी व दास्य आदि के आया करता था, बिपके। कागज के सुन्दर पूछ बना कर उसने घर के बिवालों पर कटकाप। उसके बाप के मन्दिर के देवों-देवताओं की मूर्तियों के ब्रिजे कागज के छिन्ने व ब्रिबाम बनाये, बांगलुह ने उन बच्चों को मूर्तियों को पहिना कर सदा की भौंति घबरवती, नूपवती मिजगा कर आराधना की। घर में भगवान की मूर्ति के पाप उसने दीपक बजाप।

इसके बाद बांगलुह फिर बाजार गया और खाने पीने की जरूरी सामग्री कावा उसकी छोटे से बाइक के घांटे के बड़े-बड़े केक बनाये—ऐसे केक जो ग्राम बरिबार में बजा करते थे। डिमी व 'केक' में ब्रिबिजे में उसने मीठाओं को लगा दी। मिठाइयों में लगी मीठा हवरी सुन्दर लग रही थी कि बांगलुह ने कहा—'ऐसी सुन्दर चीज तो खाकर मर नही करना चाहिये।

बांगलुह का बुद्धा बाप मेरु पर खनी मिठाइयों का देखकर बच्चों को तरह मुग हो रहा था। उसको देखकर कहने लगा—

“मेरे माँ को बुझाओ, अपने बाबा को भी बुझाओ बच्चों को भी, जरा से खोग मी तो आकर देखें।”

किंतु अपनी समूह दशा में बांगलुङ्ग कुछ सचेत और सावधान रहने लगा था। भूकों को कचरा मिठाइयाँ मिलना ही काफी नहीं है, ऐसा वह सोचने लगा। “नये साल के दिन से पहिले इन मिठाइयों को दिखाना ठुम नहीं। बांगलुङ्ग ने सीप्राग से उत्तर दिया। और उसकी छी आटे को इत्नों से गूबत हुए बोली—

‘यह सब मिठाइयाँ हमारे कामे के लिये नहीं हैं। कुछ तो मेहमानों को बचाई जायेंगी। इस खोग इतने रहस नहीं जो ऐसी मिठाइयाँ लायें। यह सब तो मैंने ग्रांग बराले की मासकिन के लिये बनाई है। नये वर्ष के दूसरे दिन मैं अपने को वहाँ से जाऊँगी और मेह स्वरुप वह मिठाइयाँ भी।’

बांगलुङ्ग इस बात से बहुत प्रसन्न हुआ। ये मिठाइयाँ रिकियाँ और केक तो अचरब उस घर में जायेंगे जिसके बड़े कमरे में एक बार वह अपनी गरीब की दुदया में आकर खड़ा किया गया था, वहीं उसकी जो एक मेहमाल के कम में अपने को मुम्बर बच्चों से सुसज्जित कर अचरब से जायगी।

उस बड़े घर जाने की बात ने नये बप के गौरव और आडम्बर को बक दिया। बांगलुङ्ग अपने उस कोट को ध्यान में रख आ उसकी छी ओखान ने कीमती कपड़ा खपा कर तैयार किया था, अपने आप कहने लगा—

जब मैं उस घर में जाऊँगा तो उसी कोट को पहिन कर जाऊँगा।”

वह सोचकर ही बांगलुङ्ग ने पहिले दिन जब उसके मेहमाल नये वर्ष की बपाइयाँ देते आये तो अपनी ९ मिठाइयाँ दिखाकर हाकरी में रख दीं, वहीं बोल जाने पर वह भी उन्हें दिखाती बसती। बांगलुङ्ग

के सिर को उठमें धिपा जिया और फिर जोर से कहने लगा—

‘कितने अफसोस की बात है कि यह बच्चा भी कड़की है, किसी कोई नहीं चाहेगा येबक के हागों से भरा पड़ा है। मगधान करे यह भर जाय।’

“हाँ, हाँ” उसकी जो ये बात को समझ कर बहरी ले कहा।

इस बोले को करने के बाद, बाँगलुङ्ग ये फिर अपनी भी से पूछा, “क्या तुमने उनकी पैसी गरीबों का कारण पूछा?”

“मुझे रसोइये से बात भीत करने का प्योवा ही अबसर मिला।” वह कहने लगी, “इस घर की हाहत अब गिरती हो जावगी। पाँच ९ जवान बैठे पैसा पानो को तरह बहा रहे हैं और वह भी दूसरे देशों में हर साज गई औरत रख कर पुरानी को घर भेज बैठे हैं। इधर कुब्जा भी घर में ही रहता है, एक न एक रपेकी भी हर साज बहती जाती है और मासकन भी दिन भर कीमती अफोम काँटती रहती है।”

“क्या यह डोक है” बाँगलुङ्ग डरभुक्ता से कहा।

‘और फिर इसी वसन्त में तीसरी कड़की का विवाह होये जाया है” बात को जारी रखती हुई आ-आम बोखो, उसके कपड़े बाँझा से बड़िया साटन के बँगे और ठाँपाई के मराहुर दजिर्नों की पहन उम्हें तबल करेगी। वह चाहती है कि उसके कपड़े बिदेरी लियों के कपड़ों से भी अधिक सुन्दर व कीमती हों।’

‘येवा है तो यह विवाह किसस करेगी?’ बाँगलुङ्ग डरत हुए बोला। इसी रकम के कपड़ों से वह कुछ २ दहक सा गया था।

‘ठाँपाई के मजिस्ट्रेट के दूसरे कपड़े के साथ उसका विवाह होगा।’ और फिर कुछ दक कर बाकी, “बनका अपना अवरण ही कम होता जा रहा होगा क्योंकि मासकन वह जमीन बेच रही है जो बहार कीबारी के बाहर हो कभी हुई है, जहाँ वह हर साज जलजों की अस्त

वैचार करवाते थे, वह जमीन बहुत अच्छी है और पानी भी वहीं बरा रहता है ।”

“जमीन बेच रहे हैं ?” बांगलुङ बोला, “तब तो जबर ही बे बोग गरीब होते जा रहे हैं । जमीन तो अपने निकरतम सम्बन्धी से भी अधिक है, उसमें तो अपना कृण होता है ।”

वह कुछ सोचने लगा और फिर सिर खुलाते हुए स्त्री की ओर देखकर बोला—

“अच्छा ! हम लोग उस जमीन को खरीदेंगे ।”

वे एक दूसरे की ओर देखने लगे । बांगलुङ की आँखों से दर्द चमक रहा था वरुण स्त्री की आँखों से आश्चर्यपूर्ण स्तम्भता ।

“लेकिन जमीन तो..... जमीन तो वह गुनगुनाई ।

“मैं खरीदूँगा ।” वह बरा ओर से बोला, “हाँ के बड़े भाते की जमीन मैं खरीदूँगा ।”

‘लेकिन जमीन बहुत दूर पड़ेगी । कुछ विस्मित होकर ओ-काव बोली, “आचा दिन तो बड़ा पहुँचते र ही क्या जाया करेगा ।”

‘मैं खरीदूँगा ।’ बांगलुङ कुछ तपुक मित्रात्री से बोला, माता उसकी बात काटो जा रही हो ।

“जमीन खरीदना तो अच्छी बात है, वह कुछ दबती हुई बोली, “जमीन खरीदने में पैसा लगाना बससे अच्छा है । जबकि पैसा गाय कर रखा जाय । लेकिन तुम्हारे आचा की जमीन का ठकड़ा ही क्यों न ले दिया जाय ? अपनी जमीन के साथ ही जगा हुआ जो ठकड़ा है, उसे बेचने के लिये तो वह व्याकुल हो रहा है ।”

“वह आचा की जमीन,” बांगलुङ ओर से बोला, “वह तो मैं नहीं खरीदूँगा । बसमें तो कुछ नहीं बगला कीसियों वपों से न तो बसमें कुछ फसल हुई है और न खान् ही पड़ी है । वह जमीन तो खुदे की तरह खरत है । नहीं, नहीं, मैं तो ह्वांग बाको जमीन ही खरीदूँगा ।”

के सिर को उनमें बिपा बिपा और फिर जोर से कड़वे खपा—

“किन्तु अक्सोस की बात है कि यह बच्चा भी बड़की है जिसे कोई नहीं चाहेगा। बेचक के हागों से भरा पड़ा है। भगवान् इसे वह घर लाने।”

“हाँ, हाँ,” उसकी ओर से बात को प्रसन्न कर बहरी से कहा।

इस होने को करने के बाद, बॉगलुड ने फिर अपना को से पूछा, “क्या तुमने उनकी ऐसी गरीबी का कारण पूछा?”

“मुझे रसोइये से बात भीत करने का बीड़ा ही धक्कर मिला।” वह कड़वे लगी “इस घर की हान्धव धन गिरती ही जायगी। पांच २ अनाम बैठे पैसा पानो की तरह बहा रहे हैं और वह भी दूसरे देशों में हर सात नई औरत रख कर पुरानी को घर भेज देते हैं। हथर बुढ़ा भी घर में ही रहता है एक न एक रखवा भी हर सात बचते जाते हैं और माछकिन भी दिन भर कीमती अमीम फॉइलो रहती है।”

“क्या यह ठीक है?” बॉगलुड उत्सुकता से कहा।

“और फिर इसी बसन्त में तीसरी बड़की का विवाह होने वाला है,” बात की जारी रखती हुई धी-आत्म बोली, उसके बड़े में ही काफी बचा बचावा रुपया लब्ध हो जायगा, उसके कपड़े बढ़िया स बढ़िया सादम के बनेंगे और शॉर्टार्ड के मशहूर ब्रिचों की पहचान उन्हें तब तक होगी। वह चाहती है कि उसके कपड़े बिस्फी बियों के कपड़ों से भी अधिक सुन्दर व कीमती हों।

“ऐसा है तो वह विवाह किमती करेगी?” बॉगलुड बरते हुए बोला। इसकी रकम के लक्ष्य से वह कुछ २ लाख सा गया था।

“शॉर्टार्ड के मजिस्ट्रेट के दूसरे बड़े के साथ उसका विवाह होगा।” और फिर कुछ दक कर बोली “उसका रुपया धक्कर ही कम होता जा रहा होगा क्योंकि माछकिन वह जमीन बेच रही है जो जहार बीजारी के बाहर हो जमी हुई है, जहाँ वह हर सात जायकों की धक्कर

तेपार करवाते थे, वह जमीन बहुत अच्छी है और पानी भी नहीं मरा रहता है ।”

“जमीन बेच रहे हैं ?” बांगलुङ्ग बोला, ‘तब तो बहर ही के लोग गरीब होते जा रहे हैं । जमीन तो अपने निश्चरतम सम्बन्धी से भी अधिक है, उसमें तो अपना कूल होता है ।”

वह कुछ सोचने लगा और फिर फिर सुझाते हुए स्त्री की ओर देखकर बोला—

‘अच्छा ! हम लोग उस जमीन को खरीदेंगे ।”

वे एक दूसरे की पार देखने लगे । बांगलुङ्ग की आँखों से हँस चमक रहा था पूर्व स्त्री की आँखों से आश्चर्यपूर्ण स्तम्भता ।

‘‘खेतिज जमीन तो... जमीन तो ’ वह मुग्धगुहार् ।

‘‘मैं खरीदूँगा ।” वह जरा और से बोला, ‘‘हाँ के बड़े पाने की जमीन मैं खरीदूँगा ।’

‘‘खेतिज जमीन बहुत बुर पड़ेगी, ’ कुछ विस्मय होकर जो-बाज बोली, ‘‘आधा दिन तो ५ हाँ पट्टिचटे ५ ही बग लगा करेगा ।”

‘‘मैं खरीदूँगा ।’ बांगलुङ्ग कुछ तुलुक मित्रात्री से बोला, ‘‘मार्ग उसकी बात कामो जा रही हो !

‘‘जमीन खरीदना तो अच्छी बात है, वह कुछ दफती हुई बोली, ‘‘जमीन खरीदने में पैसा खाला उसमें अच्छा है, जबकि पैसा गाढ़ कर रहा जाय । खेतिज तुम्हारे बाबा को जमीन का दुकाना ही नहीं ब के बिना जाय ! अपनी जमीन के साथ ही बगा दुकाना को दुकाना है, बसे बेचने के लिये तो वह ज्यादा हो रहे हैं ।”

‘‘वह बाबा की जमीन ’ बांगलुङ्ग जोर से बोला, ‘‘वह तो मैं नहीं खरीदूँगा, उसमें तो कुछ नहीं बगता, बीसवीं वर्षों से व तो उसमें कुछ फसल हुई है और व लाभ ही नहीं है । वह जमीन तो बूने को तरह मजबूत है । नहीं, नहीं, मैं तो द्वांग नामों जमीन ही खरीदूँगा ।”

“होंग की जमीन” उसके मुँह से ऐसे ही निकला, मानो वह अपनी जमीन खरीद रहा हो। वह अपना खेकड़ा आवाज़ और सीरा करेगा, “मेरे पास अपना है। जो जमीन बेचना चाहते हो उसकी क्या कीमत लगाते हो ?”

और उसकी जो बात समझ गई। वह सोचने लगी कि कालिदास का पति वह जमीन खरीद रहा है जिसके माझिब की परिवार में वह पड़ी और बची हुई है। उसने कहा—

“यही जमीन खरीद ली जाय। बाबूजहाँ पैदा हो सके यही जमीन अच्छी है, पानी भी यहाँ आसानी से मिल जाएगा।” और फिर मन्द २ मुस्कान उसके चेहरे पर खेलने लगी। कुछ देर बाद वह बोली—

“सिद्धसे बर्ष इन्हीं दिनों में मैं इस घर की मालिकी की।”

और वे दोनों इसी प्रकार अपने विचारों में डूबे हुए चले गये।

+ + + +

बांगलुरु के जीवन को जमीन के इस टुकड़े में जिसे उसने खन करीद दिया था, बहुत कुछ बरख दिया। घर में गाड़ी हुई चौड़ी मिथलाने के बावजूद वह हॉग परिवार के माथिक के पत्न बरत्तर की हैसियत से था। तो कमी कमी वह सोचने लगा कि वह कन इसका बापिस आ जाय। बाकिर जैसा जो-काल में कहा था कि जमीन दूर है, पीच मोल से भी अधिक ही दूर होगी और वहाँ जाने में मैं ही काफी समय खय जाना करेगा इस विचार से वह कुछ और भी निराश हो उठता था। फिर उस जमीन का करीदना कुछ अपने सुहृत् से भी नहीं हुआ क्योंकि जब वह वहाँ गया तो माथिक सो रहा था वद्यपि होपहर हो चुका था। वहाँ जाकर जब उसने बार से कहा था, 'माथिक से कहो, मुझे बकरी काम है—इसके पैसे की बात है' तो चौकीदर ने साफ साफ जवाब दिया था —

“संसार का सारा रुपया भी आमाय तो भी उस बड़े शेर को जगाने का साहस मैं नहीं कर सकता। वह अपनी उस गई रखेची के साथ सो रहा है जो अभी तीन दिन हुए आई है। मेरा साहस तो नहीं जो इसे जगा दूँ। मैं अपनी जिदगी से हाथ नहीं धाना चाहता।” और फिर उसने अपनी सूँों पर बल देते हुए कहा था, “वह न समझा कि रुपय के कागज से वह जाग पड़ेगा। जब से वह पैदा हुआ है रुपया धरेद इसकी हथेली के नीचे ही रहा है।”

आलिखित बहुत काम उनके द्वाक़ा द्वारा ही पूरा हुआ जिसने बीच में ही कुछ रुक़म अवरुध हो सका जो हमारे। ऐसे ही सोचते हुए बौगलुह को जगा जैसे चौड़ी के वे लपट जमीन से अधिक प्यारे ने। चौड़ी जमकती तो थी।

किंतु जमीन तो अब उसकी हो चुकी थी। एक दिन वह जमीन को देखने चला गया। किसी को पता नहीं था कि यह जमीन अब उसकी थी। शहर की बहारबाड़ीवाली से खरी जमीन के इस टुकड़े पर वह बकेला ही बूम रहा था। उसने अपनी तरह जमीन को बापा, तीन सौ क़दम ज़मीन और एक सौ बीस क़दम चौड़ा टुकड़ा था। उसको सीमा पर ज पत्थर होंगे के नाम से ही अब तक उसे हुए थे। और इन पत्थरों को तो हटवा कर वह अपने नाम के पत्थर खड़ा देगा लेकिन अभी नहीं। वह नहीं चाहता था कि लोगों को मालूम हो जाए कि अब वह एक जमीन आदमी है जो बापा और दबदबा हो जाने पर वह यह काम करेगा। तब उसे देखी कोई बरबाद भी नहीं रहेगी। फिर जमीन को धीरे धीरे हुए उसने सोचा—

“असल में वह जमीन कोई कीमत नहीं रखती, किंतु मेरे लिए वह ज़रा सी जमीन बहुत कुछ है।”

यह साबने के बाद उसे अपने ऊपर बड़ी रज़ामि हुई। इस ज़रा सी जमीन को वह बहुत कुछ समझता है लेकिन अब उसने अन्य द्वाक़ा के सामने इसे। दिष्ट थे तो उसने बापरबाड़ी से कहा था—

“वह दबवा उस लड़के माक़दिल की ज़मीन को कुछ दिन ली जायेगी ही।”

जो अन्तर उसके और होंगे परिवार के बीच उसे जान पड़ा वह बहुत बड़ा था। एक प्रकार के बीच से उसने फिर यह दृष्टि बिखर दिया कि इसी जमीन को वह चौड़ी से भर देगा और वह इसी प्रकार होंगे की सारी जमीन खरीदता बका जायेगा तभी वह अन्तर मिट सकेगा।

यस्य के आग्राम से दिन अब फिर बढ़े हो गए । वह अपनी खमीर में पूरी जगज के साथ जुट गया । बसका बार बच्चे को देखता रहता और भी बसक साथ जब पर काम में लगी रहती । खेत में काम करते हुए एक दिन थकावत उसकी निगाह अपनी को पर पड़ी और वह ताड़ गया कि पेट में बच्चा फिर है । उसे वह अच्छा नहीं लगा कि प्रसन्न करने के समय वह काम करने लायक नहीं रहेगी ।

“तो अब की बार फिर तुम्हें पड़ो दिन तुम्हें”

“अब ऐसी तकलीफ नहीं होगी, वह तो पहिले बच्चे के समय ही तकलीफ भविष्य होती है ।” वह तबक कर बोली ।

इसके बाद बच्चे के सम्बन्ध में फिर कोई बात नहीं हुई । की का पेट बढ़ता गया और आकर वह दिन था गया जब वह सुबहाप घर में सुप्त गई । उस दिन दोपहर को भी कामों के लिए वह घर नहीं गया क्योंकि चावल कटा हुआ बड़ा था, उसे समेटना था और बाक गरम ९ कर बर्षों की घोषणा कर रहे थे । लेकिन दिन क्षिप्त हो बहिले ही की सी वहाँ पहुँच गई, उसका शरीर बड़ा हुआ था और चेहरा शांत था । बौगलुङ्ग कहना चाहता था “आज के दिन काफ़ी मेहनत हो गई, अब आँखों बिस्तर पर आराम करो किन्तु उसका शरीर स्वर्ण हुला थाक गया कि उसने सोचा कि उसकी बकाव की के बच्चा पैदा करने की बकाव के बराबर ही हो चुकी है इसलिए निर्दोष को अंतिम रुप रह गया । फिर हींसवा बजाते हुए बीच में बीसा ।

“कड़का है वा सड़की ?”

“वह दूसरा कड़का है” की ने शांत स्वभाव से कहा ।

इसके बाद आपस में कोई बातचीत नहीं हुई, किन्तु बौगलुङ्ग प्रसन्न था और हृद्य प्रसन्नता से उसे बकाव का जोर कम मात्राम पढ़ने लगा । देर रात तक चौद के प्रकाश में काम करते रहने के बाद वे दोनों घर चले गए ।

जाने के बाद जब वह अपने दिन भर के लये हुए शरीर को ढकने वाली व चीं चुका और चाप का एक प्लाका पी चुका तो बौगसुह अपने दूसरे कड़के को देखने चम्कर गया। लामा केने के बाद आ-जान बिस्तरे पर डेरी हुई पी और बच्चा उसके सहारे से पड़ा हुआ था—यह बच्चा पहिले बच्चे की तरह मोटा लाला तो नहीं था किन्तु फिर भी देखने में अच्छा लगता था। बौगसुह ने उसे देखा और एक प्रकार से सन्तुष्ट हो कर फिर अपने कमरे में चला गया। लोचने लगा कि इस प्रकार हर सात कड़का पैदा होता रहेगा तो जाल रगे हुए चट्टे बरते १ मुसीबत हो जायगी। पहिले बच्चे के लिए तो यह सब ठीक था। वह अपने पिता की तरह देखकर बोला—

“अब एक बच्चा और हो जाने से बड़े बच्चे को चापके बिस्तरे पर सुखाना पड़ेगा।”

बुद्ध महाशय प्रसन्न हो गए। बहुत दिनों से उनकी यह इच्छा थी कि बच्चा उनके साथ लीकर बुझने की गली हुई इड्डियों को कुछ गर्मी पहुँचाये।

इस बार जसस और चीं अच्छी हुई। बौगसुह ने प्रत्यक्ष देख कर चाक्री अपना इकट्ठा कर लिया और पहिले की भाँति दीवार में गल कर रक्त भी छिका। उसकी अपनी जमीन की पैदावार से हुगमी चापकों की पैदावार कम जमीन से हुई थी उसने छूँग से लीबी थी। अब एक प्राक सनो को बटा चला गया था कि वह जमोन अब बौपसुह की है। बौगसुह को गाँव का सरपंच बनाने की चर्चा गाँव से चल पड़ी थी।



अब जैसा कि उसे डर था बांगलुङ्ग का बाबा उसके धिये कुछ-कुछो हा गया। अपने पिता के छोटे भाई को पूरा अधिकार था कि वह परिवार सहित बांगलुङ्ग पर निर्भर रहे। यद्यपि अब तक बांगलुङ्ग और उसके पिता ने गरीबी के दिन कटे इन्होंने किसी प्रकार की सहायता नहीं की केवल अपनी की चीर सातों बच्चों को ही लिखाते रहे। उनके परिवार में से काम कोई नहीं कर सका। बाबा घर को मर्यादा करने से दूर ही रहती और बच्चे तो अपने मुँह की गूदक भी नहीं चुका पाते थे। बच्चियाँ बढ़ा-होगई भी और विवाह के योग्य भी लेकिन गाँव में इधर-उधर फिरा करती थीं। कसो २ हो उन्हें आदमियों से बातचीत करते भी देखा गया था। इन बातों को बांगलुङ्ग अपने परिवार के लिए कर्तव्य समझता था। ऐसे ही एक दिन अब उसने बाबा की बड़ी बच्ची को फिरते हुए देखा तो उससे न रहा गया। सीधा वह उसके घर पहुँच कर बाबा का लरी लरी सुनाते हुए बोला—

अब इस बच्ची से कीन विवाह करेगा जो हर एक आदमी से बात करती फिरती है। इधर तीन चार वर्ष से वह विवाह के योग्य है और फिर भी ब्रूमती रहती है। आज ही मैंने उसे गाँव के एक पुद्ग से हाथ में हाथ बंधे बात करते हुए देखा है।

बाबा की ध्यान लूट काम करती थी। बांगलुङ्ग पर पूरी तरह बरस पड़ी।

“ठीक है उसके विवाह का और इहेज का एकां कीम देना । जिसके पास बनेष्ट भूमि है और उसका उपयोग करना जानते हैं और जो पैसा इकट्ठा कर करके और भूमि खरीदते रहते हैं उनके लिये बाँटे बनाना सम्मान है लेकिन तुम्हारे बाबा तो धारम से ही भाग्यहीन हैं । निर्दोष होते हुए भी उनका भाग्य बुरा है । भगवान की देवी ही इच्छा है । जहाँ और लोग अपना नाम पैदा करते हैं वहाँ उनका बीज भूमि में ही निर्जीव हो जाता है ।”

इस प्रकार कहते हुए बाबा और बार से रोये मरी पृथ्वी धरती सिर के बाह बाँध बाँध कर फेंकने लगी । फिर बोली—

“दुर्भाग्य का होना भी एक बात है जो तुम नहीं समझ सकते । जब कि औरों की भूमि में अच्छा बावक बार गेहूँ उत्पन्न होता है वह हमारी भूमि में घास ही होकर रह जाती है । जब औरों के मकान सड़ते बरस तक पड़े रहते हैं, तो हमारे मकान की जमीन तक हिल पड़ती है । जहाँ औरों के पुत्र उत्पन्न होते जाते हैं वहाँ मेरे पुत्रियाँ ही होंगी । ई—बाह रे दुर्भाग्य !

वह इतनी बातों से बिछाई कि पृथ्वी को खिन्न अपने अपने घरों में बाहर निकल आई और आकर वहाँ खड़ी हो गई । अस्तु बौगलुङ्ग इसी प्रकार रुक गया रहा उस को कहना था वह कह चुका था फिर बोली—

“फिर भी यह उचित नहीं कि मैं अपने बड़ों की सीग हूँ किन्तु इतना अवश्य कहूँगा कि कदली जल तब कुमारी रहे तभी उसका विवाह कर देना चाहिए, बरना क्या किसी ने कहा पैसा भी देना है कि गड़कों पर फिरने वाली मुनिबा अपने न देती हो ?”

इस प्रकार साहब १ बाग बाँके यह सीबा अपने घर चला गया और बाबा की जमीन साहब राने बिछावते छोड़ गया । अब जब कि वह प्रति वष होंग विवाह की गई १ भूमि खरीदने की तैयारी में लगा था

घौर उल में बढ़ते हुए खड़कों के भविष्य के बिजे कुछ जमीन कापवाइ करीब कर रकता जाइता था, तो उसे अपने चाचा के परिवार की दस्ता हाथव को देखकर, बड़ा गुस्सा होता ।

दूसरे दिन जब वह अपने खेत पर काम कर रहा था तो उसका चाचा वहीं आया । उस समय भीखान वहीं नहीं थी दूसरे बरसे होने के बाद उस महीने हो चले थे और अब तीसरी सताव होने वाली थी । इस बार उसका तबियत ठीक नहीं रहने के कारण उसका खेत में आना नहीं होता था अतएव बाँगलुङ्ग अकेला ही काम कर रहा था । बाँगलुङ्ग भाव व्योक्ता रहा और चाचा वहीं पास में खुरबाव बड़े रहे । आगिर बाँगलुङ्ग कुछ ईर्ष्या से चाचा—

‘माफ़ करना चाचाजी आपकी देख कर भी मैं बराबर काम में लग रहा हूँ । वह फखिर्वाँ आप जानते ही हैं वो ही और तीन तीन बार बोईं टांठी हैं । आपका तो वह काम परत हो गया होगा । मैं काम में बहुत सुस्त हूँ—गरीब दिवान हूँ—काम से कमो समय ही नहीं मिलता वो बोका बहुत आराम कर सई ।’

उसका चाचा बाँगलुङ्ग के बख्त को समझ तो गया किन्तु शांति से बोला—

‘मैं तो भाग्यहीन हूँ । इस रूप पछोस बीज दामने पर कहीं एक पौध उठो है । अपने ग्राह के बिजे भी सामान करीबना पड़गा ।’ ऐसा कह कर अपने एक बम्बो सौंभ छो ।

बाँगलुङ्ग ने अपना हृदय और कड़ा कर दिया । वह समझ गया था कि चाचा कुछ दबकने चार हैं अतएव खुरबाव रहा । आगिर चाचा ने ही बात आरम्भ की—

‘पर मैं जो बातें तुमने मेरी बड़ी खड़की के सम्बन्ध में कही हैं मुझे बगईं गईं हैं । तुम अपनी उग्र के हिमाय से जुझिमान हो और जो कुछ तुमने कहा है सच है । हमका विचार हो ही जाना चाहिए । इस

समय उसकी अपस्था पन्द्रह वर्ष की है, इस उम्र में तो लड़कियों के बच्चे होने आरम्भ हो जाते हैं। मुझको बराबर पढ़ी डर लगा रहता है कि कहीं किसी आचारा व्यक्ति के साथ पैंसकर वह हमारे सम्मानीय कुटुम्ब को कष्टक न लगा दे।'

बांगलुरु में कुशाकी उठाकर एक घोर रज हो। वह साफ-साफ कहना चाहता था कि ऐसा ही है तो अपनी लड़कियों को घर में क्यों नहीं रकते। घर के अन्दर वह सफाई से क्यों नहीं रहते और घर के काम काम में ही समय क्यों नहीं बिताती ?

किन्तु ऐसी बातें अपने से नहीं से। नहीं कही जातीं इसलिये बांगलुरु चुप ही रहा।

"यदि मेरा भाग्य अच्छा होता," चाचा थोके रहे—“तो घर में ऐसा ही हो जाती जैसे तुम्हारे पिता की भी था जैसी तुम्हारी माँ है। वह जेल के काम में भी सहारा देती और लड़के को पैदा करती। किन्तु मेरी माँ तो पढ़ी २ मोटी हो रही है बराबर लड़कियों ही पैदा की है उसने जैसे जैसे एक लड़का हुआ वह भी इतना आकांक्षी है कि उसे भी लड़की कहना ही डीक होगा। यदि वे सब ऐसे न होते तो मैं भी उतना ही जाता दोता और खुशहाल होता जैसे कि तुम हो। मैं उस दृष्टा में स्वयं तुम्हारी लड़कियों के विवाह करता और तुम्हारे लड़के का काम दिखावे में अपनी कमानत भी देता, तुम्हारे मकान को मरम्मत को आवश्यकता होती तो सहारा देता, मकान वह कि हर मकान स तुम्हारी तुम्हारे बच्चों की व तुम्हारे पिता की ऐनमात्र मैं स्वयं करता। आखिर हम दोनों में एक ही तो एक हो रहा है।"

बांगलुरु ने भीरे स उत्तर दिया।

आप जानते हैं मैं कोई अमीर आदमी नहीं हूँ। घर में पौंच लोग गाने वाले हैं, पिता मर चुके हैं उनसे कुछ काम होता नहीं किन्तु जाने की तो चाहिए ही। इसके अतिरिक्त एक बच्चा और होने वाला,

है, कदाचित् इस समय एक पैदा भी हो गया हो । '

बाबा बुकदम बोले—“तुम जमीर हो, तुम्हीं के तो ग्राहों के बड़े बराने की जमीन पर जमीन करोड़ी है, भगवान् जैसे कितनी मँहगी खरीदी होगी । क्या गाँव में भीर भी कोई पैसा है जो यह सब कर सकता हो । '

इतना सुनते ही बागलुङ्ग को गुस्सा बढ़ आया और वह बाबा की ओर चिल्लाकर बोला—

“अदि मेरे पास कुछ दखना है तो वह इच्छिये कि मैं स्वयं मेहनत करता हूँ मेरी भी मेहनत करती है । चारों की तरह हम बर पर गण्य नहीं होंगे, तुम नहीं देखते और बच्चों के प्रति जापरवाही नहीं करते ।

वह सुनकर बाबा के मुँहसे हूप पैदा हो खूब दौड़ पया अपने भतीजे की ओर दौड़ कर उसके दोनों गालों पर जोर से चोरे सारते हुए कहा—

“तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम अपने बाबा से पैसी बातें कहो । क्या नहीं तुम्हारा खजाना है ? क्या तुम्हारा कोई मित्रोठ नहीं ? क्या तुमने यह नहीं सीखा कि अपने से बड़ों के साथ आदर भीर बढ़ा से बस की जाती है । ”

बागलुङ्ग जम्हर ही जम्हर कोप से घुटा जा रहा था किन्तु साप-साप चबबे कमर का भी उसे आभास था इच्छिये चुपचाप कहा रहा ।

गुस्से से चिल्लाते हुए बाबा कहते गए—‘मैं सारे गाँव में तुम्हारी बातें कहूँगा जब तुमने मेरे मध्यम पर जाकर मेरी ही कड़वी के करिब पर आबात किया और आज तुमने मेरे साथ इस बुरी तरह से बर्ताव किया है । मेरी कड़वियों सब करान हो जाने केदिन मैं सबसे भी पछो बातें सुनना पसन्द नहीं करूँगा ।’ वह आर ओर से कहते गये—“मैं सारा गाँव में कहूँगा—सारे गाँव में कहूँगा ।” आकर विषय होकर

बांगलुङ बोला—“मुझमें चाहते क्या हैं आप ?” बांगलुङ ने सीधा अगर सारे बाँव में घर की कोई बात खैरती है तो तुरी बात है। बाबा के परिवार और उसके परिवार का खून तो एक ही है।

इतना सुनते ही बाबा का गुस्सा शांत हो गया और वह बाँव लुङ का हाथ सहकाते हुए बोला—“मैं तुम्हें जानता हूँ तुम धरम रखते हो—तुम तो मेरे बेटे हो। बेटा अगर भी—इस बाँवों के बिस्के मुझे दे सको भी मैं अपनी लक्ष्मी के विवाह की बातचीत बचाऊँ। तुम डीक तो कहते हो कि लक्ष्मी के विवाह का समय आ गया है।

बांगलुङ अपनी कुत्ताओं को एक बार मिसकाता हुआ बोला—“जब पर बाबाएँ हमारा पैसा हर जगह नहीं बिखेर फिरता हूँ।” और वह आगे बढ़ता गया विचारों में वह खुशी हो रहा था कि उसकी गान्धी कमाई के सिक्के अब रात होते ९ छप्प में खगा दिये जायेंगे।

दोनों बरखों को जो घर में लेख रहे थे एक तरफ़ इराता हुआ वह सीधा चन्द्र अपने कमरे में गया गया और बाबा अब बरखों के साथ निराला करने लगे। बांगलुङ ने बरखों की ओर कार्ट्र पाल नहीं दिया। बाहर की रोशनी से अब वह बम्बू कमरे में गया तो उसे यहाँ अभेद्य खगा और उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। केवल पैर से गोदा ९ मकाश आ रहा था। बिगु बरखक उसे ठाँव गूल की गन्ध आई। वह समझ गया, बोला— वह क्या ? क्या तुम्हारा समय आ गया।”

अपनी पत्नी को बहुत धोमा आपात्र में उसने सुना—“वह भी हो ही गया अब की बार तो सचड़ी है।

बांगलुङ गया का लदा रह गया। उस कुछ बरखगुनी मान्यम रही। उसके बाबा का घर लक्ष्मी के ही कारण बिगड़ रहा था। अब उसके घर में मो एक लक्ष्मी पैदा हो गई।

दिया कुछ बड़े हुए वह सीधा दीवात्र की ओर जाकर कमरात्र से बाँवो मिही निदात्र कर बाँवो के सिक्के निदात्रये खगा। एक एक

करके उसने भी एक गिने ।

“यह क्यों विकसित रहे हो ?” की वे वफावत जवाबी में ही
पड़ा ।

“अब बहरी सुक भाषा को उभा देवे पद रहे हि।” असवे
अबाव दिवा ।

उसकी खो बै बहिषे वो कुछ नहीं कहा किन्तु फिर बोली—

पह न कहो कि ब्याप दे रहे हो। इस घर में ब्याप देना कुछ मामी नहीं रकता बल्कि यह कहना उचित होगा कि बरपा केका ना रहा है।”

वह तो मैं तो जानता हूँ। बोधबुद्ध कुछ बखारू से बोझ—
 अपना देना देना खाग रहा है जैसे शरीर का कार्य दुश्का काट कर देना
 पड़ रहा हो, केवल इसलिये कि हमारा बुद्धत्व एक ही है और ज्ञान
 एक ही सब के ई।'

इसके बाद वह गया और बाबा के हाथ में रख कर सीपा
अबने लठ पर चढ़ा गया और वहाँ जाकर काम में लगा दिया गया मानो
भूमि का काद कर रहा होता । उस समय निरन्तर उसे कपड़ों का हा
विचार रहा । वह उसकी कड़ी में हल की कलाई भी था उसने और
मनोव रसीदने के लिये रहा छोड़ी थी ।

काम करते २ जब काम हो गई तो उसका जोष कुछ शीत हुआ और घर जाकर बाबा वाले का ध्यान आया, तभी उसे उस नये जोष का भी ध्यान आया जिसमें धमी २ घर में अग्न्य शिवा था उसे लगा कि उसके घर में भी लक्ष्मियों का पदार्पण आरम्भ हो गया— लक्ष्मियों को माँ-बाप को बसो बहों रखी जिसको हमारे घर के लिये ही पाक पोसकर कहा किया जाता है । धनमे बाबा पर आये हुए भाप के बराबर दिवसों की माँ-बाप का सुद भी बहों देखा जाता था ।

अपनी खींची हुई घास के गट्टर की ओर देखते २ वह तिरछा से भर गया । अब तो अगली फसल तक ही कुछ रुपये उसके पास इकट्ठे हो पाएंगे । अबर बाबाजी की ओर से कौनों का मुँह बाहर सिर के ऊपर भँकाने लगा, वह उनकी ओर देखने लगा । कौनों के मुँह ने उसके घर को चारों तरफ के पेड़ों पर बैठ कर पैर बिना कीर ओर मोर से चौक-चौक करने लगे । वह उन्हें अकाल के दिने ऊपर हीड़ा, वह कौनों की ओर करते हुए वहाँ से उड़ गया ।

वह ओर से कराह उठा । वह बदशकुन की निशाना थी ।



‘एक बार यदि मनुष्य देवी हृद्या से संबंधित हो जाय तो फिर कोई देवता उसकी आर कृपा नहीं करते’ बांगसुद्ध को कुछ ऐसा आभास आपसे प्राप्त होने लगा। प्रीत्य के आरम्भ में ही सर्वत्र की भौति बर्षा के भी अपना एक बदल दिया। भूत की चमक से दिन पर दिन बीछते चले गये किन्तु बर्षा न हुई। प्रातः होते ही भूत चमक उठती और रातों-रात बिना बादल के आकाश में तारों से आच्छादित होती जाती।

खेतों की जिस जमीन को बांगसुद्ध ने कभी मेहनत से जोता था वह अचानक धर्मी से कृपा करने लगी और जो कुछ पीछे उगा था वे वे सुखस गये। आकाश की उदाय भी एक गई। एक कम्बै बॉस पर दोनों ओर मारी वाकिर्यों करकाए वह पहिले गैट्टे की पौद को पानी देता और फिर आकाश के सेत को सींचता। इसी प्रकार मेहनत करते २ सारे शरीर में बाँके पड़ गए, किन्तु बर्षा न हुई।

आखिर ताबाब भी सुकने लगे और मिट्टी कम गई, कुप का पानी भी इल्ला नीचे जाने लगा कि बांगसुद्ध ने साबा—

“यदि बच्चों और बूढ़े पिता के लिए पानी रखना है तो पौधों को सुला रहने देना पड़ेगा।”

शेव से और फिर तिमिबा कर, अरुने मरन का उत्तर भी बॉस सुद्ध अपने आप देत हुए बाबा—

‘बढ़ि फसल के पौधों को सूखा जोड़ दिया तो सब गूप्ते ही मरते’ वास्तव में सारी प्राणियों के जीवन का आधार वह पृथ्वी ही तो है।

जमीन कम बढ़ टुकड़ा हो जा जाँग के सफ़ाई के चारों ओर पाओर जिसे बौंगलुङ ने खरोद किया था, कुछ कामयाब साबित हुआ क्योंकि उसने सारी जमीन जोड़ कर इसी टुकड़े को पारिश को कमो से अपने कंधों पर बाँधियों हो को कर पाओ दिया। अब इस टुकड़े की फसल पूरी हो गई तो बौंगलुङ ने अपने यहाँ पैदा हुए चबात्र को उसी समय बेच दिया। इस रकम से वह और जमीन खरीदना चाहता था, घटपट शीघ्रता से इबाँग के घर गया और दुकाब की बीब में रख कर बोझा—

“सुके घदमी जमीन के बराबर बाधा डुकड़ा और बाँधिये !

इधर उधर से बौंगलुङ के यह सुन ही रण्य था कि इसी परि वार में गरीबी का राज्य प्रारम्भ हो चुका है और इस वर्ष तो दूरा बहुत ही तराब रही है। इस बुढ़िया को कितने ही दिनों से घड़ीम की पूरी सुराह भी नहीं भिज सकी है और कितनी ही बात अपने घाँसियों की बुझाकर अपने बार-बार मरबाद से पूछा है—

“कहा अपनी और जमीन बिछने के लिये बाओ नहीं बची है।”

बुढ़ मासिक के एक और रखवो की रख किया था, वह जबकी उछी की रखो हुई पाँही की खड़की की और हमका बिबाह भी वर क मौकरी में से एक के साथ हो चुका था, किनु मासिक की रिपासा हम खड़की के साथ पूरी नहीं हो पाई थी। अब उसकी उग्र मोछह बप की थी और जवानी का पूरा उमरा था। मासिक जितना बड़ा होता जाता था, उसकी ही उसकी इच्छा जवान और कम उग्र की खड़कियों के साथ पैरा करने के लिए तीव्र होती जाती थी। जिस प्रकार बुढ़िया को घड़ीम की जग थी उसी प्रकार मासिक काम-बापना शीघ्र करने के लक्ष्य में

अपनाता जाता था। सम्झाये स भी उसकी समझ में वह बात नहीं आती थी कि इस प्रकार पैरा करने के लिए अब दरवाजा नहीं रह गया था और रोज रोज नई-नई कपड़ों के काओं के 'हमर रिंग' तथा हाथ के लिए सोने के आभूषणों के लिए अब कोई रकम नहीं रह गई थी। उसने अभी तक अपनी जिन्दगी में वह नहीं सुना था कि "रुपया नहीं है" और न वह सुनने की उसमें बरबसत ही थी।

अबसे माँ बाप के ऐसे बच्चों को देख कर बड़के लोग भी समझते कि उनकी जिन्दगी के लिए काफी रकम मौजूद है और इसीलिए रिवाजत क मैनेजर को बुला बुला कर हर तरह से रुपया पैकते रहते थे। बेचारे मैनेजर की पोशाकी बढ़ती हो जाती थी। जिन चाराम से मैनेजर साहब अपनी जिन्दगी बसर कर रहे थे, उसमें भी पकड़ पड़ चुका था। इन परेशानियों और फिक्रों के कारण वह भी मूछने लगे थे।

बेचताओं की हूया इस परिवार से उठ चुकी थी। हूयांग परिवार की रिवाजत की किसी जमीन में कोई पैरावार बर्षा के अमाल से नहीं हो पाई थी। इस हाजत में जब बाँगलुज मैनेजर के पास वह कइते हुए पहुँचा कि "मेरे पास रुपया है" तो ऐसा जगा मानो वह कितने ही दिन के मूछे से वह कह रहा हो कि "मेरे पास जाना है।"

मैनेजर कोई हुंकार नहीं कर सका। जहाँ पड़े इसी प्रकार की परीद करोकत में कितने ही दिन बग जाते थे, वहाँ आज कोई समय नहीं लगा। एक हाथ से रुपया दूसरे हाथ में गवा कपड़ों पर हस्त-प्रत होकर मुहर लगी और जमीन बाँगलुज की हो गई।

इस बार फिर बाँगलुज ने कितना रुपया दिया वह गिनने की कशिश नहीं की वह उसकी गाड़ी कमाई का रुपया था जो उसने अपने पत्न को पसीने की तरह बहा कर इकट्ठा किया था। रुपया बिना गिने ही दे दिया गया क्योंकि वह जमीन पारीदने की वह हाथ बुका था। वह नई जमीन पहिले वाली से दुगुनी थी और अधिक उपजाऊ

भी । किन्तु बांगलुङ के खिये जमीन के उपजाऊ होने की बात इतनी बड़ी नहीं थी किन्तु भी कि यह बात कि यह जमीन एक बड़े रईम आदमी से खरीदी गई है । इस बार यह बात उसने किसी को नहीं बताई था बात को भी नहीं ।

X

X

X

महीने पर महीने बोलते चले गये किन्तु वर्षा न हुई । पतझड़ आने लगा और तब आकाश में हजर उजर बौंटे २ बादलों के टुकड़े दिखाई दिये । इन्हीं बादलों की ओर गाँव वाले देखते रहते । कोई कहता कि इस टुकड़े में बानी है कोई कहता अब टुकड़े में और हवने ही में बाँवों के भकप्येरी से बादल इस प्रकार उड़े हुए चले आते, जैसे प्याहू जगाते हुए पूछ उठती चली जाती है । आकाश फिर सूना बन सूना रह जाता । प्राण होते ही सुप्त जमक उठता तथा रात में अन्धमा भी इसी प्रकार अपनी जमक दिखा कर अस्त हो जाता ।

किन्तु कबो मेरु के परिधाम स्वर्ण बांगलुङ के टीलों में अचर्य भोका बहुत नाच पैदा हुआ । सेम और मटर की भी पानी बहुत जमक हुई । लैठ से इस पैदावार को समेत में बांगलुङ में अचर्य दोनों खड़कों को भी जगा दिया । बहुत ही सफाई और हारवारी से कसक बोनी जाती लगी । मटर और सेम की फेरी हुई बैलों का अब बांगलुङ पट और फेकने लगा, तो उसकी भी बोखी—

इन्हें जगाकर यह नहीं किया जायगा । मुझे पता है जब मैं बच्ची को तब बांगलुङ में इसी प्रकार अकाश के कणक हो पाए थे । तब इन्हीं सूनी हुई बैलों को हमने प्याया था । गाने में वे पास से अधिक स्वादिष्ट होती हैं ।”

इतना सुन कर सब कुछ रैर के बिग्न हुए हो गए, अकाश के अकाश तो स्वरहवा दिखाई देने लगे थे और हमका कर सभी समझते थे, केवल छोटी बच्ची को पैसा कोई दर नहीं था । उसके दिव ता भी

के स्तनों में छात्री काफ़ी दूध था। दूध पिछाले पिछाले ओ-खान बोली,
 “पी ले जब तक बोझ बहुत दूध भी रहे—पो ठी जा” मन्ना पूरा अभिष्ट
 नहीं हो पाया था—सोखान फिर बच्चे से ओ और बसके स्तन सूत
 २.६६ ।

इधर कभी कोई बांगलुह दे पूछ बैठता “अब की बार काका
 पीना कैसे हो रहा है ?” तो वह जवाब देता, “मुझे मायूस नहीं—कुछ
 इधर उधर का इकट्ठा किया हुआ अनाज काम में आ रहा है।”

किन्तु गाँव में कोई व्यक्ति और किसी से इस प्रकार का प्रयत्न
 नहीं करता, कोई वह नहीं पूछता, “क्या खा रहे हो ? कैसे खा रहे
 हो ?” स्वको अपनी ही किच रहती कि “आज हम क्या खावेंगे ?
 माँ बाप कहते — “आज हम बच्चों को क्या खिलायेंगे ?”

बांगलुह दे अपने बैल की देखभाल भी की, जब ठण वह कर
 सका। जब तक इधर उधर से रखा हुआ चारा बाँटो रहा, बड़े खिलाता
 रहा। जब चारा खत्म हो गया तो पैरों से पत्तियों तोड़कर खिलाता
 रहा, किन्तु सर्दी का मौसम आ जाने से पैरों में ओ पत्तियाँ बाँटो न
 रही। जमीन में हल खडाना ही नहीं आ सकता था, बीज डालने से
 जमीन में हो सूख जाते थे बीज भी सते जाने का लुके थे। जब कुछ न
 बचा तो उनमें बैल को इधर से उधर चरने के लिए छोड़ दिया। रस्ती
 से बाँध कर वह अपने खड़े के बैल के ऊपर बैठा देता और बैल ऐसे
 ही जो कुछ मिलता चर जाता। कुछ दिन बाद उद्यमे, इस वर से कि
 कहीं गाँव वाले बैल को ही न हथप ओ उसका बाहर जाता रोक दिया।
 बैल भी अपने लूटे से बैठा २ सूत गया।

अधिर वह दिन भी चापा जब बावक और मेहू का एक दाना
 भी नहीं बचा था काई सूखा चारा भी नहीं रहा। बैल जब भूख से
 बिचकाने लगा तो बड़े बाप ने कहा—

“दब बैल को ही खावेंगे।”

बौंगलुङ्ग यह सुनकर चिह्रछा पड़ा, उसने जगा—मांभो किसी ने कहा हो, "अब हम भादमी को काट कर खायेंगे।" बैल बसकर बर्षों कर साथी या और बसके साथ २ उसने भी समीप पर उठनी ही मेहनत की थी उसने कहा—

"बैल को हम कैसे खावेंगे ? फिर समीप पर हल कैसे चलेगा ?"

बड़े बाप ने उत्तर दिया "या तो अपने और बच्चों के प्रायः बचा को या बैल के ही । अपने जिन्दगी तो फिर जारी ही नहीं जा सकती हैं बैल तो फिर भी फरीदा जा सकता है ।"

बौंगलुङ्ग ने उस दिन बैल को नहीं मारा । ऐसे ही दो दिन निकल गए और बच्चे भी भूख से बचरमे लगे तो भोजन में बच्चों को अपने पास समीप कर करके रूटि से बौंगलुङ्ग की घोर देखा । बौंगलुङ्ग ने जब देखा कि बैल मारना ही पड़ेगा तो दृष्टता से बोला—

"तो तुम बैल को मार दो । लेकिन मैं यह काम स्वयं नहीं करूँगा ।"

बह अपने कमरे में गया और आकर रजमू छपेट अपने बिस्तर पर पड़ रहा ताकि बैल के सरते बल उसके लक्ष्य की आपाज बस सुनार्थ न दे ।

इसके बाद भोजन बाहर निकली और रसोई में काम आने वाली घुरी से उसने बैल की गर्दन काटो गिरा हुआ लून एक वर्तन में डकड़ा किया फिर उसकी लाक रींच कर एक और रस ही लवा मौस के बड़े डुन्डे काट कर अलग रख दिए । बौंगलुङ्ग तब तक बाहर न निकला जब तक मौस एक कर मेज पर न आ गया । किन्तु जब वह अपने बैल का मौस लाने लगा तो उसके मुँह में न खल सका, बोला रसा ही बोकर बह डरर गया । बह दौर कर आख्यान में डलसे करा—

"यह बैल ही है और अब तो वह मृदा हो गया था । अब जल्दे दिन आवेंगे तो इससे भी अच्छा बैल मिल जायगा ।"

बौंगलुङ्ग को बेड़ा बाइस बँधा। उसने फिर एक दो मौस के लुके काए। इस प्रकार बर बाबों के बैल का मौस भी सारा समाप्त हो गया। अब बैल की केवल काक हो बची थी, जिसे जो-बान के पिं पाँचकर मौस पर बटका दिया था।

पहिले तो गाँव वाले समझे हुए थे कि बौंग के पास काको अनाज और दपवा है और उसने यह सब दिया रखा है। इसका चाचा जब एक बार चापा तो उसने महर और सेम के कुछ दाने उसकी बैल में डाल दिये थे। चाचा के पास सारा बरबों और जी के खिपू जाने को वास्तव में कुछ नहीं था। दुबला अब वह फिर कुछ माँगने चापा तो बौंगलुङ्ग ने साफ जवाब दे दिया। "पहिले मुझे अपने बड़े बाप की बैल भाँज करनी है फिर कोई और। मेरे पास अब कुछ नहीं रह गया है।" और चाचा को काकी हाथ वापिस जाना पड़ा। उस दिन से चाचा बौंगलुङ्ग के बिन्दु यह कह १ कर गाँव बाबों को भड़काने लगा—

"बढ़ मीरा मतीआ है, उसके पास दपवा है और काने को अनाज मरा बड़ा है, बिन्दु यह हममें से किसी को भी कुछ नहीं देगा मेरे लच्छों के खिपू भी कुछ नहीं देगा, मेरे बरबों के खिपू भी कुछ नहीं। हमें तो अब भूखा हो मरना पड़ेगा।"

गाँव बाबों का तो एक-एक दाना और एक १ पैसा सभी समाप्त हो चुका था। पूँज से उनकी खिचों और बरबे लपट रहे थे। ऐसी दशा में अब बौंगलुङ्ग के चाचा को उन्होंने यह कहते हुए सुना कि "केवल एक के नहीं खाना है—केवल बड़ी के बच्चे अब भी मोटे हो रहे हैं।" तो सारे गाँव वाले एक रात बौंगलुङ्ग के मकान की ओर चले पड़े और काठिर्वा मार १ कर दरवाजों को पीटने लगे। बौंगलुङ्ग ने जब पड़ोसियों का घोर गुस्सा सुना तो उसने दरवाजे खोल दिए। इन्होंने ही सब के

सब कम पर दृढ़ पड़े और बड़े डडा कर मकान के बाहर फेंक दिया।
 उसके बरखों को भी बाहर डकेल दिया तथा घर के कोने कोने की छान
 भीन करके खरी। जब इनको कुछ बड़ी मिछा तो इन्होंने गुस्से में आकर
 मकान की बस्तुएँ व सर्वांश डडा डडा कर फेंक दिया।

यह देखकर ओ-कान आगे बढ़ी और उस छोटे गुफ के बीच
 अपनी आवाज उठाती हुई बोली—

“अभी यह कुछ न करो। अभी वह समय नहीं आया कि
 हमारे मकान का सम्मान खूदे जाये। जितना आवाज है वह सब उठा ले
 जाओ। अभी तो तुम्हारे अपने मकान का सम्मान भी रखा हुआ है।
 अभी तुम्हारे अपनी मैत्र कुत्तियों तो नहीं बच बाकी। हमारा सम्मान भी
 पोख हो। हम सब बराबर हैं। हमारे पास भी तो नाम का कोई दामा
 नहीं है—तुम्हारे पास तो कुछ है भी क्योंकि जो कुछ हमारा है वह
 तुम्हारा हो चुका। यदि कुछ और सम्मान उठाया तो मगपाल हमकी
 सजा तुम्हें अवश्य देगे। अब हम लोग साथ १ चक्कर कर चल पोटोते,
 पैरों से बरखों तोड़े गे—तुम अपने २ बरखों के छिप और हम अपने
 हम तीनों तथा चौथे हम पैर के बरखे के छिप।” बोझते बोझते हमने
 अपने पैर की ओर इशारा किया। सब लोग शर्मा कर एक १ करके
 वहाँ से चक्कर दिये। इस बीच में जबका बड़ीसी भी ना। गाँव वाले
 कोई बुरे आदमी नहीं थे वह ती जुरा समय था, जिसके बरा डोकर के
 सब लोग वहाँ पुन आये थे।

बाँगलुह दरब के पर बराबर गया रहा और सोचता रहा।
 पक्षी इसी दरबाने पर बैठे नाम पड़ा रहता था किन्तु अब इसके पास
 बुरे बाब को बरखों को और ओ को, जितने पैर में बड़े हुए बरखे के
 कमल मुराक की विरीय आबरवकता है, जिसने के छिपे कुछ भी नहीं
 है। लीचते २ वह एक अज्ञात मय से काँप रहा। किन्तु बाड़ी ही देर

में उनकी रगों में लूज फिर देखी से चौक उठ्य । ठमके आप ही आप कहा—

“ये लोग मेरी जमीन मुझसे नहीं ले सकते । अपनी जमीन को जैसा मैंने बना दिया है, उसे ये लोग नहीं जीन सकते । अगर मेरे पास रुपया होता तो भबरन ही ये लोग लूट ले जाते । जमीन तो मेरे पास हर मूल्य से है ही ।”



बांगलुरु दरवाजे पर बैठा २ सोचने लगा कि अब कुछ न कुछ करना ही चाहिये । इस प्यासी घर में पड़े रहना मुश्किल होगा । जीवित रहने का निश्चय इसके मस्तिष्क में अब दृढ़ होने लगा । मान्य के ऊपर ही निर्भर रहना या कायरता को दिखायी होगी । इसमें अधिक और क्या कह हो सकता है । ऐसी ऐवताओं का सामना क्षेत्र से तो कहीं आकर कुछ करना ही झप्टा है ।

इन्हीं विचारों में खोम एक दिन वह घरती माता के मन्दिर की ओर जब पहा और वहाँ आकर उसने पूज दिया । अब वहाँ पूज कतिबों नहीं लगाई जाती थी । क्रिश्चै ही महोबों से यह मन्दिर दूरी-दूरी हाजिर में ही पड़ा था, मूर्तियों के बगल पर चुके से किन्तु मूर्तियों उसी प्रकार दृढ़ और निरचल थीं । बांगलुरु दौड़ों को पीस कर गुन्ने से मूर्तियों की ओर घुराये लगा और फिर घर आकर बिस्तर पर पड़ा गया ।

सबों की दृष्टा बक सी थी । जा पड़ा गया वह आपायी से उठना नहीं था । उठने की आवश्यकता भी क्या थी ? कम से कम नींद में कुछ मूच्य ता मिलती ही थी । कहीं भी कुछ जाने का दिवाई नहीं देता था । कहीं कोई जानवर भी नहीं दिवाई देता था ।

बच्चों की झोंटें पूछने लगती थीं । गाँव की गलियों में वही भी कोई बचा खेजता फिरता नहीं मिलता । अधिक से अधिक वह अपने ही घर में दानों व वस्त्रों की दरवाजे तक करके देखा, इन घरकों

अ गोख-मोख शरीर अब इन्डियों का ढाँचा भर रह गया था। छोटी बच्ची बचपि उठने बैठने की उम्र की थी, किंतु उसमें उठने भर की जान कहीं थी? वह बिस्तर पर ही पड़ी रहती, का कुछ मुँह में आ जाता था। और इस प्रकार वह अपने जीवन से संघर्ष कर रही थी। उसके छोटे से जीवन में इस संघर्ष की देखकर बांगतुङ्ग का हृदय पसीज जाता। वह कभी-१ उस अपनी गोद्री में उठाकर बिछाने लगाता, वह बच्ची भी हँसने की चेष्टा करती किंतु हँसी मुस्कराहट से घाले नहीं पड़ पाती। उसकी मुस्कराहट देखकर बांगतुङ्ग की छाँछों में आँसू आ जाते।

बड़े बाप की दशा फिर भी औरों से बरखी थी क्योंकि जो कुछ भी खाने को इकट्ठा होता, वह उसे ही दिया जाता, चाहे बच्चों को न मिले। बांगतुङ्ग कभी-१ गर्व से सोचने लगता कि कोई यह न कहे कि मुझसे मैं मृत्यु के समीप की अवस्था में बड़े बाप को नहीं पड़ा गया। यदि उसका शरीर भी बड़े बाप के काम में आ सकता तो बाङ्ग-तुङ्ग सहप दे देता। वह बूढ़ा जो कुछ मिखता था होता और दिन रात साठा रहता। इस प्रकार उसमें इतनी शक्ति भर रह गई थी कि दोपहर को दरवाजे तक थप सेंकने के लिये वह फिर खड़ा था। एक दिन वह बूढ़ा अपनी आवाज को तेज करके बोला—

‘मैंने हमसे भी लताम दिव देछे हैं। एक समय तो मैंने स्वयं चाबूतो औरतों को बच्चों का माँस पाले देखा था।’

“किन्ति देवा इस घर में कहापि न होगी।” बाङ्गतुङ्ग ने दर से बराहँ आवाज में कहा।

× × × ×

एक दिन बाङ्गतुङ्ग का पड़ोसी बिग बही आया। वह भी बँडुपों का ढाँचा भर हो था। दरवाजे पर आकर घीरे से बोला—

“शहर में कुत्तों का माँस खाया जा रहा है जहाँ कहीं मो बोदा

गया मित्रता है, उसका मांस खा लेंगे हैं। यहाँ भी हम लोगों ने गेल्ले में काम करने वाले जानवरों को खा दिया है। अब पाने के लिये क्या कुछ रह गया है ?”

बाग़तुज़ ने घोर बिराग़ा के सिर दिखाया। अपनी दाती से चिपकाने हुए उस छोटी सी बच्ची को उसने और चिपका दिया। बिग भी समीप आकर धीरे से कहने लगा—

‘गाँव में आत्मी का मांस आत्मी खा रहा है सुना है तुम्हारा चाचा भी वहीं खा रहा है उसके घर में सभी बह ला रहे हैं नहीं तो वे लोग कैसे जीवित रह सकते हैं। उनके पास कमो भी पाने भर की नहीं रहा, उनमें सबसे ज़िन्दगी की शक्ति कहाँ से आ रही है ?’

बाग़तुज़ बिग के चेहरे की देवता का देखता रह गया। एक विशेष घर से काँप उठा, उसकी समझ में स्वयं नहीं आया कि किस घर से वह अकापक इतना व्याकुल हो गया है।

“हम यह जगह छोड़ देंगे” वह जोर से बोला—“हम लोग इच्छा की ओर चले पड़ेंगे। यहाँ सभी भूखे मर रहे हैं, न जाने कब वहाँ की पाने खग जाँय।”

बड़ोसी ने कुछ देर तक उसकी ओर देखा—“आह ! तुम तो अभी अज्ञान हो।” फिर उदास हो बोला—“मैं और मेरी स्त्री तो मरे ही चके हैं। हमारे पास तो केवल एक बच्ची ही है। हम लोग तो यहीं मर जायेंगे।”

तुम हमसे ज्यादा मायबान हो।’ बाग़तुज़ बोला—“मेरी माँ तो एक मीठा बूढ़ा बाप है, तीन छोटे बच्चे हैं और एक बच्चा होने बाका है। हमें वहाँ से चले ही देना चाहिये वरना न मानूँ कप अपनी ही अहर्निश बदबू आप और कुत्तों की घोंटि हम लोग चायम में ही बूँद बूँदों को खा लेंगे।”

तब अकामक उसे लगा कि वह दीक और बहुत दीक बह रहा है

धीर उसने ओ-खान को आवाज दी। ओखान चुपचाप दिन दिन भर बिस्तरे पर पड़ी रहती, क्योंकि रघोई बचाने का ठा कोई काम रह ही नहीं गया था।

“बछो—हम लोग इण्डिय की ओर चलेंगे।” बांगलुङ बोला।

बांगलुङ की इस आवाज से प्रफुल्लिता थी वो महीनों से किसी ने नहीं सुनी थी। जबसे एक दम सिर उठाकर उसकी ओर देखने लगे बुढ़ा बाप अपने कमरे से निकल आया और ओखान कमजोरी की भावस्था में ही सरक कर दरवाजे पर आकर खड़ी हो गई। दरवाजे के सहारे से कड़ी होकर बोली—

“बढ़ बच्छी बात है, अब कम से कम बचते बचते तो चलेंगे।”

उसके पैर के अमूर बचा यकता मा साक दिखाई दे रहा था क्योंकि ओखान के शरीर पर और कहीं तो मौस रह नहीं था। वह बोली—“कैयक कक तक के लिये एक आधो। कक तक बचा पैदा हो जायगा वृमा आमास मुझे हो रहा है।

अध्या कक सही।” बांगलुङ ने उत्तर दिया। ओखान की ओर बराबर उसका दृष्टि भर आया। अपने से अधिक दूरा उसे धीरे जाह। फिर बोला “तुम कैसे बच सकोगी?” पड़ोसी बिल की ओर देखते हुए बोला “यदि तुम्हारे पास कुप हो तो मुझे भर जाज दे दो ताकि हम समय में इन बच्चों की मों के साथ बचा सक। यदि तुम वह उपकार मेरे साथ कर सकोगे तो मैं भूख जाऊंगा कि तुम भी चारों की तरह मेरे घर से चोड़ा बहुत मात्र उठाकर ले गए थे।”

बिहू ने बड़ी धर्म से उसकी चार देखा और दूरी कबाब से बोला—“इस समय से अब तक मुझे जरा भी शक्ति नहीं मिली है। वह तो वह कुत्ता, तुम्हारा बाबा का जिसने मुझे यह कावय दिया था कि तुम्हारे बाप मात्र भरा बचा है। इस कठोर मगधन के काम से मैं

न बरहमथ किया वह समझता कहिये था ।

बौम कुछ व बोझा, किन्तु बच्चे को बड़ा का दूसरे कमरे में ले आया और जमीन पर डाल दिया । फिर दूसर बच्चा से दूध कर एक चटाई का टुकड़ा डहाया और उसमें बच्चे को जपेट दिया । बच्चे को डहा कर वह घर से बाहर की ओर निकल गया और खेतों में वहाँ तक उसके पैर उस ले गए वह बजता चला गया । एक दूरी कूटी पुरानी कब्र के पास जाकर एक कीड़े में उसने काट रख दी । काट को रख कर वह वापिस चला ही था कि एक भेड़ियापुत्रा कुत्ता आकर उसे धकधोरने लगा । बांगसुड़ ने एक ईंट डहा कर मारी लेकिन कुत्ता वहाँ से हटा नहीं । बांगसुड़ कुत्ते को धा ही, बक भी गया था । घाबिर 'जैसा है, ठीक है' करता हुआ वापिस हो गया ।

X

X

X

दूसरे दिन जब रोज की तरह सूरज निकला तो बांगसुड़ को स्वप्निल सी चक्क्या में ऐसा आन पड़ा कि न जाने इस कमजोरी की हाकल में उसको क्या और बच्चे वहाँ के बिण बच भी सकेंगे या नहीं । दक्षिण की ओर उस स्थान पर पहुँचते २ ही जहाँ कुछ खाला मिट्ट मके समी चीख ड़ा जायेंगे । हमसे तो चप्ला होगा कि वहाँ एक जायें चार इन्हीं शिखरों पर मरें । शिखर पर बैठा हुआ वह सोचता रहा और सामने खेतों की ओर बज्र गड़ा कर बैठा रहा क्योंकि वहाँ ऐसी कीई वस्तु भी नहीं बच पाई थी जो खाने के काम आ सकती ।

यह उसके पास पैसा नहीं था । कई दिन हुए चण्विरी पाई भी खर्चे हो चुकी थी । यदि पैसा होता भी था उसमें भी कोई काम न था क्योंकि खाने की दैन्यो भी सामग्री नहीं बच पाई थी ज़ा गरीबी आ सकती । जबकि मुता था कि शहर में कुछ ऐसे रईम लोग थे जिन्होंने जात्र जमा कर रखा था । वे इस और भी बड़े रईमों के हाथ बेच रहे थे किन्तु इन पालों पर इस जब आप भी नहीं आता था । यह को उसे

हज्जाम भी आमास नहीं होता कि शहर तक जाकर बिना पैसे ही कुछ खपट कर का ले। वास्तव में मूल उसे रह ही नहीं गई थी।

मूले पैर की बजाजा से अब उसे कोई कष्ट न होता। अपने लेटों में से घाम घीर मिट्टी तक सोह २ कर वह बच्चों को पित्रा चुका था। कुछ दिन से केवल मिट्टी को पानी में घोख घोख कर बच्चों को दे रहा था। बच्चों को तदपन कुछ बच्चों के लिए तो शांत हो हो जाती। किन्तु अब इसे मालसिक देवना से महामु कष्ट होता। वह इन्हीं दुखी बच्चों से घीत घीत हो सोचने लगा कि इसी प्रकार मौत के मुँह में चब जाया हो ठीक होगा। इतने में ही उसे लगा कि उसके लेटों में कोई चब रहा है। कुछ बादमी उसकी घोर घावे दिखाई दिये किन्तु वह बैठ ही रहा। घाम घाने पर उस समय आई कि ठक बादमियों में से एक तो उसका चाचा था। साब के तीन अन्य पुत्रों को वह नहीं पहिचानता था।

धर्म-मुस्कल से उसका चाचा बाका “इधर कई दिनों से तुम्हें देखा नहीं,” पास आकर घीर भी घीर ले बोला, “तुम कितने अच्छे रहे। घीर तुम्हारा बाप मेरा क्या मर्ज वह अच्छा तो है ?”

बाँगलुङ्ग ने चाचा को घीर देखा। चाचा दुबका पतला तो अवरप था किन्तु जैसा मूल से कमजोर होना चाहिये था वैसा दिखाई नहीं दे रहा था। जो चौड़ी बहुत शक्ति बाँगलुङ्ग के शरीर में बची रह गई थी उसी स उसकी नाड़ियों में जोष भरा तुल मुकुटम पहले लगा घीर भार्ही आकाश से बोला, “तुम कैसे जाले रहे हो ?” इस समय किसी मम्म के शिष्टाचार का कोई विचार नहीं रहा घीर व इसी पाठ का कि नहीं अजनबी मनुष्य भी मीमुर है। उसे तो केवल चाचा के शरीर पर क्या हुआ मर्ज ही नजर आ रहा था। चाचा ने धीरे धीरे अच्छी तरह घोखकर घीर हथों को आकाश की चार उठाते हुए कहा—

“जाता रहा हूँ ! यदि तुम मेरा घर खूब सज्जे ! अब बिबिया के बराने के लिए तबका भी बाकी नहीं रहा। मेरी ली—तुमने तो देखा

न बरबसत किया वह समझना कहिल था ।

बौम कुछ न बोझा किन्तु बच्चे को उठा कर दूसरे कमरे में ले आया और जमीन पर डाल दिया । फिर इधर बघर से हूँक कर एक चटाई का टुकड़ा उठाया और उसमें बच्चे को छपेट लिया । बच्चे को उठा कर वह घर से बाहर की ओर निकल गया और खेतों में जहाँ तक उसके पैर उसे ले गए, वह चलाता चला गया । एक दूरी पूरी पुरानी कब्र के पास जाकर एक कौड़े में उसने छाछ रखा ही । छाछ को रख कर वह वापिस चला ही था कि एक भेड़ियामुमा कुत्ता आकर उसे धकड़ोरेने लगा । बांगलुहू ने एक हूँक उठा कर मारी लेकिन कुत्ता वहाँ से हटा नहीं । बांगलुहू बुनो तो था ही एक भी गया था । आगिर “जैसा है, वीक है” कहता हुआ वापिस हो गया ।

×

×

×

पूने दिन अब रोज की तरह सूरज निकला तो बांगलुहू की स्तब्धता सी अवस्था में गया जान पड़ा कि न जाने इस कमजोरी की हावत में उसको क्या आर बच्चे वही के छिप चला भी सकेंगे या नहीं । इच्छा की ओर उस स्थान पर पहुँचते २ तो जहाँ कुछ खाना मिल सके, सभी चीज हाँकाएंगे । इससे तो अच्छा होगा कि वही एक जायें आर इन्होंने विस्तार कर मरें । बिरहर पर बेस हुआ वह मोचता रहा और सामने गली की ओर मजरा गया कर बैठा रहा क्योंकि वहाँ ऐसी कोई वस्तु भी नहीं बच पाई थी जो पाने के काम आ सकती ।

अब उसके पास पैसा नहीं था । कई दिन हुए आगिरी पाई भी लपेटे हो चुकी थी । यदि पैसा होता भी था उसमें भी चाई खान न था क्योंकि पाने की बेसी भी सामग्री नहीं बच पाई थी, जी पारीदी आ सकती । इसने मुना था कि शहर में कुछ पैसे ईस खोस थे जिन्होंने मात्र जमा कर रखा था । वे उसे और भी बड़े रईमों के हाथ बेच रहे थे, किन्तु इन बातों पर उसे अब कोश भी नहीं आता था । अब तो उसे

मरती माला

इतना भी आमास नहीं होता कि शहर तक जाकर बिना वैसे ही कुछ
अपड कर जावे । वास्तव में भूख उसे रह ही नहीं गई थी ।

गूले पेट की पड़ावा से घब उसे कोई कष्ट न होता । अपने लेटों
में से घाय और मिट्टी तक छोड़ कर वह बच्चों को लिखा हुआ पा ।
कुछ दिन से केवल मिट्टी को पानी में पीछ पीछ कर बच्चों को दे रहा
था । बच्चों को तबपन कुछ पक्षों के बिपु तो शीत हो ही जाती । किंतु
घब उसे मानसिक वेदना से महान् कष्ट होता । वह इन्हीं दुःखी बच्चों
से शीत शीत हो सोचने लगा कि इसी प्रकार मीत के मुँह में चले जाना
ही होक होगा । इतने में हो उसे लगा कि उसके लेटों में कोई चब रहा
है । कुछ आदमी उसकी ओर घाते दिखाई दिये किन्तु वह बैठ ही रहा ।
नाम जाने पर उसे समझ आई कि उन आदमियों में से एक तो उसका
बाबा था । साब के तीन अन्य पुरुषों का वह नहीं पहिचानता था ।

वर्ग-मुस्कान से उसका बाबा बाबा 'इपर कई दिनों से तुम्हें
देखा नहीं' पास आकर और भी जोर से बोला, 'तुम कितने घबड़े
रहे । और तुम्हारा बाप मेरा क्या मर्द वह मर्यादा तो है ?'

बौगलु है बाबा को और देखा । बाबा कुछका पठका तो
अवरय था किन्तु जैसा मूय से कमजोर होवा चाहिये था जैसा दिखाई
नहीं दे रहा था । जो बोली बहुत शक्ति बौगलु के शरीर में बची रह
गई थी उसी से उसकी नादियों में शीघ्र भरा रक्त एकदम पहले जगा
और मर्द आबाज से बोला "तुम कैसे घाते रहे हो ?" इस समय किसी
प्रश्न के शिवाचार का कोई विचार नहीं रहा और व इसी बात का कि
बाँ बाजतबी मनुष्य भी मौजूद है । उस तो केवल बाबा के शरीर पर
बसा हुआ मांस ही नजर आ रहा था । बाबा ने शीत घबड़ी तरह
जोखकर और इन्हीं को आकाश की आर उठाते हुए कहा—
जाता रहा है ! यदि तुम मेरा घर देख सकते । अब बिदिवा के
उठाने के बिपु तिनका भी बाकी नहीं रहा । मेरी स्त्री—तुमने तो

ही था उसे, कितनी मोठी थी ! कितना सुन्दर शरीर था उसका और कितनी बिड़री बाख थी ! और जब वह केवल इन्तियों का ढोंका भर हो रह गई है । बच्चों में से केवल चार ही बाकी बचे हैं—तीनों बड़े बच्चे तो मर चुके—बड़े ही गये—रह गया मैं तो मुझे तुम बच हो रहे हो ।”

अपनी कमोज की बाही से बच्चों को अपनी तरह पोंछते हुए बागलुङ ने कहा, “तुम जाते पीते तो रह हो ।”

“मैं तो केवल तुम्हारे और तुम्हारे रिता बानी अपने बड़े भाई के बारे में हो बराबर सोचता रहा हूँ, ’ बाबा ने ठेनो से उत्तर दिया, ‘ और जब इसे मैं सिद्ध भी कर हूँगा । मैंने इन मछे धानमियों से कुछ जाना उबार किया था इन शर्त पर कि अपने गांव को कुछ जमीन इन्हें जरीदने में मैं इनको सहायता करूँगा । और सबसे पहिले मुझे तुम्हारा स्वागत था । जालिर तुम मेरे भाई के ही तो बचके हो । ये लोग तुम्हारी जमीन जरीदने आये हैं और तुम्हें दण्डा देंगे—प्राप्त—मोबन ! इतना कह कर बाबा कुछ पोंछे हर गये ।

बागलुङ जैसे का तैसा रहा वह उरा भी नहीं दिया । न तो वह उठा ही और न उसने इन बड़े धानमियों को पहिचानने की ही चेष्टा की । किन्तु सिर उठा कर उसने इनको और देखा तो उनके रेशमी और साफ कपड़ों की देखकर वह समझ गया कि अचरय ही ये भद्र बुद्ध शहर में आये होंगे । शरीर भी उनके साफ सुपरे दिखाई दे रहे थे । उन्हें देखने से कोई संदिग्ध नहीं होता था कि ये काम भी इन जगह में कमो भूने रहे होंगे । पचापक उनके हृदय में उनके प्रति वृत्ता बसव रही । जब चार जाने पीते मनुष्य थे और हमी और उसके बच्चे मृत्यु से पीड़ित मिही हो ता रहे थे और ये काम आज उनकी दिगही दृष्टा में उसकी जमीन दीनने आये थे । अपने अपने मूने चेहरे को ऊपर उठा कर देखा और कहा—

“मैं जमीन नहीं बेचूँगा”

घरती माता

उसका पाया कुच भांगे बना । इसी समय बांगलुङ का घोड़ा
बन्धा सरकता हुआ वहीं आ पहुँचा । इस बन्धे को देख कर बाबा
बांझा—

“यह तुम्हारा बन्धा है ? क्या यह बन्धा बही है जिसे मैंने इसी
गर्मियों में खूब मोटा ताजा देता था ?”

घोरा समी कम बन्धे की ओर देखने लगे । बांगलुङ अपने घाव
की चन्दर हो चन्दर निकोड़ रहा था किन्तु अब नहीं सँबाध सका घोर
तुपबाप रोये लगा । जिसके शीशु अब तक बाहर नहीं आये थे अब
शीशुओं की ओर उनके गालों पर बहने लगी ।

‘क्या कीमत होंगे ?’ घायल वह बोला । ‘इन बन्धों की
बड़े बाप की भी देखना है इनकी तो कुत्र न कुत्र लिखाना हो है । वह
स्वयं और उनकी ओर तो जमीन जोड़ कर स्वयं हो कम बना कर देर
रहते किन्तु इन लोगों का क्या होगा ?’

शहर में आये हुए आरमियों में से एक काली शीत बाबा
मनुष्य बोला—

“देना आरम्भ के समय में हम तुम्हें शीतों से अच्छी कीमत
देते तुम्हारे बन्धों की यादिर जो भूल से मर रहे हैं हम तुम्हें दूँगे
दिर कुछ रुक कर ठेकी सँ बोला ‘एक एक की कीमत में हम तुम्हें
एक सी पेंड / पैस—जगमग एक घाना) दूँगे ।’”

बांगलुङ एक कमरे ईंसो से बोला “इतना सी क्यों देते हो ।
यह तो मुक्त बराबर है । अब मैं जमीन करीदना हूँ ता इसी की बीम
गुनी कीमत मुझे देनी पड़ती है ।”

“किन्तु इतनी कीमत अब नहीं हो जल्दी जब किसी भूरे से
खरीदना हो,” दूसरा मनुष्य बोला । वह घोड़ा सा पतली नाक बाबा
मनुष्य या किन्तु आबाज इसकी बड़ी सीजो की ।
बांगलुङ ने तीनों की ओर देखा । इन तीनों को दूरा पकोन था

अब धीरे कुछ काम नहीं था सिवाय इसके कि घर के दरवाजे बन्द करके चटखनी लगा दी जाए। जो कुछ बचने के लिए खोला रहने लगा था। जोखाने के बचने की एक १ कमरा और एक १ बम्बरा दे दी थी। धीरे कुछ धाना मिचने को आया तो वे लोग गेहों में से ले होकर चक बने।

धीरे धीरे को बाइलुड बचने सीने से चिपकाते चक रहा। वे देखकर जब उसने देखा कि उसका बड़ा पिता बचते २ चक कर गिरने ही जाया है तो बचने बची को जोखाने की पकड़ा दिया और बड़े बाप को पीठ पर बिठाकर चकने लगा। इस प्रकार उपवास वह परिवार चकने चका गया। उसका वह छोटा मन्दिर को निकल गया किन्तु उस मन्दिर में बड़े हुए भगवान की मूर्तियों के इस परिवार की धीरे धीरे भी नहीं दिया। उधर सर्दी की की बरफों हुआ बचने के बावजूद भी बाइलुड बसीने से नडा रहा था। इतनी बरफों धीरे सर्द हुआ से बचने भी रोने लगा। बाइलुड बची को कुमकाते हुए बोला—

‘तुम तो बने हो गए हो धीरे इन्धन की धीरे जाने वाली धात्री हो। बहों इतनी सर्दी नहीं होगी, बहों मिल प्रति गाने को भी मिला करेगा इस सब के लिए आज भी मिचेंगे तुम भी पाओगे और हम भी पाया करेंगे।’

समय में बचते २ बहरते २ के जाग समय से अब बची हीनार

के दरवाजे पर पहुँच गये। वहीं, वहाँ की डबड़ी हवा से कई वर्षों हुए बाइबुल को असौम आनन्द प्राप्त हुआ था। लेकिन अब वहाँ गिरी हुई थी और उसकी कीचड़ से सब के पैर छप-पच थे। वरबों को असौम बहना कहिये हो रहा था और धोखाप पक्ष तो अपने बोझ से ही परेशान थी। दूसरे बोझ बरबा भी गोद में था। बाइबुल ने किसी प्रकार बड़े बाप को पीठ पर बैठाकर कम दखल से पार करवाया और फिर एक-एक बरब को उठाकर दूसरी ओर किया। वह इस मेहनत में इतना थक गया कि उसके शरीर के रोम २ से पसीना नू उमर और सोम भी ठेक पड़ने लगी। इस प्रकार हाँकते २ वह चों में मुँदकर गुपचाप पीछा के सहारे बैठ गया।

याही हैर बाद रास्ता चखना फिर शुरू हुआ और शीघ्र ही वे आँग स्ट्रीट परिवार के मकान के बड़े फाटक पर पहुँच गए। किन्तु आज फाटक पर बड़े २ छोड़े के लक्षि पड़े हुए थे और दरवाजों पर गरीब की पुरुषों की भीड़ बैठी २ सभी पुरुषों को कोस रही थी। बाइबुल जब अपने छोड़े से तुलुम के साथ उबर से निकला तो उस बैठी हुई भीड़ में से एक की आवाज सुनाई पड़ी—

‘हम बनी पुरुषों के इश्य भी मतवाग क इश्य को तरह पापर के हैं। उनके पास प्राप्ति को अब भी बाबकों के हैर लगे हैं। परन्तु वे जो बाबल बच जाते हैं उनसे अब भी मदिरा बना कर पीते हैं और इधर हम गरीब लोग मृते मर रहे हैं।’

और फिर दूसरा बाबा—

“अदि मेरे हम हाबों में जरा सी भी शक्ति बची होती तो हम महलों में और हम सब मकानों में आग लगा देता, छोड़े में स्वयं हो क्यों न जल जाता। ऐसे २ स्ट्रीट परिवारों का बाप हो जाय।’

किन्तु बाइबुल ने न तो हम बातों को और कोई ध्यान दिया और न कुछ उत्तर ही दिया। गुपचाप के बोझ अपने प्राग पर चढ़ते चढ़ते गये।

इसी प्रकार कहते २ ये लोग जब शहर में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि हजारों व्यक्ति दक्षिण की ओर चलते चले जा रहे हैं। किंतु बाइबल के दिमाग में वह बलव्यव भी कि दीवार के भ्रम कोड़े में राल सुबारी आपसी क्योंकि जब शाम हो चली थी। इसी बलव्यव में उसने अपने परिवार को भीड़ में घेरा दिया और तब हमने एक से पूछा—

“यह इतनी भीड़ किसर जा रही है?”

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—
“हम लोग मूले हैं और दक्षिण की ओर जाने वाले, हजार के दिग्घे की पकड़ने जा रहे हैं। रोक के दिग्घे उस दूर पर निर्धारित है रहे मकान के पीछे से जाते हैं। हम में से जो भी पैसा होंगे उन्हें वहाँ जगह मिल सकेगी।”

रोक के दिग्घे! हम दिग्घों के बारे में जब तक केवल सुबा ही गया था। किंतु ही महीने पहले बाइबल ने एक बाप की वृत्तान पर पुन रचया था कि ये दिग्घे एक दूसरे से छुट्टे रहते हैं और इन्हें न जानकर खींचते हैं न मनुष्य, किंतु मशीन से खींचे जाते हैं, उस मशीन से आग और पानी निकलते रहते हैं। कई बार बाइबल ने सोचा भी था कि कभी सुई के रिल घाबरव ही वह इन दिग्घों की सचारी का ध्यान देगा, किंतु वह लेव और जमीन का काम ही पैसा था कि कभी सुई मिक नहीं पाली की और न कभी मिकी ही। और फिर दूसरे किसी पर उसे बिरबाम भी नहीं था जिस पर लेव सोच कर वह जाता। वास्तव में मनुष्य के दिग्घे वह बहरी नहीं कि जीवित रहने के दिग्घे वह आबरवक वस्तुओं से अधिक की जानकारी रखे।

एक प्रकार का संदेह दिग्घे बाइबल अपनी छी से बीजा—“क्या हम लोग भी इन दिग्घों में चले?”
इन दोनों के बड़े बाप को न बच्चों की भीड़ में से हटते हुए आरस में एक दूसरे की ओर एक आत्मा से देखा। एक बाप के निग्राम

के छिपू बुढ़ा वो सड़क पर बैठ गया और बरबे वहीं खैर गए, उन्हें भीड़ का वह दर भी नहीं खग। कि कहीं दूध दूना न जायें। ओ—बाब को गोदो में वह बाबिका निर्भीक ओ पड़ी थी, उसे देखकर बौंगलुङ सच कुछ भूख गया और बकापक चिखला पड़ा—

“बबा यह जोरा बबा सर गया ?”

ओ—बाब ने दूध के माधे को देखा और बोली

“अमी नहीं। अमी तो उसको सौत कुछ न खस रही है किन्तु बाबू रस तक यह बची जीवित नहीं रह पाएगी। यदि कुछ—” ओ बाब के सुँह से कोई और ठहर नहीं बिकल पाए और वह बौंगलुङ के चेहरे की ओर एक टक बिगाड़ से देखती रह गई। बौंगलुङ ने कोई उत्तर नहीं दिया किन्तु इतना अचरब उसे प्यास हो गया कि हसी भकर इन लोगों को यदि कुछ दिन भी और बचना हुआ तो वे सभी सर जायेंगे और यह सब साबित हुए भी ओ कुछ आता उसको आवाज में रह गई थी, उसी आवाज से उसको घोरत बचाता हुआ बोला—

“उहो बबो बबो, बाबा का उदरओ। हम ओप बस कर उन दिनों में बैठेंगे।”

इस समय इन लोगों की ऐसी दृष्टा हो चली थी कि यह नहीं कहा जा सकता था कि वे लोग और बस सकेंगे या नहीं। इतने में ही रात के चौबरे में एक दम बार की आवाज सबको सुनाई पड़ी और दूर से दो आँखें आग की ज्यसती हुई दिखाने पड़ी कि सप के सब चित्तों पर इस ओर हो दी गई पड़े। और हसी भकपेज में सब आग एक दूसरे से उकराते हुए एक बरस झैसी लंग जगाह में जा पड़े। शीघ्र ही ईजन ओर बचाता हुआ इन दिनों की बीच कर ले चला।

बांगलुर के पास जो दो चौड़ी के सिक्के थे उनमें इससे ही मीठा तक का रस का टिकट परीद बिना और जो कुछ तब के सिक्के बापिम मिथे इनमें से एक एक छोटी सब के लिए और बचो के सिक्के एक प्याली में बाचल के लिए । एक समय के पाने के लिए वह सब कुछ काफ़ी था इतना काम और पैसा पाना तो इनको कितने दो दिनों से नहीं मिला था । वह बड़ा धार्मी बहुत प्रमत्त हुआ और भगवद् से पाले २ सब की ओर देखते हुए बोला "प्यारा घररन चाहिये नहीं मुझे तो अब कामा इजम की नहीं होता किन्तु फिर भी कामा बन्दी है । दिखे में ऐसे हुए सब व्यक्ति उस बड़े की बात पर हँस पड़े ।

बांगलुर ने सारी रकम का एक की नहीं थी । जहाँ पाना था वहाँ घर बनाने के लिए कम से कम कुछ चटाइयों की आवश्यकता तो थी ही । इन चटाइयों का परीदने के लिये इनमें कुछ ऐसे बचा रहने थे । इस दिखे में कई व्यक्ति ऐसे थे जो दिखी ही बार दृष्टि प्रेश में आ चुके थे, कोई २ तो वहाँ पाने कमाने जला था और थोड़ा बहुत पैसा भी बचा बैठा था, किन्तु बांगलुर को वहाँ जाने का पड़ना घररन था । वह विषयों को वहाँ की जमीन को बड़े कीदर से देख रहा था और इन लोगों की बातें भी सुन रहा था । वे सब काय इस प्रकार

बारी माता

बलें कर रहे थे मानो वे ही सब कुछ जानते हों और बाकी लोग मूर्ख हों।

एक बीजे सुँह के व्यक्ति ने कहा, "परिहारे तो तुम जानकर कम से कम थोड़ा-बहुत धरती देना। वो-वो जैसे मैं एक चरार्थ मित्र बाली हूँ। जोमें होरिवारी से करीबने की होती हैं नहीं तो गाँव के आदमी समझ कर एक-एक चरार्थ के तीन तीन ऐसे बगुन कर लेते हैं। मैं तो सब कुछ वहाँ की बातें जानता हूँ। मुझे तो वहाँ के सभी व्यवसायी भी मूर्ख नहीं बना सकते।" इतना कह कर उसने प्रसन्न होकर से सिर हिला।

तुम ये इसको बात को बड़ी उत्सुकता से सुना।

"और फिर?" बॉगलुङ्ग ने पूछा। इतनी मीढ़ में उसे बैठने। जगह को नहीं मित्र पार्थ थी। दरवाजे की छिपकी से उसे हवा छग ही थो और दूर भी उड़ कर आ रही थी।

"हमके बाहर" वह व्यक्ति अपनी आवाज को और तेज काके बोला, "इन चरार्थों को जोष कर एक छोटी सी झोंपड़ी बना देना और फिर मील मोंगने के लिए निकल पटना। लेकिन हमसे पहिले अपने बदन में कोयल छपेट कर अपनी दशा को ब्रिटन भी हो सके इतना दृष्टीय बना देना।

बॉगलुङ्ग को यह बात इतनी अच्छी न लगी, क्योंकि उस व्यक्ति में भी कमी जीवन मोंगने की बात ध्यान में नहीं आई थी।

"बया मील मोंगना जरूरी है?" उसने पूछा।

हैं जरूरी," वह व्यक्ति बोला, "लेकिन या पीकर ही मोंगने जाया जाहिये। वहाँ के लोग सुबह के समय बाहर इतना प जाते हैं कि उनका बचा हुआ आरख भी यदि इकट्ठा किया जाए काफी हो जाता है। इसके अतिरिक्त एक सेनी में इतना आरख में मित्र जाता है कि अपनी तरह से देर मर जाए। हमके बाहर

से थोड़ा मागवे जाया जा सकता है और जो कुछ पैसा मिल जाय उससे सब्जी बगैरह खरीदी जा सकती है।”

बाँगलुरु के भोज से बिपा कर चुपचाप अपनी जेब की रकम एक २ करके गिनी और हिसाब लगा कर देखा कि चढ़ाईयों खरीद कर घर को एक एक पैनी के चालख दिखाने के बाद भी उसके पास तीन पैनी बच रहती हैं। उसने सोचा कि घर वह नई किन्तु गरीब शुरू कर सकता है। हाथ में बर्तन छिपे हुए उबर खिरेले हुए भोज माँगवा किसी तरह उसको समझ में नहीं आ रहा था। बड़ा बाप और बरछे बल्कि उसकी स्त्री भी यदि हुए उबर भूम कर भील माँगें तो और बात है लेकिन वह तो कुछ काम करके भी कमा सकता है।

“क्या कोई काम नहीं मिल सकेगा?” उसने फिर इसी व्यक्ति से पूछा।

“धैर्य काम।” वहीं झुकते हुए उस व्यक्ति ने कुछ पुराना से कहा “यदि तुम चाहो तो रिक्शा चला सकते हो और इस प्रकार यहाँ से अपने पसोये को लुबक ल सकते हो फिर भी यदि सवारी न मिले तो रहा सहा जून भी जमकर बर्क बन सकता है। सवारी न मिलने पर हर एक राह पथले से सवारी के बिये पूछना भी तो एक प्रकार की भील ही होगी।” और फिर सबको कोसते हुए उसने चली और देखा ताकि बाँगलुरु और कुछ न पड़े।

लेकिन जो कुछ बाँगलुरु ने सुना, वह सब उसके बिये कामयाब की रहा, क्योंकि रेल से उतरने के बाद उसके पास एक बना बनाया प्रोमिस था। इसी प्रकार रेल से उतरने पर उसने अपने परिवार को एक मकान की शीशर के सहारे पड़ा कर दिया और अपनी स्त्री से उस सबकी देखभाल करने के छिपे कर चढ़ाईयों खरीदने का पड़ा। नई जगह के कारण कमी इस चढ़ाईयों के बारे में एक स पूछना पड़ता, ता कमी पूरे से। इस प्रदेश के निवासियों की भाषा भी कुछ अजीब होने से थोड़ी सी

बाप को समझावे में भी उसे काफी समय लग जाता था।

आखिर महर के दूसरे बीचे पर बाबर कहीं चढ़ाहों वाली वृक्षम मित्री। इसके मूल्य की जानकारी उस पहिले से ही थी, अतएव हिसाब से एकम लिफाफा कर बिना कई घुमे चढ़ाहों का मठर उठकर वह बापिल उस जगह पर पहुँच गया जहाँ उसका परिवार इन्तजार कर रहा था। वरर बघने देखा कि मई जगह से बघने सब बरे हुए से मई से ये, किन्तु बड़ा बा। आनन्द से इपर उपर देख रहा था। उसने बांगलुङ से कहा—

“देखते हो, इस प्रदेश के निवासी किसी सारे ठीके हैं इन कोनों के एक निम्ने माफ हैं और यमका भी काफी मुकामम मासूम देता है। अतएव ही के लोग निम्न प्रति सुधार का सौख्य करते होंगे।”

किन्तु राह चलने वालों में से किसी के भी बांगलुङ व उसके परिवार को घोर देखा तक नहीं। रास्ता इतना बजता था कि लोग बीचे व बिना इपर उपर देखे ही चले रहे थे। कमी जानवरों का मुँह का मुँह बिकल पड़ता—गर्हों को टोकी भी हैं हैं खाली हुए उपर से बिकली व बैलों के मुँह नाज की बोटियों को कारे हुए बिकले। इन जानवरों के मुँह में आखिरी जानवर पर इनका माझिक सवार होता, लेकिन इस माझिक को तो केवल बाहुक और हँसर घुमाने का ही काम था, इपर उपर क्या हो रहा है, कौन का का रहा है इससे कोई मतलब बरे नहीं रहता। सब कोय इतने सुखदाक दिपाई है रहे थे कि बांगलुङ के पास से बिकलने पर, बसको घोर पृथा की रटि स देखते। इन जानवरों को इनके बाकों को बांगलुङ व उसके परिवार की घबोह हाव को देखकर एक विशेष प्रकार का आनन्द होता था। बांगलुङ इस भीषबाह का देखकर ऐसी उलझन में पड़ गया कि उसे यह समझ में न आया वह अपनी कोपकी कहा बनाए ?

जिम दीपाव के सहारे वह लोग चले थे, उसी के सहारे कई

भ्योपविष्यो लक्ष्मी धी, इव भ्योपविष्यो पर नरर केरते हुप उससे अपने
दिमाग में अपमा बक्षणा ली बना दिया था, केवल जगह भर की लक्ष्म
धो । बटाहवों को मोक्ष माध कर भी उससे देया ने इतनी सकल थी
कि मुझ भी नहीं पा रही थी । वन देकर खोजान ने कहा—
‘बटाहवों लो मैं मोक्ष सकूँ तो बचपन में मैंने वह काम किया है ,
खो-जान के पक्षी को गोप में से बड़ा कर नीचे बिदा दिया और

बटाहवों को माध कर भ्योपकी बजाने छापक कर दिया । अपकी पत्नी
कौबार्त् से इन बटाहवों की वृत्त बच गई और इपर उबर पड़ी हुई
ई रो को समेट कर जमीन पर फर्त भी बिग गया । इस प्रकार ऐसी
जगह बन गई, जहाँ के लोग किसी प्रकार रह सकते थे । कुछ देर बड़ी
बैठकर परिवार के लोगों ने एक दूसरे को धार देखा और बोली बात
नीत की । योही देर में बौगलुह बोला “यहो अब सब सर्वजनिक
रसोह घरों की तरफ चले ।” इतना सुनते ही सभी पक्षपाक उठ गये
हुप । बघों ने भी अपने २ प्याले उठा लिए और बख दिए । योही दूर
जाने के बाद इव लोगों को मालूम पड़ गया कि इतनी भ्योपविष्य एक
ही जाहन में भिन्नी है और वे जाग गया करते हैं । वहाँ किन्ने ही
आदमी हाथों में प्याले बिदे हुप थापत घसीरो के रमाई घरों की ओर
जा रहे थे । बौगलुह भी परिवार सहित इन्हीं लोगों में मिल गया ।
दूर जाकर एक बड़ी सी इमारत के पोष बड़ी २ भट्टियाँ जल रही थी
और वहाँ न्वावा एक रहा था । भावक भी बहल रहे थे । वहाँ जाकर
मारी भोष जमा हा गई और सब गया, बचो मो ऐसी मोक्ष माध से
रामे बिबत्राये छोटे । सभी को यह चिन्त लगा गई कि वह क्या बरह
जाय वह क्या ब रह जाय । कुछ देर बाद रमाईपर गुब गण और वहाँ
के आदमी बाँव पड़—
सब क क्षिण बहुत पला है सब काय अपने अपने जाकर से
नये हो जायें ।”

हठभी भीड़ के लोगों को समाजवा कठिन हो गया। थूँड़े की पुदय जानवरों की तरह गुल्मम गुल्मा करते रहे, अब तक कि सबके पेट में कुछ न कुछ पच न गया। बाँगलुङ्ग को कुछ भी न कर सका वह इस भीड़ के जनों से अपने बड़े बाप व जनों को ही बचाता रहा। सब के बाद में इन लोगों को ऐसे लेकर जाना मिला था।

भर पेट बाबल जाने के बाद जब थोड़े बाबल बच रहे तो बाँगलुङ्ग ने कहा—

“वह मैं रात को जाने के लिए ले जाऊँगा।”

किन्तु पास ही वहीं पहिले हुए एक व्यक्ति कहा था, वह कुछ तेजी से बोला :

“वही तुम कुछ ले नहीं जा सकते जो कुछ है वह पेट में ही भर जा। बाँगलुङ्ग का कहा आश्चर्य हुआ और बोला।

“मैंने ऐसे दिने हैं तो तुम्हें क्या मरना चाहें मैं पेट में भरकर ले जाऊँ या बर्तन में ले जाऊँ।”

वह व्यक्ति फिर बोला—

“हम को ऐसा नियम रखना ही पड़ता है, यदि ये नियम नहीं बनाने चाहें तो कई छाग ऐसे हैं जो कम कीमत में इतना अधिक लावा कर ले जाकर अपने जानवरों सुखों बरिह को लिखात हैं। सस्ते दामों में इतना जाना केवल गरीबों के लिए ही है सुखों के लिये नहीं।”

बाँगलुङ्ग को और भी आश्चर्य हुआ और वह चिन्ता पड़ा—

“कहा कहा ऐसे ही छाग हैं ? किन्तु गरीबों को सस्ती कीमत में जाना क्यों मिलता है ? कौन देता है ?”

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—

वह सब शहर के धनी व्यक्तियों को और स दिया जाता है कुछ छोटा इसलिये सहारा देते हैं कि यह पुख का धर्म है। यदि वही गरीबों को जाना लिखा दिया जाय तो वे समझते हैं कि मर कर जाना

स्वर्ग का रास्ता साफ़ ही जायेगा ।”

‘कुछ भी हा थोर किसी भी कारण से किया जाना हो,’
बोंगलुङ्ग बोला, “यह कार्य तो अच्छा हो है, केवल साफ़ दिक् से किया
जाना चाहिये ।”

आगे बातें न बढ़ाकर वह स्थिति चुप रहा और एक बार बख़
दिया । ऊपर बोंगलुङ्ग सब को लेकर अपनी बड़े म्योवड़ी में बख़ दिया ।
वहाँ जाकर आराम से सब लोग सो गए और सुबह देर तक सोते रहे
क्योंकि आज किये ही दिखी बात उनके पैर भर ध्यान निख सका था,
इसलिये नींद भी लूट अच्छी आई ।

हमारे दिन यह आश्चर्यचक्य था कि और ऐसा हो तो सुबह का
पाना खाया जा सके । वा कुछ ऐसा बचा था वह सब तो रात को ही
समाप्त हो चुका था । बोंगलुङ्ग ने घो-बान की और संदेह-शक्ति से देखा,
किंतु उसको निगाह में कोई आया नहीं भी । वहाँ तो सब ओर आये
जैसे जाले पीले लोग बिखरूँ पड़ते थे बाजार में सन्धियों व तरह ९ के
गौरव भी भरे दिखाई देते थे, मछलियों के बाजार में मछलियाँ मरी थीं ।
किसी सो स्थिति व हमके बच्चों के लिए वहाँ मृगा रहना नामुमकिन
था । यह जगह उनके देश की तरह नहीं थी वहाँ चोरी के सिक्कों से
भी खाना नहीं खरीदा जा सकता था । घो-बान ने बड़े धीरज से कहा—

“दे, बच्चे और तुम्हारे बड़े रिता पीत माँग सकते हैं, पितामों
के सतेह बाकों वर तो देंगे याकों को कुछ रहम आएगा ही । जो हमें
पीत नहीं देंगे, वे हम से कम उनको तो देंगे ही ।”

फिर हमने दोनों बच्चों को अपने बगल बुलाया, वे बच्चे तो थोड़ा
खुश हो सब मूँह मार थे । वे फिर दौड़कर सड़क के किनारे पहुँच
गए तो घो-बान ने कहा—

“तुम लोग अपने ९ प्याले इस प्रकार हाथ में ले लो—” और
कुछ खाता अपने हाथ में लेकर वह पिबिवा कर बगाने लगी—

“अच्छे साहब, बड़े अच्छे साहब, भीमटी की ! कुछ पुण्य कमाइये, बर्म कर्त से स्वर्ग मिलेगा । थोड़ा बहुत पैसा तो आप लोग यों हो फेंक देते हैं—इस मूले बच्चे को भी दे दें ।

छोटे बच्चों के माँ के इतना नाटकीय दण्ड की देखा बांगलुड़ में भी गौर से देखा । इस प्रकार की आवाज में उसने भील माँगना कहीं से सीखा । ऐसे कितने गुण इस की में बाकी रह गये थे जिसके बारे में बांगलुड़ को स्वयं कोई जानकारी नहीं थी । जो बांगलुड़ की निगाह का धन समझ गई थीर बोली—

“सँ बचपन में इसी प्रकार माँग कर प्यारी यो । ऐसे ही अकस्मात के समय में मुझे कैच दिया गया था ।”

तब कुछ महामय की सी रहे थे, डठ भाव । उन्हें भी कुछ खाका दे दिया गया । जहाँ सड़क पर भोज्य माँगने चले पड़े । स्त्री के भी अपना बर्तन हर रास्ता चलेते राहगीर पर दिखाता आरम्भ कर दिया । बच्चे की उमरें गीत में छे रहता था । बच्चे की ओर देखा २ वर और राहगीरों की ओर हाथ बढ़ा २ कर चित्तावे खगी—

“साहब, मैसाहब ! यदि आप कुछ न देंगे तो बच्चा मर जायगा । हम लोग मूले मर रहे हैं,” और वास्तव में बच्चा मिथीच सा दिखाई दे रहा था । लोगों से ऐसे मिथना आरम्भ हो गया ।

किन्तु दोनों छोटे बच्चों की भील माँगना बोली ही देर के बाद कुछ लेख सा बन गया । उनमें से बड़े की तो शर्म आती थी सी वह बरि से ही बहका कर रह जाता था । बच्चों की माँ के शूर से जब यह हाथ देखा तो उनको बसीद कर मीरुदो में छे गई और मुस्से में तथा तब उनको चोटे माने लयी ।

“तुम लोग कहते हो कि मूले मर रहे हैं ? और फिर उसी समय इस भी देते हो । मूर्खों ! देना करने से तो मूले ही मर जायोगे ।” और फिर वहनर दोनो के चोटे मारती चली गई, जब तक कि बच्चे ।

और और से रो न पड़े। उन बच्चों को मों के फिर बाहर भेजा और कहा—

‘अब डीक है। अब तुम भीतर मोंगने की सुरत में हो। अब हँसे तो और पिरोले।’

ऊपर बाँगलुङ्ग पूरता पावता केवी जगह जा पहुँचा जहाँ रिक्ते शिपों पर मिछठे थे। वहाँ एक रिक्ते को किराये पर खरब बह सड़क पर आ गया। लक्ष्मी के इस ज़ादे दिवसे सरीसो सवारी को लीपता हुआ वह सींच रहा था कि कहीं देखने वाले उस मूर्ख न समझ रहे हों। उससे रिक्ता लोभे नहीं ज़िब रही थी, उसी प्रकार जैसे रेल को पहिली बार रुक में खोले स कठिनाई होती है। लेकिन उसे पैसा कमाये के लिए हज़र ऊपर रिक्ता खेकर दौड़ना तो था ही। इस शहर में और मो सैकड़ों धातुमी रिक्ता चकलते हो थे। आगिर पहिले तो वह जाको रिक्ते का लिए हुए हज़र-ऊपर खजाने की मेकिरम करने लगा फिर सोचा कि इससे तो भीज मोंवना हो भरहा था, कि इतने में ही गहो के एक मकान का दरवाजा खुला और एक खरमा खनापू बूढ़ा मास्टर सा बपन्नि दरवाजे से बाहर निकल कर उसे आवाज देते लगा।

बाँगलुङ्ग कदमे लगा कि हमके लिए रिक्ता खजाया बिबुङ्ग नई बान है किन्तु वह बूढ़ा मास्टर बहरा था इसलिए उसकी समझ में कुछ नहीं आया कि रिक्ते बम्हा क्या कह रहा है। केवल इतने में रिक्ता को पेंडने के लिए भीषा करने को कहा। और बाँगलुङ्ग ने अपने बग को बाग न समझ रिक्ते को डहरा कर और दूँ के का एक पत्रा बिना भजा धातुमी समझ बिदा लिया। बूढ़ा ठन कर बैठ गया और बोला—

सुमे केह्लिशपन मन्दिर है खको फिर सुपचार बैठा रहा। हम प्रभर बाँगलुङ्ग की बुद्ध भी पड़ने का कोई अवसर नहीं दिया। बिना जाने हुए कि वह मन्दिर डिपर है बाँगलुङ्ग रिक्ता खेकर चला गया।

चलते हुए रास्ते में उसने मन्दिर की जानकारी कर ली रिश्वे को तेज होड़ाने का कोई मौका नहीं था क्योंकि सड़क दायाँ-बायाँ मर रही थी, कहीं सामान बेचने वाले होड़ रहे थे तो कहीं सवारियाँ हथर उथर माम रही थीं। देवी भीड़माड़ में वह रिश्वे घेकर केवल चल ही रहा था, साप हो उसे पीछे के बोम्ब का भी ध्यान बालर था। उस पोठ पर बोम्ब काटने की तो आइडन थी किन्तु बोम्ब खींचने का कतई आइडन नहीं था। मन्दिर पहुँचते ९ डमके पैर धक गये और हाथों में धाँसे पड़ चुके थे। वहाँ पहुँच कर उसने फिर रिश्वे की भीका किया और वह बड़ा मस्तर उठर पड़ा मन्दिर की जेब में हाथ बाँधकर उसने एक छोटा सा चौकी का सिक्का बाँसकुड़ को दिया और बोला—

‘मैं सदैव इतना ही देता हूँ भी चपक करके से कुछ न हासिल। इतना कहते हुए वह मन्दिर में मुग गया।

बाँसकुड़ का इरादा वैसे भी किसी तरह की दूजतबाजी करने का नहीं था क्योंकि उसने पहिले ऐसा सिक्का कभी देला भी नहीं था। इस सिक्के को लेकर वह पाममें जालक को दुआन पर गया जिन्हा सुनाने पर दम्भीस पेंस उल्ले मिले। बाँसकुड़ का वह सोचकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस दक्षिण प्रदेश में ऐसा इतनी आसानी से मिल जाता है। उसे वह बड़ी आन पड़ा कि पाय भी एक दूसरा रिश्वेवाला उसको तेजगारी मिल रहा है, वह बाँसकुड़ से बोला—

‘किन्तु दम्भीस ही पेंस है उम बड़े को तुम कितना दूर से आन थे। और अब हमका उत्तर उमने सुना था वह बिस्वा डम—‘वह बड़ा छोरी तबिलत का आइडन है। उमने तुम्हें किन्तु आन ही किरामा दिया है। चलने से पहिले तुमने जितना इरादे को बाजबोत की थी।’

‘मैंने कुछ इरादा नहीं बाँसकुड़ बोला। ‘उमने कहा—‘आ आओ’ और मैं चला आया।

दुमरा स्पष्ट वह मुग कर आता दक्षीन दृष्टि से बाँसकुड़ की ओर देखता रहा।

“यह भी जमीन धातुमो है,” वह व्यक्ति राह चलते बाबों को धीरे दौलकर बोलने लगा— “किसी ने कद दिवा धीरे धातु चले गये जैसे ठहराए ही नहीं किन्तु महामूल है यह, मूकराज ! यह जान को कि केवल विदेशियों को ही बिना ठहराए सचारी में निरुधरा जा सकता है । इन लोगों का स्वभाव ही धीरे होता है । इनके मुँहाने पर बिना कुछ ठहराए ही निरुधरा हो जा सकता है । वे विदेशी भी मूल ही होते हैं, उन्हें वह मातृम ही नहीं रहता कि किन्तु दूर जाने का क्या रेट है ? उनकी जेब से तो चाँदी पानी की तरह बहती है ।” सब सुनने लगे हँस पड़े ।

बागलुङ्ग कुछ न बोला । यह शोक ही था कि शहर के इन निवासियों में वह मूल ही दिखाई पड़ता था । फिर बिना कुछ कहे सुने वह अपना रिक्शा बढ़ाए चला गया ।

“कुछ भी हो, इन दामों से बच्चों का कल का आला तो मित्र ही आयगा,” उसने कुछ दृढ़ता के साथ चलते धातु से कहा धीरे धमी उसे ध्यान धापा कि धमी ता रिक्शा का किरावा भी देना है । धमी वह उस किराये का धापा भी नहीं कमा पाया है ।

इसके बाद उसे एक धीरे सचारी मित्र धीरे रेट धराने पड़े दोपहर को हा सचारियों धीरे मित्र गई, किन्तु रात को जब उसने सारी कमाई को रेजगारी गिनी तो किरावा देने के बाद केवल एक पैसे ही बचा अठपक बड़े दुखी मन से वह धमनो रीपड़ी में सुपा । सोचने लगा कि जेब पर दिन भर की मेहनत से कहीं अधिक मेहनत करने पर भी ऐसी कोई कमाई नहीं हो सकी । इन्हीं विचारों में एक के बाद एक विचारों ने उसे फिर निश्चित कर दिया ।

बार बहूचने पर उसे मातृम हुआ कि धातुधन को दिन भर की धीम में जो धारी छोटी रेजगारी मित्र पार्थ थी, वह पॉव पॉस से कम हो थी, धाना बच्चा को जो कुछ मित्र पाया था, वह सब मित्राधर

इज्जत हो गया था कि दूसरे रोज़ सबैरे का खाना खरीदा जा सकता था । थोड़े बच्चे से जब उसकी रेजगारी खेबे की कॉन्ट्रिब्यूटन में ली, तो बच्चा तुरंत बड़ा । वह बच्चा अपनी रेजगारी को मुट्ठी में भींचे हुए ही सो गया और दूसरे दिन उसने अपनी ही रेजगारी से अपने खिचे चावल खरीदे ।

लेकिन बड़े को दिन भर में कुछ भी नहीं मिला । वह चुपचाप सबक के किनारे बैठा ही रहा । उससे भीक माँगने को कोई पैसा ही न हो सकी । वहीं कमी वह सोचा रहा, कमी बढ़ता रहा । उसे बड़ा समझ कर किसी ने छोट बपट भी नहीं की । सम्झा तो जब उसने अपने हाथ काखी देखे तो केवल इतना ही कहा—

“मेरे तो हाथ बझाये हैं, बीज बीजे हैं और इस प्रकार अपने खाने के खिचे चावल इकट्ठे किये हैं । इसके अतिरिक्त मेरे एक बच्चा है और उसके भी बच्चे हैं ।”

उसके इन शब्दों में बड़ी आत्मा और विश्वास था कि जब उसके एक बच्चा है और उसके भी संतान हैं तो उसे तो खाना मिल ही जायगा ।

इस प्रकार बांगलुरु का काम चारम्भ हुआ और धूल की जो धूलि थी वह शांत होने लगी। उसकी कम्पार्ड से व ओखान को भीख से इतना मित्र बना था कि सारे परिवार को पाने के लिये आवश्यक आस्तावा से उपकरण हो गये। अतएव बांगलुरु के जीवन में जो नया-पन आ गया था वह अब धीरे-धीरे मिटता जा रहा था। इस शहर के बारे में उसकी जानकारी बढ़ चली थी। दिन भर सबको पर भागते व अब वह जान गया था कि शहर के ओठरी व द्विपे हुए हिस्से किपर हैं और पेरुम की बस्तुएँ कहाँ मिलती हैं। वह यह भी समझ गया था कि सारे के समक उसके रिश्ते में जो सवारियाँ बैठी हैं—जन्म से मुख्य वर्ग तो बहुत अपना दुकानों पर जाते हैं और स्त्री वर्ग को बाजार में सच्ची बगैरह करीदने जाना होता है। किंतु इसके अतिरिक्त वह और कुछ नहीं जान सका था कि बहुत क्या होता है? केवल रस्सों के नामों से ही वह परिचित हुआ था, जैसे “चीन महाविद्यालय” अपना “पश्चिम विद्या मन्दिर” आदि। इन रस्सों के कारण तक ही वह जा पता था, अन्दर जाने का उसे अवसर ही नहीं मिल सका था। फिर उसे तो मजबूती मिल जाती थी और कुछ चाहिये भी नहीं था।

रात में सवारियाँ किपर जाती थीं इसकी जानकारी उसे होती चली जा रही थी, लोग किन प्रकार का आनन्द कहाँ जाकर करते थे इन स्थानों से वह अब अनभिज्ञ न था, फिर भी उसके अपने आनन्द की

सोमा तो अपनी ओपड़ी तक ही थी। सवारियों के साथ तो उसका मार्ग किसी एक द्वार पर ही रुक जाता था। उस बड़े शहर में सभी व्यक्तियों के बीच उसका जीवन एक ऐसे बूढ़े के समान था जो अपनी जिम्मेगो किसी बड़े संपन्न घर में दिया २ कर रोटी के फिके हुए टुकड़े पाकर ही गुजार देता है।

बांगलुर अपने को इस दक्षिण प्रदेश में विदेश ही समझता। एक तो उसकी भाषा इधर की भाषा से भिन्न थी, दूसरे सूरज में भी बड़ा अन्तर था। यहाँ लोगों को आसानी से एकत्र भिन्न जाती थी, इस सिधे जाने के समय कई प्रकार की तरतियाँ चालू का स्वभाव सा हो गया था। यहाँ के निवासी बड़ा भी अच्छे और श्रीमते पहिनाते थे। इस प्रकार अपने को विदेशी समझते हुए, वह एक बड़ा हुआ सा जीवन व्यतीत करता रहा। एक दिन उसने मन्दिर के सामने एक नवयुवक का भाषण सुना, जिसमें विदेशियों के विरुद्ध आवाज उठाई गई थी। उसने कहा था कि चीन के निवासियों को विदेशियों के प्रति ऐसा आदोक्षण करना चाहिये। कि वे लोग यहाँ से चले जाएँ। इस प्रकार का भाषण सुनकर बांगलुर बहुत बड़ा और सोचने लगा कि कदाचित् यह आदोक्षण कभी लोगों के विरुद्ध होगा जो उसके उपरोक्त प्रदेश से यहाँ जीविका-निर्वाह करने आये हैं। इसी प्रकार के भाषण प्रायः निरपेक्ष हुआ करते थे, जिनमें कहा जाता था कि यहाँ के निवासियों को निककर एक साथ बहाना होगा और समय रहते २ पड़ खिस कर इस योग्य बनाना होगा कि उनके आदोक्षण से सारे विदेशी यहाँ से भाग जाएँ। बांगलुर वह न समझता था कि जिन लोगों से ऐसा करने को कहा जा रहा है, उनमें बांगलुर व भारतीय प्रदेश के लोगों को भी सम्मिलित होना है या नहीं?

उस दिन जब वह कच्चा बाजार में सवारी की गोज में रिक्का सिधे हुए जाया था तो एक बूढ़ा से उसने कुछ कियों को निकालते हुए देखा। तब उसे पता चला कि यहाँ और भी लोग हैं जो उससे भी

अधिक विदेसी हैं। तभी उसे यह भी समझ में आ गया कि चौदाजन के बिना वो माणव सुनार्द दे रहे थे वे इन जैसे लोग के बिना ही थे। कुछ भी हो, इन लोगों में से उसे ऐसी एक सवारी मिल गई, जिससे आर्थिक मजदूरी तय हुई। ऐसी सवारी उसे बहिष्कृत नहीं मिली थी। उस सवारी की बैरामूबा से उसकी समझ में नहीं आ सका कि वास्तव में वह की है अथवा पुरुष। कच्चे कच्चे को यह सवारी पलकन पहिने हुए गहन में एक जालघर की लाकड़ खोदते हुए थी। उस सवारी को देखकर उसे पुछो बाकी सड़क पर जाया या। वह तेज होकर चला। रास्ते में जान पहिचान वाला एक और दूसरा रिक्शे वाला मिला, जिससे बांगलुरु के पुराने—

“देखते हो—मैं किस प्रकार की सवारी से आ रहा हूँ?” और उसे बचर मिला—

“एक विदेसी—वह तो अमेरिकन को है—तुम यहाँ हो जायगो—” किंतु बांगलुरु रिक्शा दौड़ते हुए खेता बजा गया। जब तक पुछो बाकी सड़क पर पहुँचा तो वह काफी थक चुका था जब उसके शरीर से पसीना बराबर चू रहा था। जो अब रिक्शे से उतरा तो उसने हरी-पूरी जीमी माया में कहा—“तुम्हें इस प्रकार तेज दौड़ने की कौन आवश्यकता नहीं थी”, और चुपचाप दो चोदों के मित्रों को खपसा हुनुमा किया या, उसके हाथ पर रख दिये।

तब बांगलुरु ने सोचा कि वास्तव में यही लोग विदेसी हैं। यहाँ के रिक्शावाले जबके कच्चे बाक और काकी पुनको बाकी चोटें दे उन लोगों से मिल भूरे बाक और कंजी २ चोटों वाले हैं। जब रात का वह दिन मर की मजदूरी बिना अपनी छोटों में पहुँचा तो अपने सब हाक सोबाब को बठाया। वह बोली—“मैंने भी ऐसी जिनो को देता है, मैं उन्हीं से भीख माँगती हूँ और वे ही मुझे चोदों के मित्रों दे देती हैं।” किन्तु न तो बांगलुरु को और न उसकी जो को वह बचा या

कि ये विदेशी अपनी सङ्ग्रहणा से ये बाँड़ी के हुकमे नहीं देंगे बल्कि इस-विषये देंगे कि ये समझ नहीं सकते कि सिपाहियों को उनके हुकमे देने से ही काम चला जाता है। जो कुछ भी हो, अपने इस अनुभव से वह वह अपनी तरह समझ गया कि इस दिन को बचपुत्रक है रहे थे, उनका मतलब इन विदेशियों से ही था न कि ऊपरों प्रदेश से आग कर अपने हुए गरीब जीव के लोगों से।

नगर के बाहर घोंपड़ियों की कटार में रहते २ दिन भर कुछ न कुछ मेहनत मजदूरी करते रहने वालों को वह तो बता चला गया था कि बाँड़ी जाने की कमी नहीं है। बाँगलुरु घीर उसका बरिबार भी अपने कामों की शक्ति इस प्रदेश से आये थे बाँड़ी बकाब पचा था, बाँड़ी सभी पूज से पीड़ित थे तथा बाँड़ी की सारी खेती मुका होने से बरबाद हो चुकी थी।

बाँड़ी इस नगर में जाना पर्याप्त मात्रा में बचकर था। मङ्गली बाजार में सबूतियों की ही धरमार की मात्रा की मङ्गली में बकाबन मात्र भरा रहता था। लकड़ें घीर अपने बाबलों की भी बाँड़ी कोई कमी नहीं थी। इसी प्रकार मौस विन्ने की जगह पर सभी प्रकार के बाबरी का मौस मिल जाता था। सच्ची भी सारी बिरम की व जो कुछ भी जमीन से बगाई जा सकने की मौसु को — छोटी २ बाब गाजों, बग्गे हुए मोती के फूस टमाटर, सेम। इस शहर के बाजार में ऐसी कोई वस्तु न थी जो न मिलती हो, मनुष्य सबको इच्छा के अनुसार सभी कुछ का पौ सकता था। इस सबके अतिरिक्त घोंपड़-बाँड़ी की मिठाईयों बका घीर मोती को देकर ही लकीपत प्रसन्न हो जाती थी। अगर अगर बच्चे हाथों में दाम बिण हुए पैचने बाकों की घोर होबटे-आगते दिखाई देते थे।

वह कहा जा सकता था कि इस नगर में कोई भी मृगा नहीं भरता होता।

इतना सब कुछ होते हुए भी बिल्ब प्रति बौंगलुङ्ग व ड्रके परि
 वार के सब काग, कड़े कपड़े पहिने सर्दी में घिड़ुफते हुए अपने १ कच्ची
 डेकर निकलते और का कुछ भीख में सिक्का, इसी में अपना बिर्बाह
 करते। जोखान की दिव भर की भीख से व बौंगलुङ्ग के दिन भर रिक्का
 बचाने पर भी, उनकी जेबकी में सिक्का प्रति चावल नहीं पक सकता
 था। कभी १ एक दो पेसी यदि बच भी जाती तो सखी खाते की
 जाती, सखी मेंहमी को पकती ही इसे पकाने के लिए ई धन की इतर
 बपर से बीता खोरा जाता। इस बीजने बटोमने में कभी १ जोखान के
 बच्चों को कोई भातमी पीठ भी देता और रोते १ बच बच घर आते
 तो जोखान की बड़ा हुए होता। बड़ा बच्चा समझा अधिक ना, बीबी
 मकूल का भी ना, इसलिये बड़ी अधिकतर पकड़ा अन्न और बड़ी मिठा
 रखा ना, किंतु ब्राना मीख मांगने में इतना जुर नहीं था, मिथ्या
 छोटी मोटी बीबी को जुरा कर ले पाते में।

किन्तु जोखान को बच्चों की इस भाव से कोई परेकार नहीं
 था। यदि बच्चे बिना खेद हुए के भोल नहीं मांग सकते तो पैट भरने
 के लिए बोरी करवा भी कोई जुरी बात नहीं थी। बौंगलुङ्ग को छोटे
 बच्चे की यह भाव पसंद नहीं थी किन्तु वह जोखान से कुछ कह नहीं
 सकता था। इसीलिए बौंगलुङ्ग बच्चे बच्चे से कुछ नहीं कहता ना, बल्कि
 उसके सीधेपन से परिवार की कमाई में कुछ सहमय नहीं हो पड़ती।
 इस बड़ी बीषम के सहारे बीसा जीवन भावन हो रहा था, वह सब
 बौंगलुङ्ग को पसन्द नहीं था। इसकी सनक में तो इसकी अपनी अभीव
 ही उसका इन्तजार कर रही थी।

एक रात जब बौंगलुङ्ग देर से घर लौटा तो पाने के बिने उसे
 देना अम्मा माँस मिठा कि उसकी। बौंगलुङ्ग बड़ी जोर उसने
 आवाज से कहा, “माँस अम्मा किमी बिदेशो से हो कुछ मिठा है”
 किन्तु अपनी भाव से अनुसार जोखान ने कोई उत्तर नहीं दिया।

हलने में ही रोना बचा अपने गर्वपूर्ण विनैक से बोला—

“मैं इस मौस को खाता हूँ । जब कदाई मौस काट रहा था तो खरीदने वालों मोदी की के हाथों के नीचे से होकर मैंने मौस का टुकड़ा उठा लिया और से मागा और इसे खाकर एक बर्तन के नीचे बिठा दिया ।”

“तो अब मैं इस मौस को नहीं खाऊँगा ।” बॉगलुड, कोपित होकर बोला—“इसे वही मौस खाता उचित है जिससे मैं तो इस खरीद खर्च का हमें नीक में मिला था । बुराकर मौस खाता उचित नहीं । इस लोग मिश्रारी घररक है किन्तु खोर कदादि नहीं ।” और इतना कह कर उसने अपने हाथ से बर्तन में से मौस निकालकर चेंक दिया । बचा रोता भिखारवा ही रह गया ।

जब थोड़ाबड़ी और उसने जमीन पर पड़े हुए मौस को उठवाया, वाली से उसे साफ कर फिर उबालते पानी में बोझा पकने को रख दिया ।

“मौस तो मौस ही है” वह बीरे से बोली—

बॉगलुड ने इस पर कुछ कहा तो नहीं, किन्तु उसे आँख घररक हो जाता । उस कर लगा कि उसके बच्चे इस बगर में खोर होते का रहे हैं । पड़े हुए मौस को जब थोड़ाबड़ी ने उठाया तो बॉगलुड कुछ न बोला, जब वह मौस बूँदों को दिया गया तो जो उसने कुछ नहीं कहा—किन्तु स्वयं उसने नहीं खाया, केवल सखी खाकर ही अपनी भूख मिटाई । जब खाता । पीना समाप्त हो चुका था वह थोड़े बच्चे को घर के बाहर नु तब पकड़े हुए से गया और उसे एक मार लगाई । मारते हुए भिखारी कर कह कह रहा था, “खोर को कैसी ही मार पकती है ।” फिर घर पहुँच कर अपने आप से कहने लगा—

“हम लोगों का अपनी जमीन पर बाँटिस बज्जबा चाहिये ।”

इससे समृद्ध नगर में बौंगलुङ्ग अपनी गरीबी के दिन किसी प्रकार काट रहा था। जिस नगर में नाम व अन्य साथे पीने की सामग्री में कोई कमी नहीं थी वहाँ तरह-२ की सुन्दर वस्तुओं के अतिरिक्त ऐशमी बच्चों के डेर बनो रहते थे वहाँ के निवासी अधिक से अधिक मूल्य के बच्चों से सुसज्जित रहते तथा माँति २ की सुगन्धियों से मरपूर रहते उसी नगर के एक भाग में बौंगलुङ्ग रहता था वहाँ लोगों को न तो खाने को अन्न मिल पाता और न पहिने को वस्त्र।

सारा पुण्य वर्म अभी व सर्व समृद्ध व्यक्तियों के पहाँ हाथों के बिये तरह-२ की मिठाइयों, केक आदि सैवार करने में दिन २ भर मेहनत करता, परन्तु उसके बच्चों को माता से संध्या तक दौड़ बूझ करते रहने पर भी मजबूरी नहीं मिल सकती, जो उनकी आवश्यकताओं को पूरी करती। अन्य की पुण्य मिल कर वहाँ ऐशमी बच्चों की सिखाई करते रहते गर्म कपड़ों को काटते रहते, वहाँ उनके अपने उन बच्चों की वस्त्र भी न थे।

बौंगलुङ्ग हमी लोगों के बीच रहते हुए कई प्रकार की बातें सुनता रहता किन्तु उधर अधिक ध्यान नहीं देता। उसे बड़े अक्षयता कुछ नहीं कहते सुनते। उनके अतिरिक्त अपने अवस्था वाले सभी व्यक्ति रिक्ता खींचते ठेके चलाते, व अभी-माओ लोगों के महलों के बिये लकड़ी की कोठे फिरते। बोय्य खींचते २ उनकी इच्छाओं का चक्रवाचुर हो जाता किन्तु

फिर भी सुपचाप रात को घोड़ा बहुत का पीकर सो रहते । ओखान की तरह उन सभी के चेहरे त्रिभिपायु त्रिमियायु रहते । उनके भाग्य में क्या बरकत था, यह कोई नहीं जानता था । यदि कभी कोई बाधबीध भी आपस में होती तो प्रायः का दुःखदा रोया जाता भयवा जैसे का ।

घोड़ी बहुत शक्तिमय धनस्या में जब उनकी मुद्रा देखने में धरती तो ऐसा जान पड़ता मानो ओष बर उनके चेहरे सिद्धुव गए हों—यद्यपि वहाँ ओष का नाम भी न होता । कई वर्ष तक बरस्वर मारी २ बोझा होते रहने के कारण उनके चेहरों पर अनेक झुर्रियाँ पड़ चुकी थीं और झोंपें गड्ढों में गँस गई थीं । उनको स्पर्श ही ऐसा कोई प्यार नहीं था कि वे किय प्रकर के बिछाई देते हैं । एक बार इनमें से एक ने शीशा देखते हुए यह अवरण कहा था कि 'शमल किउनी मरी है ।' इस पर जब बाकी सब मजदूर हँस पड़े थे तो उसे यह आभास हुआ था कि कदाचित् उसने पत्नी बात कह दी होगी जो उन लोगों की बुरी छग गई है ।

उन ओषद्विधों में जो बर्ग प्रायः वषों के कड़े बीबड़े बर्षों का सीधा विरोधा किया करता क्योंकि वह पैदा होते ही रहते थे और इस प्रकार उनकी संख्या भी बढ़ा ही करती थी । इसके अतिरिक्त चियाँ इधर वधर घेतों से ई बन भी उठा खाया करतीं । इन बाँटे २ बरों में बर्षों का अन्त और उनकी धूलु इतनी होती रहती थी कि मों बार को भी प्यार नहीं रहता कि उनके किउने बात ४ अम्मे और कितने मरे, केवल उन्हें बही मान्य रहता कि इतने पर खाने वाले हैं ।

इस प्रकार इन लोगों का जीवन भी एक विशेषता प्राप्त कर गया था । वे ज्ञाना दिन भर बाजारों में घूमते फिरते । कुछ इधर उधर काम करके थोड़ी बहुत मजदूरी करते व बर्षों और चियाँ जहाँ हाव जागता, वहाँ से कोई वस्तु घुरा खाते या जीव मोंग कर ले जाते । बांगलुद और उनकी जो भी इस छोटे से विशेष समाज के घट्ट थे ।

जैसे ही कुछ ऐसे जीवन को सुपचाप स्वीकार कर चुके थे कि

धीरे २ बह समय भी घा गया, जब बरसै बरै हो गये और उनका पीरन उनको एक बिरोप स्फूर्ति देवे जया । गरोबी की रूठा में इनमें असंत प की मानना जामूठ हो गई और क्रोध से प्राण। ये लोग आपस में बिजोह करवै की बातचीत करवै लगे । इसके बाद जब इन बरमुबकों के बिबाह और फिर बरवै हुए तो इस प्रकार संख्या बढ़ जाने से और भी हुन्की होकर बिजोह हो उठे । जानवरों से अधिक घोर परिधम करवै पर भी जब उनके परिवार भूखे रह जाते, तो ऐसी भावनाओं का जामूठ होना स्वाभाविक हो या ।

सर्जियों समाप्त होने पर जब बसंत का आगमन हुआ तो इन निधन परिवारों के कुछ और भी बढ़ गए । बर्फ पड़ने पर ओपड़ियों में अन्दर और बाहर पाबो तथा भीचड़ हो गईं । जब सोये का भी कोई उपयुक्त स्थान नहीं रहा तो बांगडुड एक दिन बहुत ही पोराल हो गया और अपनी ओपड़ी से बाहर निकल सबक के किनारे आकर लुपचाप लड़ा हो गया । पत्नी आकर बसने अपने बूढ़े बाप को बैठा हुआ देखा । छोटी बच्ची बड़ी हो बच्ची भी और बूढ़े बाबा के पास नहीं आती थी । ओछाव ने एक कटे कपड़े के बन्धे डुकड़े से बच्चों का एक हाथ बांध कर बूझा कावा बूढ़े के हाथ में पकड़ा दिया था जिससे बच्ची इतर-उतर दूर न जा सके । बच्ची अपनी माँ की गोद में से उछल २ पड़ती इस प्रकार ओछाव को सीक मँगने में बाधा पड़ती, इस बाधा से बच्चे के खिंचे हो उसने वह उपाय किया था । इसके अतिरिक्त ओछाव पैर से या और बढ़ एक साव हो बच्चों का बोक अपने नखोंत शरीर पर सह भी नहीं सकती थी ।

बांगडुड उस बच्चों का उठना, बछना और फिर फिर पड़ना देखता रहा । सम्प्रा की सुहावनो डण्डी हवा से उसे फिर अपनी बनीव और अपने कौतों का प्याव हो आया । “इन्ही दिनों में”—उसने अपने दिता से कहा,— “कैत जोते जाते हैं और गेहूँ बोना जाता है ।”

भोड़ ! बूढ़े ने घीरे से कहा, ' मैं समझता हूँ तुम्हारे मन में क्या बात है । अपने जीवन में दो बात मैंने ऐसे दिन बिताते हैं और प्रकार अपने दोनों ब बमीन को जोड़ना पड़ा है ।'

"किन्तु पिताजी, आप इस बार अपनी बमीन पर बापस भी घरे हैं ।"

' अपनी बमीन पर तो जाना ही था ' बूढ़े ने शांतिपूर्वक कहा ।

बांगलुङ ने मन ही मन कहा कि वह भी बापस जायगा इस वर्ष वही तो अगले वर्ष तो अवश्य ही । अपनी बेटी को फिर से उपजावे के निचारों में जीव बांगलुङ पुनःचाप मोंपदो में बापस गया और वहाँ रुबाई के साथ अपनी को से कहा—

"यदि मेरे पास कुछ भी होता तो उसे बेच बाव कर अपनी बमीन पर अवश्य चला जाता । यदि पिताजी बूढ़े न होते तो इस खोग भूषे भरते भी बापस चला सकते थे । किन्तु अब वह और बच्चे ही सीख कैसे चला सकेंगे ? और तुम भी पैर में बच्चा छिपे कैसे चला सकोगी ?"

अज्ञान पावस पका रही थी बावलों का मोड़ एक और गिराती हुई धीरे से बोली— इस बच्चे के अतिरिक्त बेचने को और कुछ नहीं है ।'

वह सुनकर बांगलुङ का दम ऊपर का ऊपर ही रह गया और वह ओर से बोली— "नहीं, बच्ची को तो मैं नहीं बेचूँगा ।"

"मैं बेची ही गई थी," जी ने धीरे से उत्तर दिया, "मुझे एक घमीर धराने में बेचा गया था और उस रकम के सहारे मेरे माँ बाप पर बापस चले गये थे ।'

"तो क्या इसीलिए तुम भी अपनी बच्ची को बेच दोगी ?"

"यदि मेरे ही बच्चा की बात हातो तो मैं बेचने से पहिले बच्ची

बांगसुइ का मुँह सुका का सुका रह गया। इस दीवार की दूसरी ओर वास्तव में इतनी ही भमीरी थी।

“अब लोग बहुत ही भमीर हो जाते हैं, तब भी काम बिकाखने का एक उपाय है” इतना कह वह व्यक्ति एकदम चुप हो गया, जैसे उसे कुछ प्वाल था गया हो।

‘मोह। फिर काम पर जाना है’, और वह रात के अन्ते में चला गया।

किंतु बांगसुइ को उस रात निश्चिन्त नींद नहीं आई। दीवार के बाग पार के छोटे, चौड़ी और मोठियों की चमक में वह सोचता हो रहा—एक ओर इतनी भमीरी और वहीं तब तक को कपड़ा नहीं, इसी सोच विचार में उसे अपनी बच्ची की बेचने का आख्य हो आया और उसने मन ही मन कहा—

“यदि बच्ची को एक नयी परिवार में बेचा जाय तो अच्छा होगा, वह अच्छा २ खाना का सकेगी भामूबब भी पहिन सकेगी और बच्ची होने पर निम्नी/रईस को खुश भी सकेगी”, किंतु इसके प्रत्युत्तर में उसने कहा— ‘उसे बेचने से कोई हीरे-मोती तो मिलेंगे नहीं, जबकि से जबकि अपनी जमीन पर वापिस जाने का एक एक रुपया मिल जाय तब फिर बाकी सामान बेच व वर की मीठ-कुर्सी बिस्तर आदि करीबने को कहों से आबेया ? क्या इन्जिने में बच्ची को बेच दूँ कि पहों मूँट मरने को अवेका इतु खोप वहाँ अपनी जमीन पर भूखे मरें ? जमीन में बोने के बिये हमने पत्त भीज भी ठां नहीं हैं।’

जैसा कि उस व्यक्ति ने कहा था कि भमीरों के अधिक भमीर नव जाने पर भी कोई बचान बिकक ही आता है, किंतु बांगसुइ को समझ में ऐसा कोई उपाय नहीं आया।

भोंपड़िया के इस गाँव में बसन्त भी आया। मैदानों में पहाड़ी टीलों में बसत उम आई, पेड़ों में नई-नई पत्तियों भी उम आई व कहीं कहीं बहिले के पड़े हुए साग-सम्झी के बीज भी फूट पड़े। इस हरियाली में अब यह आश्चर्यक नहीं रहा कि साग-सम्झी इधर उधर से छपटकर आई जावें। अब तो नित्य प्रति छियाँ और बच्चे हाथों में दूधे-दूधे बर्तन व टोक के हिम्मे लिये हुए निकल पड़ते और खेतों में उगी हुई सब्जियों कीम बटोर आते, इस प्रकार न तो मीक ही मोंगनी पड़ी और न पैसा ही खर्च होता। की बच्ची की इस मोड़ में थोड़ा-बड़ा डबके होनी लड़के भी समझ रहते।

किन्तु पुदप-बर्ग को तो काम करना ही पड़ता, बांगलुङ्ग भी पहिले की तरह दिन भर महलत मजदूरी करता। यद्यपि दिन बड़े और गर्म हो जाने के कारण मजदूर-बर्ग थोड़ा थिरथिरता रहता। सर्दी में दिन छोटे होते थे महलत करने से शरीर में गर्मी रहती थी तो ये लोग बुध-आप काम करते रहते थे और दिन के समाप्त हो जाने पर ज़ेपेरा होने के पहिले ही घर आकर की कुछ मिछता या पी खेने के परबत सो आते थे। बांगलुङ्ग की भोंपड़ी में भी ऐसा ही होता था और वह यह भी समझता था कि ऐसा हो हाब दूसरी भोंपड़ियों में होगा।

ओ कुछ भी हो, बहुत परिवर्तन से लोगों की बचान बचवता

रक्षण की भांति दिखाई देती। वह और कुछ पूछना भी नहीं करता। जो कुछ अभीष्ट बात उसे दिखाई देती, उस वह चुपचाप स्वीकार कर लेता। नहीं कभी २ कोई अकस्मात भी पक जाता, लेकिन इस बारे में भी वह कोई और जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करता था।

अकस्मात में क्या हुआ होता है बौंगलुङ की समझ में वह नहीं आता था। अपनी जमाना में या पहिले कभी भी अचरों को पहिचानने की कोशिश ही नहीं की थी। अतएव शहर के बाहरों पर बिपके हुए दरवाजों में क्या खिन्ना होता है व असम्य मत्तव्य क्या और बिपके बिप हाथा है यह उसकी समझ के बाहर की बात थी। हाथ ही में हो बार ऐसे अकस्मात व पछे उसके हाथ में दिये गए, लेकिन वे देकार रहे।

पहिली बार ऐसा पछा उसे एक बिदेसी ने दिया था जिसे उसने एक दिन रिकवा में बिकवा था। वह बिदेसी ठाढ़ के बूढ़ के समान लगे कद् का हुबुआ पठका व्यक्ति था, उसकी आँखें बर्क की तरह सदैव थी व मुँह पर लम्बी दाढ़ी थी जब उस बिदेसी ने पछा हाथ बढ़ाकर बौंगलुङ को दिया था तो उसने वह भी देखा था कि उसके हाथ का रङ्ग काका था व उस पर भी बड़े २ दाख थे, उसकी लम्बी नाक व्यक्तिव की शोभा बढ़ा रही थी। बौंगलुङ करके मारे पछा खेले से हुम्कार भी न कर सका। बिदेसी के गटे जाने के बाद जब उसने पछे की गौर से देखा तो उसमें एक व्यक्ति का चित्र था जो हाथ फैलाए हुए एक लकटे पर टंगा हुआ था, शरीर पर कोई वस्त्र भी नहीं थे। वह देखने से स्रुत व्यक्ति का चित्र मात्स्य होता था क्योंकि आँखें उसकी बंद थी और सिर कंधे पर झुका हुआ था। बौंगलुङ चित्र की देख कर कुछ बरा था, चित्र के नीचे कई व्यक्तिओं के चित्र थे किन्तु बौंगलुङ उस चित्र का कोई मतलब नहीं बिकाव सका।

रात का उसने चित्र जाकर बड़े भाप को दिखाया था, वह भी कुछ फल तो सकता ही नहीं था अतएव दोनों वही बात करते रहे कि

चित्र का क्या मतलब निकल सकता है। बौगलुस के दोनो लड़के भी चित्र को देख २ कर हँस पड़ते व कमी दर के मारे सहम जाते।
 “देखते हो एक छोर से इसके लून बढ़ता दिखाई दे रहा है।”
 बड़े बाप ने कहा—

“यह व्यक्ति आकर वही कोई पापे रहा होगा वही इस प्रकार काँसी पर लटकाया गया है।”
 किन्तु बौगलुस तो चित्र को देखकर सहमता रहा। सोचने लगा

कदाचित्त वह चित्र उस बिदेसी के माई का होगा और उस जाति के लोग बढ़ता निपटारने की बैठा में होंगे। अतएव बौगलुस उस लड़के पर जाँच से बचता रहा, वहाँ से उस बिदेसी की सवारी मिली थी। फिर भीरे २ चित्र के बारे में वह विशुद्ध ही भूल गया। भोखान से उस चित्र को कागजों के मोटे २ टुकड़ों में सीकर लूते के सोख में मज-दूरी से सी दिया।

दूसरी बार बौगलुस को जो पर्चा मिला वह शहर के ही एक लुचक ने उसे दिया था। वह पढ़ा जिला जान पड़ता था और कमी २ लड़के के चौराहों पर मावक दिया करता था। वह लुचके घाम वह पर्चे लुचक पर चिपटा २ कर बौट रहा था। इस वर्र में भी कुछ इसी तरह का चित्र था किन्तु इस चित्र में कोई दाही बाज्रा व्यक्ति नहीं था बल्कि एक बही का कोई निचामी मास्त्रूम होता था। एक कमजोर, जड़े चीबड़े बहिन व्यक्ति के ऊपर बैठे एक मोटे ठाड़े व्यक्ति का वह चित्र था, जो बार २ घुरे से उस निर्यंक व्यक्ति को घायल करता हुआ दिखाई दे रहा था। इस चित्र को देखकर क्या टक्क उठती थी चित्र के नीचे का कुछ पढ़ा था उसे बौगलुस बहुत कोमिठ करके भी नहीं समझ सका।

“यह इस बीमरुद चित्र का मतलब आप मुझे समझा सकेंगे।”
 उस व्यक्ति ने कहा “इस छोर पर है हुन लुचक का मावक लुचकात

झुन खो, देखो यह क्या हो रहा है।”

बाँगलुङ्ग बस पुष्पक का भाषण श्रवण से सुनने लगा। बससे जो कुछ सुना वह पहिंचे कभी नहीं सुना था।

“यह सत्य स्वार्थिता का चित्र तुम्हारा ही है।” वह पुष्पक कह रहा था, “घोर जो घुरा भौंक कर मार रहा है वह असौर और भयबाल लोग हैं। ये पूँजीवादी लोग तुमको तुम्हारी सृष्टि के बाद भी मारते बड़े चापे से। तुम लोग विपन्न हो गरीब हो हसीखिये कि ये जनताव दारी वस्तुओं हथप छीते हैं।”

बाँगलुङ्ग गरीब था, वह वह साबता था, किन्तु वह अपनी गरीबी का कारण उस देवी शक्ति को समझता था जो या तो समय पर बर्पा करती हो व भी और यदि बर्पा करती तो वो इतनी किनास का जाल और लोग अधिक संकरग्रस्त हो जाय। यदि समय समय पर खेती को रूप और बर्पा का सहयोग मिलता रहे तो कोई कारण नहीं कि बाँगलुङ्ग गरीब बना रहे। किन्तु उस पुष्पक का भाषण वह और भी कीचड़ से झुनटा रहा कि समय पर बर्पा न होने का इन जनतालों से क्या सम्बन्ध है। मातृस्य समाप्त हो जाने पर भी जब बाँगलुङ्ग के पैदा कोई सम्बन्ध नहीं जोड़ पाया तो वह उतावला होकर बुझने लगा—

“साहब, क्या ये जनताव लोग पैसा उपाय भी कर सकते हैं जिससे बर्पा हो जाय और मैं अपनी खेती पर काम करके जा सकूँ ?”

इतना सुनकर वह पुष्पक उपहास करते हुए बोला—

“तुम भी कितने सूँघ हो ! यदि बर्पा नहीं होती तो कोई भी बागी नहीं बरसा सकता। किन्तु इस बात का हम से कोई सरोकार नहीं। यदि अभीर और भयबाल, जो कुछ भी उनके पास हो उलझा हिस्सा हमें भी दें वे तो हम सब के पास पैसा भी हो और जाना भी। अब तो पैसा और जाना हम्ही के पास है और गरीब लोग मूठे मरते बड़े जा रहे हैं।”

सुनने वाले सभी बाह-बाह करने लगे, किन्तु बांगलुङ्ग को कोई संतोष नहीं हुआ और वह चुपचाप छोट जाता। उसकी समझ में केवल यही रहा कि पैसा व जाना तो खीम ही समझ हो जाता है जब उसके पास खमीर हो है। हाँ अकबरा लोरी को समय-समय पर बर्हि पूर व बर्पा नहीं मिछी तो फिर मुजमरी फैल जाती है। बहरहाल जो पर्चे वह चुबक बाँट रहा था, वह बांगलुङ्ग ने चुपचाप समेट लिए क्योंकि उसे प्यार आ गया कि थोछान कागज के टुकड़ों को पत्तों के छे में सीकर मजबूत कर देती है। उसने आकर वे पर्चे थोछान के हाथों में दे दिये और कहा—

“पत्तों के छे के बिये कुछ काम बना।” वह फिर धरने काम में लग गया।

छेपा के समय फिर जब पक्षीमियों में बातचीत हुई तो मालूम हुआ कि उस चुबक के माधण को सभी ने बड़े प्यार से सुना था। उनकी समझ में आया कि अमीर और गरीब में केवल एक दीवाल का अन्तर था और जब व खोग इतनी दूर तक भारी भारी बोझ हो सकते हैं तो वह दीवाल भी धामावी से तोड़ी जा सकती है।

जब इन गरीबों की अर्थाति में एक अर्थाति और फैल गई जो इस चुबक की भाँति और भी कई खोग बँरि व फैला रहे थे। स्मोरहियों में रहने वालों के हृदय में वह भाव भर गया कि ऐसी कितनी ही वस्तुएँ हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता है किन्तु वे सब हमरों के अधिकार में हैं। ऐसे ही दिव प्रति दिव इन विचारों से आत्म में बातचीत होती रहती। इपर और कभी मेंहनत करने पर भी कोई अधिक मजदूरी नहीं मिछ पाती तो इन अज्ञान मजदूरों के अन्दर सूट मार करने की भावनाओं का शीत डमकने लगा। वे भावनाएँ इतनी तेजो पकड़ने लगी कि उन्हें ज्वाला कहिन हो गया। बांगलुङ्ग वह सब देखता सुनता रहता। वह इन खोपों के क्रोध को भी देखता किन्तु उसे किसी को वस्तु की इच्छा

बड़ी हुई, वह तो अपनी जमीन पर ही जाया चाहता था।

बौंगलुङ्ग को इस सहर में निव प्रति एक न एक कई बात होती दिखाई देती। एक दिन ऐसे ही जो कुछ उघड़े देखा वह उसकी समझ में नहीं आया। अब वह सचारी की कोठ में रिक्या बसाठे हुए जा रहा था तो एक के बाद एक ऐसे कई व्यक्ति एकत्र जिये गए। बौंगलुङ्ग ने देखा कि वे सब व्यक्ति ता बही थे जो दिन भर मैदबत करके गुमारा कर रहे थे, इन्हे ही मैं देखते न एक और व्यक्ति हिरासत में जिया गया। वह बही था जो बौंगलुङ्ग की प्योरदो के पत्न बाबूरी प्योरदो में रहता था।

बोली ही घर में बौंगलुङ्ग वह भी समझ गया कि जो व्यक्ति गिरफ्तार किये जा रहे हैं उन्हें स्वयम् बही माझूम कि उन्हें क्यों पकड़ा जा रहा है? कहीं उसे भी न पकड़ जिया जाय इस घर से वह रिक्या को एक और गली में लड़ा कर एक दुकान में जाकर बेंच के पीछे छुप गया, जब तक चौकी सिपाही वहाँ से नछे नहीं गए, वह वहीं बसा रहा। बाद में निकल कर बसने दुकानदार से पूछा कि बात क्या है? दुकानदार बही बेकली से ब ला—

“कहीं कोई जवाई को बातचीत होगी। कीय जानता है कि वह छवाई क्यों हो रही है? मेरे बचपन के समय से ही इला-कबर के देतों में आपस में जुड़ हो रहे हैं और शायद मेरे मरने के बाद तक बीठे रहेंगे।”

“ओक है, लेकिन इन्होंने मेरे पक्की को ही पकड़ जिया उसे जो मेरी तरह कुछ नहीं माझूम कि वह नई जवाई क्यों हो रही है।” बौंगलुङ्ग ने बकी किन्तापस्य प्याराम से पूछा। दुकानदार ने फिर उत्तर दिया—

“वे सिपाही कहीं जवाई में सेबे रहे होंगे। उनके सामान बन्दूकें, गोला बारूद उठाने के लिये भी मजदूरों को भावरबकता होती

हैं इसलिये वह तुम्हारे सैरी लोगों की घर पकड़ कर रहे हैं। लेकिन तुम कहीं के रहने वाले हो ? वहाँ तो पैसा रोज ही होता रहता है।
 “तो इससे क्या ?” बांगसुङ्ग एक हो खास में कह गया
 “शिवजी मजदूरी कर पाविसो—”

दूधानहार दूध था एवं उसे इन बातों से कोई सरोकार भी नहीं था और व उसमें थपिड़ बात करने की शक्ति हो भी उसने आपरवाही से उत्तर दिया—

‘मजदूरी कुछ नहीं मिलती दिन भर में दो सुन्नी रोमियों के डुकड़े के दिये जाते हैं और जगह पर पहुँच कर बाप दिया जाता है। वहाँ से यदि पैरों में शक्ति बची रह जाये तो पाविस आ सकते हो।
 किन्तु कम शक्ति के घर वाले
 सा होता।

बांगसुङ्ग हँसा कहा

‘ओह ई खेदिक उम्हें घर वालों की क्या परवाह ?’ दूधानहार कहते हुए कहाई के चौकते पानो को उतारने लगा, उबलते पानो की भाप से उसका मुँह बिलकुल ढक गया। और वह कुछ व देण पत्रा। इतने में ही फौजी सिपाही गलियों में से गरज खगाते हुए उन आत्मियों को लक्ष्मण में उतर से निकले तो वहाँ से भाग चुके थे।
 “धमो नहीं डहरे रहो” उसने बांगसुङ्ग से कहा वे लोग फिर आ रहे हैं।”

बांगसुङ्ग फिर जहाँ के पोड़े आकर बेंब के नीचे विप गया जहाँ उन विपारिषों के सुनों की आवाज आती रह हो गई तो वहाँ से बिखड़ा और दासी रिशवा के धपनो धौपकी की और ठंढी से भगा।

धौपकी में पहुँचते ही हँकते २ उसने घोखान को सब बताया और कहा कि दिन प्रकार वह बाछ बाछ कहा है वहाँ तो कहाई पर खेद दिये जाये पर क्या होगा सारा परिवार दूध बाप सब लड़न-त पकर कर जाते और वह भी कहाई के मैदान में शायद मर जाता, फिर वह

अपनी अमीन कमी नहीं देख पाता। यह सब कहते-कहते बांगलुङ्ग दर के मारे काँपने लगा और फिर धोखा से बोला—

“अब तो इस लड़की को बेचकर अपनी अमीन पर खर्चवा ही चाहिये।”

यह सब सुनकर धोखालाल कुछ सोचकर बोली—

“चाँदे दिन और बहरी। एक महीन सी बात इधर पक रही है।”

बांगलुङ्ग इतना कर गया था कि इससे दिन में बाहर निकलना बंद कर दिया, अपने बड़े लड़के के हाथ फिराये की रिश्ता आपस करा दो। अब वह रात को अपनी मजदूरी में ही व्यापारियों के माथ डोने का काम करने लगा। रात भर माथ के बन्से माछगाड़ी के टिक्यों में भरे जाते थे एक एक टिक्ये पर जगमग कुछ दमक मझूर लगे रहते। ऐलमी व सुली कपड़े और कीमती उम्माहू से पेरियों मरी रहती। कीमती उम्माहू को सुलह पेरियों के बाहर भी मटकती रहती। इसके अतिरिक्त उन पेरियों में तरह-तरह के सुलहदार ठेक व अच्छी २ तराज के बूटि २ काम भी भरे रहते।

अंबेरी रातों में इस प्रकार लगे बदन पर पेरियों की रस्ते से बाँवकर डोले-डोले बांगलुङ्ग पसोसे से ठरवतर हो जाता, मुबह होते २ वह किसी तरह अपनी अँवली में पहुँच, बिना कुछ खाए पिये ही सो रहता किंतु दिन में वह अँवली के बाहर नहीं निकलता। दिन में जब चौकी सिपाही मजदूरी की कोठ में फिरे तो वह चाराम से अपनी अँवली में सोया रहता उसकी की वे बांगलुङ्ग को छिपाने के छिपे उसके मिरने के चाने बीच बंदोरकर बात क्लम के डेर भी लगा दिये थे।

यह अर्थात् ऐसी की पूर्व बीच-बीच आपस में लड़ रहे थे वह बांगलुङ्ग नहीं जानता था। किंतु जैसे-जैसे दिन बढ़ते गए लोगों में लगाव और कर फैलता गया। दिन भर बोझ गाड़ियों में बनीमानी

वस्त्रियों के कीमती सामान छान छानकर जहाजों में भेज जाते इन घन-
धानों की सुन्दरियों भी आभूषणों से लदी हुई बाबा गादियों में सवार
हो नदी किनारे लगे जहाजों में भेजी जातीं। कोई जहाज से तो कोई
रेल से अन्य स्थावों के लिए लूट कर रहे थे। बांगलुरु को यह सब
समाचार उसके लड़कों से मिल जाता करते। लड़के आकर कहते—

“बाबा हमने यह देखा वह देखा एक इतना मोटा आदमी
देखा जैसे कि मन्दिर में मगवान होते हैं उनके शरीर पर पीला रेशमी
हुपडा पड़ा हुआ था लड़कियों में रँगूटियों चमक रही थीं लुब-लुब-
पीछा वह आदमी सवारों में बैठा था रहा था। उसका सारा शरीर
बिकना पड़ा था।”

दुमरा कहता मैंने इतनी-इतनी बड़ी पेटियाँ लदती हुईं देखीं,
जब मैंने पूछा कि इन पेटियों में क्या है तो किसी ने कहा, इनमें मोना
और चोरी भरा है लेकिन यह कमोर जाग सब कुछ नहीं छे जा सकते
किसी दिन वह सब हमारा हो जावेगा। पिताजी, यह कहने का क्या
मन्त्रण होता है ?” इतना कहकर भापों कोछे हुए वह लड़का अपने
बाप की ओर देखने लगा।

बांगलुरु ने धीरे से उत्तर दिया मुझे क्या मायूम ये बेकार
जाग क्या सकते रहते हैं ?” लड़का चिन्ता उठा—

“बड़ि यह सब माफ हमारा है तो अद्वी ही भागकर बच जाना
चाहिए। मैं तो एक केक पाना चाहता हूँ। मैंने मीठा ‘केक’ अभी
तक नहीं खाया।”

पूछा बाप कौनसा हुआ मोका, “एक बार जब फसल धरती हुई
थी तो हम लोगों ने मीठे २ ऐसे ‘केक’ खाये थे।”

बांगलुरु को भी प्यार आया कि एक बार लगे बप के डायन में
थोडासा नै चाख के आटे में नीली टाककर मीठे ‘केक’ बनाये थे। उसके
मुँह में भी पानी आने लगा, किन्तु साथ ही बचकनी भी बड़ा दुखी हो

गया, क्योंकि जो कुछ उसके पास था वह अब नहीं रहा था।

“क्यों हम लोग अपनी जमीन पर वापस आ सकते होते।” वह गुनगुनाया।

बांगलुरु फिर अपने विचारों में डूब गया, सोचने लगा कि अब वह एक दिन भी इस भोंवड़ी में नहीं रहेगा—जहाँ उसके हाथ पैर पूरे नहीं फैल सकते और न वह रात में इतना भारी बोझा ही होपुगा। अंदरी रात में कितनी कठिनाई होती है उसे, मारी ९ पैरिषॉ बडाने में वे कठिनाइयाँ पानी बहने से भीर भी बढ़ जाती हैं। वह पैरिषॉ, वह बोझा वह पामर सब किन्तो दिन उसके शरीर का अब पंजर भिन्नक काहेरे।

“बाह, मेरी धम्पड़ी और उपजाऊ जमीन वह एकदम बिखरा गया और फूल-फुहार रोने लगा। उसका दबाव मात्र अब रीता सुनकर बच्चे डर के मारे लड़म गाय व कुत्ते बाप का चेहरा इधर उधर होते लगा, जैसे माँ को रोता हुआ बच्चे की राख बिछा रहे लगती है। तब फिर बोधान के धैर्य से बोरे से कहा—

“बोका और उहरो, अब कुछ होवे बाधा है। अब वे बातें जारी भीर फैल रही हैं।”

अपनी भोंवड़ी में पड़ा बांगलुरु इन कीची सिपाहियों के बचने की आशा करता। कभी २ चलाई गया फिर लुपकाय उन्हें देता भी होता। वे सिपाही २-३-४ मोर्चे व समूहों के होते पहिले रहते और उनकी छातूनें बनी रहतीं। इमारतों की संख्या में वे लोहा प्रापा उधर से बिखरते रहते। रात में भी माख होते समय कभी २ शर्ब को र.शकी में हथ सिपाहियों की सुरते बसक रहतीं। उसे कुछ भी उसके सम्बन्ध में पढ़ने का साहस नहीं होता माख होते में पंजरक लगा रहता। कभी समय बिखरे पर आपस बाबक का होता और फिर भोंवड़ी में बासक के पीछे जाकर सो रहता। इन दिनों कोई एक इमारे से बाबक

बातचीत नहीं करता था। शहर में एक प्रकार का ऐसा मय फैला रहता कि लोगों को जो कुछ काम करना होता उसे मजबूर करके प्यौपड़ी में घुस कर बिबाह किया दिया करते थे।

संध्या के समय भी अब वह लोग आपस में मिलकर कोई बात चीत नहीं करते थे। बाजारों में जाने देने की दुकानें खाली पड़ी रहतीं और दुकानें भी दिन में इस प्रकार बन्द रहतीं कि साहूम होता मानो सब लोग सो रहें हों।

अप्रवाह उड़ी हुई थी कि राजकुमार करीब आ पहुँचा है इस डर से सभी अपने माँझ असबाब की चार से बितित रहे जाते। किन्तु बाँगलुङ्ग को ऐसा कोई डर न था और न अब प्यौपड़ियों में रहने वाले अन्य व्यक्ति को हो। उनको पहिचाने तो यही नहीं साहूम था कि शत्रु कौन है, इसके अतिरिक्त उनके पास कुछ ऐसा समय ही क्या था जिस का उन्हें डर होता? उन लोगों को जान बूझे जाने से भी कोई विशेष हानि की बात नहीं थी। यदि शत्रु आ रहा है तो मर ही जा जाय, इसमें अविचल हो और मरीची के दिन आ ही नहीं सकते थे। यही सोचकर सब अपने काम काज में लगे रहते। कोई एक दूसरे से खुश कर बात भी नहीं करता था।

दो चार दिन में ही व्यापारियों के व्यवसायकों ने कुली मजदूरों से कह दिया कि अब उन लोगों के जाने की कोई आशयकता नहीं रह गई क्योंकि जब दिनों तरोद्द करोक्त करने वाले कोई नहीं आते थे अतएव बाँगलुङ्ग अपनी प्यौपड़ी में दो दिन रात बेकार पड़ा रहता। पहिचाने तो बाँगलुङ्ग को थोड़ी प्रसन्नता हुई क्योंकि अब उनका शरीर को पूरा आराम मिल रहा था वह अब सब आनन्द से सोता रहता था, किन्तु उसका काम एक जाने से आदमी मन्द होने का पूरा डर था, हमकिए फिर वह हम सोच विचार में पड़ गया कि कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। हम मुमोबत में एक चीर हुसीबत पड़ गई कि

गरीबों को वहाँ मुफ्त खाना पीना मिलता था वे सार्वजनिक रसोईघर भी बन्द हो गए थे, सड़क पर लकड़ें लकड़ें ली जा रही, अठपट्ट भीड़ मिस्सियों की भी आता जानी रही।

एक दिन बाँगलुङ अपनी छोटी लकड़ी को मोड़ में लेकर उसी से बतों करके खगा,—

“बच्ची क्या तुम किसी बड़े हाँस बराले में जाता जाओगी वहाँ तुम्हें अच्छी तरह खाना पीना मिल सके वहाँ तुम्हें पहिनने की भी क्या मिल सके ?”

बच्ची मुस्कुरा उठी और हाथ बढ़ाकर बाँगलुङ की ओर किशोरिया मारने लगी। बाँगलुङ यकायक अपनी स्त्री की ओर देख चिरखा कर पूछने लगा—

“सब बताओ क्या तुम्हें इस बड़े घर में मसाला पीटा भी जाता था ?”

उसने साठ २ हाव्यों में कहा—

नित्य प्रति मार पड़ती थी।

बाँगलुङ ने फिर पूछा—

लेकिन क्या मार कपड़े के कोनों से ही पड़ती थी या बॉस के बंदों से या रस्से से पड़ती थी ?

“कपड़े का इंदर रसोई के पाय डंगा रहता था और वही इंदर से मैं पीटती जाती थी।”

बाँगलुङ समझ गया कि उसकी स्त्री ने मन की बात जान ली है उसने एक बार फिर एक आत्मा से पूछा—

‘मम हमारी लकड़ी तो अभी हो इतनी सुन्दर है बच्ची होकर तो इसका सौन्दर्य और भी बिकर जायेगा। क्या सुन्दर नौकरानियों को भी पीटा जाता था ?’

अचानक एक तेज धमाके की आवाज सुनाई दी और बॉपची

कुछ दिन ऐसे हो व्यतीत हो गए, लेकिन बौंगलुङ को यही प्रतीत होता गया, मानो वह अपनी जमीन अपने क्षेत्रों से कभी अलग न हुआ हो, वह स्वभाविक ही था क्योंकि इतना ही बसका बराबर बहो रहा था। सोने की तीन मुहरों से उसने लोहू जाबल व अन्य अच्छे २ ऐसे बीज खरीदे जो उसने पहले कभी नहीं बोये थे। अपने ताकत के लिए अपने कमल की खेती खरीदी व पाकर मर, सब के भी बीज परीक्ष किए।

पौष मोहरों से एक किसान से उसने एक बैल हल खाने के लिए खरीदा। यह बैल उसने रास्ते में ही एक किसान से जो हल खरा रहा था खरीदा क्योंकि उनकी कम्बी मजदूर गादुन से वह इतना रीझ गया था कि कोई भी कीमत देने को तैयार था। उसे खरीदने के लिए उसने कुछ जाबलकी भी दिखाई, किसान से वह बोला—

“यह बैल तो किसी काम का नहीं! तुम इसे किस भाव में बेच दोगे मेरे पास कोई जाबल नहीं है और मुझे भावरपकता है।” किसान ने उत्तर दिया—

“इस बैल की उम्र केवल तीन वर्ष की है। मैं अपनी बी को बेच सकता हूँ किन्तु वह तो नहीं बेचूंगा,” और वह हल खकला गया बौंगलुङ की बात पर डहरा नहीं।

बौगलुङ्ग अपनी बात पर अड़ गया और अपनी की और बड़े पिता की पार देखकर खड़े खड़ा—

इस बैठ के बारे में क्या राय है ?

बूढ़ा खोख उठा “मायब तो अन्धा मामूम देता है ।”

खोखाल ने कहा, इसकी उम्र एक सात अदिक जान पड़ती है ।”

बौगलुङ्ग ने कोई उत्तर नहीं दिया वह तो उठे करीबने को प्रातुर या अतएव किमान के पास जाकर बोला—

मैं तुम्हें दूसरा बैठ करीबने के लिए काफ़ी कीमत दे सकता हूँ इसे मैं करीबगा अवरप ।”

आदिर मोदी बहुत दुम्मत के बाद बात तय हो गई, बौगलुङ्ग को अब कीमत की कोई चिन्ता तो थी नहीं उसने चुपचाप मोहरे किस्तान के हाथ में प्रिस्तवा दी । किस्तान ने इस में से पैसा खोख दिया और बौगलुङ्ग बड़े प्रसन्न रूप से रस्सी से बाँध बैठ को पीठ से बंधा ।

सब ने खोग अपने मकान पर पहुँचे तो देखा कि दरवाजा टोच दिया गया है, कुत भी उड़ गई है, दीवारों की बर्फ व मेह से भीगकर कमजोर पड़ गई है । बौगलुङ्ग को पड़े तो कुछ आश्चर्य हुआ किन्तु वहीं पहुँचने की इतनी प्रसन्नता थी कि उसे यह सब देखकर ओह हुआ नहीं हुआ । वहीं बाजार जाकर वह मकान की मरम्मत के लिए वापस लौट आया ।

सन्ध्या के समय वह दरवासे पर जाँचें होकर अपनी जमीन की ओर देखा रहा । सड़ों व बारिश से जमीन आप से आप नम पड़ चुकी थी पैरों पर पत्थरों निकल आई थी व जगह २ हरिबाकी की दिपार्ह दे रही थी । यह सब देखते २ बौगलुङ्ग इतना मुन्ध हो गया कि वह अब किसी मनुष्य को नहीं देखता आदता था । गाँव में वह किसी से मिलने नहीं गया, या कोई खोग उम्रसे मिलने स्वर्ण वहाँ आए, उनकी

भोर भी बखने कोई बिरोध व्याप्त नहीं दिशा, अब पर मत्ता २ कर बसने पड़ना आरम्भ किया—

“किन्तु यह दरबाने और किसी मेरे सुपर की बात कुछ बखार है ?”

अब लोगों ने बेवकूफ सर हिका दिने, एक ने कहा—“यह सर तुम्हारे बाबा की करामत है” तो दूसरा बोला, बहाँ तो बाहू लुटेरा ये लुट्टा बसा दिया था यह नहीं कहा का सफाया कि किसी ने यह सब मुकसाम किया है। मुकसाम से रंग आकर कोई भी व्यक्ति भोर बाहू बस सकता है।”

इतनी ही देर में उसका पुराना पकौसो चिय अपने घर से किसी प्रकार रेंगता हुआ बहाँ आ पहुँचा और कहने लगा—

“सर्विनों भर तुम्हारे इस मकाम में भोरो का एक विरोध रहा था जब लोगों ने हर तरह से गौर को लुटा। तुम्हारे बाबा को अधिक जानकारी होगी। आश्चर्य के समय में यह नहीं कहा का सफाया कि कौन सूटा है और कौन सबा, अथवा मैं किसी को भी दोष देने का सहसा नहीं कर सकता।”

चिंग की शारीरिक दशा बहुत ही खराब थी, हड्डियों का ढँबा भर रह गया था, बाक बाँकर हो लुके से घबरा उठ पैठापीस को भी नहीं थी। बौंगलुङ उसे देखकर दबा और सहायुमूवि से पछीज बस और पचाबक बोक बटा—

“तुम्हारी दशा तो इन लोगों के भी कहीं अधिक गर्ह बीपी हो गई है क्या बाबा है तुमने ?”

चिंग ने एक डम्बी दर्दमरी भाह मरी और कहा—

“क्या नहीं बाबा है मैंने ? सबकों पर घुम फिर कर भीज मीनी है मेरे हुए कुत्तों का मौस बाबा है। भरने से पहले मेरी बी ने कोई मौस पका कर भी दिखावा था, किन्तु मेरी दिम्मत वह पड़ने की नहीं

हुई कि किसका मौस था। जो मैं स्वयं कोई ठण्ठि नहीं रह गई थी। अतएव जो कुछ भी हमने खाया होगा। वह वहीं पड़े हुए मौस के टुकड़े हो जाएंगे। उसके सरके के बाप अपनी अड़की को मैंने एक सिपाही के हाथ बेच दिया। क्योंकि मैं उसे मूला मरता नहीं देख सका। इसका कह कर वह कुछ दूर चला रहा, फिर वापस — 'यदि तुम्हें कुछ बीज मिल जाते तो मैं अपनी जमीन फिर जोत देता, लेकिन मेरे पास कुछ भी नहीं है।'

'हमर घाघो' कह कर बांगसुट में हाथ पकड़ कर बिग को बगोद जिया और अन्दर कमरे में छे जाकर अपने बीजों में से बीज निकाल कर उनके कपड़े में भर दिये। गेहूँ चावल वह गाँमी क बीज द्या हुआ बांगसुट पोछा—

'कम मैं जाऊँगा और अपने नैज में तुम्हारी जमीन पर स्वयं इस बजाऊँगा।'

बिग फूट-फूटकर रोने लगा, बांगसुट की ओरों में भर आई और बोला, "बस तुम समझते हो कि मैं तुम्हारे उस उपकार का भूल गया हूँ जब तुमने पीछे से मदर क दाने मेरे आगे समझ पर दिये थे?" किन्तु बिग कोई उत्तर नहीं दे सका। वहाँ से चला दिया और रोता ही रहा।

बांगसुट का वह जातकर और भी मसजता हुई कि उसका बाबा उस गाँव से चला गया था। कहीं जाता गया वह कोई ठीक-ठीक नहीं बता सका। किसी ने कहा कि वह शहर में रहने लगा है या कोई बोला कि वह तो अपनी छी व आदके मदिन नहीं बहुत दूर जाता गया है। अड़कियों का वह एक एक का क देव गया उसकी वह स्वरूप केचक के हाथ वाली अड़की भी एक सिपाही के हाथ एक पैनी में बिक गई।

बांगसुट फिर अपनी जमीन पर चला गया और अधिक स अधिक समय नहीं परिमन करने लगा, यहाँ तक कि राते और साँके की भी उसे कोई चिन्ता नहीं रही। अधिकतर अपना पाना वह रोत पर ही के पाता और वहीं रिपलों में सब बीजों का रखा, 'वहाँ मदर जगा-

ऊँसा और वहाँ आलस की ब्यारिषी बनेगी ।” वह जाने पर दिन में प्रायः वह वहीं किसी आड़ी के सहारे थोड़ी देर सो बैठा ।

इधर भोजन भी अपने घर में खाड़ी नहीं बैठती । धीरे धीरे मिट्टी में बात फूट मिट्टान्तर वह मन्थन की दीवारों कीक करती रहती । फर्त की फटी हुई बरातों को भी उसने स्वर्ण मिहमत करके घर बिचा, रसोईघर में मही बकाळी व अन्य आवश्यक वस्तुओं का संग्रह भी उसने अपने हाथ कर दिया ।

इसके बाद एक दिन बाँगलुङ के साम जाकर बाजार से वह एक मेज, चारपाइयाँ, व बेंच व एक छोटे का बूढ़ा भी खरीद आई । मिट्टी की एक सुन्दर लूनी से कड़ी हुई पाचदानी और कड़ी के दाग के दाग प्याले भी उसने खरीद लिए । वह सब खरीदने के परचाहूँ अपने बीच के कमरे को सजाने के लिए कमरा की कड़ी हुई भगवान की मूर्ति भी खरीदी । मोमबत्तियों व बूपवत्ती और सुगन्धित अगरबत्तियों भी खरीदीं । बाँगलुङ को मन्दिर की पुरानी मिट्टी की मूर्तियों का प्याह हो जाता । घर खोले समय के लोग जब उस मन्दिर से जाकर आते तो जब मूर्तियों की कड़ी लूनी बरा दिखती थी, मेज के पानी से मिट्टी के बड़े चह लुब लुब थे । पिछले वर्षों के इतने अछमय समय में किसी ने भी इस मन्दिर की ओर कोई ध्यान नहीं दिया था । बाँगलुङ जब मूर्तियों की ओर देखते हुए कहा हुआ हुआ किन्तु फिर भी उससे यह कहे बिना न रहा गया, “जो मनुष्यों की बरा इतनी लूनी कर देते हैं उनके भगवान की भी पैनी बरा हो जायो स्वाभाविक ही है ।”

धीरे-धीरे घर को दीठ बिना गया, मोमबत्तियों का प्रकाश होने से सभी वस्तुएँ जलकर चरगी जापदानी व प्याले मेज पर सजा दिये गए, चारपाइयों पर बिस्तर लगा गए, कमरे की दीवारों पर रंगीन कलाकृतियाँ दिये गए, नया दरवाजा भी लगा गया, जब बाँगलुङ को सोचा नैन मिखा, किन्तु इस नैन से उसे घर सा लगने लगा । चालाक का पेट

झिर बह रहा था, बरसों इंसर उधर लकड़ते गिरते पड़ते थे और बाँगसुत्र का बड़ा पिया दरवाजे पर बैठा २ प्रसन्न मुद्रा में ऊँचता रहता था, छेव में बावलों की लोटी २ पाँद भी उग आई थी सतर भी उठ आई थी । प्रसन्न वह जाने के बिना काफ़ी मोहरें बचो हुई थीं अतएव और कोई किछ भी नहीं रह गईं थी । एक दिन ऊपर लोखे धाकाय में बावलों की हुमेक देकर बाँगसुत्र को देना आभास हुआ कि अब की बार छेव में होवे बाकी प्रसन्न को पूर और पानी यथष्ट मात्रा में मिल सकेगा और वह आपसे आर बोख पड़ा ।

“मंदिर में उन लोटी २ मूर्तियों के सामने मुझे पूज्यमान अवसर करना चाहिये, आखिर जमीन पर प्रसन्न वैशा कान को शक्ति उनमें हो गे है ।”

एक रात सोठ समय बाँगबुझ को अपनी बी का सोचा बीच में
 न कुछ उठा हुआ दिखाई दिया तो उसने पूछा—

‘यह तुम्हसे क्या हो रहा है ?’

बाँगबुझ ने हाथ जगाकर देखा उसे कदो वस्तु कपड़े में छिपरी
 हुई दिखाई दी । उसी पहिले तो एक मरका सा देकर पीछे हट गई किन्तु
 फिर उसने कहा—

‘यदि देखना चाहते हो तो देख ही लो, बाँगबुझ ने कैसे ही
 कपड़े की गाँठ छाँची तो उसके हाथ में दोरे लकड़वाले गिरे पड़े और वह
 घबरापनभक्ति रह गया । इसने मरका के रक्त तो उसने कभी स्वप्न में भी
 नहीं देखे थे कोई काज रक्त का या तो कोई सुन्दरा व कोई हरा । इन
 दोरों का किय नाम से पुकारे वह बात भी बाँगबुझ के हाथ से बरे थी ।
 वह तो केवल इतना ही समझ पाया कि उसके हाथ में वहाँ का लकड़वा
 दूर पड़ा । लकड़वाला सा वह अपनी बी की पार देखा ही रह गया ।

“क्यों से” “क्यों से” “

‘उस घसीर के घर से । वहाँ मरका ही कोई क्या लकड़वा रहा
 होगा । वत पर की दोबाज में एक थोर ई व कुछ पाइर सी बिलकी हुई
 थी कि मैंने ई व को बाहर बिकान कर जब हाथ मन्दर किया तो मी
 हाथ में यह सब हँसि का पड़े ।’

“ता हम्में तुमने कैस जाला ?” एक प्रार्थना के मात से यह बाबा । खी ने मुस्कराते हुए कहा—

“बया तुम समझत हा कि मैं किसी गहन घराबे में रही नहीं हूँ । अमीर लोग सबैब हो उरबोक होत है । एक बार ब्राँग के घर में हाकुओं का गिराह जब थाया था ता उस घर की बियाँ ने एक-एक इट टिकका कर बही छपने हरि न आन्व आमूपण रख बिये थे । तभी स यदि मुके कहीं दीवाख में कोई बीखो इट बिगड़ा देली है ता सब कुछ समझ जातो हूँ ।”

इसके बाद बहुत देर तक ये दोनों चुप रह । बाँगसुझ फिर बोला—

किसी का जवा बजाना अपने पास रखना मही चाहिय । इस बेब कर जो रकम हाथ खो उमे सावधानी म हो बजाना पड़गा । आत्र कक जमीन से अपिक मुटफ़ घोर कुछ नहीं है । यदि किसी का जरा भी पता लग जात तो दूसरे दिन हम बाग मरे हुए ही पायंग । आत्र ही जमीन खरीद खेती चाहिय । इतना कह कर बाँगसुझ ने फिर उन दोरा को बाग़ में छपर कर रख दिया किन्तु अब खी की चार हल भी उमे खान पका कि वह कुछ कहना चाहती है ।

“कहो, क्या बात है ?” उसने धबकी खी से पूछा ।

‘क्या समी हीरे बेच दोगे ?’ खी ने दबो बजान म पूछा ।

“बकी नहीं ? हम बिही के घर में इतना पजाना रखना लतर से बाहर नहीं ।

“मैं चाहती हूँ कि कम से कम हबमें से हा ता अपने पास रख लूँ ।” खी ने इतने बात से बहा जैसे कोई छोरा बाबक किसी सुन्दर पिछोरे के बिये अपनी उल्खा दियाठा है ।

यह फिर बोली—“काहे कोई छोटे से छोटे दो राब हों—मोली ही

सही। मैं केवल अपने पास रहूँगी, पहिनींगी वहीं। हाँ, कभी २ हाथों में रख कर देण हो बिना करूँगी।

बांगलुङ्ग चुपचाप रात्री हो गया और उसकी की ने रत्नों के उस ढेर में से दो मोठो निकाल लिए। बाकी आभूषणों को ले उसने बांग परिवार के घराने में बाहर उन लोगों को जमीन खरीदने का विचार डाल दिया।

उस वृत्त पर के पास जब वह पहुँचा तो उसे सब कुछ उबड़ा सा दिखाई दिया। फलक पर कोई चौकीदार न था और उसमें अन्दर से ठाँके खोले हुए थे। बांगलुङ्ग उस फलक को बाँर १ से खरकटावे लगा। सबक पर खरक बाजों ने कहा—

“तुम खरकटावे जल्दी, वह कुछा रईस यदि जग रहा होगा तो खोले देना अपना उसकी कोई रखेकी नहीं हीमी तो खानद नहीं आ जाता।”

बाजों ढेर में बांगलुङ्ग ने किसी के आने की आवाज सुनी।

“कौन है ?”

“मैं हूँ, बांगलुङ्ग। वह जोर से बोला—यह कौन कमबलत बांगलुङ्ग है।

बांगलुङ्ग आवाज से समझ गया कि वह अचरप ही उस उड़ रईस की ही आवाज है क्योंकि उसे ही इस प्रकार गाँधी दे देकर अपने नौकरों को बुलावे की आह्वान थी।

“आह्वान माफिक मैं आपकी कोई कह नहीं देना चाहता, आपकी किसी आह्वान से ही कुछ स्थापार की बात कर लूँगा।” बांगलुङ्ग ने कहा।

इतने पर भी उस कुछा ने दिखाई छोले बिना ही अन्दर से कहा—“वह कमबलत तो कभी का यहाँ से चला गया, यहाँ कोई नहीं है।

बांगलुङ्ग को कुछ समझ नहीं पड़ा कि अब क्या करे । मासिक मही सोयी बात करना वह बखित नहीं समझता । कुछ दिक्कियाते हुए वह बोला—

“कुछ रुपये की बात करनी है ।”

मासिक ने शीघ्र ही किचकों को बन्द कर दिया और धीरे से चिल्लाया—“अब इस घर में कोई खर्चा पैसा नहीं रहा । सब आदमी मर कर छे गये, वे सब मर जायें उनके घर बाड़े मर जायें । अब कोई खर्चा नहीं चुकाना आसकता ।”

“नहीं नहीं ! बांगलुङ्ग शीघ्रता से बोला— ‘मैं तो रुपये देने आया हूँ, छेने नहीं ।’

इतने में ही एक ली की आवाज उसे सुनाई पड़ी— ‘ऐसी बात तो बहुत दिनों से नहीं सुनी ।’ एक सुन्दर ली ने किचकों को धोकेते हुए कहा—“बन्दर आ जाओ ।” बांगलुङ्ग के बन्दर धुमके ही बिनाब फिर बन्द हो गए ।

बांगलुङ्ग ने उस रईम मासिक को बड़ी दृष्टीय दृष्टा में देखा । एक धीरे धीरे हुआ वह ठीस रहा था, उसका साधन का गाऊन मैला हो रहा था और वह बड़ा अपकी दृष्टा में कुछ घबराती सा दिखाई दे रहा था । उधर दूसरी ओर वह ली साफ सुपरी दिखाई दे रही थी । बड़ी मुन्नीली नाक, लीलाली बड़ी धौलें मुल होठ और मरे हुए पाखों से बड़ी सुन्दर दिखाई देती थी । किन्तु उसकी बातचीत से साफ पता चला कि वह ली ही है । घर में जहाँ लीला-लीला-लीलों की धमक रहती थी वहाँ अब केवल इन दोनों के चिल्लाव और कोई दिखाई नहीं दे रहा था ।

ली ने बाहर आकर रुपये पैस की बातचीत की और बांगलुङ्ग का प्यास आकर्षित किया, किन्तु बांगलुङ्ग कुछ चिन्तित रहा था । मासिक

के सामने वह काँट बाँध नहीं करवा पाइता था। यह बात वह खो समझ गई और उसने वृद्धों से वहाँ से वृद्धों के बिछे कहा। बुढ़ा माझिक बिना कुछ कहे हुए प्योसठा हुआ वहाँ से चला गया। जब बाँगलुङ की समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे गया न वृद्ध। याचिर की वे ही झुलकर पूछा—

“बछाओ कौन स काम की बात है ? यदि तुम्हारे पास रुपया है तो दिखाओ।”

बाँगलुङ ने कुछ सँभलकर कहा—“नहीं तो मैंने वह नहीं कहा था कि मेरे पास रुपय हैं। मुझे तो कुछ काम था।”

“काम के मामले रुपये के हैं” श्री ने उत्तर दिया—“क्या इस घर में अब याता ही चाहिये क्योंकि वहाँ अब कुछ बचा नहीं है।”

“अच्छा ! किंतु मैं इस सम्बन्ध में खी से कोई बात नहीं करना चाहता।”

‘बचो नहीं ? तुमने सुना नहीं कि वहाँ मैं न माझिक के पत्थरों की कोई नहीं है ?’

और सब कहें गये” बाँगलुङ चुप आरक्षण से बोला।

माझिक तो मर गई ‘खो बोली—“बचा तुमने पैसी कोई खबर नहीं सुनी ? एक बार और बाँट द्युन आये और वहाँ का सब माछ कामकाज बदलकर ले गये। वृद्ध माझिक का एक भार बाँध कर परक दिया और माझिक तो खलीम के गल में तो रहती ही थीं उन्हें भी कुर्सी सहित बाँधकर डाक दिया, वह ठा वर के मारे ही मर गई।”

“और-औरानियों और चौकीदारों का क्या हुआ ?”

‘वे खो तो सब पत्थरों की खड़े गए थे, पिछली धर्मियों में जब मुकम्मरी के खोम मरने लगे और बिछी के पास भी पैसा नहीं बचा तो वहाँ के मौकर बाँध खो चलाये गये। बहुत से मौकर तो बाँधुओं के गिराई में ही सिंक गए और बन्दीये ही सारा घर सुटवा दिया।’

“कड़के लोग कहीं गए ?”

“वे सब भी इधर उधर चले गए। इतना धरपट्टा हुआ कि कड़कियों का बिबाद पहिले ही हो गया था। बड़े कड़के ने बाप को ले जाने के लिए धाड़मी मो मोटे खेकिय मीने डम नहीं जाने दिया।”
 बागसुह्र सब कुछ समझ गया और कहने लगा—“तुमसे काम की बात मैं कैसे कर सकता हूँ ?”
 वह जोर से बोली बूझा मासिक जो कुछ मैं कहूँगी रात्री तो जावगा।

बागसुह्र ने सोचा, कि कहीं और लोग ही इस जोर की बोच में हाककर जमीन गरीब कर न ले जायें और पड़ने लगा किन्ती जमीन बची है ?

“यदि तुम जमीन गरीबने धाए हो तो जमीन है। इस मकान के परिचम की धार सौ एकड़ व इन्धिय को और दामो एकड़ जमीन है जो बिक सकती है।

बागसुह्र को एकाएक काह बिरबात्र नहीं हुआ किन्तु फिर मो पूरा, धापन धापने खडकों से पूछे बिना मासिक जमीन न लेने ?

“कड़कों ने तो पहिले ही कह रखा है कि मासिक जो चाहें देख सकते हैं। यहाँ कारें रहना नहीं चाहता क्याकि यहाँ खकाब के कमप और हाकुधों का जोर अधिक है। धनपूष ने चाहेते हैं कि वह सब कुछ बेचकर रुपया बांट बिना जाए।

‘रुपया किस देता होगा ?’

“मासिक का और किसे ?” यी ने शीघ्रता से कुछ रट हाकर कहा।

बागसुह्र फिर किमी दिन जाने को कहकर यहाँ से चले पड़ा किन्तु वह यी सहज तक उनके पीछे न गई और कहा—कल हमी समय या जाना अबका किन्ती भी समय या जाने से काम नम जावगा।

बांगसुग बिना कुछ बड़े मुझे सब दिया और बाजार में एक दुकान पर जाकर चाय पीने लगा। चाय पीते व उसने सोचा कि उसके बच्चे सब बड़े हो रहे हैं बीसना पूरना बन्द करके उन्हें भी खेत के काम में लाटना आवश्यक होगा। इधर इतनी भारी रकम के इति बच्चे पास रखे थे और उसे कुछ बचराहट सी हो चली थी। वह चाहता था कि छीत्र ही इन हीरो को जमीन से बख्त किया जाय। इतने में चाय बाखा जब कुछ लाठी दिखाई दिया तो बसने चाय बाखी को बुलाकर कहते—

“इधर आओ और मेरे कर्जे से तुम भी एक प्याखा चाय पीकर यहाँ के कुछ समाचार सुनाओ। इधर मैं बहुत दिनों बाद आया हूँ।”

चाय बाखा तो ऐसी बातों के किए सदैव ही तैयार था, वह दूध प्याखा चाय लेकर वहाँ भट आ गया और कहने लगा—

‘यहाँ के लोगों में सुलमरो इतनी अधिक फैली, वह तो चाय कागते हो होंगे। इसके अतिरिक्त विशेष समाचार यह है कि हॉग परिवार का सारा घर बुर गया।’

बांगसुग इसी घर के बारे में सुनना चाहता था। चाय बाखा उसे सब कुछ बता रहा था कि किस प्रकार उस घर में खूबसूरत हुई व यहाँ की बौद्धों से कैसा व्यवहार बाकुओं ने किया। अब उस बड़े माझिक के साथ बैबल एक बौद्धो बनी है। उसका नाम कुरु है और वह बड़ा उसी के कहने में अच्छा है।

बांगसुग ने चाय बाखी से पूछा कि उस घराने की कोई जमीन भी बची है कि नहीं।

चाय बाखे ने उत्तर दिया कि जमीन है और बिकने वाली है। बांगसुग इतना सुन कर उसी समय फिर उस गी के पास पहुँचा और कहा—

“वह बताओ कि इस जमीन की मिट्टी की रमिदों पर तो
साबिक स्वर्ण ही दस्तगुल करेंगे ?”

“सबसे वही दस्तगुल करेंगे—” खी ने उत्तर दिया ।

“जमीन के बड़े में ज़ाबा, बौंदी या हीरे क्या होगी ?”

“जमीन के बड़े में ज़ाबा, बौंदी या हीरे क्या होगी—
की धौंलें बकायक बसक बड़ी कीर वह पक कर बोली—

“मैं इस जमीन की हीरो के बड़े में देखूँगी ।”

—————

अब बांगसुह के पास पयेह भूमि हो जाने से फसल अच्छी होने लगी । एक बीघ के बराबर के बाहर काम हो गया तो एक मघा और खरीद लिया गया । मकान में एक कमरा और बन गया । काम बढ़ जाने से और आदिमियों की आवश्यकता हुई, अतएव उसने एक दिन अपने पड़ोसी बिंग को बुलाकर कहा कि वह अपनी जमीन भी बसे दे दे और उसके बड़े में बांगसुह के यहाँ रहकर कुछ काम करे व जाला पोता लाम् । बिंग बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने बांगसुह का शुभकामना स्वीकृत कर लिया ।

इस वर्ष वर्षा समय पर हुई और पयेह मात्रा में हुई । खेत बहुत हुआ, गेहूँ को फसल भी बहुत हुई । अतएव कार्तिक के छिये और दो मजदूर रख लिये गए ।

बांग परिवार के सदस्यों की और बांगसुह का ध्यान बढ़ गया तो उसने सोचा कि अपने सदस्यों को विगलने से बचाना होगा और उसका बपाप यही है कि उनको भी खेत के काम में लगा दिया जाय । खेत में कितनी सैद्धान्त पड़ती है शरीर को दितनी गर्मी फैलती पड़ती है इसका अनुभव उन्हें भी होना चाहिये । यह सब सोच विचार कर उसने अपने दोनों सदस्यों को खेत के काम में लगा दिया ।

अपनी स्त्री सोखान के छिये अखबता बांगसुह ने अब वह पसंद नहीं किया कि वह भी खेत पर जाकर पड़के की तरह काम करे । अब

बढ़ निबब तो था नहीं, और भी चान्द्री काम के लिए रण्ड सकता था । इस वर्ष जितनी पैसावार हुई थी, उतनी पहिने कमी नहीं हुई वहाँ तक कि कटी हुई कसब को रकाने के लिये इसे धीरे भी कमर बनवाने पड़े । निबारा हुआ बाब भी किसी काम का बाप इसलिए उसने तीन मुम्बर न डेर सारी मुर्गियों भी खरीद बाँची ।

घोखाल का कर्म अब केवल घर को सजाना न बरघों के कपड़े धोनों का प्रसन्न करना हो रह गया था, जिसे वह बड़े बाब से करती रहती । पहिने के कपड़े न विस्तर पर बिखाने के कपड़ों का अच्छा समझ उसने अब कर लिया । इसके अतिरिक्त इस बार एक साथ दो बाबकों (एक लड़का न एक लड़की) को भी उसने जन्म दिया था । हाँ, प्रसन्न काज में इस बार भी उसने किसी की सहायता न ली थी । अपने धाप हो सारा काम निपटा लिया । बाँगमुह को भी पता वह अब अब वह सच्चा समझ मन से घर छोड़ा । इसके पिता ने प्रसन्न मुह में एक हास्य उत्पन्न करते हुए कहा “इस बार तो एक अपने में से ही दो बच्चे पूर निकले हैं ।”

बाँगमुह भी प्रसन्न होकर चन्द्र कमरे में गया, अब दोनों मुम्बर बाबकों को देखकर उसने की से कहा “शायद इसीलिए तुमने दो मोतियों को अपनी दाँती से बाँधे रखा था ।” इतना कह १२ अब वह फिर लुलुकर ईसा तो अपने पति की इस प्रसन्नता से घोखाल के छोड़ भी वह मीठी मुरकुराहट से लिल बटे ।

बाँगमुह को अब और किसी बात का तो कोई धुल न था कज एक बात से वह कमी-कमी डरान हो जाता था । उसको पहली लड़की आ अब बड़ी हो लकी थी कुछ बोझती न थी । इसके मुँह से अभी भी कोई शब्द नहीं निकल पाये थे । उसके लचपत में जीपल दुमिल जो पड़ा था कदाचित् उसका प्रभाव रहा हो अबका कोई धीरे बाग हो । नर मुलर लड़की देखकर मुरकुरा कर रह जाती थी । बाँगमुह

घाय ही का लड़का हूँ ।' बौंगलुग इस बच्चे के हठ से बचना चाहता था । उसने दोनों को पढ़ने के लिये कह दिया ।

बौंगलुग ने बच्चों की माँ से उनके स्कूल के कपड़ों इत्यादि का प्रबंध करने को कहा और स्वयं बाजार आकर पढ़ने की पुस्तकें विक्रय के लिये द्वात कलम पेंसिल कमाज चावी आदि ले आया । शहर के बड़े कपड़ों के पाल को एक पुराना स्कूल का बर्तों छतकों के पढ़ने का भिन्नचय कर दिया । घर के एक कमरे में पढ़ने के लिए मेज कुर्सी बेंच आदि को व्यवस्था कर दी । उस स्कूल का मास्टर एक बूढ़ा था किन्तु बड़ी सक्ती से बच्चों को पढ़ाता था । विद्यार्थियों को गर्मी के दिनों में ही मास्टर जी से कुछ कुर्मत मित्र पाती थी क्योंकि बड़े मास्टर जी को पढ़ने पढ़ते सम्पत्तिर्ण आ जाती थी और वह बॉटि में जेल जेल से लुरमि भर देते थे । लड़के इस बीच सारी शैतानिर्ण कर डालते, कोई शेर मचाता तो कोई कागज पेंसिल लेकर एक दूसरे की पस्तीरे लीचता रहता । लड़के इतने चतुर थे कि मास्टर जी की नीन्त लुलने से पड़िसे ही बीकम्मे हो जाते और इस प्रकार मास्टर जी को बच्चों की शैतानिर्ण का जरा भी आभास नहीं होता और वे फिर उन्हें पढ़ने में लपर हो जाते । पड़ोसिर्णों से भी बौंगलुग ने इस स्कूल का मास्टर जी की प्रशंसा सुन ली थी ।

पहिले दिन जब बौंगलुग बच्चों को लेकर स्कूल गया तो वह बराबर गम्भीर रहा आया बच्चों के आगे जाती वह जहा जगाह में कुछ फल व चन्दे बाँच कर मास्टर जी के लिये ले जाता । मास्टर जी के पास आकर मुक कर बड़े आदर से वह बोला —

“जीमान्, ये मेरे दो लड़के बड़े शैतान हैं, इनकी शोचनी में जरा भी अकल नहीं है । कृपा कर इनको मार मार कर पढ़ाने ताकि कुछ सीख जाँय ।

स्कूल में बच्चों को परीक्षित करा कर जब बौंगलुग घर पहुँचा तो उसे एक प्रकीर्ण का गर्व हुआ कि उसने लड़के भी घबरा कर डिल्ल कर

होशियार हो जाएंगे और इस घर का भाग्य बसक उभरेगा। मार्ग में जब एक परिचित से उसकी भेंट हुई तो वह अपने आप बोझ पड़ा—“मैं अभी २ बच्चों को स्कूल में दाखिल कराकर चला आ रहा हूँ। जब मुझे खेलों में काम करने के लिए उनकी आवश्यकता नहीं है। जब तो वे मिलना चाहें पढ़ें। जल्द बहक कर वह अपने आप ही सोचने लग्य कि यदि बड़ा लड़का पढ़ लिख कर कोई बड़ा कारमी हो जाए तो कोई आश्चर्य नहीं होगा।

उस दिन से बच्चों को छोटे बड़े कद कर पुकारना भी छोड़ दिया गया। स्कूल के मास्टर ने बॉग्स ग के कसोबाज आदि की जानकारी मग्य कर, बच्चों के नाम रज्य दिये। बड़े का नाम जु ग पैन व छोटे का नाम जु ग बेन रक्ख्य गया।

बौगमुह मे अपने परिवार के लिए सुरक्ष मकान तो बना ही दिया था और अब वहीं से कोई बिठा की बन नहीं थी। साथ ही से निरन्तर मनोवार्जन करने वह पूर्ण रूप से निराश्रित था। मालूम नहीं जब सभी सदियों में अनादु बन्धु का प्रकोप हुआ और उसके धाये से अन्तिम कोश पानी में डूब रहे तो भी बौगमुह को किसी प्रकार की बिठा न हुई।

ब्रह्मन् और इसके बन्धु गमिणी भी था गई किन्तु मदिनों व दोनों में पलने निरन्तर बनता ही रहा। अन्तर दोनों उभर अपना स्वयं से सत्ता प्रवेश एक निरन्तर समर सा ही दिखाई देता था। पानी के इस प्रकोप से निरन्तर ही मकान गिर गए और वहाँ के निरन्तर ही निरन्तर वहाँ से चले गए। बौगमुह का मकान बहाही पर बना होने के कारण ऐसे का कैसा ही बना रहा। बौगमुह को अब भी कोई बिठा नहीं था। बाजार वाले सभी सौभाग्यों पर अमर्य रूपका चाहिये था और आज के निरन्तर ही गोदान मरे हुए थे।

इस बात के अनन्तर लोगों पर कुछ कम नहीं हो सका था और प्रायः सभी लोग गायी ही बैठे रहते थे। बौगमुह को भी कुछ था। और सोचा ही रह गया था जो कुछ कम था भी उसके लिए हमारे पास सबकुछ थे। इन सबकुछों को भी अपनी समस्त मित्र बनाया था। इन

समय में हमसे मछल की मरम्मत व मजदूरी का काम कराना ही बहुत था। एक समय वह भी था जब बॉगलुज को स्वयं अपने ही हाथों से सारे काम करने पड़ते थे, किंतु अब उसके पास कुछ करने को व था और उसका समय बीतना ही करिन हो जाता था।

इस प्रकार साधी बैठे २ बॉगलुज डकटा गया, कोई पैर से थपिड़ तो खा हो नहीं सकता था सोले २ भी वह पक गया। उसका पिता भी बहुत बड़ा हो चुका था और अब उसे रिपार्ड की कम देना था। बॉगलुज को पत्नी लेना था कि उसका पिता उसकी बम्परी को अपनी धर्मों से नहीं दूर पा रहा। वह बड़ा था भी अब अपने धर्म पाली को हाथ में लेकर पीछा तो नहीं बढ़ावाता कि उसमें पाप की पतिवर्ष क्यों जाती गई है।

कभी वह बड़े पाप के साथ गया डॉकटा कभी अपनी बहूकी गूँगी बहूकी के साथ समय बीताता था कभी दोनों छोटे बच्चों के साथ जो एक साथ पैदा हुए थे, खेला करता। किंतु बच्चे तो हिस हँसाकर व इपर उधर कुरकर भाग जमे और वह खड़े-खा रह जाता। बच्चों की चुकचुकाहट व मूर्खतापूर्णता से उसका मन धरती तरह व बहकता। वह वह अपनी की की ओर अनुकूल्य दृष्टि टॉट से देखता। इस प्रकार गौर से देखने पर उसे कभी वह अनुभव होता कि वह अपनी कभी को पहिली बार अपनी तरह देख रहा है। अपनी की की ओर देखने से उसे ज्ञान कि उसके सिर के बाहर हलने करते क्यों हैं बेहरा भी मौला सा लगता है तथा उसमें सौम्यता जरा भी नहीं रह गया है। होठ भी मोड़ दें व पैर भी बढ़े बढ़े हैं। वह बात की की ओर इतने दृष्ट रह बोला—

‘कोई भी तुम्हें दूरे तो नहीं देखेगा कि तुम किसी माछकी चारमी की परवाही हो। कोई तुम्हें ऐसा व्यक्ति की पत्नी कहना स्वीकार नहीं करेगा जिसके यहाँ बहुत से बीका जाकर हों व जो सब एक धमीर चारमी है।’

शोचान को भी वह अनुभव होता कि उसका प्रति उसे इस प्रकार क्यों देख रहा है और वह समझती हुए कहने लगती —

“अब से दोनों बच्चे एक साथ हुए हैं, मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। सारे बच्चे में आनंद ही बखरी रहती है।”

बॉगसु ग ने सोचा कि क्याचित्त की ने वह समझ होगी कि वह उसे इस बात के लिए दोष दे रहा है कि इन सात बच्चों में उसके कोई बच्चा क्यों नहीं हुआ। तब वह तुलक कर बोला—

‘मेरा मतलब यह है कि क्या तुम सिर के बालों के लिए कोई लेव नहीं करीव सकती? अपने पहिने के लिए अपने बच्चे नहीं सिखा सकती? जो ज़ते तुम पहिनेती हो वह भी तो तुम्हें सोना नहीं प्ये।’

फन्नी कुछ बोली नहीं, केवल अपने पैर और सिन्धोड़ कर बैठ गई। बॉगसु ग ने फिर सोचा कि उसे इस प्रकार अपनी की ये नहीं कहना चाहिये कि जिसने किसी समय में भी जान से उसके साथ कतों में मेहनत की है और कभी भी किसी वस्तु की मांग नहीं की। शोचान ने फिर इतना ही कहा कि वह बचपन में ही मेघ ही प्ये भी इसलिए उसके पैर भी नहीं बाँधे गए थे। कबलियों के बँर वह अवरण ही बाँध कर रखेगी।

बॉगसु ग ने किसी प्रकार यहाँ से हट जाना का प्रयत्न किया। मन में वह कष्टित हो रहा था कि ध्येय में उसे अपनी फन्नी के प्रति रोय प्रकट नहीं करना चाहिये, जो उलट कर कभी लोप नहीं करती केवल सहम कर ही रह जाती है। बॉगसु ग ने कहा —

‘अच्छा अब जरा आप की तुलक पर हो आई’ कुछ इपर ऊपर के समान्तरों का पता चलेगा। घर में बच्चों और मूर्खों से ही बात करनी होती है।’

छात्र जाने के मार्ग में बॉगसु ग का मित्रात्र बिगड़ता ही रहा। उसे यह भी श्याम में आने का कि यदि हमकी पत्नी हमने अनुभव

रतों को न इतनी होती तो वह इतनी जमीन कैसे पट्टी जाया न इतना धमीर कदापि नहीं बन सकता था। किन्तु फिर हम बात से सम्मोहित हो जाते कि जबकि समूह्य रतों के रक्त से ही तो चातुमी धमीर नहीं हो जाता। उनका उपयोग करने में तो उसी की बुद्धिमानी काम आई है।

बौद्धिकता का इन बातों की ओर कोई विशेष ध्यान भी नहीं जाता यदि वह अपने से बड़े इतना ग्राही समर्थ न मिले सक्त। जब तो उसके मध्यम में कई रक्तों पर चांदी ही चांदी गरी हुई भी और इतना धन था कि यदि पानी की तरह भी बहाता जाता तो भी समाप्त नहीं होता। जब उस इस धन का उपयोग करके अपने दुष्टता को ही सापेक्ष बनाना शीघ्र हो गया था।

अधिकांश धमीरों के विचारों में उसे बात की दुकान भी कुछ नहीं थी। इसी बात की दुकान पर वह पहिले किनो का भा चुका था किन्तु अब उसे बड़ी गहरी दिव्यता बरही थी। पहिले उसे कोई पट्टि चालना भी नहीं था और अब उस दुकान में घुसते ही पट्टी के छायों के काना फूँसी करना आरम्भ कर दिया। उसे ऐसा सुझाई दिया मानो लोग कह रहे हों कि योग नामक योग का मार्गिक नहीं है। इसी के उस महान धनधान हूँ की जमीनें खरीदी है और वह भी धनधान के निचों में। अब बड़ी समझा हो गया है।”

बौद्धिकता वह सब मुकदर बिना कोई परवाह किए एक ओर बैठ गया, किन्तु अब अपने अस्तित्व पर उस कुछ २ वर्ष अवाप्त होने काय काय वह अपनी की को फरकार कर आ आया था। उसे अपना वह मान अन्धा नहीं जाया उसे कुछ भी अन्धा नहीं लग रहा था। बड़ाबड़ा हमने सोचा कि इस दुकान पर बात पैग हुए इसे कोई शोभा नहीं देगा, जिसकी आत्मदृष्टी से कोई अचिह्न मजदूरी वह अपने हर धामी को दे रहा है जिसके पाल इतनी जमीन है व जिसके अन्धक वह बिना रहे है।

इसका सञ्चार उसका कुछ पैसे वहाँ परक दिव और वहाँ से दिया कुछ कई मनुष्य दिला । जिसा किता मतलब क वह शहर के राजाओं में बूमता फिरा ।

शहर में एक दूसरी जात की बुद्धिमान थीर थी जो हाथ ही में सुखी थी । उस बुद्धिमान की ओर स सब वह बिक्रिया को वहाँ की तबक मनुष्य से बौगसुग कुछ भीषणता सा रह गया । सोचने लगा कि वहाँ जाने बाड़े की लूट है जो लुटता शराप धीर करपाओं में अपना धन सुरक्षित है । अपनी बेसवी से मजबूर होकर उसकी इच्छा की इस बुद्धिमान में जाने की हुई थीर वहाँ आकर एक पैर पर पैर गया । जात का एक प्यारवा मगाकर वह इधर उधर घूमने लगा । बुद्धिमान में एक बड़ा कमरा था जो मक्की मीति सुसज्जित था जहाँ पर से जमकता हुआ कपड़ा बरक रहा था, व दीवारों पर सफेद रेशमी बलों पर एक से एक धार्मिक सुन्दरियों के चित्र बने हुए थे । इन चित्रों की ओर एक देखकर बौगसुग बड़ा प्रसन्न हुआ । ऐसी सुन्दरियों तो उसके दिल के लाल लालों की माया है । वी क्योंकि इसने धर्मों से देखा वास्तविक मौल्य कमी देखा ही नहीं था । आज इस बुद्धिमान पर जाने का पहिला ही दिन था अतएव वह जात पीकर बुद्धिमान पड़ा गया ।

दिन प्रति दिन उसकी उत्सुकता बढ़ती ही गई वर में व क्षेत्र पर निश्चयति जाने लगा । प्रति दिन पहिले दिन की अपेक्षा अधिक समय तक वह वहाँ बैठा रहता थीर सुन्दरियों के चित्रों से अपना मन जगले में समर निकलता । इसमें तो कई सप्ताह न था कि बौगसुग के पत्न धन की कोई कमी नहीं थी किन्तु देखने में वह गैर ही लगता था उस बुद्धिमान पर जाने वालों में बड़ी पैसा था जो मूलो कमीत्र पहिले जाता ओर सब लोग रेशमी व धार्मिक मूकबान सब पहिनकर जाने थीर आनन्द करते थे । एक दिन सोचा समय सब वह इसी प्रकार वहाँ बैठा था जो रहा था तो उसने ऊपर ऊपर में से आनन्द हुए किसी को देखा ।

नगर की पहा बड़ तेरी नृपान थी जिनको ऊपर मजिद में
भी कमर थे। राग के समय इन्हीं कमरों से मधुर मधुर संगीत की
ध्वनि आती थी तथा अनेक बाघों पर सुन्दरियों के लम्बी-छो हाथ कीड़ा
करते रहते थे। मीन के बड़े कमर से लख जुगा म्नेखने बाघों के शोरगुल
के कारण बड़ संगीत की ध्वनि नहीं मिलने हो जाती किन्तु बाघी रात
के बाद लख संगीत और श्राव-श्राव की कड़क दूर दूर तक साफ सुनाई
पती थी।

इसी शोरगुल में बड़ा बड़ा उमन किसी को ऊपर से आत दूरा
तो कोई बैठेप दवान ऊपर नहीं दिया लेकिन अब उमन कंधे पर हाथ
रखा गया तो उसने देखा कि पहा तो वही सुन्दरी बुद्ध भी जिनके हाथों
में अपने धामध्य रत्नों को रखकर उमन दूरग को अमीन लगी थी।
बड़ बांगलु ग को दलकर बहुत मर स हैंसी और कहन लगी—

“अच्छा। बांगलु ग—विमान। किसी से मोचा भी नहीं होगा
कि तुम भी यहाँ आ पाओ।

इतना सुनकर बांगलु ग ने मोचा कि इस की को बड़ बताना
होगा कि बांगलु ग बोरा तीबार नहीं है चाहे इसमें किन्ना ही घन श्राव
करना पड़े। बांगलु ग बाघा—

“बहा मरा पसा तुमों के पसा में बाघग है। बाघग मरे
पाम बन को कोई कमी नहीं। घन ता धाम्य कमर रहा है।
तुम्हें सुनकर तुम हागई किन्तु शोर ही अपनी धूमो धाई कीजो
वा घमकाती हुई बाघी—

“कौन तुम्हारा नाम नहीं जानता। सभी जगह के घनराग नहीं
आकर हर प्रकार का धाम्य लेते हैं। ऐसी बाई और जगह नहीं अहाँ
श्राव बैसों का इससे धरका उपभोग होता है। यहाँ जीसी श्राव और
करी नहीं मिलती—बहा तुमने बहाँ को श्राव का रबाद भी जिना
ह बांगलु ग”

“मैंने अभी तक केवल चाय ही पी है” बॉगसु प कुछ न चिन्तित होकर बोला, “मैंने न तो धरातल ही पी है और न सुखा ही चखा है।”

‘चाय !’ वह हँसते हुए बोली, ‘जब हमारे यहाँ इतनी बड़िया धरातल मिठा खज्जरी है तो तुम चाय क्यों पीत हो ?’

बॉगसु ग ने सिर मुझ किया और वह बोझती ही गई—

“मैं समझती हूँ तुमने तो और भी बहुत सी चीजें नहीं देखी होती ? छोटे २ मुम्बईयों के हाथ सोने २ सुनचित्त गाल ?”

बॉगसु ग ने सिर और मुझ गया चेहरे पर आश्चर्य भा गई । उसे जग्य माको सभी इस दुम्बरी की बातें सुन रहे हैं और उसकी ईर्ष्या बका रहे हैं । हजर उबर वह उसने देक किया कि वास्तव में कोई उसकी और नहीं देक रहा तो कुछ सादस बटोर कर बोला—

‘नहीं नहीं—और कुछ नहीं—केवल चाय ही पी है ।’

कुम्ह फिर बड़े जोर से हँसी और इन्तजों पर जगो चित्रों की घोर लक्षित करती हुई बड़ने लगी—

‘जब चित्रों की घोर देखो । जिस किसी को भी तुम अपने पास बुलाया चाहते हो मुझे बच्यो लमा मेरे हाथ में अपने रको । मैं उसे तुम्हारे पास बुला दूँगी ।’

‘वे लखीरे ।’ बॉगसु ग ने धारचर्च चिन्तित हो कहा, ‘मैं तो समझता था कि वह क्या कहानियों व जर्म प्रम्बों की बेबियाँ हैं । यथवा बचक राजन को ही मुम्बईयों हैं ।’

‘लखीरे की तो है ही’ ‘किन्तु अपना इन लखन की वस्तुओं को भी वास्तविकता का रूप दे सकता है ।’ इतना कहते हुए कुम्ह होरक के बरे की घोर कुछ इतना करते हुए वहाँ से चली गई ।

बॉगसु ग इन चित्रों को जब एक और ही वस्तुता से देखने लगा । हमके वास्तविक में लखवली मच गई और भाति २ के चित्रों की न जका सी हो गई । इन्हीं सीमियों द्वारा ऊपर व कमरों में जग

जा सकता है। नहीं उसे वह सभी सुन्दरियों अपना शीर्ष दिखाना सकती है। यदि वह कोई पसन्द कर तो किसी करे, वह तो सभी बरबों माया भाइमी है, किन्तु फिर भी सब नहीं माना और इस चिन्ता में से उसने पहिले तो तीस बिछ स्पर्श किम और फिर इन तीनों में से एक की ओर बगल में हथारा करता हुआ बोला वह तो कुछ की भाँति सुन्दर है। अपनी इस व्यक्ति का स्वर्न इसी व सुभा ओर मुनकर उसे कुछ काम भी जाई। किसी प्रकार कीमता से उसने कुछ ऐसे मेज पर बोले और वहाँ से चले दिया।

जब बजे आते रात हो गई और पानी भरे छेदों में चमकती रोशनी भी वही कुछ जुमा नहीं सकी। उसके शरीर में तो लूट लेखी हो रीझ रहा था। इसमें क्या मेर का, वह नहीं जानता था।



: १६ :

परि बौगलु ग के लेतीं क पाकी सूख जाता और कमीन इस बजाकर बीज बोने के योग्य हो जाती तो शायद वह फिर उस चम की दुकान पर न जा पाता, या उसका कोई पक्का बीमार हो जाता या बूँत चम की मृत्यु ही हो जाती तब तो बौगलु के पास कुछ न कुछ काम करने को रहता और वह उस मुन्दरी को मूक जाता ।

किंतु पाकी न सूखा सूखा चम भी प्रायः से सौंन काष्ठ तक ऊँच जा ही रहता, चम भी सुबह के गये शाम को सड़क से चले चलकर बौगलु अपने को ओझा की निगाह से बचा कर कमी डूबर बैठा कमी डूबर । वह इस तरह मूका न मा रहने लग कि कमी चम भरी खाड़ी बोवकर बड़ बैठा तो कमी पाइस सिखाता कर भी बिना बरा लगाए बोव जाता । गर्मी के दिन भी कमी होने के कारण कठिनाता से हो करते । इस ही एक दिन वह अपने दरवाजे पर लड़ा हुआ था कि यकनक उसे ध्यान धावा और वह सोचा अपने कमरे में गया वहाँ जाकर बरा कष्ट बढ़िया न बिना किसी से बड़े मुने का से बाहर चम पडा ।

कमी चम की दुकान पर वा पहुँच गया । उस दुकान पर तेज रोशनी हा रहा थी पक्ष चम रहे थे और लोग खूब-खा पीकर हँस-मोख रहे थे । बौगलु पहिले तो वहाँ पहुँच कर कुछ फिन्कल उसके हृदय में कुछ चुकचुकी उठी मरन में नून की रचना तेज हो गई । शायद वह गद

बसम खीट पड़ता किन्तु हृत्तन में ही कुन्नु उभर जाती हुई दिखाई दी । कुन्नु ने यह समझा कि कहीं जमीर पुनः आया जा रहा है, लेकिन जब उसने बोंगलु ग का देखा तो उसके मुँह से निष्पन्न पड़ा—

‘अरे वह तो नहीं किम्बाव है ।’

बोंगलु ग का यह वाक्य बड़ा मुरा माधुर्य हुआ । हृत्तन सुन कर उस क्षण आया मध्यमार्थिक ५। ही उल्लस हुआ किम्मत बढ़ाती और कहा—
‘‘बधा में इस माता में नहीं आया वह तो उस और साथ जात है ।’

कुन्नु कुछ हँसो और कबे दिखाती हुई बोली—

‘‘बोंगो की तरह तुम्हारी जव में भी खीटो हा तो अचानक तुम भी सब की मोति बारी में से ले ले हा ।’

बोंगलु ग उसे दिखाता जा रहा था कि वह भी कुछ कम नहीं बड़ी और उसके जव में से मोटी रकम निकाल कर हाथ में ले कुन्नु की आर बढ़ाये और कहा—

‘‘बधा हृत्तन से काम बच आया तो और आकर बचता पड़ेगी।’’

‘‘कुन्नु कीरन बोले पड़ी ‘‘मेरे साथ आया और बताया तुम्हें कीमती पसन्द है ?’

बोंगलु ग बिना कुछ कहे सुन उसके पीछे चला पड़ा । बहिन को उस क्षण माथो उसे कुछ नहीं चर्चिष किन्तु उसकी दादा लड़ि में जोर लगाया तो वह एक रिश की ओर हारा बरत हुये बतले जा ता, ‘‘बह त्रिपक्ष पहरा छोड़ा किन्तु सुन्दर है जिसकी रोड़ी चुकीकी है व त्रिपक्ष हाथ में बमल का कुछ है । मुझे बड़ी चर्चिषे ।’

कुन्नु उसे अपने माथ का चप्री । भीड़ में से निकल कर अन्दर जाने समय बोंगलु ग को आज बधा माथो लम्बी उमकी आर दृष्टिही बधि देय रहे हैं । किसी प्रकार बहिनता से उसने मोड़िचीं चली ।

अगर बहिनता ने कुन्नु ने आगत देकर कहा—

“आज रात में आने बाबा पहिना व्यक्ति था गया।” इतने में एक बड़े कमरे का दरवाजा खुल गया और वहाँ की सारी सुन्दरियाँ एक क्षण में जड़ी हो गईं। कुन्हु बड़ी डरपट्टीनना से चोकती बची गई—

‘वहीं, तुम वहीं—और तुम भी वहीं— तुम्हारे बिना भी कोई वहीं आया है। यह तो तुम्हारी बाकी सबकी के क्षिप्त है, वह कमल।’

वही सुन्दरी रह गई और सब वापस भाग गईं। कुन्हु के लिए कहा “वह जो सँगाओ इसे। इसके मुँह से बरह आती है।”

बौंगलु ग ने जब वह सुना तो उसे माया बंक भाग गया। लेकिन अपने पग के बोध से इसकी हिम्मत नहीं टूटी और वह सीधा कमरे में चला गया। वहाँ एक सुरोनिष्ठ बिस्तरे पर जाकर वह सुन्दरी भी बैठ गई।

यदि कोई बौंगलु ग को समझता कि आज इतने नातुक, सुन्दर, खूबीके और छोटे व सुखान्तम भी हो सकते हैं तो उसे कभी भी विश्वास नहीं होता। यदि कोई यह बतलाए कि पुदप क देर की बीच की जंगली के बराबर भी किसी सुन्दरी का पैर हो सकता है तो उसे बकीन नहीं होता। किन्तु आज वह सब स्वर्ण अपनी धौलियों से ऐसा सौन्दर्य देख रहा था। वह बिना झिझित सा टकरकी बाँधे इस सौन्दर्य को देखना रहा। साहब के बरतों से सुसज्जित इस सुन्दरी के हाथ भी बरतों के ऊपर अपनी केँड-झीड़ा कर रहे थे। बौंगलु ग को तो रक्षण में भी यह आभास नहीं होता कि ऐसे सुन्दर हाथों का भी स्वर्ण दिया जा सकता है। जब उस सुन्दरी की धर्म्मि आन्वरोध की तरह गोख व मोठी दिलाई ही तो उसकी समझ में आया कि यदि जंगल धौलियों की अपमा आन्वरोधों से डीक ही जाते हैं।

इसका बाद सुन्दरी ने धीरे से जय कर अपना हाथ बौंगलु ग के कंधे से लेकर बाँधों तक फैला। बौंगलु ग को ऐसे स्वर्ण का अनुभव पहिले कहीं हुआ था। इस समय भी यदि वह देखता नहीं तो उसे कभी मान्य

नहीं हो सकता था कि उसकी बांहों में किसी का हाथ भी रखा हुआ है किन्तु अब तो उसकी रग-रग हम स्थल से काँच उड़ी और ऊपर हाथ गिरते २ उसकी कलाई तक आ गया । इस सुन्दर हाथ को वह कैसे समाखे वह उसकी समझ के बाहर की बात थी ।

बौंगलुङ्ग को शीघ्र ही एक घीमी हँसी की आवाज सुनाई दी
 “घोड़ ! तुम तो कुछ भी नहीं जानते ! क्या तुम सारी रात इसी प्रकार टकटकी बँधि रहते रहोगे ?”

सुन्दरी का हाथ अपने हाथों में छे बौंगलुङ्ग ने मजबूत से कहा—
 “मुझे तो कुछ मालूम नहीं । तुम ही बताओ क्या करूँ ?”

धीरे सुन्दरी ने सब कुछ बतल दिया ।

बौंगलुङ्ग को जो अब वह रोम जगा तो वह वास्तविक रोग से भी अधिक दुःखदायी हो गया । जमजमाती घूप की गर्मी में उसने कहीं सेक्सुअल को रेगिस्तान की ढँडी व सड़ हवाओं का भी बह निकल हो सुखा था, प्रवाण के दिनों में घूप की बेरुमी भी उससे सही थी इन्डिय प्रदूष के इस जगह में काम की धोख में निराशा की ठोकरे भी वह प्या सुखा था । किन्तु इस कोमलांगी के सुन्दर हाथ के स्थल से जो बेरुमी ब हीत उस हुई वह असम्य थी ।

भिय प्रति वह चाब की मूकल वर जग्य रोज शाम से ही वह अपनी प्रियतमा से मिलने की पथी का इंतजार करता हर रात वह जमी व साथ प्यतीन करता । रोज जल-जाते भी दरवाजे तक पहुँच कर कर्तव्य जगता दबक उमक करावर याकर बैठ जाता और सुन्दरी की मुसकराहट उसका आह्लास करती । फिर सुन्दरी भी कमरा अपना शरीर उमक छिपे रोज दली और पिछे हुए पृष्ठ को तोड़ने में बौंगलुङ्ग व्याकुल हाकर ही रह २ जाता । सुन्दरी की इच्छा होत हुए भी वह उसे अपने कंध में नहीं समेटता क्योंकि अपनी शक्ति से वह हम कूब को मसकरा नहीं चाहता था । अन्धकार के साथ वज्र और भी वह भी उज्जनी ही रह

सुष्ट थी, इसलिये बौंगलुङ्ग उसके पूरी शक्ति से अपने अङ्ग में भर, उसका कर शीत हो जाता था। किन्तु इस सुन्दरी में इतनी शक्ति कहीं थी जो बौंगलुङ्ग का बोझ सह लेती। बौंगलुङ्ग की छिप्ता शक्ति नहीं होती थीर वह सूखा ही बापस पर चला जाता। यही हुई वह सूख उसके निरव प्रति थीर भी स्वाङ्गुल करती चली जाती।

गर्मी भर बौंगलुङ्ग इस सुन्दरी के साथ घेस-झिझके करता रहा। उसे फिर भी साधुस नहीं हुआ कि वह कहीं से भाई। मित्रों पर उसके मुँह से शब्द ही नहीं निकलते। वह तो उसके मुक्त की ओर, हमों की ओर वह अङ्ग २ की गोछाई की ओर अपनी मजबूरी निग्रहों से दण्डा ही रहता। कभी भी उसे लक्ष नहीं हो पाती।

बार पर उसे अपने विस्तरों में भीड़ नहीं आती, कभी गर्मी का बहावा करने व कभी किसी भीर वहलने से वह बाहर अन्दर चरई बिड़ा कर पड़ रहता और अपनी कुरपराइ में कबडें बहकता रहता।

कोई बच्चा व स्वर्ण बलकी की जब कभी बोझती तो वह क्रोध से उबल पड़ता। कभी बिग आकर कमल बोने की बात करता तो भन्ना कर कह डडता—“तुम्हें तंग क्यों करते हो ?

इस प्रकार वह उस सुन्दरी की बात में ही अपना दिन निव्याक देता। बच्चे, की व लुई बाप की ओर देखता भी नहीं। पूरा बाप कभी व कह डडता—

“वह तुम्हें क्या होगा हो गया है जो बर-बार में गुरला हा आता हो ? शक भी तुम्हारी पीछी होती आ रही है।”

इसी प्रकार दिन बह जाता, रात हो जाती और वह सुन्दरी बौंगलुङ्ग के छाव अपनी मजबूरी करती। उसके बड़े-बड़े कीड़े हुए मिर के बाजों पर जब उसने एक पार बरदाह किया तो हमारे दिन उसने बाज भी करवा दिये। बाज कर जाने बार बार में भोजन को डर लगने लगता तो उसने कहा—“वह तुम्हें क्या किया ?”

बौगलुङ्ग फिर मरझा उठा "तो क्या जीवन भर गैवार ही बना रहूँ ? सभी मझे आदमी छोट छोटे बाक रखते हैं ।"

किन्तु हृदय में उसे आन हो रहा था कि वह यह सब क्या कर रहा है । उस सुन्दरी पर वह इतना असह्य था कि अपनी जान भी गँवा सकता था । जब वह बहिनो की अपेक्षा मित्य प्रति स्वाम भी करण था यद्यपि आखान कहती रहती कि कहीं सही न लग जाय । प्रोखान की परबाइ उस न थी । वह सुगन्धित व कीमती लेख-सामान का प्रयोग भी करने लगा । महाइर वह अपने बच्चों पर इत्र भी छिड़कता । उसकी हन सब क्रियाओं से घर बाहों की समझ में कुछ भी न आता कि आगिर बौगलुङ्ग फिर जा रहा है ।

बौगलुङ्ग ने पहिले क जिय मजे मजे कोमती कपड़े लरीइ धीर इस घर उसने प्रोखान से वह कपड़े नहीं सिखवाये बहिन सहर के बामी हर्जी से ठेकार करवाये । जून भी मजमज के लरीइ जिय । इन कपड़ों व जूतों को अपनी छी-बच्चों के सामने बहिनने में उसे बड़ी शर्म छाती, यद्यपि उसने यह उपाय किया कि इस शिवाय को उसने एक कमरा की तह में छप कर बाब की दूकान के एक बायू के नाम रखवा दिया । वहाँ आकर वह इन बच्चों को पहिन दिया करता । अपनी बौंदी की अँगूठी पर भी उसने सोने का पाली चढ़वा दिया था ।

एक दिन घर में सब वह होरहर का आना पा रहा था तो प्रोखान ने उसे गौर से दूर कर कहा — "तुम्हें दलहर मुझे झांग के बगलामरों का त्याग हो जाता है ।" बौगलुङ्ग ने उत्तर दिया कि अब उसके नाम रख करने की काही रहम है तो वह गैवार नहीं बना रह सकता किन्तु प्रोखान की इस मूढ वर उसे मन ही मन बड़ी मसबता हुई थीर वह उस दिन त अपने व्यवहार में कुछ कम बह गया ।

बौगलुङ्ग के पास जो भी धन था धीर धीरे उस सुन्दरी के पास चला होने लगा । रोज नई कमलगा होजी धीर वह उप पू करना ।

कमी वह हीरे की चँदूरी मॉली तो वह ही जाली तो कमी सोने की बाखी, कमी कुछ कमी कुछ। इसका परिचय यह हुआ कि हीराखों में गया हुआ यम भी बिकरने लगा। एक दिन जब घोखान ने उसे दीवार की ओर दृष्टि दणा तो उसे बड़ी चिन्त हुई और वह समझ गई कि उसका जीवन घर बाखों से दूर ही नहीं, बरिष्ठ अपने छोटी के व्यवसाय से भी परे होता था रहा है। घोखान को कुछ संदेह तो उसी दिन से हो गया था जिस दिन उसके पति ने उससे कभी सँवरी रहने के लिये कह कर फटकार बटाई थी। मग ही मग घोखान की बिठा करने लगी।

कमल बौंगलुह के कोप के भय से वह कुछ कहती न थी। एक दिन वह भी जाता जब बौंगलुह घोखान की ओर कुछ और जब वह कपड़े को रही थी तो बीरे से उसके पास आकर कहा — तुम्हारे पास जो मोती थे वह कहाँ हैं ?”

घोखान ने कुछ स्तब्ध होकर कहा ‘मोती ? हैं मरे पास।’
‘इन मोतियों के स्वर्ण पड़े रहने से कोई काम नहीं’ बौंगलुह ने कहा। घोखान धीरे से बोली।

‘सोचा था मैंने यह था कि इन्हें बाखों के बख्तों में डकवाऊँगी और कदमी के बिनाह में उसे दे दूँगी।’
बौंगलुह ने अपने हृदय को कहा करते हुए कहा उस व्यक्ति रंग की कदमी पर ये मोती नहीं पिछेंगे। मोती तो तेरे रंग पर चिपक जाते हैं। बाखो मुझे दो।

घोखान ने दुपचाय निकाल कर पुनिया दे दी। मोती जब बौंगलुह के हाथों में आ गये तो वह मसख हो गया।
घोखान पहिले की मॉलि कपड़े जोड़े में लगा गई। घाल १ जब मोतियों से बौंगलुह टपक टपक तेरे बगैरे वोलने की बिठा भी डमर मरी की वह कपड़ों के डेर का मोरे डेरे से पीरती ही रही।

बौंगलु ग का उस सुन्दरी से तिर्य प्रति का मिलना जारी रहता यदि उसका चाचा यक्षयक उसके घर तक न पहुँचता । फिर हुए वज्रों में चाचा के चेहरे की सुरिषों साह दिप्योई व रही थीं बह भाकर पुपचात घरवाले पर पड़ा हो गया । बौंगलु ग व उसका चाप मुबह के लाने व क्षिपू मेव पर बटे ही थे कि अभी उसकी घोर पृष्ठक देखने लगे किन्तु उस पहिचान न सके । अग्निर चाचा बोला “बह भाई । मठीत । क्या तुम मुझे पहिचान नहीं रहे ?” बौंगलु ग अब पहिचान गया परयाली की मुद्रा से किन्तु भजता प्रगट करत हुए बोला —

आओ चाचा चाचा चाप हुए हो क्या ?”

नहीं अब तुम्हारे साथ पाऊँगा’ कहत हुए चाचा बैठ गया और थोड़े सरका कर साथ ही भोजन करने लगा । प्याने में बह हुय प्रभर जुड़ गया मानो कितने ही दिन का भूगा हो । ला बीछर जय उठा तो कहने लगा— ‘अब लूच साऊँगा तीन रात स मही सोया हूँ ।”

जी धरकर जब बह साकर उठा, तो अपने भाई के कमरे में जाकर बोला, “मैं मुन बुका था कि तुम अमीर हो गए हो किन्तु तुम्ही हुई बाल का विरचाम नहीं होता था ।” बौंगलु ग भी बड़ी देहा था मुबकर वह दूसरे कमरे में चला गया । उसे प्रिय बाट का दर था बही होकर रहा, उसने देखा कि चाचा मजे में उसके भीतर बिरतर पर खेद

कर अपनी पकड़ दूर कर रहा है। बाबा वहीं से बौंगलुङ को मन्वोबित कर कहने लगा—

‘यब मैं अपने बच्चे व की को भी यहीं ले आऊँगा। तुम्हारे बच्चे घर में हम तीनों के बेट भी आसानी से मर जायेंगे। हम लोगों की हुराक बोझी ही तो है इसके प्रतिरिद्ध जो कुछ भी तुम्हारे बच्चे पुराने कपड़े होंगे उनसे हमारी गुजर हो जायेगी।’

बौंगलुङ कोई उधर नहीं दे सका। यब इससे पास कपड़ी बच बा। इन परिस्थितियों में भी यदि वह बाबा को मवा कर दे तो इससे बिना लम्बे की बात होती थीर गाँव वाले इसी उधारेँगे। उसने वह सब सोचकर बाहर वाले मकान में रहने वाले मजदूरों को यमक के पास वाले कमरे काकी कर बने को कह दिया। शाम को ही बाबा अपने बच्चे और की को ले आया। बौंगलुङ को मन ही मन शोक बहुत आ रहा था। जब इससे बाबा को मोटी ठाड़ी देला तो थीर भी गुस्सा में भर गया, किन्तु कहना चाहते हुए भी कुछ कह न सका। कुछ हो रहा। उधर भोजन भी बन उठी, ‘गुस्ता करने से क्या होगा? यह सब तो सहा ही जाता है।’ बौंगलुङ का शोक भी धीरे-धीरे शांत हो गया। सोचने लगा कि वह लोग क्या जायेंगे, यहीं रहेंगे तो कुछ न कुछ काम ही जायेंगे। वह सब तो ईश्वर का कैलिय इसे सुन्दरी की बात फिर सत्यने छाती थी। इन महम्मनों के बचकर मैं इधर वह हो-लीन दिन से अपनी प्रेयसी से मिलने नहीं जा सकता था। बार में ध्यानुक बट आया ही आर बहबहाये लगा जब घर में उड़की जानबरी व मार फिर उदाम रहे तो उसे सब को शक्ति व शिव बाहर जाना ही पड़ेगा।

उमके इदक में जो प्रेम की आग दबी हुई थी, वह फिर मदक उठी और सुन्दरी के बहाँ आया जाया फिर शुरू हो गया। भोजन तो सीधी सादी मरुति की थी ही, बौंगलुङ का बार पुराने की कमजोर बिगाहों से मजबूत था, बिना अपनी मिथान विवाद

रहा था। किसी को यह पता नहीं चला सका कि आन्तर बौंग जाया क्यों है ? उसकी आँखों बौंग के रंग डग डककर सब कुछ ताड़ गइ और बोली 'बौंगसुत्र जब किसी कुसुम-कली पर मुग्ध हो गया दीपत्य है।'

यो-छान ने यह सुनकर आँखों की ओर हेरत से देखा तो आँखें ईसत हुए बोली 'तुम्हें अभी तक यह पता नहीं कि बात क्या है ? बकीमन तुम्हारा पति किसी अन्य स्त्री के प्रेम में मस्त हो रहा है।'

बौंगसुत्र पास के ही कमरे में प्याकुल प्रेमी की मौति छेदा हुआ डकटा रहा था। उसके कमरे में आँखों के ये शब्द जब पड़े तो वह सकेत हो गया। आँखों कहती जा रही थी 'मैंने किसी लवियत वाले कमरे ही आँखियों को देखा है। पक्षपक को प्यक्ति नये नये वस्त्र खरीदने के लगे बन डन कर रहे हैं जैसे जो समझना चाहिये कि वह अवरण ही किसी स्त्री के प्रेम में मस्त हो गया है। यह सुनकर आँखों का हृदय दृढ़ता गवा और उसके मुँह से क्या कुछ निकला वह बौंग नहीं सुन पाया कि आँखों को कुछ कह रही थी उसे प्याम से सुनने लगा। वह कह रही थी 'वह साचवा ठीक नहीं कि पुण्य के लिए एक ही स्त्री काफी है। यदि स्त्री पति के लिए कभी से कभी मेहनत करके सब कुछ स्वीकार कर दे तो वह भी काफी नहीं। यदि तो पुण्य के लिए मेहनत करने के लिये है। जब पुण्य के पत्र पैसा अधिक हो जाय तो क्या कुछ नहीं हो सकता। मेरा पति भी यदि उमरक पास पैसा होना तो अवरण ही किसी और स्त्री के प्रेम में अपना पैसा डवाने का तैयार रहता। इन मामलों में सभी पुण्य प्रायः एक से हो होते हैं।

आँखों कुछ न कुछ कहती लगी गई किंतु बौंग का उनके शब्दों से महारा ही मिला। बौंग का प्याम फिर उसी सुन्दरी पर आकर सरक गया। वह सोचने लगा कि इस सुन्दरी को अवरण ही हम पर में दो आना चाहिये, अपने को पूर्ण रूप से उस पर मिला द्या चाहिये, ताकि और कोई हमसे राते में न आ सक। वह उसी समय डककर बाहर

निकल आया और चाची को बुलाकर कहने लगा— 'मैंने तुम्हारी बातें सुन ली हैं। यह सच है कि केवल बोझाल से ही मेरा काम नहीं चल सकता, वससे मेरा जी मर गया है। मेरे पास कपड़े दफना है फिर अपने मन की वयों व की जाय ?'

चाची ने धारवाला ही दिया 'धरप देमा ही करवा चादिर। सभी धरवाला ऐसा ही करते हैं। निर्वहों के बिने एक ही बतन कभी होता है किन्तु हम जैसों के बिने तो एक से अधिक होने ही चाहिये।' चाची यह समझी थी कि बौगलुङ्ग थाव क्या करेगा। बौगलुङ्ग बोला 'कौन मेरा काम करेगा। मैं दुबल होकर किसी स्त्री से अपने घर या जाने के बिने कैसे रहूँ ?'

चाची तुरन्त ही बोली 'बढ़ काम मेरे सुपुर्न कर दो। मैं सब कुछ कर दूँगी। हम केवल यह बताओ कि वह कौन स्त्री है ?' बौगलुङ्ग दिक्किचाते हुए बोला, 'उस स्त्री को खोरस (कमल) कहते हैं।'

बढ़ समझता था कि इस नाम को सब जानते हैं। इतना स्वाभ उसे नहीं रहा कि दो महीने पहिले वह स्वयं इस नाम से धारिणिध था और थाव वससे स्वाम से ही वह केवल हो जाता है। लेकिन चाची ने पूछा 'उसका घर कहाँ है ?' कुछ बाजार होकर वह बोला 'शहर में जो बड़ी चाव की दुकान है वहीं उसका घर है।'

वही जो पूछ था कहता है ?' चाची ने पूछा 'धीर नहीं तो क्या ?' बौंग ने उत्तर दिया। बोधी दर चाची कुछ सोचती रही, फिर बोली 'मैं वहाँ किसी को नहीं जानती। कौन उसकी देख रेख करता है ?' बौंगने जय कुम्ह का नाम दिया था चाची हँसते हुए कहने लगी, 'वही जो दौंग-भवन में रहती थी। दौंग के मर जाने के बाद वससे यह

काम करना आरम्भ कर दिया होगा। तब तो काम धामाली से हो सरेगा, बेबख्त हमारे हाथ में पैसा रखता होगा।

बॉगसुत्र का मुँह एकदम सूखने लगा किंतु फिर भी कुछ उस्ताद बदोर कर बोला “चौदी! सोना! जो कुछ भी खर्च आवेगा मैं दूँगा। धमोस के बद्रूप में चौदी सोने की कमी नहीं।”

हमक बाद प्रम-वेदना में बिकर बॉग ने सोचा कि यह जब उस जाब की दुकान पर तब तक नहीं जायगा, जब तक कि सारा मामला तय न हो जाय। शीघ्र ही उसने अपने निर्बाध पर फिर विचार किया उसे हर क्षण “यदि वह न चाई तो? और वह चाबी से कहने लाग “रखे पैसे के कागज मामला समाप्त न कर दना। मेरे पास काफी सोना चौदी है। और हाँ कुछ से वह भी कह दना कि इस मुन्तरी को हम घर में कोई काम न करना पड़ेगा वह मुन्तर बस्त्रों से सुपरिजित हो पड़े आराम से रह सरेगी।’

चाबी चौदों मरदान हुए बोली ‘ठीक है। ठीक है। मैं चाई मूल्य नहीं हूँ और न वह मरे किए कोई नया काम है। कई पार कह तो दिया कि सब कुछ ठीक कर लूँगी।

चाबी जब इस काम के लिए चली गई तो बॉगसुत्र को यह बुन सकार हुई कि इस मुन्तरी के छिपे घर की मर्यादें घण्टी तह होनी चाहिये और हमने आख्यान को बुदारी खड़ी सफाई व काम में लग दिया। आख्यान का रूप परचर करने लगा और वह समझ गई कि वह मर्यादें क्यों बराई जा रही है।

आख्यान के पाप सोना अब बॉग के छिपे सुनिश्चय या हमने सोचा घर में जब दो स्त्रियों हो आवेंगी तो यह मरान दिया पड़ेगा। अतएव उसने तुरंत ही मजदूरों को बुलाकर बराबर में ही एक तीन कमरों का फौरन बना देने के लिए कह दिया। मजदूर सब उसकी ओर पंखरु देखने लगे, किंतु कुछ भी कहने का साहस किसी को न हुआ। बॉग न भी

किमी को ऐसा कोई जखम नहीं दिया। वह स्वयं अपनी एक रक में जमीन में नीबू लुढ़काने लगा। नीबू लुढ़क कर जब दीवारों किंच गड़े तो उसने किंग को नई कपड़े के बिने भेज दिया। कमरे के बाहर जब हो चुके तो कर्ज डीक बना दिया गया। इस सब काम में कम्प्लैट दिन लगा गये। बाँग के कमरों के पर्शों के बिने कीमती कपड़ा खरीदा, नई देव और दो कुर्सियाँ खरीदी और एक सुन्दर मसहरीदार पर्श भी खरीद दिया। बहाने के बिने सुन्दर डब भी खरीद लिया गया। यह सब प्रबन्ध उसने अपने आप ही किया क्योंकि जोखान से कुछ सहाय मशवरा करने में तो उसे शक जगती थी।

इसका सब इन्तजाम तो हो गया किन्तु उस सुन्दरी का सौदा तय न हो सका। बॉम्बेज आका ही इस नये मकान में रहना करता। अपने मन को बरकाने के बिने व सुन्दरी को प्रसन्न करने के बिने उसने बॉम्बेज में एक बैग सा ताछाव बसवाया और उसमें राग बिरगी मसखिर्नी खरीदकर भेज दी। इसके बाद भी जब वह सुन्दरी न आई तो वह और भी व्याकुल रहने लगा। अपनी इस व्याकुलता में वह किसी से सीधे सुँह बात भी नहीं करता। बच्चों को भी डरता रहता, कमी र जोखान पर भी बरस डठता कि 'आज तुमने बाज क्यों नहीं सँभारे या आज तुम्हारे कपड़े फिटने गये हो रहे हैं। जोखान पति के इस व्यवहार से तय जाकर एक दिन पूज र कर र गयी। बाँग में अपनी स्त्री को इस प्रकार रोते हुए पड़िने कमी नहीं हुआ था। किन्तु जब उसके रोने पर बहोरवा से बोला 'क्या मैं तुमसे इतना भी नहीं कह सकता कि बाटी कर जो या सत्त कपड़े पहना, जा तुम इस तरह रो रहा हो।

जोखान मिसकत हुये बोली, 'मैंने तुम्हारे बिने कइसे पंहा बिने है, और कुछ चाहे न किया हो।'
इस उत्तर पर बॉम्बेज का मिजाज कुछ डीक हुआ और उसने कम समय जमा भी माँग ली।

हमी बीच एक दिन चाची ने आकर कहा "सीदा ठब हो गया ह कुल्हू ने बदल में लो चौंदी के सिक्के मांगे हें और वह तु दरी भी अपने छिप एक पौंगूरी, बड़ाइ इब्रिंग, कुब रेठमी एड और कोई हम बात बकिया जूते मांगती हे । बौंगलुह ने हम फरमाइशों पर कोई ज्वाब नहीं दिया केवल बही सुना कि सीदा फर गया अतएव वह बोला "दीक हे आने हो " इतना वह कर बह माग्य हुआ कमरे में गया और हर सारी चौंदी निकाल लाया और चाची के हाथ में सब सिरके रख दिवें । इस ठसे चौंदी के सिक्के उसने चाची को अपने छिप रख छेन को भी कह दिया ।

चाची ने पीछे हर कर कहा "नहीं, नहीं, में कुछ म छूँगी चाखिर हम आग एक ही कुल्हू के लो हें और में लो तुम्हारी माँ क बराबर हूँ । तुम्हारे छिप में यह काम किया ह रखों क छिप नहीं । भिनु बौंगलुह मच लाइ गया क्योंकि चाची मुँह स मचा बर रही थी और हाथ आगे बढ़ा रही थी अत बौंग ने कहा कि यह सिक्के बह बसकी मददगार क बनीर नहीं बल्कि पेंस हो व रहा ह और उसके हाथ में रखम रख ही ही । चाची ने चुपचाप यह रखम इब्रिया की उधर बौंग ने भी सोचा कि वह रखम लो उचित ही कच हुई कोई चिन्ता की बात नहीं ।

दूसर पार्श्व बौंग ने बकिया बकिया माँव मददगार लाली लाइ ह को मशाले भी बाजार स माया और बही वेमरी से कम सुन्दरी का दमनार करने लगा ।

पर्मियों क खम हमे हाते बह सुन्दरी उसके पर चलाई । बौंग ने दूर स ही देख लिया कि चाची पर सवार बह आ रही है । साथ में कुल्हू भी आती दिखाई दी । चाची दर के छिप बौंग कर गया कि अतएव वह घर बसा रहा ह और वह धाकाकर कमरे में चला गया । य पर में जमन दिखाई भी बंद बर छिप, हमने में चाची ने बाहर से आवाज की और

वह बाहर निकल कर इधर-उधर देखने का बहावा करने लगा। कुन्नु ने सुनते हुए कहा "हमें क्या मायूस या कि हम लोगों में यह सौदा होगा।" इसके बाद वह बोली के पास गई और पर्दा हलते हुए बोली 'माधो, प्यारी, पूछ सी सुकुमारी—यह तुम्हारा घर है और वह है तुम्हारे मातृश्रम।

बौंगल्लु के इरादों में एक बेचना उमड़ रही थी किन्तु जब उसने देखा कि पाककी बाँके उसे देख कर हँस रहे हैं तो उसे गुस्सा आया किन्तु कुछ वह न मचा।

उसने पर्दा उठाकर जो देखा तो बसकी शिपलमा आसाम से एक कुर्सी पर बैठी हुई थी। वह आपका सारा शोध पूछ गया। सुन्दरी को उसने कुर्सी से उठते हुए देखा तो उस जगा मालो कोई गुलाब का पूछ देवा के फोंके से दिख गया हो। वह कुन्नु का हाथ पकड़ते हुए बहरी और पकड़ें गिराने हुए कुन्नु से ही पूछने लगी कि उसके रहने के बिन्दु कमरे बीच से है।

यह सुनकर पाकी आगे बढ़ी और सहारा देती हुई सुन्दरी को जब कमरों की ओर ले चली तो बौंग ने हाथ ही में बसे बनवाये थे। उस समय घर में कोई न था क्योंकि बौंग ने सभी मजदूरों को व फिंग को तो केत क कम से मेज रखा था। जोखान स्वयं ही छोटे छोटे बरबों को खेहर नहीं चली गई थी। बड़े पत्थर रख गये हुए थे और बड़े बाल का होना न होना बराबर था। जब सुन्दरी कमर में चली गई तो कुन्नु ने पर्दे नीचे दिए।

पाकी दर बाद पाकी ऊपर फिर आई और हाथ आपन हुए बोली यह सुनिश्चित बस्तुओं की तो इच्छा रखती है किन्तु दको तो, हँस से श्रितनी बरब का रही है। भेदे, वह तो इतनी जगान भी नहीं श्रितनी दिखाई देती है। वह बहरी बरब की है, यदि उग्र बरब गई होती तो यह जगान इतनी, हाथों में अंगूठियों व कीमती पोशाकें उन पर

जरा भी शोमा न होती थीर न वह किसी को रिझ सकती। उसने वह कहते हुए देखा कि बाँग के चेहरे का रङ्ग शोष से साफ़ होता जा रहा है। वह बात बदल कर कहने लगी 'कितनी सुन्दर है वह। मैंने इतनी सुन्दरता तो पहिले किसी में नहीं देखी।'।

बाँग न मुनी धनमुनी कर ही थीर कोड़े लपट नहीं दिया किन्तु एक स्थान पर स्थिर नहीं रह सका। इधर उधर चक्कर काटते २ घालिर माहम करके बसने पड़ा बड़वा थीर फिर सुन्दरी के पास आकर बैठ गया। रात होते समय तक वह उसी के पास पड़ा रहा।

धोखाव शाम तक भी घर में नहीं आई। सुबह ही वह कुछ खावा साथ बँधकर छोटे बरखों समेत कहीं चली गई थी रात होते २ जब वह घर लौटी तो सदैव की भाँति सबका खावा तैयार किया बरखों को पिखावा बड़े रबदुर को पिखावा थीर फिर कुछ छोड़ा सा खप भी प्रावा। जब सब सोगए थीर बाँग फिर भी नहीं आया तो वह भी हाथ पैर घोकर आरुखी ही अपने बिस्तर पर जा सो रही।

बाँगलुह जब सुन्दरी के कमरे में ही पड़ा रहता थीर उसका रस पान किया करता। वह सुन्दरी भी गर्मी के कारण बाहर न निकलती। कुछ हीर समय ही सुगन्धित लहसुन के तेल से उसकी माखिरा करती रहती। छोटे दिव वह सुन्दरा ही कमरे के अंधारे में बरस गढ़ेदार पसल पर आराम से पड़ी रहती। शाम हो आँध पर वह फिर रगत करतो थीर तब तब कर बाँगलुह के साथ नहीं बसा में बूमती कभी रघविर गी मङ्गलियों से मन पहाला खिया करती थी।

इसी प्रकार बाँगलुह आनन्द के साथ अपनी प्रियतमा के साथ दिन बिताने लगा।

बौंगहूज ने यह नहीं सोचा कि घर में चान्च कियों के थाने से किसी न बन्नी दिन तो हान तोचा मचेली ही । कुनकू की कठरनी सी बचान व घोखाल के बूर र कर देखने से उसे कुनकू आमास तो होख था किंतु इस घोर बह बिरोध ध्यान नहीं दत्त था । फिर भी कई दिव निकल गए लेकिन घोखाल और कुनकू की एक आत्मा न बनी । बौंग को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ । यदि आखाल की अपनी सीत से न पकती तो यह समझने की बात होपी किंतु यह समझ में न आया कि कुनकू से न बचने की कौन सी बात है । घोखाल कुनकू का बपते ही घाग बचूआ हो जाती । वह जानती थी कि तिन दिनों बह इन्ग परिवार में बौंगी के रूप में काम करती थी तब वही कुनकू बूरे हांग की रनेक थी न हर तरह के इन्ग पकाती थी । कुनकू ने एक बार घोखाल से कहा थी अब हम दोनों फिर एक ही घर में आ गए, लेकिन अब तुम माझिकनी हो । क्या समय का बचकर है ?

घोखाल ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया । बन्नी का बड़ा बजार कर रक्का और साधी बौंग के बमरे में जाकर उससे पूछा— 'बह भीच औरत हमारे घर में क्यों आई है ?'

बौंग हजर उबर दूध कर किसी बहलने से बात हाजने की चेष्टा करने लगा । एक बार वह भी सोचा कि कह न हम घर का माझिक

में हैं, जिसको मैं चाहूँ रख सकता हूँ। तुम पहले बाकी कीज जायी हो।' किंतु घोखान के सामने उसे आप ही आप शर्म आ जाती थीर वह कुछ भी न कह पाता। घोखान ने मोड़ी दर में फिर पूछा, 'बताओ न यह औरत कहाँ क्यों आई है?'

बोंग ने मोचा कि उत्तर देना ही पड़ेगा, बोला "तुम्हें इससे क्या?"

मैं पहले से ही बहल करती हूँ जब कि बोंग के घर में वह मासिकनी की तरह कहती थी 'बाबू बाबू' 'छाया छाया' 'बह ग्यादा र म है' 'यह बहुत ठंडा है।' मुझे क्रिमा तंग करती थी यह।

बोंग की समझ में न आया कि क्या करे। घोखान चुप हो गई थीर अमूँ रोकते हुए एक ओर सिसकने लगी। आखिर बोली "बह घर में न आये क्या है। रहा है। मेरा कोई मायका भी तो नहीं जहाँ जाती आऊँ।"

बोंग फिर भी चुप रहा। वह पादुप के बराबी चुप घोखान की ओर देखता रहा। उसे चुप करने का प्रयत्न न किया। घोखान जब वहाँ से चली गई तो बोंग को अपने ऊपर ही शर्म व गुस्सा आने लगा माना किसी से धनदा करना चाहता है। मन ही मन कहने लगा, 'धीर बहुत स धारभी भी हैं जो पहिली की से नहीं ग्यादा तुरी तरह केर भते हैं, मिन तो कुछ भी नहीं किया।'।

घोखान अपने काम में लगी रही। सुबह उसने पानी र म करके अपने रसमुर का रिपा, बोंग को गम आन दी। कुछ जव ऊपर गई तो गर्म पानी का बर्तन कान्धी का धीर वह शोर मचाने लगी "मेरी मासिकका के लिए गर्म पानी भी नहीं है। लेकिन घोखान ने मुनी अन-सुनी कर दी थीर अपने काम में लगी रही। कुछ के जव ऊपर बोंग स निकपत की तो बोंग को कोच आगवा, उसने घोखान को वहाँ से बकद कर पकड़ोते हुए कहा, 'बहा तुम घोखान पानी और गम करके नहीं दे सकती थी।'।

जोखत बिगलवे हुए बोखो "मैं कोई नौबतली की नौकराची पोके ही हूँ जो सब से दुखम मानती रहूँ।"

"देवकी की बात क्यों करती हो ? पाली उसके लिए क्यों चाहिये बसिक उसकी मासिककी को भरिये।"

जोखान न पति का उमठा को शक्तिपूर्वक सह लिया उस दुखर सहम्ने हुए बोली, "इस ही क्या तुमने मेरे मोठा दिया था ?"

बौगल्ल कुल पद न सफा, इतना दुलते ही उसरा बोच कुछ ईश पद गया और बहों से बसित होता हुआ बसा गया। बाहर कुछ से बोला "मैं एक रसोईपर और बनकर पठा हूँ चोरी की मंगा लूँगा। मेरी पहली की को कुछ लान मोहन बनान की बारब नहीं है और न वह जानती ही है। तुम जो चच्छा करो बना किया करना। इतना बहकर उसने मन्मूरी का बुझार रसोईपर बनाने का आग्रह प दिया। कुछ वह मुनकर कि वह या आदे क्या सकती है, बहुत प्रसन्न हुई।

बौग ने सोचा—बहो रोम न भगाये तो बन्द हो जायेंगे मित्र कुछ ही दिनों में यह लड़े रखों उसके लिए आकर हो गई और करके लगा। इसका कारण यह था कि जब कुछ रोम बाजार बाहर लौटि न क कीमती लाने का सामान लिये जाती थी। इस लौटवानी में पैसा अधिक प्रर्थे हान लगत। बौग कैसे कहता कि यह तो एक प्रकृति से उमी का लुन पीता है। ठेका वह देने पर उसे मुन्गी क बारब हो जान का दर जो था।

सब ही साथ एक और कौता उसे भुमके लगा। बाकी की मो मच्छा न बाते का लौक का अता यह भी लाने के समय बौग पहुँच जाती थी। बौग वह भी नहीं चाहता था कि उसकी प्रपत्ती बाकी से अधिक बिछे ठेके मित्र होता बही रहा कि लौटा किन्हीं साथ न भोजन नहीं और बौग के लोने पर देना जल्दी। बौग कर ही क्या सकता था।

एक दिन अचानक पाकर उसने सुन्दरी से कहा—“दिये तुम इस मोटी कुर्तिया के साथ रहकर अपना मौज्जद म बिगाड़ देना, क्योंकि मैं तुम्हारा सौंदर्य बनाए रखना चाहता हूँ। बाकी कम क्यापि बिचवास न करना। यह सुबह से शाम तक तुम्हारे पास ही बैठी रहती है। यह बात मुझे पसन्द नहीं।”

सुन्दरी ने गद्गल मरका कर कुछ चिन्ते हुये कहा, —“मैंना तुम्हारे मेरा इतना परिचय और किसी से तो है नहीं। यह तुम जानत ही हो कि मैं ईसते खेजने घर में रहती आई हूँ। वहाँ तुम्हारी पहली की मुझसे ब्या करती है और तुम्हारे कपड़े कपड़ मचा न कर नाक में दम धिये रहत है। और कीन है जिससे मैं ईष्ट बोखूँ।” उसने यह और कह दिया कि आज रात को न आना क्योंकि तुम्हारा प्रेम कम होता जा रहा है, यदि ऐसा न होता तो तुम मुझसे यह बात न कहत। बौंग दूध मया और दमा-बाबना करते हुए बोखा “जिसमें तुम्हारी सुनी हो बही बना।

बौंग ने यह कह को दिया लेकिन अब कमी यह फिर सुन्दरी के अंदर में जाता और वहाँ बाकी बाप न मित्राहर्षों डकते मित्राही तो उस म मित्राज लराय होने लगता। इधर सुन्दरी भी उसे कुछ शक दिया प्रती। बौंग को बाकी पर भी मन ही मन कोप होता कि यह घरवा और कामती जामा ला ला कर चिकमी-चुपड़ी न मोटी होती जा रही थी, केन्तु वह कह कुछ नहीं सकता था। बाकी भी बहुत आकाश की और गौंग से मीठा मित्रा पर मीठी मीठी बातें करती थी। बाकी न इस स्वबदत से बौंग का आच शीत हो जाता था। और-और बौंग का प्रेम इस आंतरिक कोप की आग में क्षीय होता गया।

इधर एक बात और होगई। एक दिन बौंग का बुढ़ा बाप बकरी रेकता हुआ ऊपर जा बिकका। यह नया दरवाजा बन कर यह बुढ़ा आनन्द में पड़ गया क्योंकि उसे मालूम ही नहीं था कि इस घर के

बाजार ही एक घोर शौंगल व कमरे बन गये हैं। बाँग ने भी इसका कोई
 जिक्र उससे नहीं किया था। जिह्माया यह हुआ जब दरवाजे का पर्दा उठा
 कर चन्द्र शौंगल में निकला तो उसने देखा कि बाँग उस सुन्दरी को
 बाजार में बिचे हुए सहल के लालाच की मर्जखियों को देनला हुआ रंगरे
 खिपों कर रहा है। वह वहीं से चिन्ता उठा — 'घर में बैरवा वहाँ से आ
 गई।' बाँग बड़बड़ा कर बाप के पास आ गया और वह सुन्दरी भी एक
 फोट से छिप गई। किन्तु हुआ चिन्ताला ही रहा "मैंने एक थी ही रसी,
 मेरे बाप ने भी एक ही थी रसी और हम लोगों ने बाराबर ऐसी का ही
 काम किया। यह बैरवा वहाँ कैसे आगई?" उस बूढ़े को बड़ा क्रोध था
 रहा था वह कहा था कि उस सुन्दरी के सामने जाकर बकबारे "हम
 बैरवा हो।" और उसके सामने पूछे। बाँग ने बाप को समझाने की चेष्टा
 की "वह बैरवा नहीं मेरी बूँसी की है। किन्तु हुआ बाराबर वही कदम
 रहा, "नहीं नहीं यह बैरवा है। बैरवा !! बैरवा !!!"

इस गड़बड़ काबडने बाँग के सिर पर एक और सुखीयत का बासा
 बाज दिया। वह बाप के साथ तो डौट-डपट कर नहीं सकता था और
 उपर सुन्दरी की नागाजगी से भी डरता था। घर में इस बात को देखकर
 एक कड़ाई-झगड़ा शुरू हो गया था और बाँग परेशान हो उठा था।

एक दिन जैसे ही उसने सुन्दरी के कमरे में तोर गुच्छ मुना और
 बूँसा हो ही थी और बरूबड़ करती बची जा रही थी। बात यह थी
 कि उसके दोबों सेरे बरूब घपनी गूनी बहन को साथ लेकर लालाच ने
 पास पहुँच गये थे और मर्जखियों को दल दल कर लेक कर रहे थे। य-
 सेरे बन्धे लेकते २ उस दूसरे शौंगल में पहुँच हा बापा करन थे। वे
 बरूब लकू में दिन भर रहते, वे भी इस सुन्दरी के जिक्र उल्लूक तो रहन
 किन्तु दोनों घामस में ही बलबीन करण हुए हो जल थे बवोकि वह
 समझन थे कि इस सुन्दरी को उनका बाप ने क्यों रग दोहा है। इन बनों

को सिकावने बोंगलु ग से मुम्दरी ने की और साथ ही उसकी हँसी उगल हुए यह भी कहा— 'देखो यह बच्चे भी अपने बाप की तरह कितने लजबुरत हैं !'

बाँग ने बच्चों को डराने के लिये मना कर दिया। किन्तु इस गूगी छद्मकी ने जिसके प्रति बाँग का स्नेह अधिक था मुम्दरी के रेतमी कपड़े और धामूपनों को देख कर फिर और मन्थना शुरू कर दिया। मुम्दरी बिड़ गये और चिस्झाने लगी— 'बड़ि यह गूगी छद्मकी भरे कमरे में चायेगी तो मैं यहाँ कदापि न रहूँगी। मुझे यह पता नहीं था कि बड़ी मूँचों से पाखा पड़ेगा तथा तुम्हारे बच्चे इतने सीधे और बुद्धि होते।

बाँग अपने बच्चों को प्यार करता था, इनके प्रति मुम्दरी की बाँगे गुनकर डसका हवा हुआ आघ डबक डडा और वह बोला, 'अपने बच्चों के लिये यह सब मुमना मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। तुम्हारे पेट से तो बच्चे भी पैदा नहीं होते।' इतना कह कर उसके बच्चों से कहा, 'देखो तुम इधर न आना करो यह औरत तुम्हें नहीं चाहती, यदि तुम्हें चाहती तो तुम्हारा बाप को भी चाहती।' बाँग ने प्रेम से अपनी गूगी छद्मकी का गोद में डबा लिया और उसे लेकर वहाँ से चला दिया।

बाँग को भी बहुत प्रेम था तथा था कि इस रयेक औरत की इतनी हिम्मत कि उसके बच्चों से कहा सुनी करे और बहमी गूले बाकक स। डमरा रिश कुछ कहा हो गया और वह दो तीन दिव तक मुम्दरी के कमर में भँका भी नहीं। बच्चों के साथ ही रोझता रहा।

दो तीन दिव बाद जब बाँग मुम्दरा के कमर में गया तो फिर हमने बापी को बड़ा बाप सीधे हुए बोला। मुम्दरी ने इसी हम ने के अन्दाज से प्यार दिखाते व नारक दिया और बापी से बोली कि तम

बराबर ही एक और शौगन ब कमरे बन गये हैं। बाँग ने भी इसका कोई मित्र उससे नहीं किया था। जिहावा वह बुझा अब दरवाजे का पर्दा उठा कर शम्बर शौगन में निकला तो वसन्त देखा कि बाँग उस सुन्दरी का बाग में बिये हुए सदन के ताजाव की मर्दानियों को देखता हुआ रंगे बिरों कर रहा है। वह नहीं ने बिछा उठा — “बर मैं बेरवा बहों से बा गई !” बाँग हड़बड़ा कर बाप के पास आ गया और वह सुन्दरी भी एक कोठ में ब्रिय गई। किन्तु बुझा बिचकाता ही रहा “मिने एक की ही रली, मेरे बाप ने भी एक ही की रली और हम दोनों ने बराबर ऐठी का ही काम किया। यह बेरवा यहाँ कैसे आगई ?” उस बूढ़े को बड़ा क्रोध आ रहा था वह चाहता था कि उस सुन्दरी के सामने जाकर बड़कारे “तुम बेरवा हो। और उसके सामने पूछे। बाँग ने बाप को समझने की चेष्टा की “यह बेरवा नहीं मेरी दुसरी की है” किन्तु बुझा बराबर यही कहता रहा “नहीं नहीं, यह बेरवा है। बेरवा ! बेरवा !”

इस गड़बड़ काबडने बाँग के सिर पर एक और सुमीचत का बोझ डाल दिया। वह बाप के साथ तो बौट-उपट कर नहीं सकता था और उबर सुन्दरी की लाराबगी से भी डरता था। घर में इस बात को लेकर एक बड़ाई—झगड़ा छूट हो गया था और बाँग परेशान हो उठा था।

एक दिन ऐसे ही उसने सुन्दरी के कमरे में तोर कुछ मुना और बूझा हो ही थी और बकबक करती बकी का रही थी। पाठ वह कि उसके दोबों छोटे बच्चे अपनी गूनी बदन को साथ लेकर लजाव पास पहुँच गये थे और मर्दानियों को दल दल कर लेब कर रहे थे। बड़े बच्चे लेबते थे उन दूसरे शौगन में पहुँच ही जाया करते थे। वह बकबक लकू में दिख मर रहते, वे भी इस सुन्दरी के ब्रिय जानुक तो रहते किन्तु दोनों आगम में ही बातचीत करके चुप हो जात थे क्योंकि वह समझन था कि इस सुन्दरी को उनसे बाप के बचो राय दीया है। इन बचों

को शिकायतें बॉगन्तु ग से सुन्दरी ने कीं और साथ ही उसकी हँसी उगल हुए वह भी कहा— “देखो वह बच्चे भी अपने बाप की तरह बिल्ले लूबसूरत हैं !”

बॉग ने बच्चों को डपट आने के किये मना कर दिया । किन्तु हम गूगी जबकी ने जिसके प्रति बॉग का स्नेह अधिक था, सुन्दरी के रसमी कपड़े और घामूयनों की देख कर फिर शोर मचाना शुरू कर दिया । सुन्दरी चिड़ गई और चिक्काते लगी “वह वह गूगी जबकी मर कमरे में आयेगी तो मैं यहाँ कदापि न रहूँगी । मुझे वह पता नहीं था कि यहाँ मूकों से पक्का पड़ना तथा तुम्हारे बच्चे इतने भीड़े और बुराब होंगे ।

बॉग अपने बच्चों को प्यार करता था, इन्त प्रति सुन्दरी की बातें सुनकर उसका तथा हुआ क्रोध उबल उठा और वह बोला “अपने बच्चों के लिए वह सब सुनना मैं बरहमत्त नहीं कर सकता । तुम्हारे पैर तो बच्चे भी पैदा नहीं होते ।” इतना कह कर उसने बच्चों से कहा “इसो तुम दूध न आवा करो, वह औरत तुम्हें नहीं चाहती, यदि तुम्हें लगी तो तुम्हारे बाप को भी चाहनी ।” बॉग ने प्रेम से अपनी गूगी जबकी को गोद में डल लिया और उसे लेकर वहाँ से चक दिया ।

बॉग को भी बहुत काप था यथा ना कि इस रोज़ेब औरत की लगी दिमाक कि उसके बच्चों से कहा सुनी करे और वहभी गूगी माछक ।। इसका रिक्त कुछ कहा हो गया और वह दो तीन दिन तक सुन्दरी । कमर में बँकर भी नहीं । बच्चों के साथ ही रोक्ता रहा ।

दो तीन दिन बाद जब बॉग सुन्दरी के कमरे में गया तो फिर अपने बाकी को बड़ी आवाज कीत हुए लगा । सुन्दरी ने उसी हम नये क्षण से प्यार दिक्कते का नाटक किया और बाकी से बाकी कि तुम शायी मर बिचलम का गये हैं । मुझे इसकी सुरी सबसे बहिले करनी है ।

बराबर ही एक ओर घोंगल व कमरे बन गये हैं। घोंगल में भी इतना कोयला जिक उससे नहीं किया था। बिहाना वह बड़ा बस दरवाजे का पर्दा उठा कर अन्दर घोंगल में निकला तो उसने देखा कि घोंगल उस सुन्दरी को बाथ में बिस् बिस् सहन के तावाच की मछलियों को देखता हुआ रंगरे बिर्बा कर रहा है। वह वहीं से बिहाना उठा — “पर मैं बेरपा नहीं से का गई ?” घोंगल इधर-उधर कर बाथ के पास का गया और वह सुन्दरी भी एक ओर में बिस् गई। किन्तु बड़ा बिस्काता ही रहा “मैंने एक भी ही नहीं, मेरे बाप ने भी एक ही भी नहीं और हम दोनों ने बराबर रोखी का ही काम किया। यह बेरपा नहीं कैसे कायदे ?” उस बड़े को बड़ा खोश था रहा था वह चाहता था कि उस सुन्दरी के सामने जाकर बख्खरे “तुम बेरपा हो ?” और उसके सामने पूछे। घोंगल में बाथ को समझने की चेष्टा की “यह बेरपा नहीं मेरी दूसरी भी है” किन्तु बड़ा बराबर यही कहता रहा “नहीं नहीं यह बेरपा है। बेरपा !! बेरपा !!”

इस गश्पक काबजने घोंगल के सिर पर एक और सुमीकत का बोका बांध दिया। वह बाथ के साथ तो बॉट-बॉट कर नहीं सकता था और उधर सुन्दरी को काबाजी से भी डरता था। पर मैं इस बात को देखकर कुछ बड़ाई—अपका कुछ हो गया था और घोंगल परेलाग हो गया था।

एक दिन ऐसे ही उसने सुन्दरी के कमरे में शोर मचा मुना और वह बीबा हुआ नहीं पहुँचा तो देखा कि इसकी प्रेक्षणी खोप से बाथ बबूबा हा ही भी और बड़बड़ करती नहीं का रही थी। बाथ वह भी कि उसने दोनों छोटे बच्चे अपनी गूनी बदन को साथ लेकर अबाथ के पास पहुँच गये थे और मछलियों को एक दृष्ट कर लख कूट रहे थे। वह ऐसे बच्चे लेकत २ उस कमरे घोंगल में पहुँच ही जाता करता थे। वह कहके रकूब में बिस् मर रहने, वे भी इस सुन्दरी के बिस्के डाकु तो रहने किन्तु दोनों बाथ में ही बल-बीत बरक सुन हो जात थे क्योंकि यह समझने थे कि इस सुन्दरी को उनके बाथ में क्यों रख छोड़ा है। इन बच्चों

बाँवसुद्ध में खेतों पर फिर मेहनत शुरू कर दी उसने स्वयं हल चलाया और जमीन से जब कभी व मुकायम मिट्टी निकली तो बहुत प्रसन्न हुआ। कभी वह स्वयं काम करता कभी मजदूरों से काम करता। स्वयं काम करने की वैसे कोई धातवरकड़ता न थी किन्तु उसे मजा आता था। उसके शरीर पर मिट्टी उड़ख उड़ख कर छा जाती तो उसे छगता मानो किताबो धोखे हकका हो गया हो। कभी मेहनत से थक जाता तो प्रायः वहीं बैठ जाता।

थक कर चार एक दिन शाम को जब वह घर गया तो सीपा सुन्दरी के कमरे में पहुँच गया। उसने शरीर को मिट्टी से मना भस्म वह सुन्दरी बेराम होकर बाँव की ओत देखती रह गई किन्तु वह मुग्धताय ही रहा। अपने मिट्टी से छप पप हाथों से अपने सुन्दरी को पकड़कर अपनी ओर खींच लिया और बोले जाग—“अब तुम सुन्दरी पति रिमान है और तुम किसान की स्त्री हो।

“तुम चाहे कुछ यमो में तो किसान की बीबी नहीं हूँ” सुन्दरी अपनी ही भावनाओं में ओत प्राप्त बोली। बाँव हँसता हुआ वहाँ से चला गया। उसने जाकर लाना लाया और सोने से पूरा अभिरक्षा से स्नान किया। कहते समय भी वह मुस्कराता जाता था क्योंकि अब वह किसी स्त्री से मिलने के लिए नहीं कहा रहा था अब वह स्वतंत्र था। बाँव को लग्न रीति वह काफी दिनों से अपने खेतों से दूर रहा है और

अधी के लड़े जाने के बाद उसने बाँग को इतने तरह से मचाया किन्तु बाँग ने उसमें सच्चे प्रेम की झलक नहीं पाई।

धीरे धीरे गर्मी के दिन भी बीत गये। पलकझीब धातुपत नीला होने लगा। शीतल बालु के झोंके चलने लगे और बसन्त का काम मच हुआ। बहुत बरबले से मानो बाँग एक गहरो नींद से जाग गया। हमने घर के दरवाजे से छतों की ओर देखा। जमीन का पानी सूख चुका था और सूर्य के प्रकाश से जमीन चमकना लगी थी। बाँग की अंतरात्मा प्रसन्न हो उठी प्रेम-किप्या से वह झपकायने लगा। उसने अपना गन्ध बढ़ा दिया। मजबूती के आगे झुक कर झेंक दिये। पमासा पुरानों तक मोड़ किया और बसुन्त होकर जोर से कहने लगा “दख क्यों है ? रोहू बोले के लिये दागा बिबर है ? अच्छा, बिग—मेरे दोस्त अच्छे—प्राग्मिषों को बुझाया—मच खेत पर चलेंगे।”



: २२ :

बौंगलुङ्ग न ठेलों पर फिर मेहनत शुरू कर दी उसने स्वयं इख चखाया और जमीन से जब काबी व मुखापम मिट्टी निकली तो बहुत प्रसन्न हुआ। कमी वह स्वयं काम करता कमी भक्त्यों से काम करता। स्वयं काम करने की वस्तु कोई आवश्यकता न थी किंतु उसे मजा आता था। उसके शरीर पर मिट्टी उड़ख उड़ख कर ला जाती तो उसे लगता मानो मिना बोझ हट्य हो गया हो। कमी मेहनत से थक जाता तो प्रायः वहीं सोट जाता।

थक कर पूर एक दिन शाम को जब वह घर गया तो सीधा सुन्दरी के कमरे में पहुँच गया। उसके शरीर को मिट्टी स मजा द्य वह सुन्दरी डेरान हाकर बौंग की ओर देखती रह गई किन्तु वह मुस्कराता ही रहा। अपने मिट्टी से खब पय हाथों से उसने सुन्दरी को पकड़कर अपनी ओर खींच लिया और कहने लगा— पय द्यो गुम्हारा पति मिना है और तुम बिसाल की खी हा।

‘तुम पटे कुल बनो मैं तो किमान की बीबी नहीं हूँ’ सुन्दरी अपनी ही भावनाओं में खोत मोत बसती। बौंग हँसता हुआ वहाँ स चला गया। उसने जल्द रातना कपड़ा और साने से पूर धुँपसा स गाल किया। गहने समय भी वह मुस्कराता जाता था क्योंकि जब वह किसी स्त्री से मिलने के लिए नहीं गया रहा था जब वह स्वतंत्र था। बौंग को खगा गीसे पद काबी दिनों से अपने बेलों स बूर रहा है और

जब जमीन उसे पुच्छर २ कर चुका रही है । इतने दिनों अब तक वह प्रेम वासना से खिन्न रहा बसक्य शरीर पीका पड़ गया था, जब शरीर में फिर जान आ रही थी ।

दोपहर व शाम की वह घर आत्य और भोजन का बनाया हुआ भोजन बड़े प्रेम से खाता-पूँही, अथवा प्याज की रोस्टियाँ । सुन्दरी को जब प्याज की दू धाती और वह नाक पर क्माक रूप होती तो बौंग केवळ हँस पड़ता । जब उसे किता को फिन्न नहीं थी । उसके हृदय में प्रेम वासना छुल हो गई थी और शरीर फिर मजबूत हो चला था । जब जमी थी उसे भोग करने की इच्छा होती सुन्दरी के पाम जला और शीत हो जाता । इस प्रकार घर की दोनों स्त्रियों का स्वभाव अलग अलग बन चुका था । सुन्दरी तो एक सिद्धीमा मात्र थी जिसने साव वह खैर दिखा करण । जोखान घर के कामों में लगी रहती थी-वह बरबो की माँ थी । पति स्वसुर व बरबो को बाना फिजली और इसी में प्रसन्न रहती । बौंग पूर्ववत् संतुष्ट रहता । उसके बिन् नहीं गर्व की बात थी कि शौन बाबे प्राचा इस सुन्दरी व बौंग की चर्चा करने रहता थे । बौंग की प्रशंसा करने में बसक्य बाबा सर्वप्रथम था वह उनकी सुन्दरी के रहन सहन के गीत गता फिरता और कहता कि मेरी सुन्दरी को उसका भरीजा रहे हुए है । वह बौंग की मुसामा में ही खीब रहता और कहता कि 'यह मेरा भरीजा है इसके पाम बहुत पन है, बड़ा चारमी है इसके बरबे रईमबादे कदबाबो और कन्टे सारी मिन्नता कोई काम नहीं करवा पड़ेगा ।'

गर्व बाबू भी बौंग को चार की रति से देखने लगे थे । वे लोग व्याज पर बौंग से स्वयं खेले करते । जमी जमी अपन घर गृहस्थी की समस्याओं का हल भी बौंग से पूछते, जबकी बहिष-भेदियों की शारी के बिन् भी बौंग से सहाइ केते, यहाँ तक कि जब जब लोगों में चारम में जमीन को खेदर कोष्ट अगरा भी हद पदा होना तो बौंग से ही

कैसका कराल धीर को कुछ भी बाँग करता, उसी को मात्र खेत में ।

अहाँ पहिले बाँग अपनी प्रेम-कीड़ाओं में ही मग्न रहा करता था, उसी बाँग के लिए जब बहुत से काम रहे आते । जब की फसल में गर्ई की उपर बहुत दुरे थी और बाँग ने सारा मात्र रोके रखा था । मात्र वह जाने पर वह मात्र लेकर मंडी में जब बेचने चला तो अपने पके लकड़ों को भी साथ ले गया । उस लकड़े की बिकानत बड़ी सुम्बर थी और बाँग को इस बात का गम था कि जब पहिले की माँति उसे अगल मिलने के लिए रसीद करने के लिए किसी सुम्बर की सुरामत करने की आवश्यकता नहीं रह गई थी । इस बात मन्दी आकर उसने अपने लकड़े से ही सुम्बर कराए और बड़ा प्रसन्न हुआ ।

दोनों बात केने जब घर लौट रहे थे तो बाँग ने सोचा कि लकड़ा था बड़ा बापक हो गया है । जब उसे बात का अगला चर्चा पूरा करना चाहिये । अतः उसकी शादी के लिये कोई योग्य लकड़ी किसी संरक्ष पराने से हुईनी होगी । घर पहुँच कर रात का आने क बाद अपने चिग से सलाह की । चिग बाँग का बड़ा भादुर करता था यहाँ तक कि उसके सामने लड़ा ही रहता । बाँग को भी चिग पर पूरा विश्वास था । बाँग ने जब लकड़ों की बहुत क लिए अपने विचार प्रकट किये तो चिग ने बड़े लक्ष्य स कहा—“बढ़ि मेरी लकड़ी होती तो उसे तुम मुक्त में ही ले खेत धीर में तुम्हारा बड़ा कृतज्ञ होता । मगर पता नहीं वह कहाँ होगी ? शायद मर भी गई हो !

बाँग ने चिग की मात्राओं का ध्यान किया और उसे धम्मकाई दिया । साथ ही किसी योग्य लकड़ों की खोज से जाने रहने का आदेश भी दिया । बाँग ने यह इरादा धीर धिरी पर अहिर नहीं होने दिया । बिलपतया यह बाणी को अपने इस इरादे को कानों कान लभर भी नहीं देना चाहता था । वह स्वयं उपर-उपर किसी लकड़ों की खोज में जा रहा ।

अब मेरा कहना है कि यह सब बेकार है । इससे कुछ कोई बौद्धि खरीद लेना हील न होगा, बल्कि हील ही में उसका विवाह कर दूँगा । यह काम करना ही होगा । '

इतना कह बौध बहाँ से उठ गया और मुम्बरी के घर की ओर चला गया ।



सुन्दरी व अथ बॉम को परेशानी से दूँका तो वह समझ गई कि वह कोई धीर बात सोच रहा है उसके सौन्दर्य पर उसका ध्यान नहीं है जो वह बोली "यदि मैं जानती कि साब्र भर में ही तुम्हारा प्रेम थीका पर आत्मता तो मैं बहाँ कभी भी न जाती।" इतना कह कर उसमें एक क्षण से मुँह केर किया धीर कल्पियों से अपने कानी। बॉम हँस पड़ा उसे अपनी ओर खींचत हुए वह उसके कोमल हाथों को अपने मुँह के पास ले गया और बोला— "किमी के कोष्ठ में हीरा जवा हो तो उसका इतना ज्यादा मनुष्य को नहीं होता किन्तु यदि हीरा जा जाय तो हम तुम्हारा को सहने की शक्ति मनुष्य में नहीं होती। आश्चर्य मुझे अपने बड़े खूब की ओर से बिना रहती है और चाहता है कि उसका बिबाह कर हूँ, किन्तु बहाँ खूबकी तजारा कर" यह समय में नहीं आया। मैं यह नहीं चाहता कि गँव की ही किमी खूबकी से शारी कर ही थाप। शहर में किमी को जानता नहीं। इसके प्रतिनिधि किमी दृष्टान्त व चरित्र में पढ़ा नहीं चाहता क्योंकि वह ज्ञान ज्ञाना ज्ञाना कर किमी सुखी संगीत वा भीड़ी मूल्य की खूबकी का बिबाह भी रचा दते हैं।

बॉम का बड़ा खूबका ज्ञान हो गया था, उसके शरीर का गहन भी अच्छा वा धीर वह सुन्दर लगता था। यह सुन्दरी थी उसकी ओर आकर्षित हो गई थी। अपने भाव बिपाने हुए वह बोली— "जब मैं

१८८

शहर में थी तो एक जादूमी मेरे पास बराबर आया जाता था। वह
अक्सर अपनी जादू की क्षमता दिखा करता था। कहता था कि वह मेरे
समान ही सुन्दर है बल्कि मेरे जैसे ही खलती है और इसीलिए वह
मुझसे बेटी का सा प्यार करता था। ऐसे ठसका घेम एक दूसरी
थी से था।

उसने कहा, “वह किस क्रिम का जादूमी था?”

उसने भी जवाब नहीं दिया।

बौद्ध ग ने पूछा, "बहु किस किस का भादमी था?"

हम लोगों से अच्छी तरह केत जाता था और हम सभी उसे पसन्द करते थे। मानस होता था—किसी शाही खानदान का शाहजादा हो।'

बोका— 'उसके पास अब इतना पड़ा था तो कीम सा व्यवसाय था
उम्का ।' 'तब तो मैं यही जानती पर शायद थोड़े में ही था क्या सोचता

बोका— 'उसके पास बच इतना क्या था' तो मैंने
 जमका । "बह तो मैं यही जानती पर शायद बह मंडी का बड़ा सौदागर
 था । मैं कुल्ह से पहले डेरी हूँ बह तो सब रुपये वैसे बाघों को जानती
 दे ।" इतना कह कर मुन्गरी न ठाकी बजाई थीर कुल्ह बहाँ तुल्य
 उपस्थित हो गई । मुन्गरी से उसने पूछा— "बह बीन बड़ा घाहमी था
 जो मेरे पास तो जाता था लेकिन मुम्स डेरी की तरह चार करता था ।"
 बह बोली— "मैं उस सब जानती
 था बह घनाइ का बड़ा व्यापारी
 होता था ।"

पस्थित हो गई। सुन्दरी से इसमें पूरा-
जो मरे पास तो जाता था लेकिन मुझसे डेरी की तरह प्यार करता
था। मुझसे मतलब समझ गई और बोली—“मैं इस बूढ़ आदमी
हूँ। इसका नाम कियू दी तो था। वह अपना नाम दबा गया था।
था। कियू नाम कियू दी तो था। वह हमेशा मुझे बुझा न बुझा देता ही
रहता था।”

“असली बुद्धिमन्त्री कहाँ है !” बंमि ने कुछ खिचा यद्यपि वह समझ रहा था कि इन चीरतों की बलों पर क्या पकौल किया जाय ।

“असली बुद्धिमान
 हा था कि इन शीरतों की बलों पर क्या पड़ता है।
 “एयर क बुक के पास” बुक के कहा।
 पाँच को बुक सेन मिखा यह सोचा—“वही तो मैं भी बना
 देखने जाया क्या है।”

जब कोई काम करने को होता था, तब कुम्हूँ औरतें तब होती थी कि क्या पैटा जा सकता है। वह तुरन्त ही बोली—“मैं चापका काम करने को तैयार हूँ।

बौंगलु ग इस संशय हो में था कि कुम्हूँ कुछ काम करना भी सकती या नहीं। किंतु सुन्दरी ने जोर दते हुए कहा—“कुम्हूँ साफ़ “झिपू” से सब कुछ साफ़ कर आती। वह उसे सब जानती है। अगर काम कम आता तो इसे ही कुछ दे दता।

बौंग कोई निरिपत उत्तर नहीं देना चाहता था। उसने कहा कि पाँच दिन अच्छी तरह सोच विचार करने के बाद हो वह कुम्हूँ को काम कर देने के लिए तैयार सकता है। चाकिर उसके खर्च की आगे की जिदगी की बात है। दोनों औरतें तो अपना पेटने के लिए बैठा थी किन्तु फिर भी बौंग ने यह दिया—“उहरो, सोच लो फिर बताऊँगा।”

बौंग इसी सोच विचार में कई दिन गुजार दता कि एक और परता न हो गई होती। दूसरे दिन रात ही बौंग ने बड़े खर्च को बाजार में लुप्तत हुए गिरत मुना। पाकर दता तो उसका चेहरा धात हो रहा था। सोम उत्तरी आ रही थी और पैर खराब हो रहा था। खर्च ने उसी समय उसकी की और वह देहोरी में गिर पड़ा। बौंग ने जो गेहूँ की कड़ाच तैयार की थी उसका तो वह आती था ही कम दिन बोई और भी अधिक देख शराब पी हुई मामूली दली थी। बौंग खर्च का यह दाख देखकर पचरा उठा और उसने जोर से आवाज कर भोखान को बुलाया। फिर दाखों ने खर्च का उदाहरण पर बिना दिया। खर्च बोली ही देर में सो गया।

तब बौंग खर्चों के कमरे में गया। छोटा खर्च रसूख जले ल जिपू किताबों का भरता तैयार कर रहा था। बौंग ने कमसे पूछा, “क्या तुम्हारा भाई रात को यहीं तुम्हारे साथ सोता था।

छोटे खर्च ने कहा— ‘नहीं तो। खर्च न गवा था। उत

सहमे हुए बककर बोंग ने डॉस्ट हुए पूछा— 'तो कहीं गया था वह ?'

छड़के ने कोई उत्तर नहीं दिया । बोंग के डॉस्टे पर बोझा— 'मर्दे ने कपड़े की मना कर दिया है । यदि बता दूँगा तो वह मुझे मारेगा नहीं तो दैसे दगा ।'

बोंग ने उसे जार कर बोला मर्दा घोर कहा— "बलाभा, नहीं तो मारत १ दम दिखाव दूँगा ।" बककर बर गया और बोझ पड़ा— "मर्दे तो बराबर तीन रात से कहीं जा रहा है, वह क्या करता है वह मैं नहीं जानता । आपके बाबा के छड़के के साथ जाया है ।"

बोंग ने छड़के की गर्दन से हाथ करिब छिवा और सीधा बाबा के कमरे में जा पहुँचा । जाकर उसने देखा कि उस छड़के का चेहरा भी मरे से साज हो रहा है और मुँह से कराव की बूँद आ रही है । बोंग उस वर बरस पड़ा और बोझा— 'बलाभा, तुम मरे छड़के को कहीं ले जाते हो ?'

वह बाबा, 'तुम्हारे छड़के की चीज से आपका वह ठा स्वर्ग जा सकता है ।'

बोंग ने फिर अपना धरम दाहराया इस पर छड़का बोझा—

"वह आप की दूकान पर जाया है उस औरत के पस को कमी दोंग के घर में रहा भरती थी ।

वह मुनकर बोंगमुख नील उठा । वह औरत तो बाबाद की वहाँ सभी छोट छोट छावनी जात रहते थे और अब तो वह जवान भी नहीं रही थी । वह सीधा दरवाजे के बाहर निकला और लोगों का साधना हुआ बल पड़ा । लोगों की जस्तक कैसी उठ रही है, इस ओर उसने कोई ध्यान नहीं दिया । वह सीधा उस जगह पर पहुँचा और बिना कुछ देना भावों बिखरा— "वह बोंग—बाबाद औरत फिर है ?" वहाँ एक औरत सूख पर बैठी हुई एक बड़ा जूता सीने में ध्यस्त थी वह बोली— 'मममन अब जाओ, मुझे शल भर काम करना होगा है अब मैं बक

पुकी हूँ। बाँग ने सोर मन्थना शुरू कर दिया। इतने में चम्बर से आवाज आई—“कीम है ?”

बाँग ने देखा कि भीड़ी सी शक्क की एक घोरत कमरे में से आई। उसके मुँह पर पाउचर पुता हुआ था और चेहरे पर रक्त पुत रहा था। शक्क से वह बकी हुई दिखाई देती थी। चौकल हुए उसने कहा—
“इस बज में कुछ नहीं कह सकती, बात करनी है तो रात को आना। अब तो मैं सोने जाती हूँ।”

बाँग ने कहा— तुम्हें अपना कोई काम नहीं और न तुम्हें तुम जैसी घोरत की जरूरत हो है। तुम्हें अपने खर्चों के लिए कुछ पढ़ना है।”

घोरत ने पूछा— “क्या बात पढ़नी है ?”

बाँग की आवाज सारा डडी और वह बोला—“क्या वह रात को यहाँ आना था ?

‘रात को कई खर्चों यहाँ थे ? तुम्हारा खर्च कीम सा था, तुम्हें पता नहीं।’”

बाँग ने फिर गिरगिराते हुए कहा—“दुखो जरा ध्यान करो, वह खम्बे कद का खर्चका है। मैं तो कभी स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि वह अभी से किसी घोरत के पास जान की हिम्मत भी कर सकेगा।”

घोरत ने बाद करने का बहाना करते हुए कहा—“क्या मैं दोनों बनें थे, एक को न क तो ऊपर को डडी हुई थी जो सब बातों की जान करती रखता था और दूसरा एक खर्चका भी खम्बे कद का भी था।”

हाँ, वही तो मेरा खर्चका है। बाँग ने कहा।

तो फिर क्या ?” वह घोरत बोली।

बाँग ने कहा—

“ठीक है। वह खर्चका अब यदि आए तो उसे किसी न किसी बहाने डरका देना। जिसकी बार तुम उसे वापस करागी मैं तुम्हें दो चौकी के दिरके कीम के रूप में दे दूँगा।”

भीरत मुस्करा उठी। बोली—“मुझे सी इन इसके पुष्पक छड़कों से कोई विरोध बाधम्ब नहीं मिलता। बिना किसी काम के धर्म चोरी हाथ लगे ना कोई दुर्ग नहीं। मैं जरूर ही ऐसा करूँगी।

बौंगलुङ यह बात परती करके सीधा घर का ओर चला गया। उस भीरत का भाव करते २ वह रास्ते भर झूकता चला जाता। घर पहुँच कर उसने मुनकू का मुँहा कर कहा—

“तुमझ मा बात कही भी बात है न। तुम उस सनातन के सौहम्य के पास जाओ रित्त सब करने का बात करो। इहेन बाध्या जाता बाधिर, किन्तु छड़की फलर मुनासिब समझो तो इहेन की भी कोई खर्त न होनी।

इतना कहकर वह अपने छड़के के पास गया। वह सा रहा था। उस दृश कर बौंग सोचने लगत—कितना सुन्दर छड़का है, मगर इसकी क्या लाजत हो गई है। इतने में ओकास भी नहीं पहुँच गई थीर लक्ष्म के पसीने को सिरके न पावी स साफ कमर लगी। इतने पर भी छड़का आता नहीं। बौंग ये छड़के का वैधवा थीर मुनासिब न समझ थीर नहीं से बड़ गया। अम्बर ही अम्बर उसे कहा गुस्सा आ रहा था, वह सीधा बाबा के पास गया और बोला—“मर घर में सौन पल रहे हैं जा मुझे दी बस रहे हैं।

बाबा मेज पर बैठ नारता उठा रहा था, मुन कर बोला—

“कहा बात है।

बौंग ने सात हिस्सा वह सुनाया, कैदिय बाबा न हँसते हुए उत्तर दिया—कहा तुम किसी छड़क की उम्मी हुई लक्ष्मी को राक लक्ष्म है।

बौंग ने जब बाबा को हँसत हुए देखा तो उस बाबा के क्रिय बिबुधे सार बताने चालू आ गत। उन बर्तावों के बावजूद भी उसने इन बोलों को अपने घर में गलत ही, लाने बीने का माता आताम दिया

मा। बाप्री घब भी कीमती लगना था ही रही थी। इतने पर भी इसी बाप का बड़का घब इस बड़के को बर्बाद करने पर तुला हुआ था।

बॉग ने तैरा में आकर आगिर कद दिया— 'तुम सब इसी समय मेरे घर से बाहर चले जाओ। तुम्हें वहाँ रखने से अच्छा तो बही होगा कि घर को जला दिया जाए।

किंतु बाप बोल हुआ पाता ही रहा। बॉग का धम पीक रहा था अब इसने पूछा कि बाप इस से मस भी नहीं होना तो उसे हाथ पकड़ कर उठाने लगा। इस पर बाप ने कहा, 'यदि हिम्मत हो तो निकल दो।' बॉग 'बह' 'बह' 'बह' 'बह' कहने लगा। बाप ने कद के परत लपेटे तो घरतर में बाप कपड़ा पीर लकड़ी दाढ़ी दिखाई दी। बॉग यह सब देखकर सहम गया लूज पानी हो गया। यह तो डकुधों का सा रूप रहा था! वह पुपपाव वहाँ से हट गया, घाते-घाते उसने बाप का क ईसब को आत्मात्र फिर सुनी।

बॉग ने अपने आपको परोपेश में बैठा हुआ पाया। बाप अपने परिवार सहित उसी प्रकार रहता चला गया। यह पाप तो ठीक थी कि अब धीरे धीरे गरीबी से लंग में तो बॉग आनन्द से रह रहा था। इधर उधर थोरी बकैती के समाचार आते रहते थे लेकिन बॉग का घर सही सलामत था। बॉग ने इस ही अपनी लुगाकस्मती समझी घटपट उसने बाप से कुछ भी बढ़ना सुनना बन्द कर दिया। बाप स भी मुज-बैब से रहन के शिथ बह दिया। बाप का बड़का को पुछा कर भी कुछ रखने दिव और कह दिया कि धुल से रहो। किंतु साथ ही साथ घरने सड़के पर मित्रावो रखने लगा। रात को बड़का बड़ी बाहर न जाय, हम बहा पर भी इसने निरीय ध्यान रखना शुरू कर दिया।

बॉग अपनी इन्हीं सुमीपवों में बड़ा रहा, काम पर जाने में बसका ओ बरा भी नहीं लगता। कभी सोचता कि पुलिस का मजिस्ट्रेट न सामन बाप का मारा मेर गोज द फिर डर की बजह से नुर हो

औरत मुस्कता उठी। बोली— 'तुम भी इस इसके कुछक कहनों से कोई विशेष आनन्द नहीं मिळता। बिना किसी काम के यदि कोई हाथ करो तो कोई दुर्ग नहीं। मैं जरूर ही ऐसा करूँगी।

वही खुद वह बात पढ़ती करके सीधा घर का आर पछ दिना। उस औरत का नाम भरती २ वह हास्य भर मूकता बना आता। घर पहुँच कर डारल बुल्डू को बुला कर रहा—

“तुमसे जो बात कही थी वाद है न। तुम जब अवसर के सीद्दार के पास जाओ विरता ठग करने की बात करो। इहेन अपना आना पाहिए, किन्तु सबकी अगर मुनासिब समझे तो इहेन भी भी कोई खर्च न होती।”

इतना कहकर वह अपने कहने के बल गया। वह ही रहा था। उस बात को बोल साँचे धात—किता मुन्दर सबका है अगर इसकी क्या दावत हो गई है। इतने में जोखान भी वहीं पहुँच गई थीर सबक के पपीन की सिरके के बावो से साध करने लगी। इतने पर भी सबका जगल नहीं। बोल के सबके को देवना थीर मुनासिब न समझा और वहाँ से हट गया। अन्दर ही अन्दर उसे बड़ा गुस्सा आ रहा था, वह सीधा बाबा के पास गया और बोला— मेर घर में सौँप पक रहे हैं आ मुझे ही बस रहे हैं।”

बाबा मेर पर बैठा मरठा बड़ा रहा था, मुन कर बाबा—

“क्या बात है।”

बोल न सात किस्सा कह सुनाया, लेकिन बाबा न इसत हुए बलर दिया—उता तुम किसी सबक की उमरी हुई बबानी को रस सकल हा।”

बोल के जब बाबा को इसत हुए दूना था उहेन बाबा के किय सिद्धे सारे बगिरे वाद आ गय। उन बगिरे के बावजूद भी उसने इन लोगों को अपने घर में जगल दी, लाने दीने का भारा आराम दिया

या। चाची अब भी कीमती थागा था ही रही थी। इतने पर भी इसी थागा का खर्च अब उस खर्च को बर्बाद करने पर तुला हुआ था।

बॉग ने तैय में आकर धार्मिक कह दिया— 'तुम सब इसी समय मेरे घर से बाहर चले जाओ। तुम्हीं यहाँ रखने से अच्छा तो नहीं होगा कि घर को बर्बाद दिया जाय।'

किंतु चाचा बैठा हुआ काटा ही रहा। बॉग का पूरा खौफ रहा था जब उसने दृष्टि कि चाचा इस से मस भी नहीं होता तो उसे हाथ पकड़ कर उठाने लगा। इस पर चाचा ने कहा, 'मदि हिम्मत हो तो निकल दो। बॉग' यह 'बहु' 'यह' 'बहु' कहने लगा। चाचा ने कोट व बरत खोले तो घस्तर में कापड़ा और बकड़ी वाली दिखाई दी। बॉग यह सब देखकर सहम गया खुन पानी हो गया। यह तो बालुघों का सा रूप रहा था। वह पुनःपुनः वहाँ से हट गया आते-आते उसने पापा के हँसने की आवाज फिर सुनी।

बॉग ने अपने आपको फर्लाके में बँधा हुआ पाया। चाचा अपने परिवार सहित उसी प्रकार रहता चला गया। वह बात तो डीक थी कि जब और लोग गरीबी से लंग ये तो बॉग आत्म से रह रहा था। इधर उधर जोरी ककैतो व समाचार आते रहते थे लेकिन बॉग का घर सही सखामत था। बॉग ने इस ही अपनी सुशिक्षित समझी, अतएव उसने चाचा से कुछ भी बढ़ता सुचना बन्द कर दिया। चाचा स भी सुन-बैत से रहने व किये कह दिया। चाचा के खर्च को बुका कर भी कुछ रुपये दिव और कह दिया कि पैरा से रहो। किंतु साथ ही साथ अपने खर्च पर निगरानी रखने लगा। रात को खर्च कहीं बाहर व जाय हम बला पर भी उसने निरूप प्याज रगमा शुरू कर दिया।

बॉग अपनी दम्ही सुमीपवों में बड़ा रहा कम पर जाने में उसका भी बरा भी नहीं लगता। कभी सोचता कि पुलिस या मजिस्ट्रेट व सामने चाचा का मारा मर्द जोर व फिर घर की बर्बाद से बुर हो

रहता कि कहीं बालुओं का गिराव न पड़ा होकर बसी की जिन्दगी सतप्त न कर दे।

कुनकू बहर अपना काम करके लौटी और कहा कि मामला तो ठग ही है किन्तु जबकी अभी छोटी है और वह सीधेसाध कहता है कि बात पक्की करली जाय, लेकिन बिनाह तीन साज बाद ही हो सकेगा। शौंग ने सोचा कि तीन वर्ष तक इन्होंने की बात भी मुसीबत हो है, इन वर्षों में जबकी बिलकुल ही हान्य से बाहर निकल आयेगा। रात में उसने जोकाब से बातें की और कहा कि सभी वर्षों के बिनाह की बात इन अपने से पहिले ही ठग कर की जायी चाहिये वही तो एक के बाद एक सम्पत्ति ऐसी ही मुसीबतें पैदा करती रहती। अपनी गूँधी जबकी की ओर इशारा करते हुए उसने यह जबरन कहा कि वह जबकी मुझे बरा भी लग नहीं करेगी।

इसके बाद कई दिनों तक वह बराबर अपने कैलों पर चला रहा। काम में व्यस्त रहने से उसकी बर की बिताये भी रही।

एक दिन जब इजिप्त की ओर स बाइक चले दिक्कतें दिने ली गीं बाबे कहने लगे कि वह जबरन ही एक अत्यन्त बिन्द है। तीन ही पता जब गया कि यह बाइक नहीं य बहिन दिक्कत का समूह या जो इजिप्त की ओर से समझा गया था रहा था। शौंग ने भी इस एक की बेजा और सभी दीव बाकों को हान्य आहत से जबरनार रहने की सलाह दी। गीं बाबे बेचारे क्या करते? कुछ ने कहा—ज। भयानक की वही मर्जी है कि इस मूल से मरे तो इस कोस कर ही क्या सकते हैं, जो कुछ आत्म में होगा भुगत्य आया।

किन्हीं भी इस भयानक आपत्ति से बचने के लिये बाजार बाहर भारती माध्य पर चढ़ाने के लिए कुछ फूट न पूव बलिर्पा जाने लगी। बहुत सी किन्हीं के भीति २ के होरने भी लिये।

दिनु दिदिहर्षों का आगमन हुआ हो और ने था पहुँची। रेत-

कबिहान, पेड़ पीधों पर बरती आकाश पतों ओर दिङ्गियों का गई
घोर सपने दिख दृढ़ डटे ।

बौंग में चिता को बुझाया अपने मकदूरों को इकट्ठा किया साथ
ही सारे गंध बाकों की सहायता से काही कसबों में आग काग की ठाँक
आग को चकनों से दिङ्गियों बना आवें । ओलों के घास पत की अमीन
को लोह १ कर पानी की आग जिससे दिङ्गियों को बस जाने के बिने कोई
आग न मिले । दिन रात सारे गंध बाके जगाता मेहनत करते रहे ।
बौंग में सब को इन दिनों वहीं आना मँगाकर बिछाया ।

आग के बुद से आकाश काका हो गया और दिङ्गियों इतर
उपर बिखरने लगी । बाकों दिङ्गियों उध आग में बच गई । धार्मिक
प्रबल सचक हुआ यद्यपि बहुत सी सेतो बरबाद हो गई लेकिन फिर
भी बौंग के कुछ कत बच गए । बौंग को कुछ संतोष हुआ । गंध बाकों
ने भी दिङ्गियों को मून मून कर लूट आया । इन सात आठ दिनों में दिन
रात को यह महमत हुई कससे बौंग को एक प्रकार का चैन ही मिला ।
बह अपनी सती भुमीबलों को भूख गया था । उसने शक्ति से सोचा कि
अनुपम को अपने बुल अपने आप ही देखने दोते हैं । आकाश में बड़ा
है धार कससे कहिखे ही मृग्य को पास होना । किसी प्रकार तीन वर्ष
भी समाप्त हो हो आवेंगी ।

समय आत १ बहने अपनी गैहूँ की कपल कर खी घोर फिर
आग को दिखा । इतने में गर्मी का भीसम फिर आ गया ।

रहण कि कहीं बाहुओं का गिरोह बढ़ा लेकर उसी की किन्दगी ससप्त न कर दे।

कुनकु डबड़ धपका काम करते खौटी खीर कहा कि मामला तो तय ही है किंतु खड़की अभी ज़ोती है खीर वह सीढ़ागर कहता है कि बात पक्की करनी आज लेकिन विवाह तीन साठ बाद ही हो सकेगा। बाँव में सोचा कि तीन वर्ष तक डहरने की बात भी मुसीबत ही है, इन वर्षों में खड़का बिस्कुट ही हाथ से बाहर निकल जायेगा। रात में बड़मे घोबान से बातें कीं और कहा कि सभी वर्षों के विवाह की बात उम्र जाने से पहिले ही तय कर ली जाये चहिये वही तो एक के बाद एक सन्तान ऐसी ही मुसीबतें पैदा करती रहेंगी। अपनी गूँती खड़की की ओर इशारा करते हुए उसने यह आशय कहा कि यह खड़की मुझे बरा भी तंग नहीं करेगी।

इसके बाद कई दिनों तक वह बराबर अपने लेटों पर जाया रहा। काम में व्यस्त रहने से उसकी घर की चिन्ताएँ भी दबी रहीं।

एक दिन जब दक्षिण की ओर से बादल आते दिखाई दिये तो गाँव वाले कहने लगे कि यह आदम ही एक आदम किन्तु है। सीम ही पता चला गया कि यह बादल नहीं व बहिन दिविव १ का दमूँ या को दक्षिण की ओर से डमका चला आ रहा था। बाँव में भी इस दृष्ट को देखा और सभी गाँव वालों को इस आकाश से उबरदार रहने की सलाह दी। गाँव वाले देवारे कहा करते : कुछ में कहा—अ। भागवान की वही मर्जी है कि हम भूल से मरे तो हम कोम कर ही गया सकते हैं, जो कुछ जाम्ब में होगा सुगवा जायगा।

किन्हीं भी इस सबकुल धारणा से बचने के लिये बाजार बाहर धरती माता पर चढ़ाने के किन्तु कुछ पूछ व पूछ बचिर्वा जाने लगीं। बहुत सी किन्हीं में भाँति १ के रोमके भी किय। किन्तु दिविवर्षों का जलामय हुआ ही ओर वे आ पहुँची। लेट

कविदास, पैर पीपों पर, भारती आकरा चलों और सिद्धियों का गई
और सबके रिक्त रहने उठे ।

बोंग में किता को बुझाया अपने मकदूरों को इकट्ठा किया साथ
ही सारे गँव बाकों की सहायता से बाड़ी कमलों में आता बगल ही धर्मिक
आम की कस्यो स सिद्धियों आता बस्यो । खेतों में घास पात की अमीन
को छोड़ १ कर पानी से आत जिससे सिद्धियों को बस जाने के बिचे कोई
अपद न मिले । दिन रात सारे गँव बाड़े बयालार सेहतन बस्ते रहे ।
बोंग ने सब को इस दिनों बाँधी आता मँगकर रिझाया ।

आम के पुत्र से आकरा बाबा हो गया और सिद्धियों इतर
बसा बिचारने लगी । बाकों सिद्धियों अत आम में बस गई । अमीन
मकन सचब हुआ पचयि बहुत सी खेतों बरबाद हो गई लेकिन फिर
भी बोंग के पुत्र खेत बस गए । बोंग को कुछ संतोष हुआ । गँव बाकों
से भी सिद्धियों को मूल मूल कर कर आया । इस बात आम दिनों में दिन
रात जो पह सेहतन हुई बस्ते बोंग को एक मकन का पैर ही मिला ।
बह अपनी सारी सुमोबलों को भूख गया बा । इससे शर्मति से सोचा कि
अनुप्य को अपने पुत्र करने आत ही पैरने होते हैं । आता बगल में बड़ा
है और बस्ते रहने ही अनु को मस हवा । किसी मकन तीन बर
भी समाप्त हो हो जायेंगे ।

समय बात १ इससे अपनी घेई की कमल काट की और फिर
पच को दिया । इतने में गर्मी का मौसम फिर आ गया ।

रहता कि कहीं हाथुओं का गिरोह बढ़ना लेकर उसी की किन्दगी ससप्त
न कर दे।

कुम्हूँ वपर पचवा काम करके खोटी चीर कहा कि मामला तो
बात पक्की करनी जाय, लेकिन बिबाह तीन साल बाद ही हो सकेगा।
बाँग ने सोचा कि तीन वर्ष तक इन्होंने की बात भी मुनीबत ही है, इस
घोखान से बाँग की चीर कहा कि सभी बच्चों के बिबाह की बात इस
आने से पहिले ही तय कर ली जानी चाहिये नहीं तो एक के बाद एक
सम्भाव ऐसी ही मुनीबतें पैदा करती रहेंगी। अपनी गूँगी बचकी
की ओर इरासा करते हुए इसने यह प्रवरण कहा कि यह बचकी मुझे
करा भी तंग नहीं करेगी।

इसके बाद कई दिनों तक यह बराबर अपने सेतों पर जाता रहा।
काम में व्यस्त रहने से इसकी पर की बिठाये भी रही थी।

एक दिन जब दक्षिण की ओर से वाद चलते दिखते दिये तो
गौब बाबू कहने लगे कि यह वाद नहीं ये बहिक दिखित। का रुझा या
पता चले गया कि यह वाद नहीं ये बहिक दिखित। का रुझा या
दक्षिण की ओर से हमका चला आ रहा था। बाँग ने भी इस दृष्टि का
देखा और सभी गौब बाबू को इस वाद से जबरदार रहने की सजा
ही। गौब बाबू बेचारे क्या करते? कुम्हूँ ने कहा—ज। मामला की नहीं
मर्जी है कि हम भूल से मरे तो हम कोस कर ही क्या सकते हैं, जो कुछ
मान्य में दिना भुगतान जायगा।

किन्हीं भी इस मयदूर आपत्ति से बचने के लिये बाजार जाकर
भरती माता पर अपने के किए कुछ पूछ व पूछ बलिषों का लें।
बहुत सी किन्हीं में भीति व क रोडक भी किये।
रिनु दिखितों का जलामन हुआ ही और ने था पहुँची। रेत

जबिहान बेद चौपों पर चरती जाकतु नारों छोरे दिहियों जा गईं
और सबने दिख दइख डटे ।

बोंग ने बिग को कुचापा अपने मजदूरों को इकट्ठा किया साथ
ही सारे गँव बाकों की सहायता से खड़ी फसलों में जाल जाल ही तंत्रिक
जाल को छपरों से दिहियों भाला जालें । खेतों के पास पास की जमीन
को छोड़ २ कर पानी के पास जिससे दिहियों को बस जाने के बिचे कोई
कमल न मिले । दिन रात सारे गोंव बांधे जगतात मेहनत करत रहे ।
बोंग ने सब को इन दिनों बड़ी जाला मँगकर बिचाया ।

जाल के बुने से जाकतु काज्जा हो गया और दिहियों इधर
उधर बिचरने लगीं । बाकों दिहियों उस जाल में जक गईं । धरपर
मजदूर सबल हुआ , पधरि बहुत ही केतो बरबाद हो गईं लेकिन फिर
भी बोंग के कुञ्ज खेत बच गए । बोंग को कुञ्ज संतोष हुआ । गोंव बाकों
के भी दिहियों को मून मून कर लूट लाया । इन सार जाल दिनों में दिन
रात जो वह मेहनत हुई उससे बोंग को एक पटल का बैग ही मिला ।
वह अपनी सारी मुसीबतों को भूल गया था । उसने धीरे से सोचा कि
शुणुप को अपने दुख अपने पास ही लेकने होते हैं । जाला जाल में बड़ा
है धीरे उसल नहिंके ही शुणु को मार देना । किसी प्रकार तीन वर्ष
की बसास हो हो आयेगे ।

समय आते २ उसने अपनी गेहूँ की कमल काट की और फिर
जाल को दिया । इतने में गर्मी का मौसम फिर आ गया ।

बौंगलुङ को बाब रुब घोर से इत्मीयान हो गया था । एक दिन जब वह खेत से वापिस आया तो बड़े ऊढ़े में बसते बहा — “बाब तुम मास्टर की तो बातें कुछ पता नहीं सकते । बातें पढ़ाया है तो घोर कोई प्रबन्ध होता चाहिये ।”

बौंग उस समय गमन पानी से हाथ मुँह धो रहा था बोला —
तो फिर क्या करना है ।”

ऊढ़ ने कुछ निम्नकरते हुए कहा — ‘बलि मुझे क्याना हो है ता दक्षिण प्रदश के किसी स्कूल में जाना पड़ेगा ।”

बौंग ठौंथिया से बाब पोंकने में लग्न रहा । निब मर की मेहनत से उसका शरीर भी थका हुआ था । ऊढ़ के की बात उसी कुछ पीली जगी घोर यह बोला — ‘यह क्या बर्तनीमी है । मैं कदना हूँ तुम नहीं जानाते, नहीं जानोगी । यहाँ के सिप तुम काभी पद तुम्हें हा ।

ऊढ़ का भिन्न में चुपचाप बहकड़ला रहा तो बौंग ने कहा — “यह बहकड़ला क्या हो ? जो कदना है साक २ करो ।

“तो मैं घरपर पड़ने दक्षिण प्रदश में जाऊँगा । घर में बरबों की तरह नहीं रह सकता । हम गौँव में क्या रखा है ? शहरों में सीखने की बहुत सी बातें हैं ।’

बौंग ने पहिले ऊढ़ के की घोर, फिर बाब की घोर दृष्टि । ऊढ़ का निश्चिन्त का पतका गाढ़व पहिले हुए था शरीर में घरचा पाना

नौक्यान जगता था । घोड़ी २ मूँहों की रेलें थी बिच्छू खाई थी । उसके हाथ मातृक एवं मुखापम थे । इसके विपरीत बौंग का चपला शरीर मोटा व मिही से मना हुआ था, मुँहों तक का आँखिया पहिने हुए था एवं शरीर का ठगर का माग मंगा ही था । उस दूर कर कोई यही समझ सकता था कि वह बस छहके का था नहीं बल्कि बौकर होगा । अपने का ऐसी विपरीत स्थिति में पाकर उसे कुछ भ्रमसा था गया और वह चिन्ताकर बोला, अरुणा, जरा खेत पर जाकर अपने बदन में मिट्टी लगा जाओ, कहीं तुम्हें खोग औरत व समझ लें । का कुछ पाले हो उसके छिप कुछ तो रोग पर काम करो ।"

इस समय बौंग बिच्छूक सूझ गया कि उसे इस जड़क की खाई सिखाई पर कभी गर्म भी हुआ था । जड़क वहीं गया हुआ था की धर मन्दर से देव रहा था किन्तु बौंग उस घोर व दम का वहाँ से बच दिया ।

रात का अब वह मुन्दरी के कमरे में गया तो दया बह आराम से खेरी हुई है और कुछ वंका पछ रही है । मुन्दरी के पास जैम और कुछ बहने को न हो तो बोली 'तुम्हारा क्या जड़क बाहर जाने के लिए बेचैन हो रहा है ।"

ता फिर तुम्हें क्या । इस उग्र में बाहर जाने व उमड़ी आदतें और घराब हो जायेंगी ।"

"बही, बही । मुझसे तो कुछ ही कह रही थी । हमला मुन्दर जड़का है वहाँ बेचर रहने से अच्छा होगा कि बाहर न के उसका मन भी बदलेगा ।

बौंग का मन ही मन जड़क पर श्रेय का रहा था वह बोला 'बही बह नहीं जायगा । मैं अपना अपना व्यव में पच नहीं सकता ।" यह सुन कर मुन्दरी ने चाते कोई चर्चा नहीं बचाई पुन होकर बौंग की जाने बबममी तो मुनकी रही ।

इसके बाद कई दिनों तक इस विषय में और कोई बात नहीं हुई। बच्चा भी चुप रहा। एकदम आमा तो बन्द हो ही गया था। वह जब अठारह वर्ष का सुन्दर लीजवान था। बॉग जब घाटा ला हरे कमरे में हो फटा हुआ देखता। बॉग को यह सब देखकर प्रसन्नता होती थीर वह सोचता— 'बह तो बच्चे की सक्क ही थी उसे वह भी पता नहीं कि धाँसिर बह चाहता क्या है। जब तीन वर्ष की ही तो बात है— और यदि कुछ रुपया कर्ब किया जाय तो दो वर्ष बकि एक वर्ष में ही इसका विवाह किया जा सकता है। यदि कमजोर धाँसी बह पाई हुई थीर रुपया मिल गया तो विवाह होते देर न आती।'

बॉगसुत्र इसके बाद बच्चे की बात निरन्तर सूँघ गया। दिङ्गियों ने तुलना तो कर ही दिया था फिर भी उसकी कलक धाँसी बह खड़ी हुई तथा जो रुपया पैसा बच्चे सुन्दरी पर खर्च कर दिया था, बन्द हो गया। कभी कभी उसे मन ही मन यह पसन्द आती हो जाता कि धर्य में ही इसने इतना रुपया अपनी म म बीछाओं में बर्बाद क्यों किया।

फिर भी कभी न वह इसकी सुन्दरता से प्रभावित हो जाता, बल्कि पहिले की भाँति जब इस पर आत्मज्ञ नहीं था। धाँसी ने डीक ही कहा था कि वह धाँसी कम उम्र की नहीं थी जितनी वह समझता था। बसले कोई बच्चा भी नहीं हुआ था, किन्तु इस बात की निरोध चिन्ता बॉग को न थी क्योंकि धोखाब से इसके बेदे-बेदिर्बो थी। वह सुन्दरी को इसकी प्रेम विनसा तुलने का साधन मात्र थी। बहिले से उसका धीरे-धीरे अधिक विचार आता था। तुराक धाँसी मिछती थी कल कुछ करने को था नहीं, बस वह जब मोह मरोह हो गई थी। यदि वह धाँसीकी कही न थी तो पूर्व-विचसित कुछ भी नहीं थी। बल्कि बहानी बह रही थी तो भी तुलना कभी कोलों दूर था।

एक दिन बॉग बेदे-बेदे आमा की बिकी का दिमाक आया था कि धोखाब इसके कमरे में आये। उसने कहा— 'आमाब पहिले से

अधिकांश दुबक हो गई है और उसकी बाँझें गहरे में बुझी जा रही हैं। किसी के चूने पर वह पड़ी कहती थी कि उसके अन्दर जलान इती रहती है। यद्यपि इतर कई वर्षों से उसके संतान होना बन्द हो चुका था लेकिन फिर भी उसका पैर बढ़ा दिखाई देता। दिन भर वह काममें लगी रहती थी। अत्यन्त ही किसी से करती ही नहीं थी। उस दिन भर काम में लगा देकर कम-कमी बाँग कह बैठा था—“तुम खुद काम में क्यों लगी रहती हो। जब मेरे पास इतना रुपया है तो अपने लिए कोई चीज़ भी रख दो। बाँग इतना कह करके ही रह जाता था।

उससे स्वयं नहीं होता कि जहाँ कि लोगों पर काम करने के लिये वह इतने मजदूर रखता फिरता है, तो ११ नीकर घरके लिए भी रखे।

जोखान उससे पास आकर धीरे से बोली—

“मुझे कुछ कहना है।”

“कहो।”

“जब तुम नहीं होते तो बड़ा बड़का मुन्दरी के कमरे में जाता है।”

“वह स्वयं की बातें हैं, ऐसा नहीं हो सकता—” बाँग ने कहा उसने सोचा शायद जोखान सीतिहा-बाह के कारण वह बातें बना रहा होमी।

जोखान ने फिर कहा, “जब भी कुछ समझने की कोशिश करो, बड़े खड़े को बाहर सेवना ही अधिक होगा।”

बाँग ने कोई उत्तर नहीं दिया और की बातों पर हँसता ही रहा। वह स्वयं खड़े की ओर से स्तुष्ट था क्योंकि उसे वह माना जाता ही देखता रहता था।

उसी रातको जब वह मुन्दरी के पास गया तो उसने बाँग को एक ओर निमन्त्रित हुए कहा— किशोरी गर्मी है और तुम्हारे शरीर से रसीले की जा रही है। मेरे पास आना दुधा करे तो कहा पो कर जाता करो।

मुम्बरी इतना बड़ एक धीर बैठ कर बैठ गई। बाँग के तुकाने से भी पास नहीं आई। उसे सोचान की बात याद या गई तथा इस समय मुम्बरी का भयङ्कर भी उसे भयङ्कर नहीं लगा। वह श्रान्त ही बित्तरे से उठ सका हुआ धीर बोला—“भयङ्कर तुम शक्रेजी ही तो जानो, क्या यदि मैं तुम्हारे पास जाऊँ तो गल्ला कम दूँ।” इतना बड़ वह कमरे से बाहर होकर तथा अपने मकान में जाकर दो कुर्सियाँ बिछा, पक रहा। कुर्सियों पर पड़े हुए अब भी नहीं आई तो खरकने बाहर जाकर डंडी हवा में घूमता रहा। वह नहीं सोचता रहा “कि शक्ति मुम्बरी को जैसे माझूम हुआ कि क्या खरक बाहर जाता जाता है। इधर बड़े दिनों से खरक के व भी इस बारे में कोई शिक नहीं किया था। वह उसने सोचा कि भेद का पता लगाना ही चाहिये।”

दूसरे दिन सुबह उसने नहा धोकर व्यायाम किया और फिर ऊँची घाबारा में कहा—“मैं बाहर के पास एक बगइचा आ रहा हूँ और वहाँ पर से बीटूँगा।” इसकी यह बात घर वालों ने सुन ली।

बाँग बाहर की ओर चला गया किन्तु चाचा रास्ता पक कर ही वह पुराने मन्दिर की घास में जाकर बैठ रहा। घास के निम्नों से हाँला को फेरते हुए वह कपड़ की मूर्तियों की ओर देखता रहा। मोचने लाग—“बड़ नहीं देखा है जिससे बहिले बड़ डरा करण का किन्तु अब जिसकी उसे कोई परवाह भी नहीं है।” ऐसा फिर करत हुए फिर वह बहुत दूर तक इस शायोपत्र में पड़ा रहा कि वह वापस आने का नहीं। मुम्बरी का पान आता ही उसे फिर गुस्सा आने लाग—“बहाँ पारान से नहीं रहती है फिर भी बहिले नहीं मिचते, चाहे बल भाव की दृष्टान में उसे सब कोई पसन्द भी नहीं।” इसी गुस्से में वह पकड़क उठ खड़ा हुआ और दूसरे रास्ते से लुपकाप कर आ पहुँचा। मुम्बरी के कमरे में पड़ा पड़ा हुआ था, बड़ी बड़े की जाह में वह लुपकाप पड़ा हो गया। अन्तर उसने किसी आदमी की आवाज सुनी। जाँक कर देखा तो बड़ा खरक मुम्बरी

का हाथ पकड़े हुए मुन्करा रहा था। बौंगलुग का हल समय जा शायद बगला बतवा उभयन पहिले कभी नहीं आया था। शीत पीनते हुए वह खड़े के साथ अपनी प्रेयसी की प्रेम-कीड़ाये देखता रहा, लेकिन उम्मेद आने का हल दोनों को जरा भी पता न था।

बौंग टिप्पी मन्तर बाहर से आया, पेड़ से कुछ लटकती सी कपड़ी लटकी थीर उसे हाथ में के वह कमरे की ओर गया, फिर पहा उभयत हुए कमरे के अन्दर घुस गया। कमरे में देखा दोनों में इतारे पक्ष रहे थे और सुन्दरी बड़े आश्चर्य से खड़े की ओर दगर रही थी। उसके कमरे में दक्षिण हो जाने पर भी दोनों को कुछ पता नहीं था। इतने ही में कुम्ह ऊपर स आ निकली। उसने बौंगलुग को जब हाथ में कड़ी थिक्क हुए देखा तो उभयकी चीन निकल गई। नीलम की आवाज सुनकर दोनों ने देखा कि बौंग बहो गया था। बौंग का शेष उपर पहा थीर इमल पहिले कि वे दोनों मैममें वह अपने खड़े कर टर पहा और लुकी से मारते मारते खड़े को पहालुदान कर दिया। खड़े काप से कद में ऊँचा था किनु काप में लायत अधिक थी। खड़े का पुपचार मार मडता गया। सुन्दरी ने आता बगला उप तस बचाने की पता की ता बौंगने उसे भी मार लगई, तब सुन्दरी बहो ने आता गदी हुई।

ममल मारते बौंगलुग का हल कुछ उभय थीर वह पमीने से काप पय हा गया। वह बह कुछ था, उमने लुका एक पार फेंक ही और खड़े स दाला— 'मीप अपने रारे में जाओ बहो मे अब लड में न कई निकलना मत नहीं ता आज निकल लूँगा।' खड़े पुपचार मियलता हुआ बहो स बज दिया। बौंग बहो बैस रहा उमल शेष को दगर कर दिमी को उमने पाप आज का गालम न हुआ। पीरे-पीर अब शेष शीत हुआ ता वह सुन्दरी व कमरे में गया—वह पक्षी पर पही हुई जार जार से रो रही थी। बौंग ने उसे उडाने की कोलिन की किनु वह पही ही रही। बौंग ने दला कि आज स उमने लमि में खटोये पहा

गये थे । बाँप को इससे दुःख हुआ, परन्तु इससे कहा — तुम मेरे सबके के ही साथ बहबहानी करने पर ठठाक हो गईं — ”

वह फिर ओर से हो बड़ी बीर अपनी सपनाई देती हुई बोली —
‘मैंने भिन्न कुछ नहीं किया । सबका छोटाया या बह स्वयं ही हुआ था । चाहो तो तुम कुछ से एक सकते हो, यदि वह मेरे विस्तर के पास भी था तो ।’ इसने फिर बाँग ने ओर करते हुए देखा अपने हाथों से भार की ओर दिखाते हुए कहा, ‘देखो तुमने अपनी प्रेयसी के साथ क्या व्यवहार किया है । मैंने सिखाया तुम्हारे और किसी आत्मी को पास नहीं आने दिया है । यदि तुमने सबके को नहीं देखा तो वह तुम्हारा ही सबका या मेरे बिना कोई नहीं — ”

बाँग ने देखा सुन्दरी की आँखों से आँसुओं का झरोका बह रहा था । वह मन ही मन पढ़ाने लगी । इसकी सुन्दरता बाँग के लिए बहुत बड़ी वस्तु थी, अतएव बाँप और कुछ न तुम सक । वह सीधा सबके के कमरे में गया और इससे कहा, ‘अच्छा अब अपना घर विस्तर ठीक करलो और कुछ बड़ों से जड़े लाओ जहाँ भी तुम पढ़ने आना चाहते हो । पर जमी आओगे, जब मैं तुम्हें बुलाऊँ ।’

इसके बाद बाँग वहाँ के भी चला दिया । ऊपर घोषाव बैठी कपड़े सी रही थी । बाँग को ऊपर से जले देना कर भी वह कुछ न बोली । घोषाव ने अपने कानों से मात्र शब्द न नीकने निहाने की आवाजें सुन ली थी, किन्तु वह सब कुछ सुनी समझनी कर गई ।

बाँग सीधा अपने कमरे पर आ पहुँचा । वह बहुत थक गया था, दिव मर की परेशानी से अत्यन्त शरीर चूर-चूर हो चुका था ।

वहे छड़के के जाने के बाद बौंगलुङ्ग एक प्रकार से विरिचम्य हो गया। अब उसने सोचा कि धीरे धीरे के हाथ बाज की मी कुत्त नगर खेती चाहिये। दूसरे लड़के की प्रकृति धीरे ही की कर उषका मंजशा या व रङ्ग भी सनेद था। यह कहकर अपने बाला की तरह तीस स्वभाव का होत हुए मी बिबाही था कुत्त १ बासाकी मी डममें थी। बौंग ने सोचा कि यह कहकर ग्यापार में डीक रहेगा, इसलिये उसे एकदम से बड़ा खेता चाहिये। किसी सौदागर के यहाँ विपुष्ट करा देने से यह ग्यापार के सब बड़ा सीप केग। ऐसा करने से उसे अपना नाम केबने के बिये धीरे नहीं न जाना रहेगा। इसी विचार से उसने एक दिन कुत्त का बुका कर कहा— 'वहे छड़के के समुद्र से आकर कहना कि मुझे एक बात करनी है।'

कुत्त बुका आकर वहाँ से बज ही धीरे सीप ही हँसी लुली लीट कर बोली—“बहि आप चाहें तो यह बात को तैयार है किन्तु यदि आप वहाँ जा सकें तो यह आरक्षी ग्यतिर करके अपने को सीमान्तराक्षी समझेंगे।”

बौंग ने सोचा कि शहर में इस ग्यापारी का यहाँ जाना तो डीक रहेगा नहीं उक्त इसकी ग्यतिरदमी में राखी ही रहेगा। अतएव वह— पोकर व बड़े रेहामी कपड़े पहिनकर वह सीप पन्थर के बुक के पाम बाजें पारक पर जा पहुँचा। इसी प्रकार वर बोर्ड पर बिबू का नाम बिना

का। बौंग ने सोचा शायद यही बगहू है किन्तु स्वयं क्या किया न जाने से उसने एक रात खलते व्यक्ति से पूछा — 'क्या यहाँ पर 'झिपू' किया हुआ है ?' उसने अब पूरी तरह से हामीमान कर दिया कि 'झिपू' महामय यही रहते हैं तो आकर कतक न किया न कर सकते। आवाज सुन कर एक धीरे-धीरे निकली धीरे पूछा 'आपका नाम क्या है ? आप यहाँ से आये हैं ?'

बौंगलुह ने जब अपना नाम पता बताया तो वह द्वार से दबने लग गई धीरे समझ गई यही उसके मासिक की खड़की के भागी समुदा है। वह आदर न साथ उसने बौंग को आदर आकर मेहमानों की बैठक में बिठा दिया। कमरा बड़ा शांत था। आधुनिक न प्रभावित फैशन की सारी सामग्रियों से भी मधी शांति सुमरित था। बौंग यह देखकर बड़ा मसख हुआ उसे निश्चय हो गया कि झिपू खड़ी लुह न धात्री है चाहे बहुत धर्मिक नहीं न हो। किन्तु यही डीक भी था। उसे बहुत रईस घर की खड़की पसन्द न थी क्योंकि ऐसे घर की खड़की जाने से अपना खड़का भी हाथ से जाता रहता है।

बौंग इन विचारों में बैठा था कि समझी महामय भी आ गये। दोनों आदर पूरक अभिवादन के साथ एक दूसरे से मिले। झिपू ने बौंग की बड़ी राशिर की। दोनों ने बोझा मद्रपान किया फिर हपर उपर की बातों में खीन हो गये। बौंगलुह ने थोड़ी देर बाद कहा—

'मैं एक आलस्यक बन करने आया हूँ। यदि आप चाहें तो मेरे दूसरे खड़के को अपनी दुकान में रख दें, वह कुछ मीठा आयागा क्योंकि खड़का हाशिया है।'

व्यापारी झिपू ने हँसत हुए कहा यदि कोई पड़ा झिपू न समझ दार खड़का मिला आप तो अवरप अपने यहाँ रख लेंगे।

बौंग न कहा, 'मर दोनों खड़के पड़े बिने हैं, और वह खड़का

घरती माता

आपका काम बड़ी खरबी तरह से चला सकेगा इसका मुझे पूरा विश्वास है ।”

“तो ठीक है आप उसे मेरा वीजियर । पहिले साब तो वह काम माह एक चौंदी का मिठा ब फिर तीन साब में करीब तीन घंटे ही मिलने उस प्रति माह मिठा खाया करेंगे । इतने में ही खरबे का कुछ अनुभव भी हो जायगा । वह इपर-उपर से जा भी कुछ ब्रमा सकेगा, यह सब ठसका ही रहेगा । पू कि हमारा आपके सम्बन्ध हो चुके हैं, अतएव मैं कोई जमावत देने की आवश्यकता नहीं समझता ।

बौगमुज प्रसन्न हुआ और बड़ते हुए बोला “हम दोनों की मित्रता अवश्य बनी रहेगी । हों एक बात और हम मेरी खरबी के लिए भी कोई सबका है आपके यहाँ ।”

म्यापारो ने मुन्कटान हुए कहा “मेरे दूसरे खरब का सम्बन्ध अभी कहीं निश्चित नहीं हुआ है, इसकी उम्र कम वर्ष है । आरबी खरबी को आपसे मिलनी होगी ।

“आपके साथ वह भी कम वर्ष की हो जायगा । खरबी पृथ्वी की तरह सुन्दर है ।” बौग ने कहा ।

वह मुबकर दोनों बहुत प्रसन्न हुए । खिपू महामय बोले “तब वा फिर हम यहां दोहरे रिरत में बंध जायेंगे ।”

बौग कोई उत्तर न दे सका, उसने अपने सम्बन्धी से आज्ञा की थी प्रसन्न चित अपने घर की ओर चला पड़ा ।

घर पहुँच कर उसने अपनी खरबी को पास बुलाया तो देखा कि उसके गालों पर बहने हुए आँसुओं के निशान हैं । उसे अपनी गोरी में बिटाने हुए वह बोला “बबो क्या बात है ।

खरबी ने बड़ी खपरीप दगा से कहा “मैं मर पार कम कर बौग नहीं है, हमलिये क्या बर्त होता है, राल में भी बीद नहीं आती ।”

बॉग बोला, “मैंने तुम्हें रोते हुए तो कभी नहीं देखा।” इस पर जड़की ने उसे बठाया, “मैंने वे मुझे जोर से हाने को मचा कर रखा है, क्योंकि यदि इस दुःख क्षोभ को दबा कर के सिर पर बंधना बंद करा दोतो, जिससे वह बड़े हो जाएंगे। तब मेरा पति भी इसी प्रकार मुझे नहीं छोड़ेगा, जिस तरह से कि वह स्वयं अपने पक्ष की गहरों से गिर चुकी है।”

जड़की के इस शब्दों से बॉग के हृदय में बड़ा आघात पहुँचा और उसे ओछान के साथ किया हुआ वर्तन वाद था गया। वह जड़की के सिर का हुजराया हुआ बोका उस किन्तु न करो। मैंने तुम्हारे बिंदु बड़ा एक पक्ष इस किया है। देखो, कुल्ह की माकत बात बरन्धी किसे देते हैं।”

जड़की शर्मा गई। बॉग ने उसी समय कुल्ह को बुलाकर बात बरन्धी करने के लिए मेज दिया और स्वयं सुन्दरी के पास सोने बसा गया। लेकिन उसे नींद नहीं आई। जड़की की बातों ने उसके हृदय पर बड़ा घमिर प्रभाव पड़ चुका था। वह सोचता रहा कि ओछान उसकी थी है किन्तु नीकर की तरह सारे दिन उसके कमर में जपी रहती है— किन्तु सीधी सच्ची है ओछान।

कुछ दिनों बाद बॉग ने अपने दूसरे जड़के को भी लिए की बुकान पर मेज दिया। जड़की की शर्ती की बात भी ठह हो गई, बीच देव—दाव दोज स्व पक्का हो गया। विवाह का दिन भी निर्धारित हो गया। बॉग को पूरी तसल्ली हो गई कि अब उसने अपने सारे बच्चों का काम ठीक कर दिया। जबकि वह गूनी जड़की और सबसे छोटा जड़का रह गया। जड़की के लिए अपने पीने की कोई कमी नहीं थी। सबके साथे जड़का के लिए उसने सोचा कि उसे वह पाने के लिए एक न मेज कर लेती का काम ही सिखायेगा। बच्चों की चोर ध्यान करते करते उसे ओछान का भी ध्यान हो जाया, जिसने उसने बिंदु बरन्धी की पैदा किया

रहती माया

मा। भोजान की ओर इतना ध्यान उसने फिड़के कमी नहीं दिया था। जब उसे क्वाक हुआ कि बैचारी दिन भर सेहतव करती रहती है। तन्तु दरती गिरती जा रही है किन्तु फिर भी वह चुपचाप ही रहती है। अपने क्रिये गये व्यवहारों पर वह स्वयं ही पैमका देने लग पड़ा। कमी सोचता कि उसे प्यार नहीं क्रिया तो क्या, अपना तो दिया है तथा उसकी ओर भी माँगें पूरी की हैं। किन्तु जब उसने फिर भोजान की ओर गौर से ध्यान दिया तो पता चला कि उसका स्वास्थ्य बहुत गिर चुका था, बाह्य सफेद हाथे जगो ये और कमर मुक गई थी।

एक दिन जब भोजान बॉगसुह के क्रिये जाना जाई तो बसने देखा कि चेहरे पर मुर्दगी सी जाई हुई है और वह केर पकड़े हुए इधर आ रही है। बॉग ने पूछा उसे कोई तकलीफ तो नहीं है। इस पर भोजान ने यही कहा कि केर की बसें दुपट्टी हैं। बॉग ने छोटी कड़की को दुरन्त चुकाया और कहा 'आपो तुम कमरा साफ करो, तुम्हारी रों की तबियत ठीक नहीं है।' इसके बाद बड़ी गरमी से भोजान से कहा — तुम बिस्तर पर छोट जाओ कड़की केर सेकने के क्रिये गम पायी के धावेगी, तुम उठना नहीं।"

भोजान चुपचाप जाकर बिस्तर पर छोट गई। वर के मोरे जब वह कराह रही थी। बॉग उसके कराहने की आवाज सुनता रहा। जब बसने भोजान की तकलीफ नहीं दली गई तो वह अपना कर उठा और बाहर जाकर बाहर को चुका जाया।

बाहर में मरीज की जांच की और कहा "जिगर बड़ गया है केर में शायद बपरी पड़ गई है, हमीक्रिये केर चुकने लगत है। इधर की पड़कन भी मन्द पड़ चुकी है।"

बाहर इतना बड़ इन्क सुन कर बॉगसुह घबक से रह गया। उसने बाहर से कहा — तो ठीक है उसकी दवा दीजिये।"

बाहर ने गीम ही गभीर होकर कहा 'मर्ग बड़ चुका है। मैं

तुम्हें एक जड़ी-बूटियों का मुस्त्रा छिन्ने देता हूँ, उनको उखाड़ कर पानी पीने को देना। इस मुस्त्रे को पीस इस चौड़ी के सिक्के होंगे, लेकिन पूरी गारन्टी नहीं होगी। यदि तुम मर्ब ठीक होने की पारन्दी चाहत हो तो इसकी कीस पाँच सौ चौड़ी के सिक्के होंगे।

ओखान ने जर सुना कि कीस पाँच सौ सिक्के तक पहुँच गये हैं तो वह थोड़े खोब कर बोली “नहीं, नहीं! मेरी जिम्मेगी इतनी बीमारी नहीं है। इस रकम से तो अच्छी खासी जमीन खरीदी जा सकती है।” बौंग ओखान को यह बात सुनकर और फलीज गया फिर बोला— ‘बाबूदर साहब! आप फिर न कर, मैं आपको पूरा स्वप्न दूँगा, किन्तु घर में मीठ नहीं होने दूँगा।’

बाबूदर ने जब सुना कि इतनी कीस बौंग द सकेय तो उसे और भी आश्चर्य हो गया। वह बोला—“इन्को शायद मुम्मे कोई गजती हो गई है चौड़ों का रक सफेद पद पया है। पाँच हजार सिक्के दो तब ही पूरी पारन्दी कर सकेगा।”

इतनी जमीन चौड़ी कीस मुन कर बौंग को बहुत जोस हुआ। बाबूदर तो समझ गया था कि ओखान का जीवन रहना सम्भव नहीं कीस लेकर गारन्टी देने से वह आदमी ज़रों में ज़म आया अतएव उसने एकदम इस मुनी कीस बढ़ाई थी। किन्तु बौंग का हाथ भय बुरा हो रहा था। सारी जमीन बचकर भी उसके छिये इतनी बड़ी रकम इकट्ठा कर लेना सम्भव न था।

बौंगलुङ्ग ने खुश्याप बाबूदर की कीस के इस चौड़ी के सिक्के द दिये। बाबूदर के जाने के बाद बौंग उस जगहोरी रसोई घर में गया, जहाँ ओखान का दिन बीत जाता था। ओखान की मृत्यु के मय से वह वहीं मुँह पर हाथ रख कर रोने लगा।

: २६ :

प्रोफ़ावर मद्रिनों भर मृत्यु मय्या पर बची रही । बागलुङ्ग व बच्चों को घब प्रोफ़ावर के काय-काज की कीमत समझम पड़ने लगी । घर बिलगा व ना दिगार्ह देने लगा । न तो किसी को चोरी की जखानी चानी थी, न खाना बकाना और न घर की मचार्ह रखना हो । पीछे ही दिनों में बूढ़े कर्कर के घर में बाग का बिल टपाहुल हो गया । आगिर हमने खजनी खदकी को घर की मचार्ह करने के लिये कहा ।

बाग का द्वारा खदका दर का को कुल काम बन पड़ता किना काता, बूढ़ा बाप तो किसी काम का था ही नहीं । बाग को समय में न आया कि बूढ़े बाप से हमें कहे कि प्रोफ़ावर अब सबक इसके खिद गले पानो व बाप देखर बनों नहीं आती । इन्ही बाप व इन्हा पानो सब हमने मिळता रहा तो वह भी बिदकिदा हो गया । आगिर एक दिन बाग हमने बाप को प्रोफ़ावर के कमरे में ले ही गया, जहाँ वह बिरतरे बरपही थी । खजनी तु पछी चोचों से भी वह प्रोफ़ावर की दूध लाल गया और नम ही मन होने लगा । गूनी खदकी खलबला कुल समझी नहीं वह ता मुत्करभी हो रहनी । गूनी होने के साथ वह सुकी भी को चत किसी न किसी को इसका कबाल रखना ही बड़ता था । बाग खदके इसकी दैरमाळ करना मूळ गया था । एक दिन बैचारी शाह भर सर्गिमें बाहर हो बही रही, सुबह सब हमने बचको की आवाज सुनी तो गुम्मे में

बड़े-बड़की पर बरस पड़ा। वसपि बैचारे सब बच्चे मित्र कर काम रते थे फिर भी अपनी माँ की जगह तो नहीं ले सकते थे।

शोखान की बीमारी में बाँग के तो खेतों पर जाना भी छोड़ दिया। इस काम की पूरी जिम्मेदारी उसने बिग बर छोड़ दी। दिन भर वह शोखान के कमरे के दरवाज़े पर बैठा रहता दिन पर दिन शोखान की सुराह की बरती जाती थी। उसको बबराहट बढ़ गई। जब वह इन सर्दियों में शोखान के पास स्वर्ण बार २ चौकीड़ी जसाता एव बरफ़ बितरा गर्म रखता था। शोखान कह उठती, "इतना गर्म क्यों करते हो?" आखिर एक दिन जब बाँग को उसका वह कहना न सहा गया तो वह कह उठा— "तुम्हारी तकलीफ़ अब मुझे बरबारात नहीं होती बरिमेरी सारी बीमारी जो निक जाय तो भी फ़िक्र नहीं, तुम्हारा इलाज पूरा होना चाहिये।"

शोखान ने अपनी बीमारी मुन्क़ाद से कहा "बड़ी, बड़ी, मैं तुम्हें वह सब न करूँ दूँगी। मुझे तो किसी व किसी दिन मरना ही है, किन्तु बीमारी तो मेरे सारे के बाद भी रहेगी।"

बाँग को शोखान की श्रापु को बात सुनना असह्य थी। जब भी ऐसी बात होती तो वह उठकर चला जाता था। इतना वह अवश्य समझ गया था कि शोखान की श्रापु निरिच्छ है, अतएव एक दिन वह लहर में जाकर उसके बस देखने गया। कई बरफ़ देखने के बाद उसने एक चण्डी काटी करदी का बस पसन् किया। बरई के कहा, "बहि चम हो ऐसे सजूक करीदों को बीमारी में एक ठहराई कम किया जा सकता है। एक सजूक घाय अपनी खिसे लेकर निरिच्छ क्यों न हो जावे?"

"बड़ी, मेरे बच्चे स्वयं बकरत पड़ने पर प्रबन्ध कर जेतो किन्तु मेरा बात बड़ा हो चुका है, पता नहीं क्या क्या बसे, इसलिये दो दो सजूक खिसे देता हूँ।"

बरई के दोनों सजूकों पर कपड़ा रफ़ व पाखिया जपाने के बार बाँग के घर पहुँचा देने का वाचदा कर दिया। बाँग के घर आकर शोखान

को सब कुछ बना दिया। ओछान को भी पति के बिने हुए इस संवत्स में हृदय शांति हुई।

बाग ओछान के पास बगों देखा रहता परन्तु उसकी बरती हुई दुर्दशा के कारण बात बतित नहीं करता था। वह जो सुप चापपकी हुई कभी-कभी बचपन की बातें याद करने की चेष्टा करती और कह उठती 'मैं जाना केवल बुराई तक ही आती हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं सुन्दर नहीं हूँ अतएव मास्टर के सामने मुझे नहीं जाना चाहिये।' बाग ने जब यह सुना तो वह बहुत दुःखी हुआ उसने ओछान का हाथ अपने हाथ में लेकर दण्डम बंधाये की चेष्टा की। बाग को अपने ऊपर पूछा की होने लगी कि वास्तव में आकाश मईव सत्य पर ही रह रही परन्तु उसके प्रति स्वयं उसका व्यवहार अच्छा नहीं हुआ। इन सब कारणों से अब वह ओछान के प्रति बड़ी मर्यादा प्रकट करना रहता था, उसको उसे २ शांति (प्रेम)। अपनी बड़ी प्रपत्नी के पास जाना की इच्छा रखता ही न रहता था जब कभी जाता तो ओछान का ध्यान बराबर रहता।

आकाश की बेहोशी कभी बाँधी २ दिन के बिने दूर जाती। एक बार जब वह कुछ होश में आई तो उसके कुचक को चुम्बना मेला और बिगठा वा बेहोश कहा—“मैं जानती हूँ तुम्हारा स्वाम बुरे मईव के घर की सुन्दरियों में था, किन्तु मैं एक दुष्ट की छो रही हूँ और मैंने पति के बिने सत्य पैदा की है। तुम अब भी एक सत्य हो हो।”

कुचक इसे बात में ऊपर देके अपनी तो बाग उसका हाथ बचक कर बाहर ले गया और समझाये लगे—“हम सत्य वं जान पूरे होता में नहीं है, तुम उसका नाम न जानो।” इतना कह कर बाग अब कमरे में वापस गया तो आकाश ने फिर हाथ बड़ाकर कहा आकाश किया—“मेरे मईव के बाद भी उसको व कुचक की मी कमरे में न जाने देना और न मेरी आई बरतु ही बगें तुम्हें देना नहीं तो मैं अपनी रुद मेज

कर लग कर लो ।" इतना कह कर वह बक कर तक्रिये पर गिर पड़ी और रोने लगी ।

बहु साहब के आये से एक दिन पहिले बरफबक भोजन की वृथा बहुत कुछ सुबरी दिखाई दी, बीमारी के इस कामे यहाँ से इतनी चप्यी वृथा उलकी अब तक नहीं हुई थी । वह स्वयं ही बिना किसी सहारे के बिस्तर पर बैठी हो गई, गिर के बाजों को उसके ऊपर आग लू पा और नाम मँगो । बाग अब उसके पास पहुँचा तो वह बाजी—

"बहा बर्षे जगमे ही बाजा है किन्तु अभी तक न तो किसी के मौस-आजुकी संधाई और न केक मिश्रणों हो । मैंने एक बात सोची है—अब रोज को तो मैं रोजों में हरगिज न जाये दूँगी । मैं चाहती हूँ कि बहू को—जिसके साथ बड़े बड़े का विवाह कर हुआ है—मुझा भेजो । मैंने उसे अभी तक देखा भी नहीं है । उसके का बाले वर अब काम में उससे ही करवा लूँगी ।"

बाग के देता कि भोजन से कुछ दम था गया है । वह असम्य हुआ और उसके तुरन्त ही बहू को बिपू के पास भेज दिया । पहिले तो बिपू ने कुछ जानकारियों को किन्तु फिर उसने सोचा कि भोजन का जीवन अधिक दीर्घ नहीं है, बहू को भी पूरी वय को हो चुकी है, अतएव भेजने में कोई हल नहीं है—बहू की का उसने भेज दिया ।

वह बहू के आये पर कोई कास रौनक भोजन को तबिलक के करण नहीं की गई । बहू अपनी माँ व एक पुरानी नौकरानी के साथ जा गई । माँ तो मोड़ी दर में पदो बहू को भोजन के सुपुर्न कर बापक चली गई, नौकरानी को बड़ी बाद गई ।

बहू का करारा काफी करवा कर गई बहू के बिने बहो सारा प्रबन्ध कर दिया गया । बहू ने कुछ कर बाँव को प्रबन्ध किया तो वह लुप्त हो गया । उसी संशय हुआ कि बहू सुम्नर है तथा सब चीर बरीके बाली है । भोजन के पास बाकर उगने लंबा-सुलू पा करवा

आरम्भ कर दिया। घोखान को भी बहुत की इस कठम्य मेरवा से कहा सजेव हुआ।

तीन दिन तक घोखान की तबियत समझी रही। उसने बांग से कहा— 'मेरे मरने के बाद एक काम और करना।' इस पर बांग बोख उठा— 'मेरे सामने मरने की बात ब किया करो।' तब घोखान धीरे धीरे मुसकरा उठी और बोखो— 'मरना तो मुझे है ही किन्तु मैं उस समय तक न मरूंगी, जब तक कि कहा खड़का घर आकर इस खड़की से विवाह न करके। मेरी मृत्यु तभी शान्ति से हो सकती है। क्योंकि मैं निश्चिन्त हो जाऊँगी कि खड़का का विवाह हो गया। तुम्हारे बोख होने की आशावा भी फिर शीघ्र पूरी हो जायगी।

बांग आहता या कि खड़के के विवाह के खिये को कुछ प्रयत्न करना होगा, उसके खिये बाकी समय चाहिये किन्तु फिर भी घोखान की इस नई रचनी से वह प्रसन्न हुआ। उसने घोखान से कहा "आज ही मैं एक आदमी खड़के को बुलाऊँ के खिये भेजे देता हूँ। तुम ऐसा ही प्रयत्न करती रहो कि धीरे धीरे तुम में पूरा बख या जान और बहुत दिनों तक जीवित रह सको। अन्यथा तुम्हारे बिना यह घर बर्बाद हो जायगा।" बांग के अन्तर से घोखान कुछ तो हुई किन्तु कुछ ब की नहीं।

बांग ने तुरन्त ही एक आदमी को बुलाकर आदेश दे दिया कि वह जाकर खड़के से कहे कि वह शीघ्र ही घर या जाय उसकी मां बहुत बीमार है और वह चाहती है कि उसके जीवित रहते ही खड़के का विवाह हो जाय। आज से तीसरे दिन ही विवाह की तैयारियाँ पूरी हो जायगी।' इतना कह कर बांग ने खड़के को बुलाकर विवाह की तयारियों के बारे काम सौंप दिये। बांग ने स्वयं गांव के समाज लोगों का आमन्त्रित किया। शहर, बाय की बुखान—जहाँ यहाँ भी

बह जिस किसी को जानता, उससे निमन्त्रण दे दिया। बाबा को बुला कर भी कह दिया कि वह दिवको चाहे बुला ले।

विवाह के दिन से पहिले रात को जब सबका घर का नहुँचा लो बाँध उठे देखकर सबको ही हुई पिङ्गली भागी लक्ष्मीके मुख लगा। दो वर्षों में ही सबका पूरा आचली हो चुका था। सुपण्डित शरीर पर सारंग का गाउन पहिने से मौन्य कमक उठा था। बॉग उठे लेकर शीश्र ओझाव के कमरे में गया। माँ को बसा देखकर सबके को आँखों में आसू बहवला आय, किन्तु हमस रँवाते हुए बोला—“तुम तो बहुत बंके हो, सुनये तो कहा गया था कि शाकल बहुत बराब है।” सीकान बोली—“अब तुम्हारी शादी हो आयी है उसके बाद मैं शीति से मर सजुगी।”

सुन्दरी आई बहू को अपने कमरे में ले जाकर उसका बसाव श्रद्धा करके जगी। उसे अपने कमरे में ले जाने का एक कारण वह भी था कि कही विवाह से पूर्व ही बड़े सबके से हमकी भेंट न हो जाय। बहुरानी के श्रु गार के बिचे कुछक सुन्दरी व बॉगलु ग को बाबी के बिचे भी एक १ काम हो गया। देवे स्नान कराया गया व नप बख पहिनाय गए हमके नप इत्र लेक सिद्धका गया। नप करी के नूले पहिनाकर वन सबने बहू को देला तो सब अकिन हा गप। बॉग ने जब सत्री हुई बहू को देला तो हमसे स्वेक शर्मा कर घर चुका बिचा। उपर कहका काज कबड़े व काजी काफ़ट पहिने सबों लुं दे माइनों के साथ वहाँ जाया गया। बॉग के बड़े बाप ने जब वह रीव बीज सुनी तो उठे बतया गया कि बड़े सबके कर दिवाह हो रहा है। वह भी सुनो के मने कूबा व मयाथा और कहने लगा—‘शादी हो रही है फिर कबसे होती—उसके पदपाते।’ वह हमसे जोर से रँवा कि मने अहमाव मी रँव पके। बॉग को ओझाव का मयाथ तो का हीरवा था। वह वह भी जॉप रहा था कि सबका बिम प्रकर बाँब की ओर से जफो बहू को देखकर प्लु हो रहा है। वसवा संताप और भी बह गया।

वृन्दा-दुर्लभ ने पहिले बाँग के पिता के सामने, फिर बाँग के आगे शीश झुका कर आशीर्वाद लिया। इसके बाद दोनों ओजान के पास गए और नत-मस्तक हो गए। ओजान ने प्यार से दोनों के सिर पर हाथ फेरा और कहा—“बढ़ कर अब तुम लोगो का हो होगा। मेरा जीवन समाप्त हो रहा है। तुम लोग सुरा रहना।”

ओजान की बात का उत्तर तो कुछ या ही नहीं दोनों चुपचाप एक दूसरे की ओर देखते रहे। इन्हीं में बाँग का आवाज दो प्यालों में शराब लिये हुए खरक आया। उसने एक-एक प्याला दोनों को दे दिया। दोनों ने अपने-अपने १ प्यालों में मधुपान किया, फिर एक दूसरे के प्यालों में शराब डबैक कर इस बात की पुष्टि की कि दोनों अब एक हो गये हैं। दोनों ने एक साथ ओजान किया और हम प्रकार दोनों का विवाह संवस हुआ। ओजान के सामने एक बार और मुँह कर दोनों ने बाहर जाकर मेहमानों के आशीर्वाद लिये।

इसके बाद शराब शुरू हो गई, मेहमानों में शराब का दौर चल रहा और सबके मन पर ओजान किया। ओजान ने अपने कमरे के सब दरवाजे खुलवाकर बिस्बोरे पर पड़े हुए ही इस रौनक का पादा बहुत आनन्द किया। बाँग इस बीच कभी २ ओजान के पास आता तो वह कहती—“बहा सबको शराब मिला गई ? देख केना कहीं किमी के पास हलू सामान न पहुँचा हो तो—धीरे सबको गरम २ भाजन खिला दिया।” बाँग कह उठता—“तुम हलू किड न करो, मेहमानों को पूरी देख आब की जा रही है।”

सारे मेहमान जब प्रसन्न चित्त हो शराब की तारीफ करत हुए चले गए तो ओजान ने बहू बैठे को बुलाकर कहा—देखा बिता ! बर काम तो अब हो गया, तुम अपने रिता और बाबा का कसाकरपना और बहू तुम अपने बति, पति के पिता न बाबा की सेवा करना। इसगू ी लूचो

कनकी का स्वागत भी रक्खा । इतना करके ही तुम जाय भगने
कनकों का पावन कर सकते ।'

जात करते करते घोखाम एक गहरी निद्रा में डूबने लगी और
उसकी बगल रुक गई । फिर सुमारी की हाथल में उलने कटना आरंभ
किया । डीक है, मैं बख्शात हूँ । किन्तु फिर भी मैंने कड़के पैदा किये
हैं । घर में एक रस्सी भी है । वह किसी भी सुन्दर कनो न हो
किन्तु सुन्दर होने से ही तो कड़के पैदा नहीं हो सकते—वह इसकी
देखा गया कर सकेगी ?'

बाँगसुह ने सबको इतारे से वहाँ से हटा दिया और स्वयं
घोखाम के बिस्तर के पास बैठ कर उसको घोर देखता रहा । घोखाम
को एक २ कर उसे अपने से बूझा होता जा रही थी । घोखाम ने बाँम
को देखने के लिये घालें पोछी किन्तु प्रत्यक्ष बोसा होता जा रहा
था । घोखाम एक डिककी आई फिर एक घोर लुटक गया और बाँगा
कुरपरावे के पाद बाएँ-पंखे उड़ गये ।

बाँग जबसे इस दुःख की व सह गया । हमने गुरम्वत बाँगी को
लुहाकर घोखाम के शरीर को स्नान कराये का कदा । धारने वह कड़के
व बहुत की चर्मी को सम्पूक में रखने के लिए विशेष विधानों की और स्वयं
बाहर जाकर फूट फूटकर रोय लगा । जब छाया दीक दीक ककन के
संपूक में रख दी गई तो बाँग गाँव के भोख के पास छाया को माफने
का महुर्त चुपने गया । महुर्त बीच महीने बाद का निकला । बाँम महीने
तक छाया को बाँग का में नहीं रख सकया था । अतएव उसने छाया को
कीस चुकाने के बाद, महर के मन्दिर में बिठाया देकर वहाँ छाया रख
दिये जाने का प्रवण्य कर ककन के सम्पूक का वहाँ धुँका दिया । छाया
ककनाने की लमाम ररने पूरी की गई, वरकों के लिए मन्दिर जाये कड़के
के बूते बरबाने नये, घर की चिपों के लिये मन्दिर कीते मिा में बाँघने
के लिए दे दिये गए ।

जिस कमरे में ओझान की श्राप्ति हुई, उस कमरे में बाँग का श्राद्ध कर दिया था, अतएव वह सुन्दरी के श्राद्ध में चला गया और अपने बड़े बड़के को बुलाकर कहा—“तुम अपनी ओ के साथ उस कमरे में जाकर रहो जहाँ सुन्दारी मी रहती थी और जहाँ उसकी श्राप्ति हुई है।” दोनों सुखचाप बहाँ जाकर रहने लगे।

कई दिनों तक घर में अन्धकार छाया रहा एक निर्भीक शक्ति बनी रही। ऐसा मायूम होगा या मानो बमकृत भव भी उस घर में बाहर जाने को तैयार नहीं थे। ओझान के मरने से बाँग के बड़े बाप को यही चिन्ता पड़ती। एक दिन सुबह जब बाँग की दूसरी बड़की बच्चा के पास बाप की प्याली में गम पानी लेकर पहुँची तो उसने देखा कि उसका शरीर बिस्तरे पर लकड़ा हुआ पड़ा है। बड़की बड़ देखा घर के मारे बिबकाने लगी और आगकर अपने बाप बाँग का बुला छाई। बाँग ने आकर देखा कि उसका बाप मी मरा पड़ा है। पिता की श्राप्ति से बाँग को बड़ा हुआ हुआ। बाप की छाया की उसने स्वयं स्नान कराया और दूसरे कक्ष के मध्य में उसकी छाया को बँध कर दिया। हमने सोचा कि कुछ ही दिन परमो व पिता के कक्ष की पहाड़ी जमीन के कमिस्तान पर दफना दिया जायगा। हमने इसी समय अपनी यह दृष्टि मी प्रकट कर दी कि उसकी श्राप्ति के बाद उसकी छाया भी उन्हीं के पास दफना दी जाय।

आश्विन तिथि के समय घर हमने कई मन्त्रों में पुराहित कुछ बाये। वह आग रंग बिरंगे वस्त्रों में आकर होठ पीरते और श्राद्धों की शक्ति के लिए मंत्रों का वचनारण कर रहे थे। वही २ देर में बाँग ने उस घर अपनी की बत्तीर की।

सारी रात हम पुरोहितों ने मंत्र वद वद कर चकी गई आत्माओं की शक्ति देने की चेष्टा की। बाँग ने कमरे के लिए अपनी छायादार जगह पहल से ही निवृत्त कर रखी थी। बाँग ने कम के बिये गहरे कोरुज

चारों ओर मिट्टी की दीवारों को ढकी कर दी थी। इतना खान बन
क्यों के बीच में छोड़ दिया गया था जहाँ बाँग खर्ब अपनी मृत्यु के
बाद शक्ति बना जाइता था। यही नहीं किम के तो इतना बड़ा धडावा
बना दिया था कि वहाँ सारे परिवार के सदस्यों के बिने जगह हो गई
थी। बाँग के भी कोई बगाना बाहिर न दिया क्योंकि इसमें कमसे
कम बसकी जमीन तो कमसे से बाहर नहीं जा सकती थी।

दुसरे दिन बाँगसुहा ने गया घर के लोगों के पासमें खिनाम
पहिया। उसके बिपु होखिर्वाँ मगाही गई और जब कोय इस नये
कमिस्तान की ओर चले गये। बाँग की प्रेमी भी खुशियाहारी का
क्याकर के साथ हो गई। बीस २ खेत पर काम करने वाले मजदूर
व गाँव वाले पैदल चले। रोता हुआ वह खुसूम कमिस्तान पहुँच गया
और कलें खेता हो गई। जगहों का काम में उतारने के बाद जब मिट्टी
हो गई तो बाँग दूर दूर कर रोने लगा। बापसी में वह पैदल हो
कर छोटा। शरीर में वह २ कर वसे बड़ी बड़ा छाता था कि हमने
खोजान के से हो बैलकीमनी माली हों के बिपु। सुन्दरी जब उन
मोठियों को अपने गहनों में लगावयो, तो वह बरदारत न कर सकया।

अपने इस रकीदा मुवाकों में वह सोचता रहा—“मेरी जमीन
के उस दुकई में मेरा जीवन दबा हुआ है। अब मेरे जीवन रदने में
कोई तब नहीं है। अब तो केवल अपने दिन गिनने हैं।” उसकी
आँखों में फिर आँसु लज्जता आए और वह बरबों की शक्ति करने
हाथों से आँसुओं की बौझा हो रह गया।

: २७ :

इससे दिनों तक बॉगलुङ्ग घर में ही बिबाह हाथों व मीत की आगातार होने वाली बढमाओं में इस प्रकार हुआ रहा कि वैसे अपने दोनों व कमल की ओर खान देखे का कोई समय ही न मिला । एक दिन बिंग ने इसके पास जाकर कहा—

“यदि आपको समय हो तो जमीन के बारे में कुछ बातें करनी हैं ।”

क्यों मैं तो भेत व कमल के बारे में सब जान ही भुझा हुआ हूँ ।” बिंग ने कुछ घर चुप रहने के बरबात कहा— ‘जगवान न करे पैसा हो, किन्तु पैसा दिखाई दे रहा है कि हम सब इनकी बाढ़ जाने वाली है जिनको साबु बहिने कभी न पार्ई वो बहिनों में पानी पानी से बहता दिखाई दे रहा है और जलो तो ममी बहुत दूर है ।’

बॉग को बकवास हम हैबो प्रकोप पर जगमगा जाने लगा “बह हैबो प्रकोप मईब ही लव करता है जाहे जगवान की पूछा की जाय या नहीं । जलो भोग हो बककर देखें ।”

बिग जगवान से करता था और इनको इनका मादस कमी न होता कि वह दूबो प्रभाव के प्रति अपना रोप प्रकट करे कबल ‘जगवान की ममी ही पैसी है । कदकर चुप हो जाना था । बॉग जब भेन पर पहुँचा तो देखा कि बिंग डीक ही कहता था । दूंग से जो बमीब लीरी

प्रति वह उदासीन ही बना रहता। किसी भी अमनामे याहूमी को वह अपने घर के अहाते में नहीं आने देता था। वह वह भी समझता था कि बाहर बाघे व रिरैशर ऊपर से कितनी ही इज्जत करें लेकिन अन्दर अन्दर उसके रईस होन के कारण बजते हैं। इस समय वह किसी से बिगाड़ना भी नहीं चाहता था। इसका कारण स्पष्ट था थाप दिव हाथा पक्षे की बचों उसके कामा में पक्षी रहती थी। उसे अच्छी तरह मालूम था कि उसका घर केवल उसके बाबा के कारण ही सुरक्षित है अतएव वह बाबा, बाबी व बचों माईयों को पूरा आभाम देता रहा। बाबा, बाबी भी कम होशियार व थे। वे ताड़ गये कि बांग बगसे डरता है, तभी प्रतनी जातिरदारी करता है। इस डर का काबू उठाकर वे जोय भी बिरय लई करमाइयों किया करते। विशेषतया बाबी कुम्हू व मुन्दरी की कितने नई माँगों से वह संय था मना था।

अपने बाबा की छोर से तो बांग को ऐसी बिरय बिता नहीं थी, क्योंकि वह बूढ़ा हाँ मना था और चुपचाप बोट देनमें ही पुरा था किंतु उसका बड़का व बाबी की छोर से प्रतरा बना ही रहता था। बाँग ने इन दोनों को एक दिन बाबा से कहते हुए सुना—

‘उसके पास नाम मरा बचा है, रुपये भी हैं। हमें कुछ अपना जॉय देना चाहिए। —बाबी से कहना शुरू किया—“बाँग को क्या है कि तुम बाकुघों के सरदार हो इसीलिए हम जोयों की इज्जत जातिर दानी है हम जाना के बहाँ रहने से बाँग को थोरी डरैसी का कोई करता नहीं है। इस मौके का हमें काबू उठा देना चाहिए।”

बाँग ने चुपचाप बाबा के पास जाके होकर जब वह सुना ता वह मजबूर होकर सब ही मन विचमिजाकर रह गया। सोचने लगा कि किसी बिपैठ युक्ति से ही इन जोयों से सुरक्षित रहना पड़ेगा। दूसरे दिन बाबा ने अपने जिबे तम्बाकू व पाइप छोर अपनी छी केजि व बाबा काट बगबाने के बिग बाँग से कुछ रुपये माँगे। बाँग ने चुपचाप

उपलब्ध है दिष्ट । इस बात को जो दिन भी न हो पाए वे कि बाबा ने फिर कपड़ा का समाज किया तो बाबा ने होकर बांग को कहना पड़ा—“बहि बही बाबा रहा तो फिर हम सबको भूखों मरने की मौजत खीय ही या बाबमी ।” हम पर बाबा ने बड़ी आपराधाई से हँसते हुए जवाब दिया— ‘तुम्हें तो घरे के दुःखस्मित समयना चाहिये देखते नहीं हो तुमसे कम घमोर भाजकक किरा ही जवा देने का रहे है ।’

बह सुनते ही बांग की शरारत पर पसीमा उतर आया और पुनः कपड़े बाबा के हाथ पर उपलब्ध रख दिए । इसका मोझन तो बिना मांस मछली के होता रहा, किन्तु बाबा के परिवार के लिए मांस जाना बन्द न हुआ । बांग स्वयं तो कभी कभी ही पम्पाह पोका किन्तु बाबा के मुँह में पाह्य इयेया ही सुकना करता ।

बांग का बड़ा लड़का विवाह के बाद अपनी नई बहू के साथ ही मरत था । बाप पर क्या बीत रही थी इसका क्या उसे कुछ भी न था । अकस्मात अपने अचिरे माई की मरने से वह अपनी बहू को बचाई रहता था । वह बहू का कमर से बाहर नहीं निकलने देता था । जब लड़के को वह पता चला कि बाबा, बाबो व अचिरे माई न बाप की रंग कर रहका है तो उसे बड़ा गुस्सा आया और एक दिन बाप से कहन लगा—‘यदि बाप मे से अधिक हम तीनों का कमाऊ रहते हैं तो अच्छा बही हागा कि मैं अपना घर किसी और जगह बना लू ।’ बाप ने तब बड़े को सारी बातें बतलाई और फिर कहा—‘मैं इन तीनों को अपने बड़ा से इनाम चाहता हूँ किन्तु बाबा हूँ । बाबा बाबुओं के घरदार हैं । हमसे कुछ भी कहने में हमारा बड़ा सुकना हो जाने का कतरा है ।’

बह बात सुनकर लड़के को बड़ा ठैठ आया । वह कहने लगा ‘इनका मझावा करने की तरकीब तो बही सीधी है । आज ही रात को बही की बाड़ में हुवा दिया जाय । बाबो मोरो टांगो है उसे बिग चला

: २८ :

बापतुंग अपनी दूसरी कड़की को जब छिपू को सौंपकर निरिंचित हो गया तो एक दिन बाबा से बोला—

‘‘आप मेरे पिता के भाई हैं, इनके बिना कभी कभी मैं यह बड़िया तम्बाकू खाता था। यह इन्हें वही माफ़िक धाई थी। कभी कभी जब उनके बहुत में दर्द होता था तो यह तम्बाकू दूध दूर कर, इन्हें पीद ले जाती थी। आपके मुँह में थी यह अदरक काबूद बँट्टाएमी।’’

बाबा ने जब तम्बाकू का डिब्बा कोला को कनकी कुलाबू से यह प्रसन्न हो गया और बोला— ‘‘मैंने भी यह तम्बाकू पी है लेकिन बोली ही पी सकता था, क्योंकि यह बड़ी मँहगी होती है। जैसे मुझे यह पसन्द है।’’

बाबा का मन अच्छा बड़ा और उसने अपना बाह्य मँगकर इस बड़ेदा तम्बाकू को पीना शुरू कर दिया। फिर वह इसी गरी में दिवारात पड़ा रहने लगा। बाँस को वह देखकर कुछ चैन मिठा, किंतु अपना कड़कों को वह हीन व छोटे इस बातची होठिपारी समझे काही।

सही कामाई होने पर बरिचों का पानी जब होने लगा। यत्पूव क्षेत्र पर काम शुरू हो गया। एक दिन जब बड़ा कड़का उसके साथ क्षेत्र पर था रहा था तो उसने बतला— ‘‘वर मैं आपके पीता हूँ बाबा है। बापतुंग यह सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ चिंग को हतो समयराइर मेककर उसने मालि नकुकी जादि अय्या अय्या कोमती खाना मँगवाया थी।

जड़के की बट्ट को बुझाकर कहा—“तुम जाओ बेटे, ताकि बरबाद कामचोर न रहे।”

इसके बाद जब कभी वह काम से बक जाता तो होठे बाँधे बरबे के स्थावर से ही उस बड़ी सुणी हो जाती। इधर गर्मी के आते ९ बज पाणी सुलभे जगा तो कमठ जगा था। को बावस आये जगे और उगहोने बटाहों की गई व्यवस्था बना की। जिस किसी को बरबे की बकरत हुई जगकी बाँग से भारी स्थावर पर बरबा भी दे दिया, किन्तु जमावत के रूप में हमने बनीव अपने कमज में रखी। इस प्रकार बहुत सी बनीव बाँग को सरले दामों में मिल गई। बहुत से पैसों उकलत, ब कोय भी ये जिसके पास जर जमीन कुछ न था, वे बाँग अपनी बड़कियाँ ही बाँग के हाथ बेचने आए। बाँग से होठे बाँधे बरबे को सुणी में न रखने और बड़का को धाँसवाली बट्टियों के लिए बाँध दे बँदियाँ एक ही दिन में ले लीं। एक को तो अपनी सु हरी के सुपुर्न कर दिया, बाको को घर के काम काम में डाल दिया। बाँगलुह के पास पैसा काफी था, जतपूव वह सब करोड़हारी काम में डाल छोई समय न लगा।

इसके कई दिन बाद एक बूढ़ा आदमी बरीव साथ साथ की एक कमचोर बाँधिका का बेचने के लिये बाँग के पास आया। वहिले को उसने मना कर दिया, किन्तु उसको सुन्दरी को वह बाँधिका पसन्द आ गई। सुन्दरी के कहने पर उसे भी बाँग से बीस रुपये में करीद लिया।

X X X X

जब बाँगलु न ले सोचा कि जब उसे काफी सुख पैस मिल रहा है तो उसने अपने सबसे छोटे बड़के को अपने साथ रात भर ले जाया टुक कर दिया। वह बड़का पुप-पाप बाप के साथ इधर उधर टहला करता, किन्तु न तो बड़का ही कुछ काम करने समझने की ओन्धित करता और न बाप का ही इसकी फिक्र थी।

रहा रहूंगा । मैं अब शांति से आराम करना चाहता हूँ । बताओ तुम मुझमें क्या चाहते हो ?

अबका बोझा—“मैं चाहता हूँ कि हम जहाँ वहाँ से शहर के किसी मकान में रहने के लिए चले जाँय । वह अपना मासूम नहीं दाता कि अब भी हम लोग गैरों की तरह पड़ी बने रहें । वहाँ जाकर वह उसके परिवार का छोड़ कर हम लोग शहर में बाकी सुविधित रह सकेंगे ।”

बाग के बड़ा—“वह बेवकूफी की बात है । वह मेरा मत है, तुम जाओ या पड़ा रहो करना न रहो । यहाँ मेरी जमीन है । हमी बरती की बहीबल आशकक हम लोग रहें हैं और हमी की पैशावर वे आश तुम्हारी इतनी शान बनी हुई है ।”

अबका भी पूरा जिद्दी था वह अपनी बात पर दृढ़ रहा और बोझा—“शहर में वह ह्रांस का मकान है । वहाँ चागे के हिस्से में दोहे २ लोग रहते हैं किन्तु यदि हम मकान का नीतरी दिसमा हम लोगों को बिराये पर निख सके तो वहाँ आराम में रहा जा सकता है । वहाँ पत्तों पर काम जारी रहेगा वहाँ से शहर अधिक दूर भी नहीं है, किन्तु मैं अब इस बड़े भाई के साथ रहना पसन्द नहीं करता ।” इतना कहते-कहते अबके की धोंनों में धोंस आगए थी। वह बाग पर दबाव डालते हुए कहके आगा—“आर मेरी धोर से निरिचन रहें मैं कोई ऐश नहीं करता । मैं तुम्हा नहीं लेकता शराब नहीं पीना अकोम के मश का भी मुझे शौक नहीं है । हमरी बियों के बोसु मैं नहीं बीजता । आ छो आपने मेरे लिए का हो है, मैं अभी से संतुष्ट हूँ । किन्तु मैं बिफरता भी वह आशा आपने चाहता हूँ ।”

बाग भी कोई शरपर तो था ही नहीं, उनके भी दिख ना । अब की धोंनों में धोंस देकर वह पमीत्र गया । “ह्रांस के मकान” वाली बात भी उसकी धमक में आगई । उस समय की वह अपनी उस हाजग की वह मुँह गया जब “आशान” का क्षेत्र के बिद्वद् उन मकान में

यद्यपि बाँग ने घर के सभी सदस्यों को दहक के धिरे जलान, जलान बाँदियों का प्रबन्ध कर दिया था किन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी बाँग को घर में शांति के कोई अंशण दिमाई नहीं देते थे। बड़ा जड़का चबोरे मर्द् के साथ कुछ न कुछ सब बड़ किन्हीं ही रहता था। उसे बराबर यही डर लगा रहता कि वह चबोरा भाई कहीं उसकी ली को चार कोई काज न फेंक दे। घर में इतनी बाँदियों थी, उनके प्रति भी बाबा के जड़के से बाँग को डर ही लगा रहता। दूसरे सुन्दरी के चरित्र पर भी बाँग का एक रहने लगा। इस ली का जीवन एक चुन पा और वह ली पीछे में ही मरत रहकर मोड़ी हो चली पा। बाँग ने उसके पास जाना कम कर दिया था, इसकी भी कोई शिकायत लु दूरी का न थी। इन्हीं सब कारणों से बाग को वे फिझा न थी।

एक दिन जब लड़े लड़के को किन्हीं ली से घर लौटा तो लड़े लड़के ने बाप को बड़ चोर को बुलाकर कहा—‘घर में चबोरे मर्द् का इस घर में रहना बरबराते नहीं कर सकता, दिन भर वह बाँदियों पर बरबराते रहता है। इतना ही नहीं, चापकी मरमि पर भी उसकी बजा रहने लगी है।’

बाँग ली से हँसी लुली लौटा था, घर आते ही वह बसने यह सब सुना तो मित्राज बिगड़ गया और लड़के पर गुस्सा बतारते हुए बोला—‘तुम लो लुकी की तरह इन्हीं बातों में पड़े रहते हो। मालूम होता है तुम अपनी ली के पीछे लुकी तरह बीबासे हो और बसकी बातों में जा लगे हो। वह सब ठीक नहीं है।’

लड़के को वह फटकार अच्छी न लगी। वह बोला—‘मैं अपनी ली के कहने में ली हूँ, जैसा कि आप समझते हैं। वह ली भी है इसलिये कहा है कि भावके घर में वह ली लामा नहीं देखी।’ बाँग ने इन बात पर कोई जवाब नहीं दिया, किन्तु अन्दर ही अन्दर उसे बड़ा गुस्सा आ रहा था। बसने लड़के से फिर कहा—‘मैं कम तक इन घर के लड़कों में

रहा रहूँगा । मैं अब शक्ति में आराम करना चाहता हूँ । क्याचो तुम मुझसे क्या चाहते हो ?

बड़का बोला—“मैं चाहता हूँ कि हम लोग यहाँ से शहर के किसी मकान में रहने के लिए चले जायें । वह घरवा मासूम नहीं जानता कि अब भी हम लोग पैदलों की तरह वहीं बने रहें । वहाँ जाकर हम अपने परिवार का सुद कर हम लोग शहर में काफी सुरक्षित रह सकेंगे ।”

बांग ने कहा—“वह बेबजूबों की बात है । वह मेरा घर है, तुम चाहो तो वहाँ रहो करना न रहो । यहाँ मेरी ममीन है हमी पानी की बहोतल आसकल हम लोग रहस है और इसी की पैदावार ने पात्र तुम्हारी इसनी शान बनो हुई है ।

बड़का भी पूरा जिद्दी था वह अपनी बात बर हर रहा और बोला—“शहर में वह जगह का मकान है । वहाँ पात्रों के हिस्से में लगे २ लोग रहते हैं किन्तु यदि हम मकान का मोनरो दिखना हम लोगों को किसी पर मित्र सके तो वहाँ आराम न रहा जा सकता है । यहाँ ललों पर काम जारी रहेगा वहाँ से शहर अधिक दूर भी नहीं है, किन्तु मैं अब इस बड़े माह के साथ रहना अपना नहीं करता ।”

हमना कहते-कहते बड़के की आँखों में आँसू आगए और वह बाप पर श्वाभ डाकते हुए कहने लगा—“पात्र मेरी ओर से निरिक्क रहें मैं कोई ऐश नहीं करता । मैं चुप नहीं बैठता शराब नही पीता अन्नोम के पत्र का भी मुझे शौक नहीं है । दूसरी बिलों के बाढ़ि में नहीं शीवता । मैं जो आपने मेरे लिए खा रो है, मैं उनी से मनुह हूँ । किन्तु मैं निक्क बरा भी वह आशा आपसे चाहता हूँ ।”

बांग भी कोई बतबर तो था ही नहीं, उसके भी हिस्स था । वहाँ की आँखों में आँसू ऐलकर वह पनीज गया । ‘हमारे मकान’ वाली बात भी उसकी समझ में आगई । उस समय को व अपने उस दाज्ज की वह मनुक गया अब ‘आशान’ का क्षेत्र के बिन्दु वह इस मकान में

बाबा । पण्डित ने चुँपा डबाला हुआ वह कुछ देर तक हम विपण पर मोचता रहा । बाबा के कहके की बरकतों को जब उसने स्वयं देखा दिया तो हर्ष के मन्त्र में जाया हो नविन समझा ।

हमर बाबा की विल प्रति जकीम के बरो में बूझे रहने से कम कार हो गया था । बूझा तो था ही इसकी कोसी से कम भी निकलना टुक हो गया । बाबा की भी बड़ी शक्ति थी । जकीम का बचोव करा देने से बाँग को उनकी दिन रात की परमाहरों में काफी पुरकारा मिला गया था । किंतु बाबा का कहका अपनी बहानी के बरो में मस्त था । अपनी बातबाजों के बरा इसे मछे बुरे की कोई पहिचान नहीं रह गई थी । उलझ एक ही हुआ था—विवाह । लेकिन बाँग यह नहीं चाहता था कि इस घर में ही उसका विवाह करके—उसकी सलाहों का नाम और अपने ऊपर लाद दिया जाय ।

एक दिन वह शहर आकर अपने बड़े कहके से मिठा और इससे हर्ष के मन्त्र के बने में राख की तो वह कहका भी जबरन प्रमत्त होकर कहने लगा—“वह बड़ी अच्छी बात होगी । शारी होने पर मेरी की भी नहीं रह सकेगी और इस प्रकार हम सभी कीम हकूने रहेंगे ।”

बाँग ने अपने इस कहके के विवाह के बारे में तो कुछ सोचा ही नहीं था इसका कारण कहाचित्तवहो था कि यह कहका शीघ्र स्वभाव का और प्रकाम्त मित्र था । बात को आगे बढ़ते हुए बाँग ने कहा—“हाँ मैं भी कई दिनों से तुम्हारे विवाह के बारे में सोच रहा था कि तुम एक मएक समझ ऐसे पड़ते गये कि कोई बात मैं तुमसे न कर सका । अब समय हीक आ गया है, कहीं अपनी सी कहकी गान कर तुम्हारा विवाह कर दूंगा । बातचीत के हमी दौरान मैं कहके ने बताया कि वह किसी शहरी कहकी से विवाह न करके एक मायावत देहाती कहकी के साथ अधिक आराम से रह सकेगा । उसकी बातों से बाँग को ऐसा लगा कि

इस लड़के को कौड़ी तक मरक पछग्न नहीं है। सीधे सारे जीवन में ही वह सुख है।

बागसुहृद लड़के की इन बातों को सुनकर प्रसन्न हो हुआ ही होना भी हुआ। उसे अपने सभी लड़कों पर गर्व था किंतु वह लड़का हमेशा लक्ष्य विचारों का होना, ऐसी चाहता उसे था। मन ही मन अपने इस बेटे पर फूला था जमाया। फिर भी उसने बाबा को पूछा—
“अच्छा बताओ, तुम्हें कैसी लड़की पसन्द होती है?”

लड़के ने उत्तर दिया—“मैं गाँव की लड़की चाहता हूँ। उसके घर वाले सभी सही होने चाहिये। लड़की न तो बहुत सुन्दर हो ही और न बुरावत हो। केवल घर के काम काम में होशियार हो और शिक्षित करीब हो।”

बागसुहृद उस उत्तर से और भी प्रसन्न हुआ। वह मुस्कुराते हुए बोला—“मैं तुम्हें ऐसी ही लड़की ढेर खूना। बिना अवरुध हो गाँवों में घूम घूमकर ऐसी लड़की खोज लेगा।”

हठका करके बागसुहृद का लक्ष्य हो गया। शरीर में वह लोग के मकान के पास जाकर लड़ा प्रवेश। वहाँ पहुँचते ही उसे पुरानी बाढ़ गलों से घेर लिया। उसने देखा कि मकान के बाहरी हिस्सा में बड़ी जोड़ लगे हैं फिर भी वह किसी प्रकार अन्दर घाड़ते में जुगलता। मकान के भीतरी भाग में ताजा पका हुआ या बाहर बरामदे में एक बड़ी औरत बैठी हुई खड़ी रही थी। बागसुहृद ने उसे बगल में—वह बड़ी दरबान की ली थी, जिसके मुँह पर केवल के बड़े बड़े दाग थे—वह लड़की ही चुकी थी। उसे देखकर बागसुहृद भी अपने को बड़ा समझने लगा। किसी प्रकार जब उस औरत से बागसुहृद ने दरबान को जाने के लिए कहा तो वह वाली—
“बाहिर आप सारा लक्ष्य करिये घर के लड़के तो मैं दिवा मकनी हूँ।”

“बसन्त आने पर सारा मकान भी करिये घर के लड़के हूँ।” बागसुहृद ने उत्तर दिया।

बौग ने वह नहीं बताया कि वह कौन है, चुपचाप दरवाजा बन्द होने पर अन्दर चला गया। मकान तो उसका पैया हुआ था ही, किन्तु अब इस मकान की देखने पर वह सोचने लगा कि कमल का कैर जो कैसा होता है। अन्दर उसने वह स्वागत भी देखा मोटे-मोटे गहों पर बड़ी बहुत बड़ी मासिक्य अफ्रीम के कटी में डूबी रहती थी। उस गगन पर जाकर बैठ गया तथा निर्दिष्ट हो उसने एक खम्बो मांस की। मेज पर जोर से हाथ पटक कर वह बोल पड़ा—

‘मैं वह मकान के लूँगा।’



अभी न जाने के लिये वह बड़ाभा कर दिया कि हमारे अड़के के लिये जब कोई खोरब खरकी मिल जायगी तो वह बहा जायेगा ।

गाँव वाले मकान में अब केवल बाबा का परिवार व चिंग और उसके सभी मकदूर ही रह गए थे । बाबा के कमरों में बांग अपनी गूली खरकी के साथ रहने लगा । बाबा स्वयं ही सुन्दरी वाले हिस्से में चली गई, धान को इस पर कोई धारधर्य न हुआ न हुआ ही हुआ, क्योंकि वह समझता था कि लोगों मकान के बरी में पूरा रहते हैं तथा उनका जीवन भी अब खोबा ही रह गया है । इन लोगों के मर जाने के बाद उसके ऊपर कोई जिम्मेदारी न रह जायगी । यदि इनका खरका डोक से न रहेगा तो उसे भी निकाल बाहर करने में कोई आपत्ति न होगी ।

किसी बात को चिरीय चिन्ता अब बांग को न रह गई थी, वह धाराम से पड़ा रहता था । उसे तंग करने के लिये भी अब उसका नाम कोई नहीं रह गया था, सबसे बड़ा खरका शक्ति स्वभाव का था ही, उसे खेत के काम से ही पुर्मत न मिला पाती थी । एक दिन धरतर नाकर हमने चिंग को हमारे अड़के के लिये कोई सुयोग्य खरकी की खोज में जाने के लिये कह दिया ।

वह गाँवों में घूमने के बाद अब चिंगवर छोटा तो हमने जाकर बांग से कहा— 'वहाँ से तीन गाँवों के पार एक बड़ी सुन्दर खरकी है हममें केवल बड़ी एक है कि सबैय सुन्दरम्पी रहती है । उसका पिता पालके का से संवत्त करने को तैयार है । आरम्भ के समय के अनुसार वह दान देव भी अच्छा देगा । उसके पास काफी अमीन व खेत भी हैं । मुझे वह घर पसन्द है किन्तु बापदा कोई नहीं किया है ।'

बांग ने अपनी लीजुर्त सुन्दर हो देखी । इस प्रकार हमारे अड़के को मगाई भी हो गई । बांग ने संताव की मोम खेत हुए कहा— 'एक खरका वह था है उसका सम्बन्ध और हो जाय ता फिर मुझे शक्ति ही शक्ति है ।' बांग की अमीन पालदा अब काफी बड़ खुशी थी, वह

उसने हाइलथ के लिये आदर्शक बनवा दे दिया। लड़के के लाने पर जब चाची रोने बिठकाने लगी ता उसे भी बांग ने डाइस देके पूछकहा—“रोने से सङ्गुन कागज न करा। यह लड़का लीज ही कौज का बड़ा चकसर हो जावगा और हम प्रकार हम सनी का आदर न। तब यह जावगा, हममें काई सम्झ नहों है।

बांग अब पूर्ण रूप से विरिंचित हो गया था। लाने पोने न धाराम करने के अतिरिक्त और काई काम उसे न था, लाने के पेट से वह सभी वस्तुएं खरोद सकता था अतः अब वह प्रचुरा अथवा पान्त काता था। सुम्हरी, कुम्हू न लड़के सभी पारा थे। बांग के पोते के प्रथम का दिन भी लमोप ही था। वह बड़ी बेसली से इस लुगी का इन्तजार कर रहा था। एक दिन जब उसने बहू के लड़पने के दर्द से बराहने की आवाज सुनी ता वह कमरे के पास ही जाकर बैठ गया, एतु अब कुम्हू ने आकर वह कहा कि “बकी बहुत देर लगीयो, बी न त बाजुक है तो बांग वह सुन कर अपने कमरे में वापस चला गया। फिर वह अपने हृद देवताओं की पूजा करने के लिए उठ कर बाजार चला गया। वही से उसने पूजा के लिये पूष न अमरकन्ती लीयीं। फिर सीधा मन्दिर में आकर भगवान से प्रार्थना करते हुए कहने लगा “मेरी बी मर चुकी है इसलिये मैं स्वर्ग पाया हूं। हे भगवान! मेरे लड़के की बहू की रक्षा करो। यदि सङ्गुन लड़कर हो जाव तो मैं तु ना चढ़ावा भेंट करूँगा, किन्तु लड़की होने से मैं कुछ न कर ना।

इस मन्दिर में प्रार्थना करते के तुरन्त बाद ही वह भारती माता के मन्दिर में पहुँचा। “भारती माता की दया से हो उसकी मैत्री कलनी फूजली थी। भारती माता से उसने प्रार्थना की—“मैने, मेरे पिता ने मेरी लड़के ने मरने ही आपकी प्रार्थना की है। मेरे लड़के का पुत्र वाच प्रगट होन जाव है। माँ, लड़का ही देना।

दोनों मन्दिरों में आर्चना कर वह जवराहर में छोड़ ही चर

कोमल था। पर जोरते-२ वह लुगी तरह बक चुका था, वह चाहता था कि कोई एक प्याला गरम चाय व बमीना पोंछने के लिये मीगी हो बसा दे दे। किन्तु वहा कोमल सुनता था सब दूसर ऊपर भाग होव रहे। बाकी हेर में कुछहु हंसती हुई ऊपर घाई और बसने पाठा होने का शुभ-सवाद सुनावा। कहका बहुत सुन्दर व स्वस्थ था तथा मौ-मैरा दोनों सकराव थे।

बाँग प्रसन्न था हुआ ही, किन्तु फिर बहुत देर तक सोचता रहे। “अब मेरा पहिना कदका पैरा हुआ था मुझ इतनी किन्न बड़ी हुई थी। चँचरी कास्टी में बिचारी आकाश में सुपनाप सारी लकड़ीक सइली थी। आग कदके की बहू की वह गया है कि बाँवियों चारों ओर सेवा में छपरा है, वति भी बाहर बटा है फिर भी वह बन्नों की भीति होतो चिहाती है।” इतने में कहक ने आकर कहा—“कदका पैरा हुआ है, हमें तुरन्त ही एक बाव (चाचा) का प्रबन्ध करना चाहिये जो बचप को दूध पिना मके। मैं नहीं चाहता कि मेरो छी दूध पिना कर अपना आरध्य व सौत्र्य को दे। हमारे जैसे सभी सम्पन्न व्यक्ति चाय का प्रबन्ध कर लेते हैं।”

बाँग साथ विचार में ही था। इसने कहा-बहि बचपे की माँ दूध न पिना तक तो चाय का प्रबन्ध अवश्य कर लिखा जल। बाँग को पहिली बार मालूम हुआ कि लहर की जिन्हीं अपनी सुन्दरता बचाए रखने के कारण अपने बच्चों को माँ दूध पिनाला पसन्द नहीं करती हैं।

बरका अब एक महीने का हो गया तो बड़ी बचकाम से दावत का प्रबन्ध किया गया। दावत में दोनों ओर के महामान बुजार् गए, अनुक-नापरिधो को भी निमन्त्रण दिया गया। सैकड़ों चाच रङ्ग से रंगे गए जाहे मेहमानों को बरि गए।

दावत की समाप्ति पर बाँग का बड़ा कहका बोला— ‘अब हमारे घर में तीन बोटियाँ होमई, तथा बरिबार की स्थिति भी सुख है। हमें

बादिले कि पुरानी रीति के अनुसार हर एक के नाम के रत्न बनवा दिये जाँव ताकि भलेक दुःखघमना व शौहन पर उनकी पूजा की जा सके ।

बाँग जबके की सखाइ सुनकर बहुत मसमन हुआ और उसने इस कार्य को शीघ्र निपटा देने का आदेश दिया । बाँगी माता के मन्दिर में हुगला बहाना घेंट देने की बात भी उस बात ही धाई घण्टा करवा बिछाव वह मन्दिर के पुजारी को भी घेंट करवाया । किन्तु चौकले समय जब जबसे वह सुना कि बिग मरखानमन घबरना में बड़ा हुआ आकिली माँसे से रहा है तो उसे प्याल थावा कि बरती माता पर चढ़ाया देने से ठापर हमारे दुखरे मन्दिर के इह देवता घयमन हो गए हैं बभी तो इस लुटी के समय भी कोई कुछ दना होना चाहती है । वर वर बाँग के बिदे जाना तैवार था, किन्तु अपनी मूल की जरा भी बरबाद न कर वह सोचा बिग को जबर देने बैठहाथा दीव बदा । मकान के जिन कमरे में बिग बीमन बदा था, वहाँ सबी मजदूर पृथ्वित थे । जब बाँग ने मजदूरों से बिग के एक दम बढ़ते हुए कह का अरथ पूछा तो उसे बताया गया कि एक बड़े मजदूर की बाबल खूने का दग बतलाते प लेते हो बिग ने वह मारी घूमन कहावा कि उसकी कमर हट गई और वह दर्द के मारे मिर पदा । बाँग ने उस मजदूर को बुलाकर दंडा कटकारा और लूव मार लगाई, किन्तु बिग की दशा बिगड़ती ही जा रही थी । बाँग मजदूर को जोड़कर एक दम बिग की सेवा सुझावा में लुट बदा । उसने बड़े स्नेह और आदर के साथ बिग से बातें करनी शुरू की, मगर जैसे बिग ने कुछ भी न सुना ही । दर्द से अनाकुल बिग ने कुछ ही देर में बाँग की आँकों के सामने अपना दम ताप दिया ।

बिग के मरते ही बाँग उसके शव के ऊपर गिर पदा और फुरफुर रोने लगा । हुआ तो वह बाँग के मरते वर भी नहीं रोना ना ।

घण्टी से जपती लकड़ी का बना कदव का समूह मगवाया गया और तीसरे दिन बिग का शव गाढ़े के बिदे ले जाया गया । बाँग

ने बच्चों तक को रुकने मातमी विधास पड़ियाथा । यदि उसका बेटा बल्लरा तो अपने परिवार के अहाते में ही वह चिंग का शव दफना देता। किन्तु लड़कों को इस वर दुःखान्न था। क्योंकि बांग ने बहुतों को समझाया कि चिंग कौकर नहीं बल्कि इस घर का सबसे बड़ा शुभचिह्नक था। आखिर परिवार का जो कमिस्तान था, उसके अहाते की दीवारों के साथ ही चिंग का शव दफना दिया गया। बांग ने उसी समय अपने बेटे इन्द्रा मकद करदी कि उसके मरने पर इसका शव भी चिंग के कभी ही दफनाया जाय।

चिंग के मरने से बांग का सारा असाहजीब पड़ गया। घर घर से तो वह आग्रहाद ही हो गया था। अब जमीन व कमल की ओर से भी उसका ध्यान इत गया। उसने अपने धाम कुलु भी न रखा कर, सारी जमीनें किराने पर डका दीं। वह सबदूर और उनके छो बच्चों को गाँव के-मकान में छोड़कर वह अपने दुराभि गाँव से उठकर शहर के मकान में आ गया। जबकि समय वह अपने घरसे छोटे लड़के व गूनी लड़को को भी साथ ले आया।



बौंगल्लू का सब और कोई जगहका नहीं रह गई थी। जब बाहल भी नहीं था कि आलाम से मुद्राया कर ले। सारे खेत किराये पर बड़ा दिये गये थे और इस किराये से बिना बर्हिज्य किये ही काफी आयदबी हो जाती थी किन्तु सभी इसके भाग में शामिल नहीं थे। एक दिन वह बांग से कहने लगा—“छोटे भाई का विवाह समीप का रहा है, विवाह के दिन आपको बुलू करना है। घर में हमी जी इतनी नहीं कि सारे मेहमानों को दिये जा सकें। इसके अतिरिक्त आपके के बहन चोटें बगीरा जी काफी करीबी होमो। मजान के बाहरी हिस्सों में जो छोटे छोटे लोग रहते हैं हम रातों स मेहमानों का बुलाने में बड़ी शर्म लगती है। फिर घर में बरने जो हमें और हमें इस बाहरी हिस्से की जो आवश्यकता हो सकती है।”

“तो फिर सब और क्या चाहते हैं ?”—बांग बोला।

“मेरे कहने का मतलब है कि हम बाहरी हिस्सा की सबसे कमजोर हैं। हमारे जैसे सरल बर्हिज्य को अच्छा नहीं लगता कि छोटे छोटे लोगों को किराये पर मजान के हिस्से बरने दें। हमारे पास स्वयं ही बहुत अधिक बमीन है।”

बुलका गुड़गुलाते हुए बांग ने कहा—

“हमसे क्या, वह बमीन की सब मेरी कमजोर है, तुमने तो कोई इच्छा की नहीं है।

अबका बिड़ गया और बहुत जगह—'चिठाही, चाप हो के ता मुझे पताच जिलावा है किनु बच कमी में हूँ कहता हूँ तो चाप हवी तरह बिड़क दिवा बाँटे हैं ॥' अबके के गर्म मित्राज से बाँग को बर जगा रहता था कि कहीं चपले त्रिबे हूँ बच न बैठे, इन्जिबे बाँग के बड़ दिवा—'डीक है, जो मर्जी चाप ॥' लेकिन मुझे तब न करो ।'

अबके ने बड़ स्वीकृति सुनकी और बड़ तुल्य ही लारी लारी दारी में जग गया । कभी-कभी को तुल्य म मीन बुझिवाँ दरवाजों के बिबे बाँक कपड़े के पड़े, दीवाजों पर जगावे के बिबे बड़िवा २ तरभों लारीदने में जगने किबे हो दिन जगा दिवे । रईनी शान में बच इस लारीदारी में बड़ मकान के बादरी दिबे से बड़े बार निकला तो रहने बाँकों के बड़ तुल्यबाँकी भी की—'देतो बड़ अबका बूझ गया है कि चाकिर किमान का अबका है ।' लेकिन उसके मुँह पर कोई कुछ न कहता । चाकिर अबके ने किरायेदारों का किराया बढ़ावे का मोमिस है दिवा ।

बड़े सीधे साधे किरायेदार तो इस बमकी से हो जगह जाकी कर मप और जिन्होंके बुझाव की, उन्हें भी छाकी करनेको मजदूर कर दिवा गया । किरायेदारों के लूज गाँवियों मुनार् और अबके को लूज कोसा । बाँग का हूज बत्तों की काहें लवर हो न हुई । अबका मकानों की भरमभत सकेरी व बड़े मजाने में जगा रहा । बार्ह व राज मजदूरों के काम की समाप्ति पर उसने बमह लोभे ताजाव बनवा कर मुनदरी मजदूरों बाँकी, बचरियों व गजकों में बिबो व अन्य २ लूकों के बीबे जगवा । अबके की की व जो लूज लूमकर चपली देख देव में मकान लूज लजा दिवा ।

मकान की भरमभत व मजदूर को जवर सते शहर में जैव मर्ह और मर्जी काप बड़ने जगे कि बाँग बास्तव में बहुत बड़ा रईन है । इस मजदूर में बाँग का बड़वा बोरे २ जमी की तरह बड़ जगा, बले

बढ़ पता भी न चका कि कितना कपड़ा उसके हाथ से निकल गया है।
 हमारे लड़के ने जब इतना कपड़ा तो पिता को याद
 समझा कि वह सब कपड़ा कपड़ी नहीं है। इतना कपड़ा यदि कपड़ा
 बाँग समझ गया तो कम से कम बीस प्रतिशत का काम हो सकता था।
 लड़के को दाइस बताते हुए उसने कहा—'वह सब कुछ तुम्हारे विवाह
 की तैयारियाँ ही तो हैं। लड़के का वह बात बरा भी बसन्त न आई
 उसने सुकराते हुए कहा—'वह धात्रीय बात है कि बहुत की कीमत में
 इसगुना अधिक बहुत काम की तैयारियों में लगे किया जाय। इन सब
 कपड़ों में हमारा सबका हिस्सा है, लेकिन बड़े भाई अपनी शान में वह
 सब कपड़े बिदे दे रहे हैं।

बाग इस लड़के की प्रकृति मज्जी-मज्जी समझता था। उसे
 बाकले के लिए बोला—'तुम हीक ही कहते हो मैं तुम्हारे बड़े भाई से
 इस बारे में बात करूँगा और कपड़ा देन से भी हाथ नीच दूँगा।
 लड़के ने तुरन्त ही का कपड़ा लपेटा था उसका एक कपड़ा हिस्सा
 बाग के सामने लाकर रख दिया हम जान्नी बिस्स की देवदर बाग ने
 कहा कि वह हिस्सा फिर देखूँगा, जल्दी तो मैंने जाना भी नहीं पाया
 है और वह भीषा अपने कमरे में चला गया।

उसी दिन शाम को बाग ने लड़के को बुलाकर कहा 'हमनी
 समझकर करनी, बहुत है। यादिर हम जान देहाती जादमी है।'
 लड़के ने गर्ज से उत्तर दिया—'नहीं' यह हम देहाती नहीं
 रहे। अब शहर के सभी जान हमें बाग के लड़के लावदान के जादमी
 समझते हैं। दुनिया भाई जब हीकतका उपयोग करना नहीं जानसकता,
 लेकिन मैं अपने पराये के नाम को हर हालत में बताने लगूँगा।'
 बाग को अभी तक इतना पता न था कि बाहर बच्चे उसके
 घराने की क्या बरामा समझते हैं। हमलिये वह बात सुनकर पड़े

अम्हर हो अम्हर तो सुली दुह किंतु फिर भी वह बोला—'तमाम बड़े मराने चरती और किसानों के बख पर हो आकलें चुकलें हैं ।'

किंतु बड़े चरान के लोग गैपारी की तरह नहीं रहते, बल्कि अपनी सम्पत्ति ही करते जाते हैं ।'

'सुम्मे आ बुद्ध कहवा या, कह बुवा । अब और कबवा बर्बाद नहीं होके दूँगा । बांग के घरम हाकर कहा । बुद्ध के ने बख आप का मित्रात मराम हाते देखा ता भट बात बुद्ध कर कहने जवा— 'डोक है, और लर्वा नहीं होना बर्बादने, किंतु एक बात और कहनी है ।'

बांग ने उक्त जवा में बुद्ध का उदाहरण जमोन पर रख दिया और कहने जवा—'वह भी कह दा, तुम जोय सुम्मे बल से नहीं रहके दोगे ।'

'मेरी अपनी बात कोई नहीं है । अपना दाटे आई के लिए कहना चाहता हूँ कि उसे और पड़ा दिया जाय ता डोक रहेगा ।'

बांग द्वैरत में आकर कहने जवा—'नहीं, नहीं घर में हो ही रहे बिल बटुल है । उसे ता मर मरने के बाद जेती-बरी का काम करना हो उचित हागा ।'

आप नहीं जानत कि वह इसी बात का डेकर रात भर रोता रहता है । इसी साथ में वह बीका पत्रा का रहा है कि उस बहावा खिलाया नहीं का रहा है ।'

बांग ने अपने सबसे धड़े बुद्ध के से कमी वह न पूछा वा कि वह क्या करना चाहता है । वह बुद्ध का बुबबाय छाति से रहता था, ठावद इसी वजह से कोई भी उसकी बात नहीं बुझता था । बांग ने कहा—'कहा उसने तुमसे कमी वहने को बुद्धा प्रवट की है ?'

'बिज्याजी, आप लख बसने पूव देखें —वही बुद्ध के ने उतर दिया ।'

'नहीं बुद्ध बुद्ध के को तो जेती का काम समाजवा हा ५५५५'— बांग ने कहा ।

“लेकिन पिताजी ! यह कहाँ का इन्साफ है कि हम का ग तो पद बिखर रहा है और हमसे से एक संवार हो गया है ? हाँग क्या कहेंगे ?

यह सुनकर बाँग को आँख तो खुल जाया किन्तु वह कर भी क्या सकता था ? खरकों के धानने उसे मुकना ही पड़ा। बाँग का मार्गासक सगुलब बिगड़ते दिन बड़े खरके ने अपनी स्थिर दृष्टि से कह दिया—“सबसे छोटे भाई के लिये हम एक मास्टर रख सकते हैं घरवा हमें पाहर किसी स्कुल में भेज दिया जा सकता है। रही घर के प्रप की बात तो मैं नहीं आपकी पास ही हमारा भाई ग्वापार के काम में जाना ही है। एका लिका कर इस भाई को भी अपना काम करने की स्वतन्त्रता दे देनी चाहिए।”

बाहिर बाँग ने अपने सबसे छोटे खरके को भी पाल सुनाया। कुछ देर में वह भा गया। बाँग इसकी ओर देखता रहा—वह खरका और खरकों से कहीं अधिक सुन्दर था, उसके चेहरे से अपनी माँ की गंभीरता व शान्ति स्पष्ट होती थी। बाँग ने उससे कहा—“वह भाई कहता है कि तुम पढ़ना चाहते हो ?”

खरके के चेहरा डोढ़ ही दिखे—“जी हाँ।”
बाँग ने फिर पढ़ने की तन्वाह की बात में दबाते हुए कहा—“तुम इसका मतलब यह है कि तुम कौनो का काम नहीं करना चाहते। यह मेरा छोटा भाग्य है कि कई खरके होते हुए भी कोई मेरा काम नहीं अपनाया चाहता।

खरके ने कोई उत्तर नहीं दिया। जो चुपचाप लड़ा देख बाँ को और झोप आगवा। उसने कहा—“बोझते क्यों नहीं ? क्या व ठीक है कि तुम कौनो बारी का काम नहीं करना चाहते ?”
हमका उत्तर उसे एक ही शब्द में मिला—“यही बात है।
बाँग कुछ घबराती तरह जाव गया कि खरके के खरके दुहाये में

बोला ही है। उसकी समझ में न आया कि वह क्या करे और क्या न करे। वह एकदम सिन्धु कर फिर कहने लगा—“बड़े आधा मेरे सम्मने से जो मर्जी पाये करो।”

अबका एकदम बारी में जडा गया और बाँग बैठा बैठा सोचता रहा कि इन सबको से तो अब क्या नहीं धरती है, वे बने कोई तक-कोक तो नहीं देती। फिर भी गुस्सा उतर जाने के बाद आदत से मज-बूत वह सबको की इच्छासुमार ही काम किया करता। बड़े सबके को सुझाकर अपने कहा—“सुने भाई के बिये मास्टर एक जो कलकी जो मर्जी पाये बड़ी करे। लेकिन मुझे कोई तक न करो।”

इसके बाद हमारे सबके को सुझाकर कहा—“यब तुममें से कोई लेवी के काम पर न रहो तो तुम भिावा बगैरह बसूब करो और कमब हमने का जो सब काम अपने ऊपर ले लो।” अबका इन आदेश से प्रसन्न हो गया कि कम से कम इनका सब बलके हाथ सेता निकलेगा।

बाँगलु ग को अपने हमारे सबके की प्रहृति धत्रीय सी लगी। हमने अपने विवाह के दिन भी बड़ी होशियारी से हाथपरा बर्बस किया। विवाह में जो मेंट, कबहार आप, हमें भी धरती करह संभावा, बलिक हवाय हैत बल भी हमने काकी समझदारी से काम किया। बेकार का कार्य बहुत बचावा-कुपड़ के बिन्दु हनाम में यब हमने केवल हो अपने दिने ता वह रोने-बिलखाने लगी। बड़े सबके ने यब वह सीर-मुक सुना ता भाई पर बहुत नाराज हुआ तथा कुरुकु को सुपचार धरबो धार से और अपने दे दिव। बीरे न दोबों भाइयों में अनवरन होने लगी। बर्रा तक कि जिस दिन बहुत बर में भाई तो बड़े भाई ने ताका देते हुए कह दिया—“मेरा बल तो हीरे मोतियों से कही बहुत को का सक्य वा, लेकिन भाई ऐसा कुछ रहा कि गाँव की सबकी समझ की।”

बीरे पीर पीलू अपने बड़े ही नए। बड़ा सबका धरबो शाय में ही रहता था। उसे नहीं प्ताव रहना कि कही गाँव बाबों के सामने

जीवा न देखवा पड़े । अब दूसरा भाई लवें की ओर कड़ी नजर रखता था व तीसरा भाई अपने बोले हुए समय की अज्ञानता दूर करने में लगा रहता था । इन सबके बीच एक आत्मी ऐसा भी था जो इधर-उधर खेचता फिरता था । मर्ी बात चाचा, बाबा जैसे लव ही उसकी देख भाव के द्विय विपुल हो—बद कभी बात के पास दौड़ता भी कभी बाबा के पास । कभी फुल लोड़ता तो कभी तान्त्रिक की मन्त्रिणी को पकड़ने की चेष्टा करता । बाँग को कभी-कभी इसे गोर् में डमरू दिला । वह प्राची ओर कोई नहीं—बाँग का पोता था । बड़ी बच्चा कभी-कभी अपने खेच हुए से चाचा की पोशाकियाँ दूर कर देता था । बाँग को भी इसी बच्चे से कुछ शांत मिलती थी ।

यही बच्चे के एक के बाद एक बच्चा पैदा होता गया । बाँग से जब कोई बच्चा कहता कि “बह बरमें एक और लवने बाबा हो गया है” तो मारे झुली के बह कहे उठता—“कोई बात नहीं अब तक हमारे खेनों में चावल उगता रहे अब तक लवने पोने की कहे कभी नहीं होगी ।

लमव धाते-धाते दूसरी बच्चे की बच्चा हो गया । इसकी पहली सम्प्राप्त बहकी हुई । इन बात बपों से बाँग के चार पोते चार लीन बोलियाँ हो गई । बर बरकों की बहल-बहल से बात रहने लगा । इस बहल-बहल में बाँग अपनी मारी पोशाकियाँ भुल गया । अपने बड़े चाचा कि छैर लवने खेने का इसे कोई बचान हो न रहा ।

बाँबों बपें सही इतनी आर की पड़ी बितनी कि बिहने तीन बपों में बड़ी पड़ी थी । चारों ओर बह ही बह कम गई । बरों के हाएक कबो में लगातार च गीटी बहाने रहना आवश्यक हो गया । अब गाँव में चाचा और चाची अकीम के इतने माद्री हो गये थे कि जब डोक से बहका उठता बैठता भी छुरिक्का था । बाँगलुह को जब बह पना लगा कि होमो दिला से भी नहीं उठ मक्के हैं और चाचा गून गीतै बहा है तो वह उन हाकी की देखने के खिसे गया । अपने आँख देता कि चाचा

हुझ ही धरों का मैहमान था । बरातु ग ने तुरन्त ही दो कदम के सम्बृक मगाये और उन्हीं के कमरे में एक चार तलवारिये, जिसमें कि वे देख्य कि उनको इन्तिर्वाँ शोक से झुकना हो चायेंगी और वह शक्ति से मर सकें । चाचा ने जब सम्बृक देये तो कहा— तुम तो मेरे बड़े से भी अधिक हो, जो इतना फज्र पूरा कर रहे हो ।

किन्तु चाची में अब भी काफी शक्ति थी वह बोली—

‘बहि मैं मर जाऊँ’ और मेरा बैरा चापस चाये तो उसके लिए भी अपनी भी बहुत का देना, ताकि हमारा भी आनदान बजता रहे । बांग ने इस काम का कर देने का वादा भी कर दिया ।

X X X X

एक दिन अचानक चाचा मर गया । बांग ने उसके शव को घरने पिठा की कम के पास झकवा दिया । घर में एक चर्पे तक मातम भी मचाया गया—इसलिए नहीं कि चाचा के मरने का किसी को हुल्य था, बरातु इसलिए कि वही बरानो की परम्परानुकूल बड़ी बात डबिन थी ।

इसके बाद बांग चाची को भी अपने शहर के मकान में ले गया । उसे एक कमरा दे दिया गया तथा उसकी सेवा के लिए एक बर्बरी का भी प्रबन्ध करा दिया । बुढ़िया वही अफ्रीम की बुन्किचों में बिस्तर पर सदहोश बड़ी हुई अपने कदम के सम्बृक को देव देकर सुता होती थी । बांगतु ग उस बुढ़िया को हारकर बड़ी सोचा करता कि वह बड़ी औरत है जिसमें कोई न कोई कर हो खता रहना था—और अब वह निर्जीव थी बड़ी रहती है ।

: ३१ :

बगिच में वे अपने अब तक के जीवन में पुरुष की रोमांचकारी वरनाओं के हाक ही सुन रहे थे किन्तु ऐसा-अनसा न मिला था कि अब वह स्वर्ण मुख के विष्णुसहस्रारि दरब देखे । उसके बिचे मुख, पी लमीन आस्मान व पानी की मीठी कोई वस्तु थी । वह अस्मर लोमों के सुँव से बनी सुना करता था कि 'हम तो कौन में मर्ती होगे ।' कौन में मर्ती होने की बातें लयी सुनाई ऐसी थीं जब लोगों में बेकारी अधिक होती अथवा अकाल पैदा होता । किन्तु हम बार 'पुरु' तो ऐसे बात ही आ रहा था ।

एक दिन उसके दूसरे बड़े के ने आकर कहा "अबालक हो अनाथ के भाल ऊँचे चढ़ गए हैं, पुरु हमारे माँत के मिच्छ हो आ रहा है । हमें चाहिये कि अनाथ इस समय न बैठें, बरिच कुछ दिन इकट्ठा कर रखें ताकि आब और ऊँचे जाने पर हमें अधिक आबदे से बैठा जा सके ।"

लोग ने आश्चर्य से कहा—“अब तो अजीब तो बात है कि पुरु के बिच्छ आने से मात्र के आब चढ़ गये हैं । और येने तो कभी पुरु बैठा नहीं यदि पास ही आरहा है तो देख लूँगा । अनाथ का बैचवा तो तुम्हारे हाथ में ही है, जैसा उचित समझो करो ।”

इतना कह कर लोग ने आगे बात न बढ़ाई बरिच अबने पौधा-पौधों के साथ खेडमें जा गया । इसी प्रकार अने ही दिन बीत गये ।

बरती माता

एक दिन दिव्दो-दस की भांति कौन की एक टुकड़ी शहर में
 हुए जाई। बांग के गलीमें जब वह तमसा फाटक से देखा तो घर बाबा
 का बुका जाया। बच्चे को पुकार पर जब वह बाहर गया तो देखा कि
 जेकां सविक बम्बूके हाथ में धिये बसे था रहै ये। बीच के बच्चे से
 जो पूछ बबली भी बसमें सूर्य का प्रकाश भी मन्द हो गया था। बांग
 बहुत से सिपाही बजाय थे किंतु इनकी शक्लें इतनी कमीर एवं मजबूर
 दिखाई देती थी कि डर लगता था। बांग ने बंद दम बच्चे को मोड़ी में
 उठाते हुए कहा—“बच्चे फाटक में जाया जागएँ, ये लोग घरमें घादमी
 नहीं है। इतने में ही सिपाहियों में से एक जायाज जाई। वह है बांग
 मेरा माई।” बांग ने भूमकर देखा तो वह बाबा का बच्चा निकला।
 हमकी मारी बर्षी पर पूछ जमी हुई भी और शक्ल भी बहिनियों की
 तरह हा रही को। उमरे सुस्कराते हुए अपने मापियों से कहा— मापियों
 बही डर जाया, वह रहम घादमी है और मेरा रिश्तेदार है।”

बांग के दमते-देवते कौनो सिपाही पचापच घर में घुमते बसे
 नथे। कोई नहीं बह गया कोई ताजाब के बली से दाम सु द बोकर
 बली पैसावे जगा कोई दया-उबर भूझने जगा। सभी एक दूसरे पर
 हो डकका करते जगे। बांग बबबाकर सोया अपने बड़े बड़के के कमरे
 में गया। जबका हम समय जागम कुर्मी पर बैठा हुआ एक पुस्तक
 पढ़ रहा था। बाप ने जब वह हाक बनाया तो वह भी बबबजाता हुआ
 बाहर घास वह सब देखने जगा। जब हमकी बजर बबेरी माई पर
 बही तो समय में न जाया कि वह बपना का व्यवहार को घबरा
 देना, क्योंकि हर सिपाही के पास घुरा भी है।
 बांग के बड़के ने प्रयत्नता दिखाते हुए बाबा का स्वागत किया
 तो वह बोला—“मेरे बाब कुछ है—” की है।”

“मुझे उसके पास न भेजिये वह बड़ा-बड़ा आदमी है। मैं उसके योग्य नहीं हूँ। मुझे यह है कि कहीं मुझे मार हो न जाये।”

सुन्दरी की बाबिका की यह बात सुनकर बड़ा गुस्सा आया और कहने लगी—“वह भी और आदमियों की तरह ही तो है किसी न किसी समय आदमी के पास जाना ही पड़ेगा। तुम उसके पास जाकर बोलोगी।”

बाँग में जब इस बाबिका की रोना-चिल्लाहट सुना तो सड़कपट्टा से बसीज गया और बहराये लगा कि ऐसा न हो कि वे कौन्नी लोग कोई उत्पात कर बैठे। इसने सुन्दरी से यह सुनकर बहुत ब्रुव किया कि इतनी बाँहियों में से बाबा का बहका किसी और को चुन-ले। इस बाबिका को तो भीतरी बोलारियाँ हैं—यह डीक न रहेगी।

बाबा के कहने के जब और बाँहियों की धोर देखा तो सबकी सब मुँह फैल कर लगी हो गईं किन्तु एक बीस बयें की बूढ़ पुढ बाँरी ने जब अपने बाप को पैठ करने की इच्छा प्रकट की तो बाँग ने भी अपनी स्वीकृति दे दी।

बचेरा माई जब कौन्नी के साथ खगलगा बैद महीना नहीं रहा। जब उसको लिवल करती वह उस बाँरी की बुझाकर अपनी लुल्लि कर बैठा। इसका परिचाम यह हुआ कि बड़े गर्म रह गया। इन्कर कौन्नी को वहाँ से और घाली जाये कर बुलम आ गया। बिदा होते समय बाबा का बहका बम्बूक को कपे पर रये हुब बड़े गर्म के साथ बाँग से बोला—

“अच्छा जब बहि मैं भी न आ सकू तो कोई फिक की बात नहीं। मैं अपनी निशानी और अपनी मा के बिने बाकी छोड़े जा रहा हूँ। यह एक बड़ी बात है जो हर आदमी के बिने मुमकिन नहीं। वह कौन्नी बिम्बो की ही कलामल है कि थोड़े से दिनों में ही उसका बीज फल बढ़ता है और दूसरे लोग उसके खगाए हुब पीये को पीबते हैं।”

इतना कह कर इसने जब को देखा फिर हँसता हुआ अन्य पिताहियों के साथ वहाँ से बका गया।

चौबिंशो के जाने के बाद बांगलुङ ने अपने घर की दुबारा सम्मन कराई, क्योंकि बिजनेसियों कीकी वहाँ रहे, काफी लाभ-लब्ध कर गये थे।

उसके लगेरे यहाँ से जिस लड़की को गर्म रह गया था उसे बांगलुङ ने कुछ रेशमी कपड़े तथा रुपये देकर अपनी चाची की सेवा में नियुक्त कर दिया।

उसने बांगलुङ से अपनी यह इच्छा ज्ञातिर को कि यदि वह बचिब समझे तो उसका विवाह किसी किसान के लड़के से कर दिया जाय और विवाह के दहेज में उसे भी साथ कपड़े और रुपये देने लीं।

बांगलुङ ने उसकी यह बात मानली, अब वह बुढ़िया की सेवा में रहने लगी।

कुछ दिनों बाद उस लड़की ने साकर बांगलुङ को सूचना दी कि बुढ़िया मर गई है और उसे मज के सम्बन्ध में रक्त दिया गया है।

बांगलुङ ने वह सुनकर चाची की सम्पत्ति जितना को। फिर उसने उस लड़की का विवाह भी एक बृह-पुत्र किसान सुबब के साथ कर दिया।

×

×

×

चाची की मृत्यु के बाद बांगलुङ के घर में दोनों बहनों में एक कपड़ा बाँट दिया गया। वे एक दुसरे की सफाई तक देखने से मन्दरत करती थीं। अविधि किसी न किसी बात पर एक नया कपड़ा उन लड़ा होजा, बांगलुङ ने वह देकर कर दिव-रक्त चिन्तित गया रहता था।

उत्तर सुन्दरी की दया की लड़ी विचित्र थी। वह बांगलुङ ने उसे दिये थे लड़ी बेटी की, जिस दिन बांग ने लड़की लई लड़ी सुन्दर को

“मुझे उसके पास न भेजिये वह डट्टा-बट्टा आदमी है। मैं उसके बोझ नहीं हूँ। मुझे हर है कि कहीं मुझ मार हो न जावे।”

सुन्तरी को बाबिका की यह बात सुनकर बड़ा गुस्सा आया और कड़वे जग्री—‘वह भी और आदमियों की तरह हो तो है किसी न किसी समय आदमी के पास जाता ही ज़ेगा। तुम उसके पास अवरज आओगी।’

बाँग ने जब इस बाबिका को रोना-बिस्बाला सुना तो महारपना से पसीन सदा और धबराते जगा कि ऐसा न हो कि मैं चौकी लोग कोई डरपात कर बैठे। इससे सुन्तरी से कह सुनकर यह तब किया कि इतनी बाबियों में से बाबा का खटका किसी और को चुन ले। इस बाबिका को तो भीतरी बीमारियाँ हैं—यह डीक न रहेगी।

बाबा के खटके से जब और बाबियों को घोर देखा तो सबकी सब मुँह केर का लकी हो गई किन्तु एक बीस बरों की इह पुह बाँहो ने जब अपने बाप को पैर करने की इच्छा प्रकट की तो बाँग ने भी अपनी स्वीकृति दे दी।

एकदम भाई पन्ध्र बीजियों के साथ जगमगा डेढ़ महीना वहीं रहा। जब इसकी तबियत भरती वह पछ बाँहो को मुकाफर अपनी पृष्ठि कर लेता। इसका परिणाम यह हुआ कि बड़े गर्म रह गया। इधर बीजियों को बड़ा से और घासे जग्री का दुखन आ गया। बिहर होते समय बाबा का खटका बम्बूक को कंधे पर रखे हुए बड़े गर्म के साथ बाँग से बोला—

“अच्छा अब यदि मैं भी न आ सकू तो कोई किस की बात नहीं। मैं अपनी मिशाली और अपनी मा के बिचे बाँहो छोड़े आ रहा हूँ यह कुछ बड़ी बात है जो हर आदमी के बिचे मुमकिन नहीं। वह चौकी जिन्दगी की ही करामात है कि बोध से दिनों में हो उसका बीज एक डकटा है और हमारे लोग उसके जगमग हुए बीजे को लोचते हैं।”

इतना कह कर उसने सब की देखा, फिर हँसता हुआ अन्य बिरादियों के साथ वही से चला गया।

औरियों के जाने के बाद बांगलुग ने अपने घर की दुबारा मरम्मत कराई, क्योंकि बितलेदितों कीजो बर्होरहे, काफी तोड़-फोड़ कर गये थे। उसके चलेरे माई से जिस लड़की को गर्भ रह गया था उसे बांगलुग ने कुछ रेशमी कपड़े तथा रुपये देकर अपनी बाची की सेवा में नियुक्त कर दिया।

उसने बांगलुग से अपनी यह इच्छा जाहिर की कि यदि वह कचित् समयके ता उसका विवाह किसी किसान के लड़के से कर दिया जाय और विवाह के दहेज में उसे के सब कपड़े और रुपये दे दिये जाय। बांगलुग ने उसकी यह बात मान ली, तब वह दुबारा की सेवा में रहने लगी।

कुछ दिनों बाद उस लोरी ने पाकर बांगलुग की सूचना ली कि दुबारा मर गई है और उसे वन के समूह में रख दिया गया है। बांगलुग ने यह सुनकर बाची की धमकी दे दिया की। फिर उसने उस लड़की का विवाह भी एक इष्ट-पुष्ट किसान पुत्र के साथ कर दिया।

बाची को मृत्यु के बाद बांगलुग के घर में दोनो बहूओं में कुछ झगडा होने लगा। वे एक दूसरे की शरफ तक देखने से मनास करती थीं। प्रतिदिन किसी न किसी बात पर एक नया झगडा उठ खड़ा होता बांगलुग यह देख कर दिन-रात चिन्तित बसा रहता था।

उपर सुम्हरी की दया भी बड़ी विचित्र थी। वह बांगलुग से एक दिन से लगी बैठी थी, जिस दिन बांग ने उसकी नई लोरी गुलवार

जयदे बेबरे मारु के पास जावे से रोक दिया था। वह समझती थी कि बीम अब गुजरने से मुहलत करने लगा है और इस बात को जयदे बीम से कई बार साफ़ रे कह दिया था।

परन्तु बांग सुन्दरी की यह बात सुनकर खड़े मुस्कराकर रह जाता था। कभी रे कह कहता— 'मैं बूढ़ा हो गया हूँ, क्या धनमी तुम मुझसे यह माता करती हो कि मैं काई ऐसा चीज करके दूँगा।'

बांग के इस उत्तर से सुन्दरी कमा समुह न होती।

एक दिन बांग के सबसे छोटे बच्चे ने पल्ल खाकर बछड़े कहा— 'मैं बीम में मर्ती होकर देण-सेवा करना चाहता हूँ।'

जब बांग ने इसे बहुत समझाया तो वह तपाक से उत्तर देता हुआ बोला— 'तुम यह न समझ लेना कि मैं बीम के मारु की तरह बीम का गुलाम बन कर घर में पहराऊँगा। इसलिए मैं तुम्हारी कोई बखीय मानने के लिये तैयार नहीं हूँ।'

बच्चे की बात सुनकर बांग ने समझ गया कि वह बीम में मरती होवे की बमकी किम लिये दे रहा है।

उसने पूछा— 'बढ़ि तुम बिबाह नहीं करना चाहते तो क्या किसी बाई की रखने का हरादा है?'

'बिबाह तो मैं करूँगा नहीं —बछड़े ने उत्तर दिया— 'लेकिन' मारु मा की बाई गुजरने मुझे पसन्द है।'

बांग कुछ कह सुन कर हैराण हो गया। उसने कहा— 'मेरे घर में धनमी के समान धन्य पकता है, वह मुझे पसन्द नहीं है। मैं चाहता हूँ, तुम अपने बिबाह पर एक बार फिर विचार करओ।'

मगर छोटे बच्चे ने जैमे उसको बात पर काई ध्यान ही नहीं दिया। वह जयदे खाक रे बीम निकालता हुआ बोला— 'इस प्रथा को तुम्हीं आरम्भ किया है, यतः मुझे रोके को तुम कैसे कह सकते हो?'

बराती माना

हस्ता कह कर बाहर चला गया। बाँगलु ग को अपने अर्ध
बर्तन दाढ़े लड़के—सि देसा सुनने की कड़ापि आया नहीं था। उसमें
हथ कहते न बना, पुत्रचाप करना फिर सुकाने बैठा रहा।

×

×

×

×

साढ़े लड़के ने गुज्जर के विषय में जो कहा था बाँग के ऊपर
उसका बड़ा प्रभाव हुआ।

पापये बड़े बड़े कभी गुज्जर को घर आकर्षित नहीं हुआ
था, लेकिन अब इसे ऐसा अनुभव हुआ, जैसे ऐसा न करके अपने
कोई भारी गलती की है।

उसके हृदय में एक मोड़ो मो गुरगुरी होने लगी, वह सब ही
सब गुज्जर की आर आर्थिक श्रिष्टता चला गया। उसे अनुभव होने
लगा जैसे गुज्जर के बिना उसका सारा जीवन खराब ही बीता था
ग है।

धीरे धीरे उसकी वह भावना और प्रबल होती गई। इसे ऐसा
प्रतीत होने लगा जैसे कोई अज्ञात शक्ति इसे गुज्जर को आर लीचे
ले जा रही है।

बाँगलु मन ही मन गुज्जर की ओर आकर्षित हो रहा था
था, वस्तु माव हो रहा वह कभी जगता था कि अब कुछ हो चला
है उसकी आत्मा सत्तारी के जगमग बहिन गई है, देरी में यदि हमने
गुज्जर की ओर ध्यान दिया तो बाँग उसे क्या कहे ?
अन्त में हमने विरचय दिया कि गुज्जर और उसके दाढ़े
लड़के को पचरवा बराबर को है। इसलिए गुज्जर को अपने लड़के
का जीवन देना ही उचित रहेगा।

वह वह विचार कर ही रहा था कि उसी समय गुज्जर उसके
पाम ही निकली। उसे देखते ही बाँग का विचार फिर बदल गया। उसने
इससे से गुज्जर का सुकाया, वह पुत्रचाप पास आकर लड़ी हागई।



जादे की पूर के समान गुलनार की मोहब्बत छोड़े हो दिनों में समाप्त हो गई। अब बॉग को अपनी गूंगी लकड़ी के बिनाह की चिन्ता हुई।

एक दिन बॉग ने गुलनार से कहा—“यदि कहीं लकड़ी मेरी गूंगी लकड़ी से बिनाह करने के लिए तैयार हो जाय, तो मेरी चिन्ता खर हो सकती है। अथवा यह शोक मुझे अधिक दिनों तक जीवित न रहने देगा।” फिर बोला “यदि मैं मर जाऊँ और इस लकड़ी का बिनाह न हो सके तो मेरे माता तुम इसे बहर दे देना।

गुलनार यह सुनते ही काँप गई—उसने कहा—“देसी आशुन बात अपने सुँह से न बिकायिये। अब तक मैं जीवित हूँ तब तक आपकी लकड़ी को कोई कट न दोने दूँगे परन्तु किसी को जहर देने, या आप मुझ से न हो सकेगा।

‘मेरे लकड़ आपनी २ मरनी में खरो ह—बह बोला—‘अब अपने प्रतिरिक्त और किसी को चिन्ता नहीं है। मेरी आशुन के बाद संभव हो सकता है कि तुम्हें भी जहर पाने के लिये बाध होना पड़े। मैं तुम्हें बहर की पुर्बिया देता हूँ। इसे सदाक कर रख लो। उस समय कहीं हँसती किरोगी।”

गुलनार बॉग के इन्त्य की देखा को समझ गई। उसके शब्दों का आशय भी उसने सजी भाँति पहिचान लिया था।

दिन बीतते गये। बीग की छातु बढ़ती हो रही उसमें अब अधिक बढ़ने क्रिया की शक्ति भी नहीं रह गई थी, सिवाम इसके कि वह एक जगह बैठकर बाँधें बनाया करता और अपने पीछे दिनों की बाबत सोचा करता था।

कभी-कभी वह बच्चों से पूछता—‘तुम स्मृति जाते हो ?’

मग एक साथ उत्तर देते—‘बाबा हम स्मृति रोज जाते हैं ?’

“तुम चारों किताबें पढ़ते हो ?”—बहु फिर पूछता।

‘इन्कलाब क बाद अब चार पुस्तकों का पढ़ना बन्द कर दिया गया है बाबा ! —इसके पीछे और पात्रियों सहज भाव से उत्तर देत।

इन्कलाब की बात सुनकर बीगसुद्ध मग हो मन माँचत। अत्रसाम में इन्कलाब न देत सका। मुझ था इस विषय में कभी सोचने का अवसर भी न मिलता

कभी उम्मी वह पढ़ी बीगो म पूछता—‘मरो बाबों बहुतों तो अच्छी तरह हैं ?’

वह उत्तर देती—‘घायब में बहुत बढ़ती है। आपका बहुत बेटा कहवात्राये जाता है और छोटा बूझरी शारी करने की छिड़ में है।’

कभी वह अपने सबसे छोटे बच्चे के बारे में पूछता—‘बपा रमका कोई पत्र आया है ?’

उसे बताया जाता—‘अप वह इतना ग्रहण में एक बीबी अत्रमर है। वह घर के बिपु कोई बच्चा नहीं भेजता।’

एक दिन वह टहलता-हुआ पथर की खोरी पर जा पहुँचा। वहाँ उसके लुनुकों की करें थी। मन हो मन बगने कहा—‘अब की मेरी बारी है।’

वहाँ से बीटकर वह घर में पड़े बेड़े से बाबा—‘मैं अपने बिपु हवान हूँ अब पा हूँ। मेरी गिता की बच्चे के पाम हो तुम मेरी भी कम बनाता। अच्छा हो यदि तुम मुझे मेरा ताबत काकर दियादा।’

उसके बेटे ने यह सुनकर उसे बैल-बुझों से कहा हुआ एक पात्र लाकर दिखा दिया। उसे बैलकर पोंग बहुत प्रसन्न हुआ।

कुछ दिनों बाद पोंग अपनी गूंगी लड़की और गुलनार का लेकर अपने गाँव के पुराने मकान में चला गया। उसकी इच्छा थी कि सूरज के समय वह अपने गाँव में हो रहे।

एक दिन उसके दोनों लड़के उससे मित्रों के लिए गाँव में आये।

पोंग ने कान खगा कर उनकी बातें सुनी। मसखे लड़के ने कहा—“आज कुछ आबखों के प्यौवार में अधिक धाम है। हमें इस गाँव की जमीन को बेचकर अपना आपस में बाँट लेना चाहिए और उससे व्यापार करना चाहिए।”

पोंग यह सुनकर अपने का अधिक न संभाव्य सक। उसने बिना कह कर कहा—“बेचकू लड़की? क्या तुम इस जमीन की पंच देना चाहते हो?”

मसखे के मुख की लज्जाकर, वह भारती पर गिर पड़ा।

लड़कों ने उसे डमते हुये लसखों की—“नहीं बापा! हमारा पैसा कोई इरादा नहीं है। हम तो यह मज्जाक में कह रहे थे।”

पोंग बोला—‘मेरे लच्छा! यदि तुमने इस धरती को बेच दिया तो फिर हमारे पानदान को काम हुआ समझना। इस धरती को बहीखत हो हम इतनी उन्नति कर सके हैं।’

फिर उसने दोनों में बाँट भर कर कहा—“देव के बिकते हो हमारा पानदान बरबाद हो जायगा।

“तुम हम पर बिरास करो बापा!”—लड़कों ने कहा—“हम इस धरती को बिककू नहीं बेचेंगे।”

परन्तु दूसरी बार, मुँह के कूँ न दोनों की मुखा रहे थे।

